विकास हो है है है जा है

रोजधानी (जंबलपुर और तोपाल) भेल - एश्वपट्य देव के राजवीती

ten alekiai

विक विश्वविद्यालय की विद्याचारित (पी. एच.स) एपाधि हैने प्रकात

180001

16 01 04 99 P

राणशा नामक

Sulfame Time

CC0 Manarishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavid ataya (MMYVV). Kamuriti, Jababar MP Collection





सन्दर्भ पुस्तक

यह पुरतक देय नहीं है।







# रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

राष्ट्रीय सेवा योजना

हा. एस. के. भारती कार्यक्रम समन्वयक एवं प्राध्यापक सूगोल



दूरमाथ : कार्याजय-320567, 68, 69 विस्तार -257

> सरस्वती विहार पचपेड़ी, जबलपुर ( म. प्र. )

निवास: 9, ए. पी. कालोनी पचपेढ़ी सिविस साइन, जबसप्र

२ 9 . १२ १९ १९

## शोध निर्देशक का प्रमाण पत्र

में प्रमाणित करता हूँ कि, श्री रामशरण चौकसे (शोध छात्र, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर) ने अपने शोध प्रबन्ध "संस्कारधानी एवं राजधानी (जबलपुर और भोपाल) का नगरीय भूगोल-स्थापत्यवेद के संदर्भ में एक अध्ययन" को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध-प्रबन्ध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय की न्यूनतम अविध एवं उपस्थिति को पूर्ण किया है।

अतः शोधं प्रबन्ध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध निर्देशक

KBhach

(डॉ॰ एस॰के॰ भारती)

कार्यक्रम समन्वयक एवं

प्राध्यापक भूगोल

TRITH . WILLIAM

# रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

राष्ट्रीय सेवा योजना

डा. एस. के. भारती कार्यक्रम समन्वयक एवं प्राध्यापक भूगोल



दूरमाष : कार्यालय-320567, 68, 69 विस्तार -257

सरस्वती विहार पचपेढ़ी, जबलपुर (म.प्र.)

निवास: 9, ए. पी. कालोनी पचपेढ़ी सिविल लाइन, जबलपुर

> २ प . । र, **१९९**९ दिनांक

### शोध निर्देशक का प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, श्री रामशरण चौकसे (शोध छात्र, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर) ने अपने शोध प्रबन्ध "संस्कारधानी एवं राजधानी (जबलपुर और भोपाल) का नगरीय भूगोल-स्थापत्यवेद के संदर्भ में एक अध्ययन" को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध-प्रबन्ध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय की न्यूनतम अविध एवं उपस्थिति को पूर्ण किया है।

अतः शोध प्रबन्ध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध निर्देशक

JKBharh

(डॉ॰ एस॰के॰ भारती)

कार्यक्रम समन्वयक एवं

प्राध्यापक भूगोल

स्थान : जन्मा

## शोध निर्देशक का प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूं कि, श्री रामशरण चौकसे (शोध छात्र, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर) ने अपने शोध प्रबन्ध "संस्कारधानी एवं राजधानी (जबलपुर और भोपाल) का नगरीय भूगोल-स्थापत्यवेद के संदर्भ में एक अध्ययन को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध-प्रबन्ध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय की न्यूनतम अवधि एवं उपस्थिति को पूर्ण किया है।

अतः शोध प्रबन्ध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध निर्देशक

(श्री गणेश तामकार)

वास्तुविशारद,

पिरामिड एवं ऊर्जा विज्ञान विशेषज्ञ आनन्द नगर, आधारताल,जबलपुर

Wolder-

दिनांक

29/12/99

## शोध निर्देशक का प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, श्री रामशरण चौकसे (शोध छात्र, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर) ने अपने शोध प्रबन्ध "संस्कारधानी एवं राजधानी (जबलपुर और भोपाल) का नगरीय भूगोल-स्थापत्यवेद के संदर्भ में एक अध्ययन" को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध-प्रबन्ध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय की न्यूनतम अविध एवं उपस्थिति को पूर्ण किया है।

अतः शोध प्रबन्ध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्थान

MOTORS7-

दिनांक

29/12/99

शोध निर्देशक

(श्री गणेश तामकार)

वास्तुविशारद,

पिरामिड एवं ऊर्जा विज्ञान विशेषज्ञ आनन्द नगर, आधारताल,जबलपुर

### घोषणा - पत्र

में रामशरण चौकसे घोषणा करता हूँ कि 'संस्कारधानी एवं राजधानी (जबलपुर और भोपाल) का नगरीय भूगोल — स्थापत्य वेद के सन्दर्भ में एक अध्ययन शीर्षक पर भूगोल एवं स्थापत्यवेद विषय के अन्तर्गत डाँ० एस. के. भारती एवं श्री गणेश ताम्रकार के संयुक्त निर्देशन में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय, जबलपुर से किया गया व शोध उपाधि समीति द्वारा स्वीकृत मेरा स्वयं का शोध कार्य है, जिसे पी.एच.डी. उपाधि हेतु महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय, जबलपुर में प्रस्तुत किया गया है। मेरी जानकारी के अनुसार यह शोध प्रबन्ध अभी तक किसी अन्य विश्व विद्यालय में शोध उपाधि या किसी अन्य शैक्षणिक प्रमाण पत्र हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोधार्थी

(रामशरण चौकसं)

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

### घोषणा - पत्र

में रामशरण चौकसे घोषणा करता हूं कि 'संस्कारधानी एवं राजधानी (जबलपुर और मोपाल) का नगरीय मूगोल — स्थापत्य वेद के सन्दर्म में एक अध्ययन शीर्षक पर भूगोल एवं स्थापत्यवेद विषय के अन्तर्गत डाँ० एस. के. भारती एवं श्री गणेश ताम्रकार के संयुक्त निर्देशन में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय, जबलपुर से किया गया व शोध उपाधि समीति द्वारा स्वीकृत मेरा स्वयं का शोध कार्य है, जिसे पी.एच.डी. उपाधि हेतु महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय, जबलपुर में प्रस्तुत किया गया है। मेरी जानकारी के अनुसार यह शोध प्रबन्ध अभी तक किसी अन्य विश्व विद्यालय में शोध उपाधि या किसी अन्य शैक्षणिक प्रमाण पत्र हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

ha frank ught nen wit ilea

विश्वपाद पहिल्ला स्थापित विश्वपाद स्थापित स्यापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्य

शोधार्थी

(रामशरण चौकसे)

where will extill a gree extent the test of the street will be placed as a place of the street will be

#### हृदयाभिव्यक्ति

'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मैं श्री गुरवे नमः।।

रनात्तकोत्तर परीक्षा उतीर्ण करने के पश्चात् मुझे महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय के महर्षि वेद विज्ञान परिचय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्थापत्य वेद का अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । भूगोल विषय का विद्यार्थी होने के कारण मुझे स्थापत्य वेद विषय पर अनुसन्धान करने की तीव्र इच्छा जाग्रत हुई। मेरी इच्छा को दृष्टिगत रखते हुए परमश्रद्धेय डॉ० एस.के. भारती, (प्राध्यापक — भूगोल विभाग एवं कार्यक्रम समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय) तथा परम सम्मानीय श्री गणेश ताम्रकार (वास्तु विशारद एवं पिराभिड, ऊर्जा विशेषज्ञ, जवलपुर) ने प्रस्तुत विषय के चयन की सत्प्रेरणा प्रदान की, साथ ही समय — समय पर अपना अमूल्य निर्देशन प्रदान कर कृतार्थ किया। परिणाम स्वरूप यह दुष्कर कार्य सरलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। में उक्त दोनों श्रद्धेय गुरुजनों का हृदय से आभारी हूँ। विषय चयन एवं विषयगत ज्ञानार्जन हेतु प्रो० सुरेश्वर शर्मा (कुलपति, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय जवलपुर), प्रो० पी.एस. दवे (पूर्व प्राध्यापक भूगोल विभाग शासकीय महाकौशल कला एवं वाणिज्य स्वशासी महाविद्यालय) तथा श्री निकेतन आनन्द गौंड़ (प्राध्यापक, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय परिसर, इन्दौर) का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ, जिनका मैं इदय से आभारी हूँ।

प्रो० आद्या प्रसाद मिश्र (कुलपति, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय) तथा प्रो० राममूर्ति चतुर्वेदी (संकायाध्यक्ष) महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने समय – समय पर उत्साहवर्धक आशीर्वचनों से कृतार्थ किया।

मैं आचार्य गोपाल कृष्ण दवे (पूर्व कुलसचिव, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय) श्री प्यारे लाल कादलबाजू (कुलसचिव, गहर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय) तथा श्री दीपक वर्मा (उपकुलसचिव, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय) का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने विश्व विद्यालय के नियमानुसार छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

में मातृतुल्य समादरणीय डॉ० (श्रीमती) चन्द्रा चतुर्वेदी (उपाचार्य एवं सह निदेशक अनुसंधान विभाग, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय) का हृदय से आमारी हूँ, जिन्होंने वात्सल्य एवं प्रेम पूर्ण सत्प्ररेणा प्रदान कर शोध कार्य को पूर्णता की ओर अग्रसर कराया। इसके साथ ही मैं डॉ० राजेन्द्र चन्द्र सूंठा (सिद्धि शिक्षक एवं सह निदेशक, अनुसंधान विभाग, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय) का आभारी हूँ, जिन्होंने भ्रातृतुल्य स्नेह प्रदान कर शोध कार्य को शीर्ध सम्पन्न कराने में समय – समय पर प्रेरणा दी।

में डॉ० ए.के. तिवारी, डॉ० ए.के. शुक्ला, डॉ० (श्रीमती) कमलनी श्रीवास्तव, श्रीमती उमा भिश्रा (प्राध्यापकगण, शासकीय महाकौशल कला एवं वाणिज्य स्वशासी महाविद्यालय) का आभारी हूँ, जिन्होंने विषयगत ज्ञानार्जन हेतु उपयुक्त सामग्री उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान किया। साथ ही डॉ० चन्द्र शेखर आरोड़कर, डॉ० ब्रजेश स्वरूप कटियार, श्री शशिमूषण त्रिपाठी, श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव, डा० रिवन्द्र अग्रवाल, श्री अखलेश पाण्डेय, श्रीमती लता श्रीवास्तव (आचार्यगण महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय) का भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय समय पर प्रोत्साहन प्रदान किया।

में रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय, जवलपुर, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय जवलपुर, केन्द्रीय ग्रन्थालय जवलपुर, नगर निगम ग्रन्थालय जवलपुर, वरकतउल्ला विश्व विद्यालय भोपाल, आदिम जाति अनुसंधान संस्थान श्यामला गिरी भोपाल, का आभारी हूँ जिन्होंने अपने सुसमृद्ध ग्रन्थालय में अध्ययन करने की अनुमित प्रदान की । जबलपुर एवं भोपाल स्थित जिला चिकित्सालय, जिलाध्यक्ष कार्यालय, नगर एवं ग्राम नियोजन कार्यालय, भारतीय भू—वैज्ञानिक सर्वेक्षण संस्थान, जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, जिला उद्योग कार्यालय, मौसम विज्ञान विभाग क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर, गन्दी वस्ति उन्मूलन मण्डल भोपाल, भारतीय सर्वेक्षण विभाग मानचित्र विक्रय केन्द्र भोपाल, जनगणना संचालनालय भोपाल का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने आवश्यक आंकड़े एवं यथोचित सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने परिवार के समस्त सदस्यों विशेष रूप से श्री डी.डी. चौकसे, अध्यापक, प्रान्तीय शिक्षण महाविद्यालय जवलपुर, श्री पुरूषोत्तम चौकसे लखनादौन, श्री टी.पी. चौकसे घन्सोर का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे न केवल शोध कार्य हेतु प्रोत्साहित किया वरन् प्रतिकूल परिस्थितियों में भी साहस बढ़ाया एवं सतत् मार्ग दर्शन प्रदान किया। मैं अपने सभी छोटे भाई

बिहनों के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने सदैव ही अध्ययन अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करने का प्रयास किया। मैं अपने समस्त मित्र जनों विशेष रूप से कमल प्रसाद, विवेक प्यासी एवं मुन्ना लाल के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य में सतत् सहयोग प्रदान किया।

में परम् पूजनीय दादा जी, दादी जी, पिता जी एवं माता जी को नमन कर यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर रहा हूँ जिन्होंने प्रतिपल न केवल मेरा साहस बढ़ाया वरन् प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाने का सफलतम प्रयास किया जिसके परिणाम स्वरूप मैं यह शोध कार्य प्रस्तुत करने में सफल हो सका जो कि इनके आर्शीवाद के बिना असम्भव था। मैं न्यू टेलेन्ट टाइपिंग एवं कम्प्यूटर सेन्टर का आभारी हूँ जिन्होंने मेहनत और लगन से मुद्रण कार्य सम्पन्न किया। मैं उन सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्वानों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने जाने अनजाने में प्रत्यत्य या परोक्ष रूप से शोध कार्य के पूर्ण होने में मेरी सहायता की।

अन्त में मैं, विश्वबन्द्य परमपूज्य महर्षि महेश योगी जी को कोटि — कोटि प्रणामाज्जिल प्रस्तुत करता हूँ जिनके देवी निर्देशन से इस विश्व विद्यालय ने शोध की नवीन प्रविधि को प्रारम्भ किया। इसी का परिणाम है कि, गुझे भी वैदिक बाड मय की ज्ञानराशि का ज्ञानार्जन प्राप्त करने का सौभागय प्राप्त हुआ। अपने अल्प ज्ञान से अल्प समय में जो कुछ अर्जित कर सका हूँ, उसे सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त कर हृदय प्रमुदित है कि निश्चय ही उन्हें मेरा शोध कार्य पसन्द आएगा।

स्थान

जबलपुर

दिनांक

शोधार्थी

(रामशरण चौकसे)

परिवर्तियों को भी अनुसूत्र वनाने का संकत्तान प्रवास किया तिमाने परिवर्त में किया

#### अनुक्रमणिका

| पृष्ठ | क्रमांक |
|-------|---------|
|       |         |

हृदयाभिव्यक्ति अनुक्रमणिका तालिका सूची मानचित्र एवं रेखा चित्र सूची

अध्याय 1

भूमिका

1 - 12

13 - 40

अध्याय 2

स्थापत्यवेद का अध्ययन

स्थापत्यवेद का अर्थ, परिभाषा स्थापत्यवेद का उद्भव, विकास, स्थापत्यवेद की शाखयें, स्थापत्यवेद की विषय वस्तु, वास्तुशास्त्र का अर्थ परिभाषा, वास्तुशास्त्र का गहत्व एवं वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिक अवधारणा।

अध्याय 3

41 - 56

नगरीय भूगोल का परिचय नगरीय भूगोल का अर्थ, परिभाषा, उद्भव, विकास, विषय वस्तु, नगर की अवधारणा।

अध्याय 4

57 - 77

नगर नियोजन का अर्थ परिभाषा, उद्देश्य, महत्व,

नगर नियोजन का अथ परिभाषा, उद्देश्य, महत्व,

के वारतुशास्त्रीय आधार, नगर नियोजन के भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय आधारों / सिद्धान्तों का तुल्नात्मक अध्ययन, आदर्श नगर की संकल्पना।

#### अध्याय 5

78-103

जबलपुर संस्कारधानी नगर एवं भोपाल राजधानी नगर की पृष्ठभूमि

स्थिति एवं विस्तार, जलवायु, भू—गर्भिक संरचना एवं मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, भू—आकृति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आर्थिक पृष्ठभूमि, जनसंख्या।

#### अध्याय 6

103 - 125

संस्कारधानी जबलपुर एवं राजधानी भोपाल की नगरीय आकारिकी सम्बन्धी विश्लेषण,

संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों का भूमि उपयोग,भौतिक आकार, एवं स्थिति, रिहायसी क्षेत्र, व्यापारिक क्षेत्र, भौद्योगिक क्षेत्र।

#### अध्याय 7

126 - 150

स्थापत्य वेद के अनुसार संस्कारधानी एवं राजधानी के प्रमुख तत्वों की स्थिति का अध्ययन भौतिक स्थिति, ब्रह्म स्थल, आवासीय व्यवस्था, औद्योगिक स्थिति, शिक्षा, चिकित्सा व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, जलपूर्ति व्यवस्था, जल-मल निकासी व्यवस्था, मनोरंजन स्थल।

अध्याय 8

151 - 163

रांरकारधानी एवं राजधानी नगरों के रथापत्य विपरीत तत्वों से उत्पन्न दुष्परिणाम एवं उनकी रोकथाम हेतु सुझाव। भौतिक स्थिति, औद्योगिक क्षेत्र, व्यापारिक क्षेत्र, जल आपूर्ति, जल-मल निकासी, परिवहन तन्त्र।

अध्याय 9

164 - 174

संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों का तुलनात्मक अध्ययन भूमि उपयोग, आर्थिक संरचना, गन्दी बस्तियां, प्रशासनिक व्यवस्था।

अध्याय 10

175 - 192

उपसं हार

संस्कारधानी एवं राजधानी नगर की समस्यायें एवं समस्याओं के निदान हेतु सुझाव।

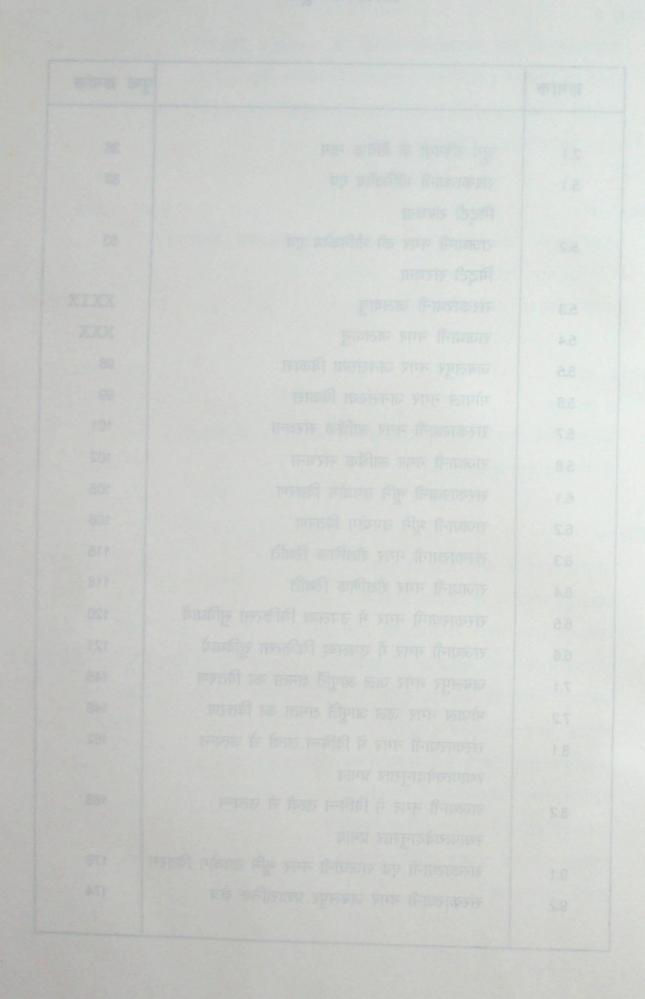
परिशिष्ट

भोपाल नगर में जनसंख्या विरतण जबलपुर नगर में जनसंख्या वितरण जबलपुर नगर गन्दी बस्तियों की सूची भोपाल नगर गन्दी बस्तियों की सूची जबलपुर नगर की जलवायु सूची भोपाल नगर की जलवायु सूची जबलपुर नगर की जलवायु सूची जबलपुर नगर निगम क्षेत्र — मानचित्र भोपाल नगर निगम क्षेत्र — मानचित्र जबलपुर स्टेण्डर्ड अरबन एरिया मानचित्र भोपाल स्टेण्डर्ड अरबन एरिया मानचित्र संदर्भ ग्रन्थ सूची

XXXA XX - XXXIII AII - XIX III - AI

### तालिका सूची

| क्रमांक   |   | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---------------|
|   |   |               |
| 2.1   | सूर्य रिंमयों के वैदिक नाम                    | 36            |
| 5.1   | संस्कारधानी भौमिकीय एवं                       | 82            |
| production of the same of the | मिट्टी संरचना                                 | 2             |
| 5.2   | राजधानी नगर की भौमिकीय एवं                    | 83            |
|   | मिट्टी संरचना                                 |               |
| 5.3   | संस्कारधानी जलवायु                            | XXIX          |
| 5.4   | राजधानी नगर जलवायु                            | XXX           |
| 5.5   | जबलपुर नगर जनसंख्या विकास                     | 98            |
| 5.6   | भोपाल नगर जनसंख्या विकास                      | 99            |
| 5.7   | संस्कारधानी नगर आर्थिक संरचना                 | 101           |
| 5.8   | राजधानी नगर आर्थिक संरचना                     | 102           |
| 6.1   | संस्कारधानी भूमि उपयोग वितरण                  | 105           |
| 6.2   | राजधानी भूमि उपयोग वितरण                      | 106           |
| 6.3   | संस्कारधानी नगर शैक्षणिक स्थिति               | 115           |
| 6.4   | राजधानी नगर शैक्षणिक स्थिति                   | 116 .         |
| 6.5   | संस्कारधानी नगर में उपलब्ध चिकित्सा सुविधायें | 120           |
| 6.6   | राजधानी नगर में उपलब्ध चिकित्सा सुविधायें     | 121           |
| 7.1   | जबलपुर नगर जल आपूर्ति क्षमता का वितरण         | 145           |
| 7.2   | भोपाल नगर जल आपूर्ति क्षमता का वितरण          | 146           |
| 8.1   | संस्कारधानी नगर में विभिन्न तत्वों से उत्पन्न | 162           |
|   | रथापत्यवेदानुसार प्रभाव                       |               |
| 8.2   | राजधानी नगर में विभिन्न तत्वों से उत्पन्न     | 163           |
|   | स्थापत्यवेदानुसार प्रभाव                      |               |
| 9.1   | संस्कारधानी एवं राजधानी नगर भूमि उपयोग वितरण  | 176           |
| 9.2   | संस्कारधानी नगर जबलपुर प्रशासनिक क्षेत्र      | 174           |
|   |   |               |



# मानचित्र एवं रेखाचित्र सूची

| क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक के पश्चात                |     |  |
|---------|--|-----|--|
|         | , , , , , ,                            |     |  |
| 1.      | जबलपुर–भोपाल नगर स्थिति                | 7   |  |
| 2.      | स्पेक्ट्रोमीटर                         | 37  |  |
| 3. '    | जबलपुर नगर स्थलाकृति, मानचित्र         | 85  |  |
| 4.      | भोपाल नगर स्थलाकृति मानचित्र           | 88  |  |
| 5.      | जबलपुर नगर-जनसंख्या विकास              | 98  |  |
|         | रेखाचित्र                              |     |  |
| 6.      | भोपाल नगर-जनसंख्या विकास े             | 99  |  |
|         | रेखाचित्र                              |     |  |
| 7.      | जबलपुर नगर–जनसंख्या वितरण              | 100 |  |
|         | मानचित्र                               |     |  |
| 8.      | भोपाल नगर-जनसंख्या वितरण मानचित्र      | 100 |  |
| 9.      | जबलपुर नगर—आर्थिक संरचना रेखाचित्र     | 101 |  |
| 10.     | भोपाल नगर-आर्थिक संरचना रेखाचित्र      | 102 |  |
| 11.     | संस्कारधानी-भूमि उपयोग वितरण रेखाचित्र | 105 |  |
| 12.     | राजधानी–भूमि उपयोग वितरण रेखाचित्र     | 106 |  |
| 13.     | जबलपुर नगर प्रशासनिक क्षेत्र रेखाचित्र | 174 |  |
|         |  |     |  |

अध्याय ।



अध्याय ।



#### अध्याय 1

# भूमिका

नगरीय भूगोल नगरीय बस्तियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन का विज्ञान है। नगरीय भूगोल, भूगोल की एक नूतन शाखा है, जिसका अध्ययन 19 वीं शताब्दी के पूर्व तक मानव भूगोल के अन्तर्गत किया जाता था। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है के अनुसार विश्व में अनेक परिवर्तन हुये जिससे नगरीय बस्तियाँ भी अछूती न रह सकीं और इनके स्वरूप परिभाषा, समाजिक सांस्कृतिक, राजनैतिक व्यवस्था तथा नगरीय समस्याओं में पर्याप्त परिवर्तन हुये। इस नवीन नगरीय व्यवस्था के समग्र अध्ययन हेतु नगरीय भूगोल का उदभव हुआ।

वर्तमान नगरीय बस्तियां अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे नगरीय भूमि पर बढ़ता जनांकीय भार, नगरीय आकार आकृति में अनियमित अशांतीत वृद्धि सामाजिक मूल्यों का पतन, गन्दी बस्तियों का प्रसार, जल — मल निकासी, नगरीय सुविधाओं की अपर्याप्ता, यातायात, स्वास्थ्य आदि के कारण अनेक विषयों जैसे — इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र आदि के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है, किन्तु लगभग सभी विषयों का दृष्टिकोण नगर के किसी तत्व विशेष अथवा कुछ विशेष तत्वों तक सीमित होने के कारण समग्र अध्ययन सम्भव नहीं हो पाता है, जबिक नगरीय भूगोल का दृष्टिकोण न केवल मानवीय अथवा प्राकृतिक परिवेश तक ही सीमित नहीं है, वरन् दोनों का एक सन्तुलनात्मक अध्ययन भी है।

स्थापत्च वेद समस्त प्रकार के भवनों एवं बस्तियों के प्रकृति के अनुरूप निर्माण एवं नियोजन का विज्ञान है। स्थापत्य वेद अथर्ववेद का उपवेद है। इसके अन्तर्गत चित्रकला, मूर्तिकला एवं वास्तुकला का अध्ययन किया जाता है। प्राचीन काल में वर्तमान जैसा विभिन्न विषयों का विशेषीकरण नहीं हुआ था, क्यों कि उस समय तक वर्तमान जैसी भयावाह समस्यायें नहीं थी तथा उपर्युक्त तीनों शाखायें एक दूसरे से अन्तसम्बन्धित होने के कारण स्थापत्यवेद के अन्तर्गत इनका सम्मिलित रूप से अध्ययन किया जाता था। किन्तु समय परिवर्तन के साथ – साथ नगरीय विज्ञान का भी विशेषीकृत रूप से अध्ययन किया जाने लगा।

मानवीय चरम विकास का प्रतीक समझी जाने वाली वर्तमान नगरीय बस्तियों को यदि समस्याओं का प्रतीक कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। प्रत्येक समस्या के मूल में

k ne & corps when 1 fe for a selfered to the first with the facilities

कोई न कोई भूल अवश्य ही निहित होती है। ऐसा ही वर्तमान नगरीय समस्याओं के गर्भ में मानवीय भूल दृष्टिगोचर हो रही है। जनसंख्या में अशातीत वृद्धि दूरदर्शिता विहीन नगरी विकास, मानव एवं प्रकृति के मध्य सत्तामक संघर्ष जैसी मानवीय भूलों के परिणाम स्वरूपा वर्तमान नगरीय समस्यायें उत्पन्न हुई हैं। किन्तु हम यह सदैव ही भूल जाते हैं कि जब — जब मानव ने प्रकृति की सीमा लांघने का प्रयास किया है प्रकृति ने उसे किसी न किसी रूप में अवश्य ही नियन्त्रित किया है। मानव का यह एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि वह एक ओर चांद पर जा पहुंचा तथा दूसरे ग्रहों पर मानवीय बस्तियां बसाने का दावा कर रहा है, किन्तु दूसरी ओर अपनी पृथ्वी में निर्मित बस्तियों का समस्या विहीन बनाने के लिये अपंग, विकलांग सा खड़ा दिखाई देता है। अतः वर्तमान नगरीय समस्याओं का समाधान नवीन वैज्ञानिक तकनीक एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान के उचित सामंजस्य के माध्यम से खोजा जाना चाहिये।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में संस्कारधानी नगर जबलपुर तथा राजधानी नगर भोपाल के नगरीय भूगोल का स्थापत्य वेद की दृष्टि से विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। नगर प्रारम्भ से ही मानवीय क्रियाकलापों के केन्द्र बिन्दु रहे हैं; जो कि भूगोल के अध्ययन का एक प्रमुख क्षेत्र है। अतएव नगरों का प्राचीन काल से ही मानव के लिये महत्व रहा है। वर्तमान अन्धानुकरणवादी नगरीयकरण के परिणाम स्वरूप नगरीय समाज सुख शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करने की बजाये इन समस्याओं के मकड़जाल में फंसकर तनावयुक्त जीवन व्यतीत करने मजबूर है।अतः इसी परिप्रेक्ष्य में जबलपुर एवं भोपाल नगर के नगरीय भूगोल का प्रतीकात्मक रूप में स्थापत्य वेद के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

चयनित अध्ययन क्षेत्रों में भोपाल एक विकसित औद्योगिक एवं राजनैतिक नगर है, जबिक जबलपुर विकासशील है, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से जबलपुर नगर भोपाल नगर से अधिक प्राचीन है। इसके अलावा भोपाल नगर की अपेक्षा जबलपुर नगर के पास खनिज संसाधन, वन सम्पदा अधिक सुलभ हैं। फिर भी यह विरोधाभाष क्यों? क्या भोपाल नगर के विकास तथा जबलपुर नगर के अविकसित होने में स्थापत्यवेद का कोई योगदान है, यदि है तो किस सीमा तक? क्यों कि उपरोक्त दोनों नगर ही नगरीय समस्याओं से मुक्त नहीं हैं। ये नगरीय समस्यायें वर्तमान नगरीय समस्याओं से भिन्न नहीं हैं। अतएव इन नगरों का अध्ययन स्थापत्यवेद की दृष्टि से न केवल उचित प्रतीत होता है वरन् अन्य भावी नगरीय योजनाओं में समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी हो सकता है।

# 1.1 शोध प्रबन्ध का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का उद्देश्य निम्नानुसार है-

- 1. नगर नियोजन के भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- 2. चयनित नगरों की अकारिकी का अध्ययन
- 3. चयनित नगरों की आफारिकी का स्थापत्यवेद की दृष्टि से विश्लेषणात्मक अध्ययन
- 4. स्थापत्यवेद के विपरीत स्थित आकारकीय तत्वों से उत्पन्न समस्यायें एवं समाधान हेतु सुझाव
- 5. चयनित नगरों का विकास की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

#### 1.2 आद्याविध के प्रांगण में किया गया अध्ययन :

नगरीय बस्तियों का अध्ययन अनेक विषयों के विद्वानों ने अपने — अपने दृष्टिकोण से किया है। नगरीय भूगोल का साहित्य इतना अधिक विस्तृत हो चुका है कि, आद्याविध तक किये गये सम्पूर्ण अध्ययन का विवरण देना कितन है, किन्तु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में पूर्व अध्ययन का यथा सम्भव ध्यान रखा गया है। आधुनिक नगरों की स्थिति के बारे में सर्वप्रथम 1826 में वानथ्यूनेन द्वारा 'A theory of location for cities' नामक आधुनिक सिद्धान्तों से किया गया। इसके अतिरिक्त इस समय अनेक व्यक्तिगत नगरों पर भी अध्ययन हुये जैसे सी.एफ. एडम ने बोस्टन एवं शिकागो नगरों का तुलनात्मक अध्ययन (1966) जॉन एस. राइट द्वारा शिकागो पर (Chicago – past, present and Future chicago, 1868), एल. यू. रेविस द्वारा सेन्ट लुइस (Saint Louis the future great city of the world, saint Louis, 1875) एफ. बेबर द्वारा पेरिस नगर पर (The grouth of cities in the ninteent century A study in statistics, 1899) अध्ययन प्रस्तुत किया।

20 वीं शदी के प्रारम्भ में अनेक विद्वानों ने शोध पत्रों, लेखों, सिद्धान्तों तथा ग्रन्थों की रचना की। कुमारी ऐलेन सेम्पुल ने American Hostory and its Geographic conditions (1903) एम. हर्ड ने Principles of city lend values (1903) गिडीस ने cities in Envalution (1915) होमर हायट ने खण्ड सिद्धान्त (Sector Theory, 1930) बर्गेस ने

Urvan community (1933), आर.ई. डिकिन्सन ने city region and regionalism (1927), मैकेन्जी ने The matropolitan communeity (1933) मम्फोर्ड ने The cultural of cities (1938), डिकिन्सन ने Scape and status (1948) and The scope and mathod (1951) ग्रिफिथ टेलर ने Urban Geography (1951), जी चोबेट एवं बीजू गार्नियर ने Urban Geography (1967), विडाल डीला ब्लास मानव भूगोल के सिद्धान्त (1962) एच. एम. मेयर ने Urban Geography (1954) and survay of Urban Geography (1965), इंडियन एवं हार्टन फेंक ने Geographic perspective on Urban systems (1970), बी.जे. एल. बेरी Research Frontiers in Urban Geography (1965) आर. मरफी Urbanzation in Asia (1966) आदि प्रमुख रचनायें हैं। इसके अलावा इमरसन ने नयूयार्क (1908-9), पैट्रिक गेडिस ने एडिनवर्ग (1911) ग्रिफिश टेलर ने कैनबेरा (1914) हेरीस राइट ने अमेरिकी नगरों (1916) मम्फोर्ड स्टीम और हेग ने नय्यार्क (New York, Regional plan, 1925) एवर कम्बी ने लंदन, (The great Londan plan), डी मर्तोने ने व्यूनोज आयर्स (1935) डी व्हिटलसी ने सूडानी नगर कानों (1937) डिकिन्सन ने मध्य जर्मनी के नगरों Development and Distribution of the medievel German Town Gography, 1942 तथा The Morphology of the Medievel German Town, 1945), ओ. एच.के. स्पेट ने रंगून (1942), जियरर ने मेलबोर्न तथा ब्रिसबोर्न (1942) एवं सिडनी (1945) पियरी जार्ज ने पेरिस (1961) में अपना अध्ययन प्रस्तुत किया।

भारत वर्ष में नगरीय भूगोल का वास्तविक विकास स्वतन्त्रा प्राप्ति के पश्चात हुआ, किन्तु दक्षिण भारत (मद्रास) में सी.एस. श्री निशासचारी के शोध पत्र Grouth of the city of madras (1927) ही में नगरीय भूगोल की नींव पड़ चुकी थी। इसके पश्चात कुछ और विद्वानों द्वारा व्यक्तिगत नगरों का अध्ययन किया गया। जैसे — ए.एल. सुन्दर ने कारूर नगर जिला त्रिचनापल्ली (1933),बी.ई.एन. राव ने कांजीवरम (1937) ए.बी. एम. पेरियारा ने मंगलोर (1938) में सी.एम. आर. चेट्टियार ने कोयम्बटूर सुब्राहमणयम स्वामी ने तमिलनाडू के नगरों (1941) जार्ज कुरियन ने मद्रास (1941) आदि पर अपना अध्ययन कार्य प्रस्तुत किया।

केर र देखार । समाधिक के बार का केर हैं कि, ( eggs) (क्रिक्स करते कि का का कि प्रकार

1950 में ओ. एच. के स्पेट तथा इनायत अहमद ने गंगा के मैदान के पांच नगरों, एच. हर्ट हावर्ड ने अलीकढ़ (1955), योजना आयोग शोध कार्यक्रम समीति ने हैदराबाद — सिकन्दराबाद (1957), जमशेदपुर (1957), बड़ौदा (1958), एस.एन.सेन ने कलकत्ता (1960), मेमफील्ड ने An Urban Research study in narth India Urban systems and Economic Development (1962) आर. मरफी ने The city in the swamp aspects of the site and Early Grouth of Calcutta (1964), व्ही.एल.एस.वी.राव ने Towns of Maysor, ए.के. सेन ने बाकुरा नगर के सांस्कृतिक भू दृश्य (1956), डी एन. मुखर्जी ने सिलीगुड़ी नगर की कार्यात्मक पेटियों एवं प्रभाव प्रदेश (1956) ए.आर. कर महोदय ने कलकत्ता नगर, के. बागची ने हावड़ा सन्गगर का एक भौगोलिक अध्ययन (1966) निर्मल कुमार बोस ने कलकत्ता नगर के ही सामाजिक सांस्कृति 1962 में जान ई ब्रस के द्वारा चण्डीगढ़ नगर की सामाजिक संरचना का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

1955 में आर. एल. सिंह ने Banaras and its Umland, (1962) में उजागर सिंह ने Allahabad A study of Urban Geography (1958) में आशीष बोस ने The process of Urbanization in India(1964) में, एन.बी. सेवानी ने An Analysis of our Urbanization, एम. गुहा ने कलकत्ता, ए. बी. चटर्जी ने हावड़ा के नगरीय भूगोल, वीणापाणी मुखर्जी ने हुगली और इसका प्रदेश विषय पर (1949), एम. एस. जौहरी ने 1964 में Grouth and development of Urban settlement in the sutlej-yamuna divide, Panjab, (1971) में बी. पी. राव ने A study in Geography of port town, 1977 में ही कुसुमलता तनेजा ने Marphology of India cities तथा 1976 में कमलकान्त दुबे ने Use and misuse of land in Kaval नामक शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया। इनके अलावा सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने भागलपुर (1964) दीपा थापन ने भारत के स्पात नगर (1968) पर अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने व्यक्तिगत नगरों पर अध्ययन कार्य किया जैसे ए. रमेश ने उटकमंड (1964) सतीश चन्द्र सिंह ने आजमगढ़ (1963), एस.पी. सिंह ने लखनऊ (1959) 1972 में आर. सी. शर्मा ने राजस्थान के नगरों पर अपना अध्ययन किया।

मध्य पद्रेश में नगरीय भूगोल का अध्ययन 60 के दशक से ही प्रारम्भ माना जाता है। एस. एम. मिश्रा तथा प्रेमशंकर तिवारी ने कमशः 1961 एवं 68 में मध्य पद्रेश के नगरों का अध्ययन किया। के.एन. वर्मा ने 1962 में जबलपुर नगर, 1967 में ए.एन सिंह ने इटारसी नगर का अध्ययन प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त कुछ अप्रकाशित शोध प्रबन्ध भी प्रस्तुत किये गये जिनमें से वीरेन्द्र सिंह ने भोपाल शहर का नगरीकरण (1972), अनुराधा गुप्ता ने भोपाल स्थित रोशनपुरा के झुग्गी बस्ति का एक भौगोलिक अध्ययन (1991) रूप नारायण चतुर्वेदी ने 1972 में भोपाल के झुग्गी बस्तियों का सामाजिक सर्वेक्षण, आराधरना चौरसिया ने 1986 में भोपाल नगर की गुग्गी बस्तियों का भौगोलिक विवेचना, 1988 में रूकमणी नायडू ने म.प्र. के प्रमुख तीन नगरों (भोपाल, इन्दौर एवं जबलपुर) के नगरीकरण का एक अध्ययन, 1989 में लोकेश श्रीवास्तव ने Jabalpur city: Urban Groth and Development नामक अपना शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया।

स्थापत्य वेद प्राचीन भारतीय ज्ञान है जो कि वर्तमान समय में पुर्नोदय की स्थिति में है। इसके व्यवहारिक रूप से प्राचीन सभ्यताओं नगरों की खुदाई से पर्याप्त प्रमाण प्राप्त होते हैं जो कि स्थापत्यवेद अनुरूप ही निर्मित थे जैसे मोहन जोदड़ो, हडप्पा, मथुरा, द्वारिका, लंका, इन्द्रप्रस्थ इत्यादि । इसके अतिरिक्त वर्तमान में कुछ प्राचीन ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं जिन्हें कुछ विद्वानों ने पुनः अनुवाद कर प्रकाशित किया है जैसे मयमतम (ब्रूना डंगस) मानसार (आचार्य प्रसन्न कुमार), समरांगण सूत्रधार (द्विनेन्द्र नाथ शुक्ल) वास्तु सौख्यम (कमलकान्त शुक्ल), वास्तुराज वतम (अनूप मिश्र), वास्तु रत्नाकर (विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी), विश्वकर्मा प्रकाशः (गणेश दत्त पाठक), सूर्य सिद्धान्त (पं० माधव प्रसाद पुरोहित), वृहत् संहिता (सुरेश चन्द्र मिश्र),कौटिल्य अर्थशास्त (वाचस्पित गैरोल) आदि। इसके अतिरिक्त मत्स्यपुराण, स्कन्द पुराण, अग्निपुराण, आदि पुराणों में भी स्थापत्यवेद का विस्तार पूर्वक वर्णन प्राप्त होता है। बाल्मीकी रामायण, महाभारत, ऋग्वेद, अथर्ववेद आदि में कुछ स्थानों पर स्थापत्य वेद का वर्णन प्राप्त होता है।

वर्तमान समय में स्थापत्यवेद पुर्नोदय की अवस्था में होने के कारण इसके अधिक मात्रा में आधुनिक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है किन्तु अल्प समय में ही इसके एक सुगठित ज्ञान की शाखा के रूप में स्थापित होने की सम्भावना है। इसके अलावा द्विजेन्द्र नाथ शुक्ल का भारतीय वास्तुशास्त्र (1965) तारापद भट्टाचार्या की conons of art and stady of vastu shastra, रिवकानत झा की वास्तुकला का इतिहा (1991)

आदि है। इसके अलावा परमेश्वरी लाल गुप्त ने भारतीय वास्तुकला (1977) उमेश शास्त्री वास्तुशास्त्रम तथा वाणिज्यक वास्तुशास्त्र (1996) अनिल रामकृष्ण तारखेड़कर ने भारतीय वास्तुशास्त्र आदि की रचना की। इसके अलावा वर्तमान में जयपुर नगर वास्तुशास्त्रानुकूल निर्मित किया गया है तथा चण्डीगढ़ नगर के निर्माण में भी आंशिक रूप से भारतीय वास्तुशास्त्र का पालन हुआ है।

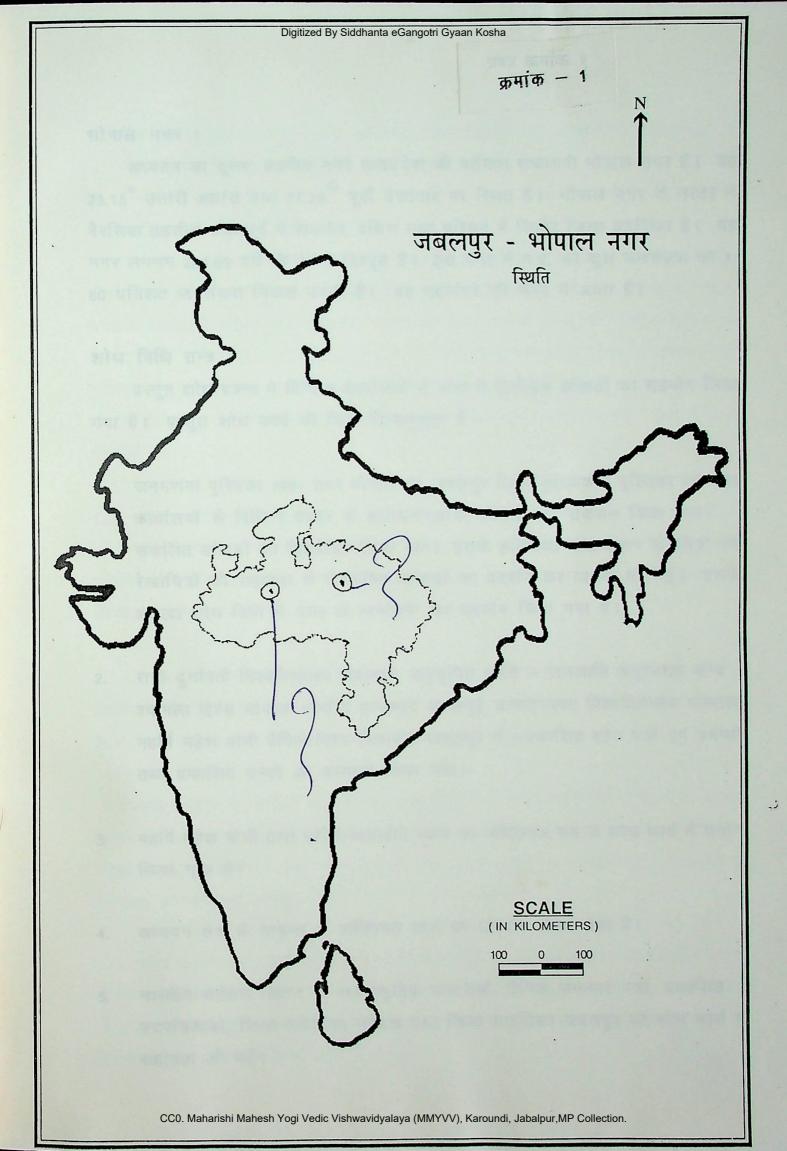
## 1.3 विषय वस्तु एवं अध्ययन क्षेत्र का चयन :

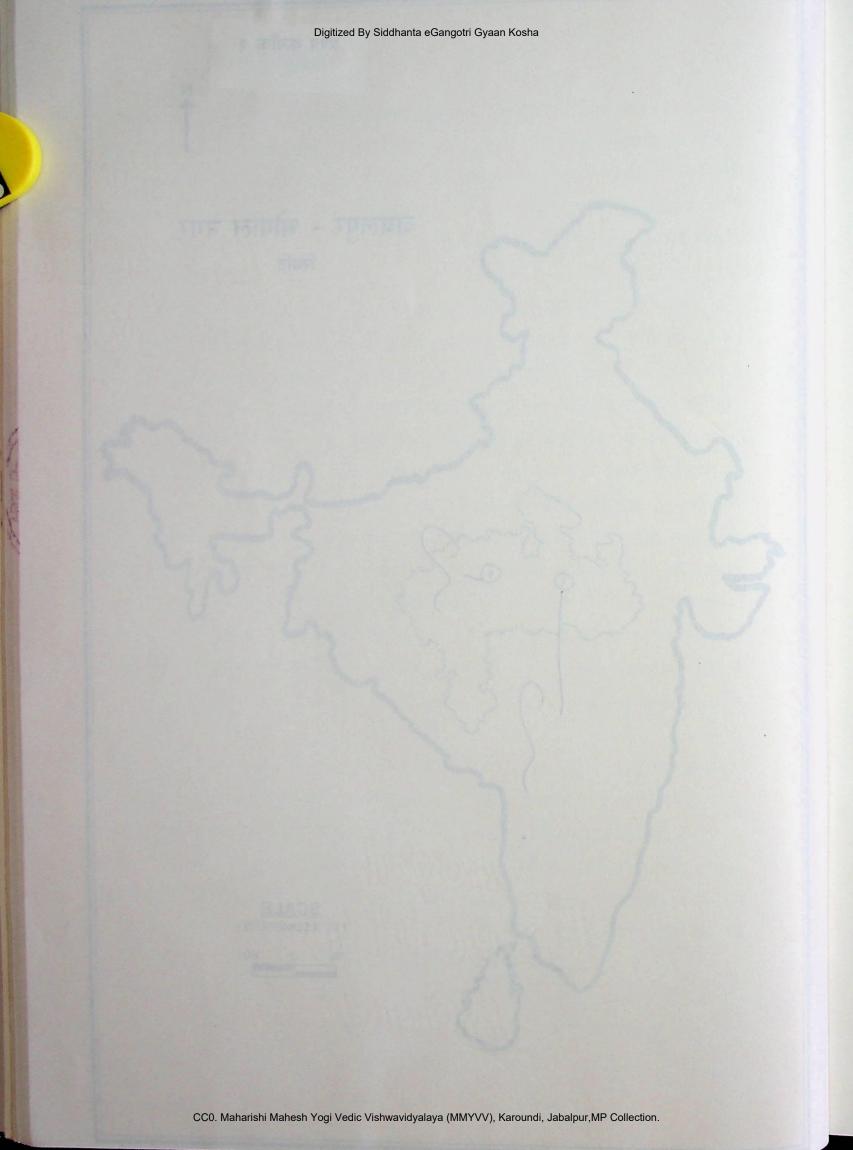
शोध कार्य हेतु संस्कारधानी नगर एवं मध्यप्रदेश की वर्तमान राजधानी नगर मोपाल का चयन किया गया है। वर्तमान नगरीय समस्याओं के परिणाम स्वरूप नगरीय जीवन दिन प्रतिदिन कष्टप्रद होता जा रहा है अतएव उपरोक्त दोनों नगर न तो आधुनिक नगरों से अलग हैं न ही इन की समस्यायें ही अलग है अर्थात दोनों नगर आधुनिक नगरों तथा नगरीय समस्याओं से घिरे नगरों में से ही है अतः इन दोनों नगरों का वर्तमान नगरीय समस्याओं के समाधान हेतु प्रतीकात्मक रूप में अध्ययन हेतु चुनाव किया गया है। इसके अलावा जबलपुर नगर के पास विकास की पर्याप्त सम्भावनायें हैं, किन्तु ये सम्भावनायें मात्र सम्भावनायें बनकर रह गई हैं, इसके विपरीत भोपाल नगर के पास जबलपुर की अपेक्षा विकास के कम संसाधन उपलब्ध है। फिर क्या कारण है कि जबलपुर नगर ऐतिहासिक, संसाधनिक दृष्टि से सुदृढ़ होते हुये भी विकास के पथ पर पीछे हैं। क्या भोपाल के विकास में स्थापत्यवेद का योगदान है यदि है तो कहां तक? इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिये उपर्युक्त दो नगरों का चयन किया गया है।

### जबलपुर नगर :

जबलपुर नगर भौगोलिक दृष्टि से भारत वर्ष के हृदय स्थल में 23.10° अक्षांस एवं 79.57° पूर्वी देशान्तर पर स्थित हैं। इस नगर के उत्तर में सिहोरा, ईशान में कुंडम, पूर्व में निवास, पश्चिम में पाटन तहसीलें तथा दिक्षण में सिवनी जिला स्थित है। जबलपुर नगर का निर्माण 7 प्रशासनिक केन्द्रों से मिलकर हुआ है। जबलपुर नगर के उत्तर में स्थित सिहोरा से कर्क रेखा गुजरती है।







#### भोपाल नगर :

अध्ययन का दूसरा चयनित नगर मध्यप्रदेश की वर्तमान राजधानी भोपाल नगर है। यह 23.15° उत्तरी अक्षांस तथा 77.25 पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। भोपाल नगर के उत्तर में बैरसिया तहसील तथा पूर्व में रायसेन, दक्षिण तथा पिश्चम में सिहोर जिला अवस्थित है। यह नगर लगभग 284.09 वर्ग कि.मी. में विस्तृत है। इस नगर में म.प्र. की कुल जनसंख्या का 1. 60 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यह महानगर की श्रेणी में आता है।

#### शोध विधि तन्त्र :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त में द्वितीयक आंकड़ों का सहयोग लिया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य की विधि निम्नानुसार है –

- 1. जनगणना पुस्तिका 1991 तथा भोपाल एवं जबलपुर जिला सांख्यकीय पुस्तिका एवं अन्य कार्यालयों से विभिन्न प्रकार के अध्ययनोपयोगी आंकड़ों का संकलन किया गया। संकलित आंकड़ों को विश्लेषित किया गया। इसके अतिरिक्त यथा स्थान मानचित्रों एवं रेखाचित्रों की सहायता से विश्लेषित आंकड़ों का प्रदर्शन कर व्यख्या की गई। इसके अलावा शोध विधि में नगर के मानचित्रों का उपयोग किया गया है।
- 2. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, अनुसूचित जाति जनजाति अनुसंधान केन्द्र श्यामला हिल्स भोपाल, केन्द्रीय ग्रन्थालय जबलपुर, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय, जबलपुर में अप्रकाशित शोध पत्रों एवं प्रबन्धों तथा प्रकाशित ग्रन्थों का अध्ययन किया गया।
- 3. महर्षि महेश योगी द्वारा प्रणीत भावातीत ध्यान का व्यक्तिगत रूप से शोध कार्य में प्रयोग किया गया है।
- 4. अध्ययन क्षेत्र के सम्बन्ध में व्यक्तिगत ज्ञान का उपयोग किया गया है।
- 5. भारतीय सर्वेक्षण विभाग के स्थलाकृतिक मानचित्रों, दैनिक समाचार पत्रों, प्रकाशित पत्रपत्रिकाओं, जिला गजेटियर भोपाल तथा जिला गजेटियर जबलपुर की शोध कार्य में सहायता ली गई।

the sell every to (sets friederste in prov Felial is the late

ह्ये विचार विमर्श का प्रयोग भी शोध प्रबन्ध में किया गया है।

# 1.4 शोध कार्य की सीमायें :

नगरीय भूगोल सम्बन्धी अध्ययन जहां श्रमसाध्य है वहीं दूसरी उतना ही खर्चीला भी है। शोध कार्य का क्षेत्र भी पर्याप्त विस्तृत है इसके अलावा वर्तमान में वास्तुशास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध होना भी कठिन एवं श्रमसाध्य, व्ययसाध्य हैं। चयनित नगरों के नगरीय भूगोल के अध्ययन का कठिन होने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि दोनों नगर नगरीकरण की संक्रमण की अवस्था है। जहां एक ओर भोपाल नगर हाल ही में (1991) महानगर के पद पर पदासीन हुआ है, वहीं दूसरी ओर जबलपुर नगर महानगर के ताजपोशी की तैयारी में लगा हुआ है।

### 1.5 शोध प्रबन्ध की रूपरेखा:

सुनियोजित अध्ययन की दृष्टि से 'संस्कारधानी नगर एवं राजधानी नगर (जबलपुर और भोपाल) का नगरीय भूगोल — स्थापत्यवेद के सन्दर्भ में एक अध्ययन' को दस अध्यायों में विभक्त कर अध्ययन कार्य पूर्ण किया गया है।

प्रथम अध्याय में वर्तमान नगरीय समरायाओं तथा नगरीय भूगोल का संक्षिप्त विश्लेषण, आद्याविध में किये गये अध्ययन का विवेचन, क्षेत्र का चयन, शोध कार्य की विधियों एवं शोध कार्य की सीमाओं तथा रूपरेखा की विवेचना की गई है।

शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में स्थापत्यवेद का विश्लेषण किया गया है। इसके अन्तर्गत स्थापत्यवेद का अर्थ, शाखाओं (चित्रकला, मूर्तिकला एवं वास्तुकला) का विवेचन किया गया है इसके विषय वस्तु, विकास, महत्व तथा इसकी वैज्ञानिक अवधारणाओं, वास्तुशास्त्र का अर्थ परिभाषा का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्ययन में नगरीय भूगोल का परिचयात्मक अध्ययन किया गया है जिसके अन्तर्गत नगरीय भूगोल का अर्थ, विकास इसकी विषय वस्तु, का विश्लेषण किया गया है। इसके अलावा नगर की अवधारणा, नगर नियोजन का अर्थ, उद्वेश्य विषय वस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। ducies of an interior account to equipment of the spirit o

VIVE TO THE TIES

का एक अपना मान कर होता हो से अपना अपना अपना अपना कर । जहाँ रेट्ड आर सोमान सरह होता हो से (1991) महानगर हो मह

ten a fruit de fletinate de reseau enservers alle ter

शोध प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय में नगर नियोजन के विभिन्न प्राचीन एवं नवीन सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है। चूंकि शोध प्रबन्ध का मूल ध्येय नगरों को समस्या विहीन बनाकर नागरिकों के सुखी समग्र विकसित जीवन है अतः यहां पर प्राचीन तथा अर्वाचीन नगर नियोजन के सिद्धान्तों का विश्लेषण उपयुक्त प्रतीत होता है। इसमें वास्तुशास्त्र के प्रमुख वास्तुशास्त्रीय नगर नियोजन के सिद्धान्त तथा नगरीय भूगोल के नगर नियोजन के सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया है इसके अलावा वास्तुशास्त्रीय एवं भौगोलिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन कर एक प्रसुद्ध कि सिद्धान्तों संकल्पना प्रस्तुत की गई है जिसमें आधुनिक तकनीिक एवं प्राचीन भारत्र यू जान के उचित कर पूर्व किया गया है।

शोध प्रबन्ध के पंचम अध्याय संस्कारधानी नगर जबलपुर तथा राजधानी नगर भोपाल का परिचायात्मक अध्यान किया या है। जिसके अन्तर्गत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, नामोत्तपत्ति, जलवायु, भू—आकृतिक विभवतायें, अपवाह तन्त्र, जनांककीय विशेषतायें, भू—गर्भिक संरचना, आदि का अध्ययन किया गया है, क्यों कि ये वे तत्व हैं जो किसी नगर के जन्म तथा पतन दोनों के ही कारण बनते हैं तथा इनसे जहां तक एक ओर नगर तथा नगरीय विकास प्रभावित होता है वहीं दूसरी ओर उपरोक्त तत्वों को नगर प्रभावित भी करता है।

शोध प्रबन्ध के पष्ठम् अध्याय में भोपाल तथा जबलपुर नगर की आकारकीय विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है क्यों कि किसी भी नगर का अध्ययन एक भूगोलवेत्ता जीवन इकाई के रूप में करता है, अर्थात नगरीय अकारिकी से ही नगर की पहचान बनती है।

शोध प्रबन्ध के सप्तम् अध्याय में जबलपुर एवं भोपाल नगरों की नगरीय आकारिकी का वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। जिसके अन्तर्गत भौतिक स्थिति, ब्रह्म स्थल, जल आपूर्ति, जलमल निकासी व्यवस्थां, विभिन्न संस्थानों एवं प्रतिष्ठानों की स्थिति का वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषण किया है।

शोध प्रबन्ध के अष्टम अध्याय के अन्तर्गत जबलपुर एवं भोपाल नगर में स्थापित विभिन्न संस्थानों एवं प्रतिष्ठानों की वास्तुशास्त्र के प्रतिकूल स्थान पर स्थित होने से उत्पन्न दुष्परिणाम तथा इन दुष्परिणामों की रोकथाम हेतु सुझाव दिये गये हैं। ्रे क्रम का उपयोग किया गया है।

ा परिवासित कार्यात्म अस्ति है। दिस्त जनावन ऐतिहासित प्रवासित प्रवासित कार्यात्मातिक

अधि कार प्रकार के प्राप्त के के किया के हैं कि है कि है कि विकास के प्राप्त के प्राप्त कर के प्राप्त कर है। कि

के ही कारण वस्ते हैं तथा इसमें जान तांक राज और तथा समाध्य विकास प्रभाव कि के

शोध प्रयस्थ को सुराम अध्याय स जावलवर एव भावाल नगरों की नगरीब आधिक क्षां

to be been so present to lengther by use

नवम् अध्याय में जबलपुर तथा भोपाल नगर का विभिन्न तत्वों जैसे — गन्दी बिस्तियों, प्रशासकीय सीमाओं, भूमि उपयोग, आर्थिक परिपेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन के आभाव में यह निष्कर्ष निकालना अत्यन्त कठिन है कि कौन सा नगर अधिक समृद्धशाली है।

शोध प्रबन्ध के अन्तिम अध्याय दस में जबलपुर और भोपाल की विभिन्न समस्याओं की चर्चा की गई है तथा इन समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं। चूंकि जबलपुर नगर, भोपाल नगर की अपेक्षा अधिक प्राचीन है तथा प्रकृति ने उसे पर्याप्त संसाधन प्रदान किये हैं, किन्तु आवश्यकता कि विकित्त उन संसाधनों को विवेकपूर्ण ढंग से दोहन किया जाये।

## 1.6 प्रमुख योगदान :

नगरीय भूगोल तथा स्थापते विक्रिक सुद्धि में जबलपुर एवं भोपाल नगरों के अध्ययन से ऐसे अनेक सैद्धान्तिक एवं अनुभविक तथ्य सामने आये जिनका उल्लेख अध्ययन क्षेत्र में पहली बार किया गया है। जबलपुर एवं भोपाल नगर के नगरीय भूगोल का स्थापत्यवेद के सन्दर्भ में किये गये शोध अध्ययन में निम्नांकित तत्वों का प्रमुख योगदान कहा जा सकता है—

- 1. स्थापत्यवेद के सन्दर्भ में किसी नगर के नगरीय भूगोल का अध्ययन प्रथम तथा मौलिक प्रयास है।
- नगर नियोजन के भौगोलिक तथा वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का विश्लेषण कर नवीन रूप में प्राकृतिक सिद्धान्तों के अनुरूप संसोधित रूप में एक आदर्श नगर की परिकल्पना प्रस्तुत की गई है।
- 3. जबलपुर नगर की प्रशासकीय परिसीमाओं का प्रथम बार आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।
- 4. वर्तमान नगरों में बढ़ती हुई गन्दी बस्तियों की समस्या का इतना अधिक विकराल रूप प्रथम बार सामने आया है। यह मात्र इस तथ्य से स्पष्ट है कि जबलपुर नगर निगम क्षेत्र में यहां की कुल जनसंख्या का 84 प्रतिशत भाग निवास करता है।
- 5. शोध प्रबन्ध में कुल 13 मौलिक मानचित्रों, आलेखों एवं रेखाचित्रों का प्रयोग किया गया है।

6. स्थापत्यवेद की सारगर्भित व्याख्या जैसे अर्थ, शाखायें, विषयवस्तु, वैज्ञानिक अवधारणा प्रस्तुत करने वाला प्रथम प्रयास है।

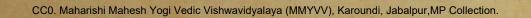
इसके अलावा भाषा को ग्राह्म बनाने के लिये भाषा का सामान्यीकरण कर दिया गया है। शोध प्रबन्ध के अन्त में ऐसे सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची दी गई है जिनका प्रयोग शोध प्रबन्ध में किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से अपेक्षा की जाती है कि यह शोध कार्य भूगोल तथा स्थापत्य वेद के उचित सन्तुलन के माध्यम से नवीन नगरीय व्यवस्था स्थापित करने में सहायक होगा जिसमें सभी नगरवासी सुखी एवं समृद्धशाली होगें साथ ही साथ भूगोल एवं स्थापत्य वेद के साहित्य में अपेक्षित वृद्धि होगी।

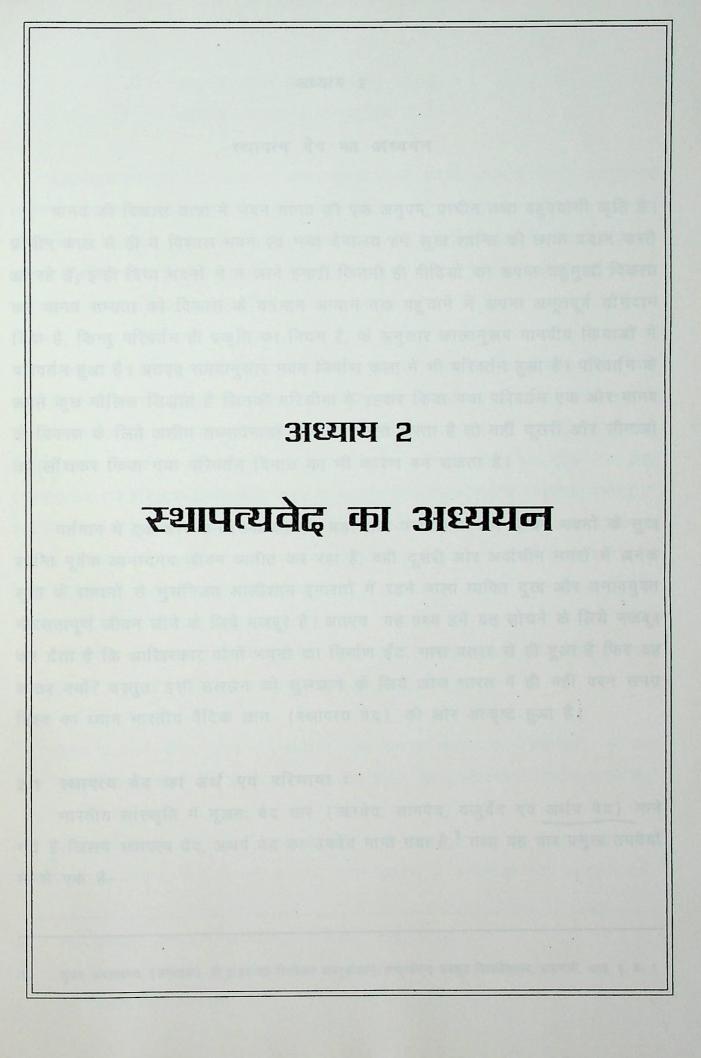


CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

अध्याय 2

स्थापत्यवेद् का अध्ययन





#### अध्याय 2

### स्थापत्य वेद का अध्ययन

मानव की विकास यात्रा में भवन मानव की एक अनुपम, प्राचीन तथा बहुपयोगी कृति है। प्राचीन काल से ही ये विशाल भवन एवं भव्य देवालय हमें सुख शान्ति की छाया प्रदान करते आ रहे हैं; इन्ही दिव्य भवनों ने न जाने हमारी कितनी ही पीढ़ियों को अपना चहुं मुखी विकास कर मानव सभ्यता को विकास के वर्तमान आयाम तक पहुंचाने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है, किन्तु परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है, के अनुसार कालानुरूप मानवीय कियाओं में परिवर्तन हुआ है। अतएव समयानुसार भवन निर्माण कला में भी परिवर्तन हुआ है। परिवर्तन के अपने कुछ मौलिक सिद्धांत हैं जिनकी परिसीमा में रहकर किया गया परिवर्तन एक ओर मानव के विकास के लिये असीम सम्भावनाओं में मार्ग प्रशस्त करता है तो वहीं दूसरी ओर सीमाओं को लॉ घकर किया गया परिवर्तन विनास का भी कारण बन सकता है।

वर्तमान में एक ओर जनसंख्या का एक बड़ा भाग परम्परागत ढंग से बने भवनों के सुख शान्ति पूर्वक आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रहा है, वहीं दूसरी ओर अर्वाचीन नगरों में अनेक सुख के साधनों से सुसज्जित आलीशान इमारतों में रहने वाला व्यक्ति दुख और तनावयुक्त नीरसतापूर्ण जीवन जीने के लिये मजबूर है। अतएव यह तथ्य हमें यह सोचने के लिये मजबूर कर देता है कि आखिरकार दोनों भवनों का निर्माण ईंट, गारा पत्थर से ही हुआ है फिर यह अन्तर क्यों? वस्तुतः इसी उलझन को सुलझाने के लिये आज भारत में ही नहीं वरन समग्र विश्व का ध्यान भारतीय वैदिक ज्ञान (स्थापत्य वेद) की ओर आकृष्ट हुआ है।

## 2.1 स्थापत्य वेद का अर्थ एवं परिभाषा :

भारतीय सांस्कृति में मूलतः वेद चार (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अर्थव वेद) माने गये हैं जिसमें स्थापत्य वेद, अथर्व वेद का उपवेद माना गया है, विशा यह चार प्रमुख उपवेदों में से एक है—

<sup>1.</sup> शुक्ल, कमलाकान्त (सम्पादक) श्री टोडर मल विरचितम् वास्तुसौख्यम्, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1998, पृ. क. 1

आयुर्वेदो, धनर्वेदो गन्धर्वश्रेच्ति ते श्रयः । स्थापत्य वेदमपरमुपतेदश्रच्तुर्विद्यः ।।<sup>2</sup>

सामान्यता स्थापत्य वेद का आशय मात्र वास्तुशास्त्र से लगाया जाता है, किन्तु वास्तुशास्त्र स्थापत्य वेद की एक शाखा मात्र है न कि सम्पूर्ण स्थापत्य वेद। स्थापत्य वेद मूलतः संस्कृत के दो शब्दों स्थापत्य + वेद से बना है। स्थापत्य संस्कृत की तिष्ठ धातु से बना है जिसका आशय स्थापित करना है तथा वेद संस्कृत की विद् धातु से बना है जिसका अर्थ ज्ञान है। अतः स्थापत्य वेद का शब्दिक अर्थ स्थापित करने का ज्ञान है।

स्थापत्य वेद के बहु आयामी तथा सर्वव्यापी स्वरूप के कारण इसकी परिभाषा तथा विषय वस्तु में समयानुसार परिवर्तन होता रहा है। प्रकृति प्रारम्भ से ही सत्त परिवर्तनशील रही है अतएव मानवीय कियाकलापों आवश्यकताओं, रूचि आदि में प्रारम्भ से ही परिवर्तन होता रहा है तथा इसी आधार पर स्थापत्य वेद में भी समयानुसार परिवर्तन होना स्वभाविक है। अतः स्थापत्य वेद की परिभाषा विषय वस्तु आदि के सम्बन्ध में आंशिक रूप से वैचारिक मतभेद हैं, क्योंकि स्थापत्य वेद भारतीय ज्ञान की प्राचीनतम शाखाओं में से एक है, अतः समय समय पर विद्वानों ने काल परिवेशानुसार अपने — अपने दृष्टिकोण से इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है।

वर्तमान में स्थापत्य का आशय केवल वास्तुशास्त्र से लगाया जाता है, जैसा कि कृष्णदत्त बाजपेयी जी कहते हैं — 'स्थापत्य भवन निर्माण कला है।'<sup>3</sup>

शिवराम आप्टे के अनुसार — 'स्थापत्य शब्द कमशः स्थापत्यम् (स्थापित) + ष्यज् अन्तः पुर का रक्षक से निर्मित है अर्थात स्थापत्यम् वास्तु विद्या और भवन निर्माण कला है।

उपरोक्त परिभाषाओं तथा विद्वानों के कथनों से स्पष्ट होता है कि स्थापत्य वेद मात्र निर्माण का पदार्थजन्य ज्ञान ही नहीं है वरन् भवन निर्माण से सम्बन्धित सभी मानवीय एवं

<sup>2.</sup> खेमक, राधेश्याम, (सम्पादक) , कल्याण, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1999 पृ.क. 143

<sup>3.</sup> वाजपेयी, कृष्ण दत्त, भारतीय वास्तु कला का इतिहास, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान लखनऊ, पृ. क. 1

<sup>4.</sup> आप्टे, शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोष



प्राकृतिक तथ्यों के सामंजस्य को विज्ञान है अतएव हम सार संक्षेप में स्थापत्य को निम्न शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं—

'वे सभी शिल्प कलायें जिनमें देश कालानुरूप मानव एवं प्रकृति के उचित सामंजस्य को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया हो स्थापत्य है।'

### 2.2 स्थापत्य वेद का उद्भव एवं विकास :

स्थापत्य वेद के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत हैं, किन्तु यह शाश्वत सत्य है कि स्थापत्य वेद का बीजांकुर उसी समय हो गया था जब से मानव का इस वसुंधरा पर अवतरण हुआ और उसने आवास के निर्माण का प्रथम प्रयास किया। स्थापत्य वेद का वैदिक काल तक पर्याप्त विकास हो चुका था। सामान्यतया स्थापत्य वेद का उद्भव ब्रह्मा से माना जाता है जैसा कि समरांग्डण सूत्राधार के रचेयता का मानना है—

चतुः प्रकार स्थापत्यमष्टधा च चिकित्सभ्। धनुर्वेदच्श्र सातागुङो ज्योतिषं कमलालयात।।

इसी प्रकार का एक उपाख्यान श्री मद भावगवत में प्राप्त होता है-

'आयुर्वेदं धनुर्वेदं वेदान्तः। स्थापत्यं च सृजतवेदं कृमापूर्वा दिमिमुखे ।।

कुछ विद्वान स्थापत्य वेद का उद्भव विश्वकर्मा से मानते हैं। स्थापत्य वेद सर्व प्रथम लिपिबद्ध रूप में भृग्वेद की एक भृचा में रूप में दृष्टिगोचर होता है, जिसमें वास्तुदेव की स्तुति की गई है—

<sup>5.</sup> शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ ;सम्पादकद्ध, समरांग्ण सूत्रधार, मेहरचंद लक्षमण दास, पब्लिकेशन्स, दिखागंज, दिल्ली 1965, 22/77

<sup>6.</sup> श्रीमद् भागवत्, 3/12/38

'वास्तोष्पते प्रतिजानीहरमान, त्स्वावेशो अनीमीवो भवानः। यत् त्वेमहेप्रतितन्नों जुषस्व शनोभव द्विपदेशं चतुष्पदे।।

नगर नियोजन, निर्माण आदि वैदिक काल तक पर्याप्त मात्रा में विकसित हो चुका था जिसके प्रभाव अथर्ववेद ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं यथा —

हुहैव ध्रुवानि मिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठति घुतमेक्षमावा । तांत्वाशाले सर्ववीराः सुवीरा उरिष्टवीरा उपसंचंरेम् ।।

वेद साहित्य है और साहित्य में मुख्यतया वही घटनायें प्रवेश पाती हैं जो परम्परा में समा चुकी हों। अतएव वेदों में विर्णत स्थापत्य कला मे सिन्धुघाटी सभ्यता के नगरों में दृश्य रूप में दर्शन होते हैं। सम्भवतया सिन्धु घाटी की सभ्यता आर्यो अनार्यों के उत्थान पतन की सिम्मिलित सभ्यता है इसी लिये कुछ विद्वान हड़प्पा की तुलना हरियूपिया से करते हैं। सिन्धु कालीन नगरों का विकास एक सुनियोजना के तहत किया गया प्रतीत होता है क्योंकि इन नगरों में सुविकसित सड़कें, नालियां अन्नागार, स्नानागार तथा एक मंजिल अथवा इससे बड़े भवनों से अवशेष पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुये हैं। अनेक विद्वान तो यहां तक स्वीकार करते हैं कि मोहन जोदड़ों के समान सुन्दर नालियों की व्यवस्था किसी भी देश में नहीं थी। 11 चूंकि सिन्धुघाटी की सभ्यता 5000 वर्ष प्राचीन है। 3 अतएव कुछ विद्वान इसे ही वैदिक काल की संज्ञा देते हैं, 13 क्योंकि वेदों का रचना काल भी लगभग यही है। 14

<sup>7.</sup> ऋग्वेद 7/54/1

<sup>8.</sup> अथर्व वेद 3/3/1

<sup>9.</sup> दिनकर, रामाधार सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, उदयाचल आर्य कुमार रोड, पटना, 1962, पृ. क. 426 - 27

<sup>10.</sup> वाजपेयी, कृष्ण दत्त, वही पृ. क. 17

<sup>11.</sup> उपरोक्त, पृ. क. 28

<sup>12.</sup> उपरोक्त, पृ.क. 14

<sup>13.</sup> श्रीवास्तव, शिव कुमार एवं वाजपेयी, रामदुलारे, भरतवर्ध का सांस्कृतिक गौरव, नवभारती प्रकाशन, मेरठ, 1949, पृ.क. 68

<sup>14.</sup> उपरोक्त.



वेदों के अलावा पुराणों में भी पर्याप्त मात्रा में स्थापत्य वेद का उल्लेख प्राप्त होता है। प्रमुख रूप से मत्स्य पुराण, स्कन्द पुराण, अग्नि पुराण इत्यादि में तो स्थापत्य वेद के चहुं मुखीएवं तत्कालीन विकास की स्पष्ट रूप से झांकी देखने मिलती है, जैसा कि मत्स्य पुराण में वास्तु विद्या के 18 प्रमुख आचार्यों का वर्णन किया गया है—

'मृगुरित्रविशिष्ट्राविश्वकर्मा मयस्तथा। नारदो नगन्नजिन्द्रचैव विशालक्षः पुरन्दरः।। ब्रह्मकुमारो नन्दीशः शोनको गर्ग एवं च । वासुदेवो अनिद्धच्य्र तथा शुक्र वृहस्पतिः।।

विश्वकर्मा देव स्थापित तथा मय असुर स्थापित थे। 16 आज भी आचार्य शुक्र नीतिः में स्थापत्यवेद का बड़ा ही सूक्ष्म रूप से वर्णन प्राप्त होता है। 17 उत्तर वैदिक काल, महाकाव्य काल एवं पूर्व वैदिक काल का सन्धि काल माना जाता है। 18 वैदिक काल के पश्चात महाकाव्य काल में स्थापत्य वेद और अधिक परिष्कृत न केवल साहित्यिक रूप में प्राप्त होता है वरन व्यवहारिक रूप में भी अयोध्या, लंका, मिथिला, जनकपुरी, किस्किन्धा इत्यादि नगरों के रूप में देखने मिलता है। इन नगरों को सुनियोजित ढंग से बसाया गया था, यहां पर यथा स्थान नगर वासियों के उपयोग हेतु उद्यान, कूप, बावली, आवास मार्गो तथा सुरक्षा इत्यादि की उत्तम व्यवस्था थी। यथा—

कपाट तोरणवतीः सुविभक्तान्तरापणाम। सर्वयन्त्रायुधवतीमुषिता सर्वशिलिपभिः।।

इस काल में केवल नगर निर्माण में नगरवासियों के उपयोग एवं व्यवहारिकता का ही ध्यान नहीं रखा गया, वरन् नगरों की सुन्दरता पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है। क्यों कि मानव मन चंचल तथा सदा से ही सुन्दरता के प्रति आकर्षित होता रहा है। अतएव केवल उपयोग एवं व्यक्तिरिकता की दृष्टि से सौन्दर्य विहीन निर्माण नीरसता भरे होंगे अर्थात मानव

<sup>15.</sup> मत्स्य पुराण 252/

<sup>16.</sup> वाजपेयी, कृष्ण दत्त, वही पृ. क. 5

<sup>17.</sup> मिश्र, जगदीश चन्द्र, (व्याख्याकार), शुक्रनीतिः चौखम्बा सुरमारती प्रकाशन, वाराणसी 1998

<sup>18.</sup> श्रीवास्तव, शिव कुमार एवं वाजपेयी, रामदुलारे, वही पृ.क्र. 77

<sup>19.</sup> बाल्मीकि, रामायण, 5/10



CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

में उल्लास के लिये सुन्दरता का होना भी आवश्यक है। इसलिये इस काल में नगरों एवं भवनों की सुन्दरता पर पर्याप्त ध्यान दिया गया था, जिसके प्रमाण राचरित मानस, वाल्मीकि रामायण जैसे ग्रन्थों मे पर्याप्त मात्रा में देखने मिल जाते हैं। यथा—

> वप्रप्राकारजंघानां विपलाम्बुबनाम्बराम्। शतन्धीशूलकेशन्तामट्टालकावतंसकाम, मनसेवकृतां लंका निर्मितां विश्वकर्मणा।।<sup>20</sup>

रामयण काल के समान ही महाभारत काल में भी अनेक महानगर थे जिनके सम्बन्ध अन्य दूसरे राज्यों से सड़क मार्गी द्वारा था। इस काल में हिस्तिनापुर, कोशाम्बी, मगध, मथुरा, द्वारिका, इन्द्रप्रस्थ जैसे महानगर थे जो कि सम्मुन्नत सभ्यता एवं विकसित स्थापत्य का प्रमाण देने के लिये पर्याप्त हैं। द्वारिका का निर्माण श्रीकृष्ण के कहने पर विश्वकर्मा द्वारा किया गया था जो कि ई. पू. 1400 में जलमग्न हो गई। 21 अर्थात ई.पू. 1400 के पूर्व ही महाभारत युद्ध हो चुका था, तथा इस समय तक स्थापत्य वेद एक समुन्नत विज्ञान के रूप में विकसित हो चुका था। इन्द्रप्रस्थ का निर्माण श्रीकृष्ण के आदेश पर विश्वकर्मा तथा मय ने किया था।

'कुरुष्य कुरुराजाय महेन्द्रपुर सनिमम्। इन्द्रेण कृतनामानमिन्द्रप्रस्थं महापुरम्। 22

महाकाव्य काल के पश्चात बौध कालीन पालि साहित्य में भी स्थापत्य से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ एवं रोचक जानकारियां प्राप्त होती है जैसे ब्रह्म जाल सुत्त में विष्धुविज्जा (वास्तु विद्या) दिया गया है। <sup>23</sup> जिसमें तत्कालीन स्थापत्य कला का सुरूचिपूर्ण एवं वैज्ञानिक परक वर्णन प्राप्त होता है। इस काल में महा गोविन्द नामक शिल्पी का वर्णन आया है जिसने ई.पू. 500 में राजगृह आदि अनेक बड़े नगरों की निर्माण योजना प्रस्तुत की।<sup>24</sup> मौर्य काल के

<sup>20.</sup> बाल्मीकि, रामायण, 2/21

<sup>21.</sup> वाजपेयी, कृष्ण दत्त, वही पृ. क. 13

<sup>22.</sup> महाभारत, आदि पर्व 206/28

<sup>23.</sup> वाजपेयी, कृष्ण दत्त, वही पृ. क्र. 49

<sup>24.</sup> उपरोक्त, पृ. क्र. 52



आते — आते स्थापत्य में पर्याप्त निखार आ चुका था। मौर्य काल में मौर्य सम्राटों ने स्थापत्य की दृष्टि से अनेक बौद्ध मठ राजमहल कीर्ति स्तम्भ शैल गुफाओं आदि का निर्माण कराया जिसकी गौरवगाथा भूवनेश्वर के मन्दिर, खण्डिगिरि जैसी शैल गुफायें कहते हुये प्रतीत हो रही है इसी प्रकार के विकसित नगरों का विश्लेषण कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में बड़े ही सुन्दर एवं वैज्ञानिक रूप में किया है। यथा —

'प्रवीरे वासतुनि राजनिवेशश्रच्तुर्वण्य समाजीवे। वास्तुहृदयादुत्तरे नव भागे यथोक्त विधानमन्तःपुरं प्राड्मुखमुदढमुखं वा कारयेत।।<sup>25</sup>

इसके अतिरिक्त वर्ण व्यवस्था के अनुरूप आवास तथा उनकी माप मार्गों की माप आदि का अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने बड़ी सूक्ष्मता पूर्वक विवेचना किया है। इसी प्रकार मौर्य कालीन नगरों के विकसित स्वरूप का वर्णन मेगास्थनीज ने पाटलीपुत्र के सन्दर्भ में किया है उसके अनुसार 'पाटिलिपुत्र भारत का सबसे बड़ा नगर है, और यह गंगा तथा सोन नदी के संगम पर बसा हुआ है। यह नगर साढ़े नौ मील लम्बा तथा दो मील चौड़ा है। नगर के चारों ओर 600 फुट चौड़ी तथा 45 फुट गहरी खाई है। शहर के चारों ओर लकड़ी की दीवार है जो कि 570 बुर्जों से सुशोभित है तथा 64 द्वार बने हुये हैं। '26

मौर्य सामराज्य का अन्त 185 ई.पू. मौर्य शासक जयद्रथ के सेनापित पुष्यिमत्रशुंग ने किया तथा शुंग सामराज्य की स्थापना की जो कि वैदिक धर्म के अनुन्यायी थे। शुंग शासन काल मे भारहुत, बोध गया, सांची आदि के वृहद तथा प्रसिद्ध स्तूपों का निर्माण हुआ। 73 ई. पू. पुष्यिमत्रशुंग के बड़े पुत्र अग्नि मित्र के अन्त के साथ ही इस वंश का भी समापन हो गया। तेलंगाना प्रदेश में 225 ई.पू. उदित सातवाहन वंश ने लगभग 450 वर्ष तक शासन किया। जिन्होंने स्थापत्य के सर्वोमुखी विकास में नासिक, अजन्ता, में शैल गृहों तथा मूर्तियों का निर्माण कार्य कर अपना योगदान दिया। सात वाहनों के सामराज्य के पतन के पश्चात

<sup>25.</sup> गैरोला, वाचस्पति, ;व्याख्याकारद्ध कौटिल्य का अर्थ शास्त्र, चौखम्बा, विद्या भवन, प्रकारशन वाराणसी, 1991, पृ.क्र. 91

<sup>26.</sup> कादरी, एम.एम. असगर अली, हिन्दु मुस्लिम स्थापत्य कला शैली, आगरा 1963, पृ.क्र. 90



कार है हैं है है हमार के हमारोध के हमारोध के हमारोध के समझ के हमें हैं सुनार है किया तथा श्रंग सामराज्य की स्थापना दी जो कि विदेश वर्ष से वान-वाकी को 1 अंग शामन काल में पारहत मोध मधा मधी अर्थ के बहुद तथा प्रतिस स्तूर्ध का विश्वां हुआ ।

इक्ष्च्चसकु वंश का उदय हुआ ये भी वैदिक धर्मावलम्बी थे। इन्होंने नार्गाजुनी कोडा, जगरयपेट्ट आदि स्थानों में महास्तूपों का निर्माण कराया ।

पहली शताब्दी तक मौर्य सामराज्य का लगभग पूर्णरूपेण पतन हो चुका था तथा भारतीय राजनीति में विखंडन की दरारें पड़ना प्रारम्भ हो चुकी थी। मौर्य सामराज्य के पतन के पश्चात भारतीय राजनीति में एकता के अनेक प्रयत्न किये गये किन्तु वे पूर्ण रूपेण सफल नहीं हो पाये और इस राजनीति के गिरते स्तर का लाभ विदेशी आक्रमणकारियों जैसे — यूनानियों, शको हुणों ने उठाया और अनेक आंचलिक क्षेत्रों में कब्जा कर लिया। इस काल में विदेशियों का झुकाव भारतीय कला की ओर होने के कारण कुछ स्थानों पर चैत्य गृहों स्तूपों मन्दिरों आदि का निर्माण कार्य कराया गया तथा भारतीय कला का यूनान के साथ पिछले कालों की अपेक्षा अधिक आदान — प्रदान होने लगा, तथा इस भारतीय और यूनानी कला के संगम से एक नई स्थापत्य शैली का निर्माण हुआ जिसे 'गंधार' कला कहते हैं। 27

दूसरी शताब्दी के पूर्व ही कुषाण वंश का अन्त हो गया तथा इसके कुछ समय पश्चात सात वाहन वंश का भी अन्त हो गया, इसके पश्चात स्थापत्य कला मे नगण्य विकास ही हो पाया। तीसरी शताब्दी के आगमन्के साथ ही गुप्त वंश का उदय हुआ और आर्य धर्म जीवत हो उठा तथा स्थापत्य को पुर्नजीवन मिला। गुप्त काल भारत का स्वर्ण युग कहलाता है। 28 क्यों कि इस काल में न केवल आर्थिक उन्नित हुई वरन् सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक उन्नित ने नवीन सोपानों को पार किया। गुप्त कालीन वास्तु में ईटों एवं पत्थरों का प्रयोग पूर्वकाल की अपेक्षा अधिक होने लगा था। इस काल में गुहा स्थापत्य पर विशेष ध्यान दिया गया तथा मूर्तिकला एवं चित्र कला में गन्धार शैली की अपेक्षा शुद्ध भारतीय कला को अधिक महत्व दिया जाने लगा। जिसके परिणाम स्वरूप एक बार फिर भारतीय स्थापत्य गुप्त सामराज्य की छांव मे लहलहा उठा, जिसके जीवन्त उदाहरण उदयगिरी अजन्ता, एलोरा की गुफायें हैं जो की तत्कालीन स्थापत्य कला और साक्षी है। गुप्त कालीन मन्दिर निर्माण में सादगी को विशेष महत्व दिया जाता था। चन्द्र गुप्त विकमादित्य के सामराज्य मे मूर्ति निर्माण में धातुओं का प्रयोग प्रारम्भ हो चुका था तथा पर्याप्त मात्रा में

<sup>27.</sup> श्रीवास्तव, शिव कुमार, तथा वाजपेयी, रामदुलारे, वही, पृ. क्र. 156

<sup>28.</sup> राय, ए.के., जबलपुर दर्पण - 94, जबलपुर, 1994, पृ. क्र. 10



उन्नित कर चुका था, नालंदा विहार में रिथत भगवान वृद्ध की पीतल निर्मित 60 फीट की प्रतिमा तथा दिल्ली में स्थित कुतुबमीनार के निकट स्थित लौह स्तम्भ तत्कालीन धातु विज्ञान के अद्धितीय प्रमाण हैं। इसके अतिरिक्त सारनाथ, मुकरा, देवगढ़ इत्यादि के गुप्त कालीन मन्दिर स्थापत्य कला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। अतएव सार में यही कहा जा सकता है कि गुप्त काल में न केवल हिन्दु धर्म, मूर्तियों, मन्दिरों का निर्माण हुआ वरन् स्थापत्य को एक नई दिशा प्राप्त हुई।

लगभग 520 ई. में गुप्त सामराज्य का पतन हो गया तथा भारत वर्ष की राजनैतिक एकता विखिण्डत हो गई एवं देश अनेक छोटे — छोटे राज्यों में विभाजित हो गया। यह राजनैतिक विखराव दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर भारत में अधिक देखने मिलता है और इस राजनैतिक स्थिति का फायदा हूणों से लेकर अंग्रेजों तक ने उठाया। यह काल पूर्व मध्य काल (600 ई. से 1300 ई.) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस समय विदेशी आक्रमणों तथा राजाओं के आपसी युद्ध के कारण कोई विशेष उन्नित नहीं हुई, बिल्क पृथक — पृथक राज्यों में स्थापत्य का अलग — अलग विकास हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप देश में अनेक शैलियों का विकास हुआ जिस पर स्थानीय विशेषताओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। भारत वर्ष में स्थानीय शैलियों के अलावा प्रमुख तीन शैलियों का जन्म हुआ जिनका प्रभाव लगमग सभी शैलियों पर दृष्टिगोचर होता है, ये तीन शैलियों निम्नांकित है —

- (अ) नागर शैली : नागर शैली के मन्दिर एवं भवन प्रमुखतया उत्तर भारत में देखने मिलते हैं जैसे अयोध्या, खजुराहो, काशी, हरिद्वार, इलाहाबाद इत्यादि के मन्दिर।
- (ब) दिवण शैली : द्रविण शैली का प्रचलन प्रमुख रूप से दक्षिण भारत में देखने मिलता है जैसे — उड़ीसा, तमिलनाडू इत्यादि के मन्दिर।
- (स) बेसर शैली : नागर शैली तथा द्रविण शैली का मिश्रित रूप बेसर शैली के रूप में विकसित हुआ जिसके अधिकांश मन्दिर कर्नाटक मेंदेखने मिलते हैं।



HOPE BUT A THE SHEET OF THE SHEET OF THE BETTER WATER OF A TOSE FIFTED OF

इस काल में हिन्दु मन्दिरों की उपमा मानव शरीर से की जाने लगी जैसा कि केसवराम अय्यर लिखते हैं— 'हिन्दु मन्दिरों की रचनायें मानव देह रचना और मन्दिर रचना के बीच अनुपात के अप्रतिम प्रादर्श हैं, जिसमे उपपीठ से लेकर स्तूपिका तक की सूक्ष्म से सूक्ष्म रचना का संतुलित विचार किया जाता है। 'यथा देह तथा गेह' की उक्ति मन्दिर में सम्पूर्णता और चिरतार्थ होती है। '29 इस काल में मन्दिर के द्वारों को गंगा, यमुना, नाग, किन्नर, गन्धर्व, अप्सराओं, पुष्पों, लताओं आदि के अलंकरण द्वारा सुसज्जित किया जाता था। चन्देल राजाओं द्वारा लाल, बलुआ तथा ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित खजुराहो के मन्दिर आज भी विश्व में तत्कालीन स्थापत्य की छटा बिखेरने मे सर्वसमर्थ हैं। अतएव खजुराहो के मन्दिरों को इस काल का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। इस काल में गुप्त कालीन स्थापत्य कला के विकास का भरपूर प्रयास किया गया है। गुप्त कालीन और पूर्व मध्य कालीन स्थापत्य कला में एक ही अन्तर है, कि गुप्त कालीन मन्दिरों में सादगी की प्रधानता थी, जबिक इस काल में मन्दिरों को अनेक प्रकार से अलंकृत किया जाने लगा।

1050 ई. मालवा प्रान्त में शैवमत के अनुन्यायी परमारवंशीय राजाभोज ने शासन किया। इन्होंने भोजपुर के निकट एक भव्य शिव मन्दिर तथा 250 वर्ग मील क्षेत्र में विशाल बांध का निर्माण कराया। यह मन्दिर अपनी भव्यता के कारण मध्य भारत का सोमनाथ मन्दिर कहलाता था। यह शिव मन्दिर काल के थपेड़ों से लड़ते हुये अपना बहुत बड़ा भाग खो चुका है लेकिन जो शेष बचा हुआ है वही तत्कालीन स्थापत्य की गौरवगाथा प्रदर्शित करने में समर्थ है। राजाभोज न केवल एक कुशल प्रशासक थे वरन् एक बहुत बड़े कला प्रेमी तथा विद्वान भी थे। आपने स्थापत्य वेद का अप्रतिम ग्रन्थ 'समरांग्ण' सूत्रधार की रचना की जो कि आधुनिक वस्तुशात्रियों के लिये आज भी महान पथ प्रदर्शक बना हुआ है।

पूर्व मध्य काल में डाहल क्षेत्र में कल्चुरी वंश का शासन था कल्चुरियों की प्राचीन राजधानी महिष्मती (वर्तमान मण्डला) थी। किन्तु लगभग 800 ई. में त्रिपुरी हो गई। 31 जो कि वर्तमान में जबलपुर नगर से लगभग 15 कि.मी. दूर तेवर नामक ग्राम के रूप में सिमट

<sup>29.</sup> शर्मा, सुरेश्वर, ;सम्पादकद्ध, विज्ञान भारती प्रदीपिका, विज्ञान भारती प्रकाशन, उद्याचल जबलपुर, अक्टूबर, 1998, पृ. क्र 17

<sup>30.</sup> चौबे, महेश चन्द्र, जबलपुर अतीत दर्शन, जिला योजना मण्डल, जबलपुर, तथा भारतीय संस्कृति निधि, जबलपुर,

<sup>1994</sup> 早. 汞. 18

<sup>31.</sup> उपरोक्त पृ. क्र. 19



कर रह गई है। इस सामराज्य में भी स्थापत्य कला का पर्यापा मात्रा में विकास हुआ तथा अनेक मन्दिर, महल, मूर्तियों जैसे— मझौली का विष्णु बारह मन्दिर, भेड़ाघाट का चौसठ योगिनी, बिलहरी के मन्दिर एवं महल, तेवर का तालाब, त्रिपुरी सुन्दरी (तेवर) आदि अपनी विकास गाथा कहते हुये प्रतीत हो रहे हैं।

पूर्व मध्यकाल में दक्षिण भारत स्थापत्य कला में उत्तर भारत से एक कदम आगे रहा है इसका प्रमुख इसका प्रमुख कारण यह है कि जब उत्तर भारत युद्ध की आग में झुलस रहा था तब दक्षिण भारत में शांति पूर्ण ढंग से विभिन्न राज्य अपने — अपने आधार पर स्थापत्य कला के विकास में संलग्न थे। इनमें सबसे अच्छा उदाहरण कलिंग मन्दिर समूह का है। इस समूह के मन्दिरों में एक विशिष्ठता मिलती है कि मन्दिर के मुख्य भाग के सामने चौकोर कक्ष मिलता है, जिसे जगमोहन कहते हैं। 32 इस समूह के मन्दिरों में प्रमुख भुवनेश्वर के लिंगराज, परशुरामेश्वर, बेतालदेकल, रामेश्वर, सिद्धेश्वर राजारानी, पुरी का जगन्नाथपुरी, कोंणार्क का सूर्य मन्दिर आदि।

इसी काल में कुछ और अन्य शैलियों जैसे — चालुक्य, राष्ट्रकूट 'पल्लव चोल' आदि का भी विकास हुआ, किन्तु इनका विकास सम्बन्धित राष्ट्र तक ही रहा। सार रूप में यही कहा जा सकता है कि पूर्व मध्य काल में स्थापितयों ने शिल्प शास्त्र में वर्णित नियमों का अक्षरशः पालन किया। इस काल में लोगों का ध्यान केवल मन्दिरों मूर्तियों तक ही सीमित नहीं था वरन् निवास एवं शिक्षा के लिये बहुमंजिला इमारतों की भी रचना की गई। जिसका सर्वोत्तम उदाहरण सातवीं शताब्दी में निर्मित विश्व प्रसिद्ध नालन्दा विश्वविद्यालय है।

नौवीं शताब्दी तक उत्तर भारत की राजनैतिक स्थिति अध्याधिक बिगड़ चुकी थी। छोटे – छोटे राज्य आपस में लड़ रहे थे, जिसका लाम विदेशी आक्रमणकारियों को प्राप्त हो रहा था। लगभग इसी काल से मुस्लिम शासन काल का उदय तथा भारतीय स्थापत्य का व्हास प्रारम्भ होता है। चूंकि 710 ई. में ही मोहममद कासिम द्वारा सिन्ध प्रान्त से आक्रमण के साथ ही मुस्लिम आक्रमण प्रारम्भ हो चुके थे, किन्तु 1000 ई. में महमूद गजनबी द्वारा आक्रमण से भारतीय कला एवं संस्कृति सर्वाधिक प्रभावित हुई। महमूद गजनबी ने 1000 ई. से

<sup>32.</sup> वाजपेयी, कृष्ण दत्त, वही पृ. क्र. 135



CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

इसी काल में कुछ और अन्य रोशियों जेशे – सालहत, राटकड जनव में स अधि का

1026 ई. तक भारत में रात्रह बार आक्रमण किये और असीमित धन सम्पदा को लूटा तथा हिन्दु सभ्यता संस्कृति को नष्ट करने का भरपूर प्रयास किया। महमूद गजनबी ने सोलहवां आक्रमण सोमनाथ के मन्दिर में किया जो कि सर्वाधिक प्रसिद्ध हुआ। इस आक्रमण में महमूद गजनबी ने कई मन सोना, चांदी, हीरे जवाहरात ले गया और स्थापत्य की कितनी ही अमूल्य कृतियों को नष्ट कर डाला। ब्रह्मणों ने मन्दिर की रक्षा के लिये असंख्य धन देना चाहा परन्तु महमूद ने कहा 'मैं मूर्तियों का नाशक हूँ विक्रेता नहीं तथा गदा के प्रहार से मूर्ति चूर — चूर कर दी।'<sup>33</sup> इसी प्रकार गुलाम वंश के शासक अल्तमश ने अपनी कट्टरता का परिचय देते हुये गुप्तकाल में निर्मित उज्जैन स्थित महाकाल मन्दिर को नष्ट कर दिया। इसी प्रकार 1506 ई. में सिकन्दरशाह ने मथुरा में मन्दिरों का विनास कर अपनी कट्टरता का परिचय दिया था।

जिस समय अरब लोग भारत में आये उस समय तक भारतीय स्थापत्य कला पर्याप्त विकसित हो चुकी थी, अतएव मुस्तिल शासन काल में मुस्लिम स्थापत्य कला भी भारतीय स्थापत्य कला से प्रभावित हुये बगैर नहीं रह सकी। यथा — मुस्लिम कला में नुकुली चोटियों का प्रभाव बढ़ने लगा तथा हिन्दु स्थापत्य में सीधी छत के स्थान में उसमें डार और गुम्मद का उक्कें प्रारम्भ हो गया। इस काल में कुछ मात्रा में चित्र कला का भी विकास हुआ जिसमें मिश्रित रंगों का प्रयोग होने लगा तथा चटक रंगों पर अधिक ध्यान दिया गया। इस काल के प्रमुख वित्रकार बसावन, दशवन्त, मुराद, फारूखवेग आदि हैं, जिन की अमर चित्राविलयां लंदन के अजायब घर की सुन्दरता को चार चांद लगा रही है। अभ इस प्रकार हिन्दु स्थापत्य कला तथा मुस्लिम स्थापत्य कला के एक दूसरे से प्रभावित होने के परिणाम स्वरूप एक नूतन स्थापत्य शैली का आविर्भाव हुआ जिसे भारतीय वारतुकला के इतिहास में 'हिन्दु मुस्लिम स्थापत्य शैली' के नाम से प्रसिद्ध हुई। अर्घ

वस्तुतः मुस्लिम स्थापत्य कला का उत्थान पतन राजनैतिक उत्थान पतन के साथ ही हुआ। इस काल में एक ओर अनेक शासकों जैसे— औरंगजेब, मोहम्मद गौरी, इल्तुमिस, सिकन्दरशाह आदि ने भारतीय स्थापत्य कला को नष्ट करने का बीड़ा उठाया था तो दूसरी ओर अकबर, बाबर, शाहजहाँ, फिरोजशाह तुगलक, शेरशाह सूरी आदि ने नवीन निर्माण कार्य

<sup>33.</sup> श्रीवास्तव, शिव कुमार, तथा वाजपेयी रामदुलारे, वही पृ. क्र. 203

<sup>34.</sup> उपरोक्त पृ. क्र. 244

<sup>35.</sup> कादरी, एम.एम. असगर अली, वही पृ. क्र. 95 - 130



कराकर रथापत्य कला को एक नवीन दिशा देने का प्रयतन किया। जिस समय उत्तर भारत में हिन्दु — मुस्तिम कला स्थापत्य शैली का उद्भव हो रहा था, उसी समय दक्षिण भारत में बौद्ध तथा जैन कला का भी हिन्दु स्थापत्य में मिश्रण हो रहा था। अतएव मुस्लिम शासन काल में भारतीय स्थापत्य कला का विकास के स्थान पर विनास हुआ। कुछेक शासकों ने विकास करने का प्रयास भी किया तो वह शुद्ध भारतीय स्थापत्य कला का रूप न होकर हिन्दु मुस्लिम स्थापत्य कला शैली के रूप में विकसित हुआ तथा यह विकास विनास की अपेक्षा नगण्य रहा।

1700 ई. तक मुस्लिम सामराज्य नष्ट प्रायः हो चुका था। 1602 ई. में ही भारत वर्ष में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हो चुकी थी। सन् 1642 ई. में फांसीसी कम्पनी की स्थापना हुई तथा इसे 1671 में सूरत में व्यापार की अनुमित दे दी गई। 1750 में अंग्रेजों ने व्यापार के बहाने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की रथापना की। यहीं से भारत की गुलामी तथा संस्कृति कला के नष्ट होने का एक नया अध्याय प्रारम्भ होता है। वस्तुतः अंग्रेजों के यहां आने का उद्देश्य व्यापार तथा ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार करना था, किन्तु उन्हों ने की राजनैतिक रिथित का फायदा उठाया तथा 'फूट डालो शासन करो' की नीति अपनाकर सम्पूर्ण भारत वर्ष को अपने आगोस में ले लिया। इनके शासन काल में स्थापत्य कला में कोई उन्नित नहीं हुई वरन् अवनित अवश्य दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने केवल इसाई धर्म के प्रचार — प्रसार के लिये चर्च और अपने स्वार्थ की दृष्टि से मार्ग, बंगले, कारखाने का निर्माण कार्य कराया।

भारत वर्ष की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात स्थापत्य कला की अवनित को रोकने तथा उन्नित के लिये कुछ प्रयास किये गये। अनेक विद्वानों जैसे — द्विजेन्द्र नाथ शुक्ल, आचार्य प्रसन्न कुमार, तारापद भट्टाचार्य, आचार्य चतुर सेन आदि ने कुछ ग्रन्थों की रचना की अथवा वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद कर जनमानस के समक्ष भारतीय स्थापत्य धरोहर को स्पष्ट करने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त कुछ संस्थाओं महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों आदि में स्थापत्य कला का अध्ययन प्रारम्भ किया गया है।

# 2.3 स्थापत्य वेद की शाखायें :

वर्तमान में स्थापत्य वेद के लिये स्थापत्य शास्त्र, शिल्पकला, वास्तुशास्त्र आदि शब्दों का पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किया जाता है, किन्तु ये लगभग सभी शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची न होकर स्थापत्यवेद की शाखाओं के नाम हैं। जैसे वर्तमान समय में वास्तु शास्त्र

और स्थापत्य वेद को एक ही अर्थ अर्थात भवन निर्माण कला के लिये प्रयोग किया जाता है, किन्तु वास्तुशास्त्र स्थापत्य वेद की एक महत्वपूर्ण शाखा है न कि सम्पूर्ण स्थापत्य वेद। हां यह बात अवश्य है कि ये सभी शाखाओं आपस में अर्न्तसम्बन्धित हैं। जैसे भवन राजप्रसाद, देवालय इत्यादि का निर्माण वास्तुशास्त्र के अनुरूप किया जाता है, किन्तु उन वास्तु रचनाओं में मूर्तियों चित्रों आदि की स्थापना स्थापत्य वेद की अन्य शाखाओं के आधार पर होती है। वस्तुतः इन स्थापत्य वेद की सभी शाखाओं का मिश्रित रूप में विकास होना भी है। इसके परिणाम स्वरूप इन शाखाओं के मध्य स्थित सीमा रेखा काल की गित के साथ जाती रही। अतएव स्थापत्य वेद को मुख्य तथा तीन शाखाओं के रूप मे विभाजित किया गया है—

- 2.3.1 चित्रकला
- 2.3.2 मूर्तिकला
- 2.3.2 वास्तुकला

### 2.3.1 चित्रकला :

विभिन्न रेखाओं के योग से बनने वाली रेखाकृति अथवा आकृति विशेष को चित्र कहते हैं, तथा आकृति विशेष को निर्मित करने के ज्ञान को चित्रकला कहा जाता है। चित्र मानवीय अभिव्यक्ति का एक अनुपम माध्यम है। पुरापाषाण युग में जब मानव जाति किसी भाषा विशेष तथा लिपि विशेष से परिचित नहीं थी, तो उस समय विचार अभिव्यक्ति का एक मात्र चित्र कला ही सशक्त माध्यम था, और इसके प्रभाव आज भी अनेक शैल गुहाओं जैसे बाध, भीम बेटका इत्यादि में पर्याप्त मात्रा मे प्राप्त होते हैं।

शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों में चित्र शब्द को बड़े ही परिभाषित रूप में वर्णित किया जाता है। भारत वर्ष में प्रत्येक कला चाहे संगीत कला हो अथवा शिल्पकला ही क्यों न हो सभी को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। भारतीय चित्रकला की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें अंग प्रत्यंग में सजावट एवं रंगों की अपेक्षा भाव, व्यंजना तथा अभिव्यक्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। जबिक अन्य शैलियों में रंगप्रधान चित्रों को अधिक महत्व दिया गया है। साधारणतया चित्र का अर्थ मात्र पेंटिंग से लगाया जाता है, किन्तु प्रतिमा के वर्गीकरण में प्रमुख रूप से निम्नांकित तीन प्रकार की प्रतिमायें बताई गई हैं—

- 2.3.11 चित्र : चित्र से आशय पूर्ण प्रतिमा से है, जिसे हम व्यक्त प्रतिमा कह सकते हैं, जिसमें किसी जड़ अथवा चेतन वस्तु विशेष का पूर्ण प्रति रूप चित्रित होता है।
- 2.3.1.2 'चित्रार्घ : चित्रार्ध का शब्दिक अर्थ चित्र + अर्ध है अर्थात आधा चित्र अथवा किसी अंग विशेष को चित्रित करना चित्रार्ध है। इसे हम व्यक्त अथवा अव्यक्त प्रतिमा भी कह सकते हैं।
- 2.3.1.3 चित्र भाष : चित्र भाष वास्तव में पेंटिंग को ही कहते हैं जैसा कि चित्र भाष के शाब्दिक अर्थ से (चित्र + भाष अर्थात किसी चित्र का अभास अथवा अनुभूति होना) पता चलता है। यह किसी पट्ट या भित्ति पर अंकित की जाती है। चित्र अथवा चित्र भाष में प्रमुख अन्तर यह है कि चित्र में किसी भाव अभिव्यंजना पर विशेष जोर नहीं दिया जाता है जबकि चित्र भाष में भाव अभिव्यंजना पर विशेष रूप से जोर दिया जाता है।

चित्रकला के अन्तर्गत चित्र रेखाकृति, पदार्थ जिस पर चित्रांकन होना है तथा जिससे चित्रांकन किया जाना है रंग संयोजन, चित्र का उपयोग, प्रभाव, परिणाम तथा कारणों का तत्थायात्मक तथा सूक्ष्मतम अध्ययन किया जाता है।

### 2.3.2. मूर्तिकला :

वैदिक काल में प्रतिमा की आवश्यकता नहीं थी, क्यों कि इस काल में श्रुति परम्परा का प्रचलन था, किन्तु कालान्तर में ज्ञान के बजाये आण्डम्बर बढ़ने लगा परिणामतः केवल उच्च कोटि के ऋषिमुनि ही सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो पाते थे जिसके परिणाम स्वरूप प्रतीक रूप में मूर्तियों की आवश्यकता महसूस की गई तथा कालान्तर में मूर्ति शिल्प पर बल दिया जाने लगा। यही कारण है कि प्रमुख वेदों में (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में निराकार ब्रह्म ही कल्पना की गई है। महाकाव्य काल तथा पौराणिक काल में देव प्रसादों का निर्माण कर इनमें देव प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा प्रारम्भ की गई, जो कालान्तर में प्रतिमा निर्माण

PR STO DOUGH THE PERSON STREET BY STREET STREET STREET STREET STREET

जनधर्म की आवश्यकता की पूर्ति हेतु मूर्ति विज्ञान, मूर्तिकला के रूप में विकसित हुई। मूर्तिकार को वैदिक काल में तक्षक कहा जाता था। ''

प्रतिमा निर्माण में अनेक प्रकार के पदार्थों जैसे मृदा, पाषाण, काष्ठ, धातुयें, रत्न इत्यादि का उपयोग किया जाता है। भारतीय स्थापत्य में भिन्न — भिन्न प्रकार के पदार्थों का विधान है, अतः अधिकांश मूर्तियाँ मृदा, पाषाण, काष्ठ धातुओं एवं रत्न आदि से निर्मित की जाती है। इसके अतिरिक्त मूर्ति निर्माण में मिश्र धातुओं जैसे — पंच धातु, अष्ठ धातु आदि का भी उपयोग किया जाता है जिसका अध्ययन भी मूर्तिकला के अन्तर्गत किया जाता है।

मूर्तिकला में मूर्तियों के आकार, आकृति, भाव अभिव्यंजना आदि का विशेष महत्व होता है। मूर्ति के आकार से आशय मूर्ति के विभिन्न अंगों के विभिन्न अनुपात जैसे लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, इत्यादि से है। यह अनुपात विभिन्न मूर्तियों में भिन्न — भिन्न निर्धारित है। यदि यह अनुपात नियमानुसार न हो तो साधक को अभिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती है। अतः वर्तमान में भी अनेक मन्दिर मठ जैसे भेड़ाधाट का चौसठ योगिनी जबलपुर का बाजना मठ भोजपुर का शिव मन्दिर आदिरूके उदाहरको हैं।

### 2.3.3 वास्तु कला :

वास्तु कला अथवा वास्तु शास्त्र के अन्तर्गत भवन, राजप्रसाद, देवालय, सभागार, नगर ग्राम राज्य इत्यादि के निर्माण एवं नियोजन का अध्ययन किया जाता है। वास्तु कला मात्र वास्तु रचना की साज सज्जा तक ही सीमित नहीं है जैसा कि वर्तमान में जन — साधारण की धारणा है, वरन् इसके अन्तर्गत भूमि परीक्षण, दिक् विन्यास, मान नियोजन, वास्तु पुरूष विकल्पन एवं वास्तु पुरूष मण्डल इत्यादि का समग्र रूप से वैज्ञानिक एवं तथ्यपरक विशलेषण किया जाता है, तथा इन सभी तत्वों का मानव जीवन पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। अर्थात वास्तुशास्त्र ऐसे वास्तु निर्माण प्रकिया का विवेचन करता है जिसके अन्तर्गत वास्तु में निवास करने वाले समस्त प्राणियों पर वास्तु रचना का अनुकूल प्रभाव पड़े तथा व्यक्ति अपने जीवन काल मे चहुंमुखी विकास कर दीर्घकाल तक सूख — शांति पूर्वक रह सके।

## 2.4 स्थापत्य वेद की विषय वस्तु :

भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन के चार पुरूषार्थ, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष निर्धारित किये

है और इन्हीं को ध्यान में रखकर लगभग सम्पूर्ण वैदिक वाग्मय की रचना की गई है इस वैदिक बांग्मय में चार वेद प्रमुख माने गये है तथा इन चारों वेदों का सूक्ष्मतम अध्ययन करते हुये प्रत्येक के एक उपवेद की रचना की गई है। जिसमें से स्थापत्य वेद का स्थान महत्वपूर्ण है। यह चारों पुरूषार्थों को प्राप्त करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायक होता है।

सम्पूर्ण स्थापत्य वेद किसी ऋषि अथवा व्यक्ति विशेष अथवा काल विशेष की देन नहीं है वरन् विभिन्न कालों मे विभिन्न ऋषिमुनियों विद्वानों द्वारा प्राप्त अनुभविक ज्ञान का संकलन है यह बात मात्र स्थापत्य वेद पर ही नहीं वरन् सम्पूर्ण वैदिक बांग्मय पर भी लागू होती है अतः स्थापत्य वेद की विषय वस्तु में विभिन्न कालों में भिन्नता देखी गई है। इतना ही नहीं देश काल वातावरण के अनुरूप भी इसकी तकनीकि तथा भाषा में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होती है, जैसे कि रविकान्त झा कहते हैं – 'वास्तु कला में उपभोग के अनुसार भी तकनीकि परिवर्तन हुये – जलयान वास्तुकला, सामुद्रिक ज्ञान, वायुयान, उपग्रह, वास्तुकला के अंग है। 36 अर्थात विश्व की समस्त शिल्प कलाओं का संग्रहित ज्ञान ही स्थापत्य वेद है, चाहे यह किसी भी काल विशेष अथवा मानव समुदाय विशेष द्वारा उद्भूत हुई हो वह सभी स्थापत्य वेद का एक अंग हैं । कुछ विद्वान तो इसे समस्त ब्रह्माण्डीय ज्ञान का संकलन स्वीकारते हैं। 37

स्थापत्य वेद के अन्तर्गत मूर्तिकला का बड़ा ही विशिष्ट स्थान है। भिन्न — भिन्न स्थानों जैसे आवास, व्यापारिक अथवा औद्योगिक संस्थान, ग्राम नगर इत्यादि मे भिन्न — भिन्न माप के देवताओं की मूर्तियों की स्थापना का प्रावधान है। 38 मूर्ति निर्माण में पदार्थ का निर्णय प्रमुख रूप से मूर्ति निर्माण के उद्देश्य से किया जाता है। भिन्न — भिन्न उद्देश्यों के लिये भिन्न — भिन्न प्रकार की मूर्तियों का प्रावधान है क्योंकि इन सब का आराधक एवं उद्देश्य पर अत्याधिक प्रभाव प्रज़ता है। इसके अतिरिक्त मूर्ति की भाव अभिव्यक्ति, माप, साज — सज्जा आसन इत्यादि का अध्ययन क्षेत्र स्थापत्य वेद के अन्तर्गत ही आता है। यदि मूर्ति निर्माण के समय उपर्युक्त बातों का ध्यान नहीं रखा जाता है जो प्रतिष्ठित मूर्ति से यथेष्ट फल मिलना संदेहास्पद रहता है।

<sup>36.</sup> झा, रविकान्त, वास्तुकला का इतिहास, 1992, प ृ.क. 17

<sup>37.</sup> उपरोक्त प् . क्र. 18

<sup>38.</sup> शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ, वही, 23/107

चित्रों का व्यक्ति पर बहुत गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। हम किसी व्यक्ति के कमरे अथवा भवन में लगे चित्रों से उस व्यक्ति का सामान्य रूप से व्यक्तिगत निरीक्षण कर सकते हैं, और इसी आधार पर वर्तमान में रंग चिकित्सा का आर्विभाव हुआ है। अतः सम्पूर्ण चित्र कला का अध्ययन क्षेत्र भी स्थापत्य वेद की ही विषय वस्तु है। चित्रों में रंगों के समायोजन का अत्याधिक महत्व होता है। जैसा कि प्राचीन भारतीय चित्र कला सादगी पूर्ण होने के कारण सदैव देवी — देवताओं को प्रतिकात्मक रूप में चित्र कला के माध्यम से ही दर्शाया जाता रहा है। जिसके देखने से हमें आत्मिक शान्ति की अनुभूति होती है, यही कारण है कि भारतीय स्थापत्य कला सदैव से ही धर्म के कल्पवृक्ष की छांव पली है। रंगों के अतिरिक्त चित्रों के निर्माण के प्रयुक्त पदार्थ भी बहुत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्रकाश परावर्तन के नियमानुसार प्रकाश जिस स्थान, वस्तु अथवा पदार्थ से टकराकर लौटता है जो उसके गुण भी अपने आप में आत्मसात कर लेता है। यह नियम मूर्ति अथवा चित्रों पर भी समान रूप से लागू होता है, क्योंकि इनका सीधा प्रभाव दृष्टा पर पड़ता है। इसके अलावा भिन्न — भिन्न चित्रों के लगाने के स्थान भी स्थापत्य वेद में निर्धारित है।

स्थापत्य वेद की विषय वस्तु का एक अति महत्वपूर्ण भाग वास्तुकला अथवा वास्तुशास्त्र है। इसके द्वारा भवन निर्माण का कार्य सम्पन्न किया जाता है। प्राचीन मनीषियों ने समाज को चार वर्णों में विभाजित किया था। स्थापत्य वेद में इन चार वर्णों के लिये भिन्न — भिन्न भवनों का विधान है। ये वर्ण किसी जाति अथवा सम्प्रदाय या धर्म विशेष पर आधारित नहीं है वरन् कर्म पर आधारित है जैसा कि श्रीमद् भागवत गीता में कहा गया है—

'ब्रह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप । कर्मीणि प्रविभक्तानि स्वाभावप्रभवैर्गणे ॥<sup>39</sup>

त्यक्ति जिस भवन में निवास करता है उसका सम्पूर्ण जैविक चक भवन तथा आस — पास के वातावरण से प्रभावित होता है, वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत केवल आवासीय भवनों के निर्माण का अध्ययन ही नहीं किया जाता है, वरन् समस्त मानोपयोगी उद्देश्यों से निर्मित होने वाली वस्तु रचनाओं जैसे — सभागार, देवालय, राजमहल, उद्यान, कूप, जलाशय, ग्राम, पुर इत्यादि

<sup>39.</sup> श्रीमद भागवत् गीता 18/40

का अध्ययन किया जाता है। भूगोल गणित, अभियान्त्रिकी, भौतिक रसायन का अध्ययन भी स्थापत्य वेद की विषय वस्तु से परे नहीं हैं।

# 2.5 वास्तुशास्त्र का अर्थ एवं परिमाषा :

वास्तु शास्त्र भवन, ग्राम, नगर, प्रदेश आदि के स्थापन तथा नियोजन का विज्ञान है। इसके अन्तर्गत भवन, ग्राम, नगर आदि के निर्माण एवं नियोजन की सम्पूर्ण प्रकिया का अध्ययन किया जाता है। वास्तुशास्त्र मात्र भवन ग्राम आदि के मात्र साज — सज्जा तक ही सीमित नहीं है, वरन् इसके अन्तर्गत प्रकृति के नियमों के अनुरूप इस प्रकार के भवन निर्माण का प्रावधान है कि उसमें निवास करने वाले समस्त व्यक्तियों को अधिकाधिक प्राकृतिक सहयोग प्राप्त हो तथा दीर्घ काल तक सुख शान्ति पूर्वक रह सके।

वास्तुशास्त्र को वास्तुकला, वास्तु विद्या, शिल्प शास्त्र, शिल्प कला आदि नामों से भी जाना जाता है। काल की गित के अनुरूप मानवीय आवश्यकताओं, अभिरूचियों तथा मानवकृत रचनाओं में परिवर्तन हुये हैं इसके अनुरूप वास्तुशास्त्र की परिभाषा, विषय, वस्तु आदि में भी पर्याप्त मात्रा में परिवर्तन होते रहे हैं। वस्तुतः वास्तु शब्द 'वस निवास' धातु से बना है जिसे आवास स्थल के अर्थ में गृहण किया जाता है, अर्थात जिस भूमि पर मनुष्य निवास करता है उसे वास्तु कहते हैं, किन्तु यह परिभाषा पूर्ण नहीं कही जा सकती क्यों कि केवल मानव आवास तक ही वास्तुशास्त्र की सीमा नहीं है, वरन उद्यान, सामाजिक भवन, कूप, नगर, ग्राम इत्यादि भी वास्तु शास्त्र का महत्वपूर्ण अंग है तथा इस परिभाषा में कला पक्ष की उपेक्षा महसूस की जा रही है। अतएव इस सन्दर्भ में कुछ विद्वानों की परिभाषाओं पर दृष्टिपात करना उचित होगा —

साइक्लोपीडिया ऑफ इण्डिया के अनुसार — "Cost of building obviating employment of any older established and outstanding style of architecture" 40

<sup>40.</sup> Chopra] P.N. And Chopra Prabha, Encyclopaedia of India] Agan Prakashan, Delhi, 1988 P.N. 26

प्रो0 मुल्कराज आनन्द के अनुसार — 'शिल्प वही है जो निर्माण सामग्री के द्वारा उत्तम कल्पना के आधार पर बनाया जाये। उस शिल्प को हम अद्वितीय कह सकते हैं, जिसकी कला एवं कल्पना का प्रभाव मनुष्य पर पड़ सके।'<sup>41</sup>

बृहत् संहिता के अनुसार — 'वास्तु शब्द सभी प्रकार के निर्माण का वाचक है। 'वसन्ति प्राणिनो यत्र' इस व्युत्पत्ति से निर्माण कार्य करने योगय भूमि का नाम भी वास्तु है। '42

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कोई भी परिभाषा वास्तुशास्त्र को पूर्ण रूप से परिभाषित करने समर्थ नहीं है, किन्तु इन समस्त परिभाषाओं के अध्ययन स्वरूप वास्तुशास्त्र को निम्नांकित शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है—

'वास्तुकला वह कला अथवा विज्ञान है, जिसके द्वारा विभिन्न मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति हेतु समय, परिवेशानुकूल, प्रकृति के नियमानुसार वास्तु रचनाओं का निर्माण एवं नियोजन किया जाता है, साथ ही उत्तम कल्पना के आधार पर इनकी आन्तरिक तथा वाह्य साज — सज्जा में अभिवृद्धि की जाती है।'

# 2.6 वास्तुशास्त्र का महत्व :

वास्तुशास्त्र का महत्व जिस प्रकार वैदिक काल में आवश्यक था उसी प्रकार वर्तमान में भी अपरिहार्य बना हुआ है, क्यों कि मानव की तीन प्रमुख आधारभूत आवश्यकताओं में से आवास तीसरी प्रमुख आधारभूत आवश्यकता है इसीलिये कहा भी गया है—

> 'वर्तमान – युगे लोके, भोजनं बसनं गृहम् । आवश्यकं नितान्तं, यैहीनं जन्म निरर्थकम् ।।

अतः मानव ने आवासीय आवश्यकता तथा अन्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भवन निर्माण कला सीखा। मानव अपने क्रिया कलापों के माध्यम से प्रकृति को सदैव ही जाने — अनजाने

<sup>41.</sup> कान्तिसागर, मुनि, खण्डहरों का वैभव, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, पृ. क्र. 43

<sup>42.</sup> मिश्र, स्रेशचन्द्र, रंजन पब्लिकेशन्स, दरिया गंज, नई दिल्ली, 1997, पृ. क्र 544

<sup>43.</sup> शास्त्रीय, आचार्य उमेश, वास्तु विज्ञानम् व्यास वालावक्ष शोध संस्थान दीनानाथ मार्ग, जयपुर, 1996, 1/44

The state of the s

में प्रभावित करता रहा है तथा यह भी शास्वत सत्य है कि प्राकृति परिवर्तन प्रारम्भ से ही मानव जीवन को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करते आ रहे हैं, क्यों कि सम्पूर्ण प्रकृति पंच महाभूतों से निर्मित है, अर्थात् मानव भी प्रकृति के प्रांगण का एक महत्वपूर्ण अवयव है, इसीलिये स्कन्द पुराण में कहा भी गया है— तमसोते महान्ना पुरूषः स जगतगुरूः स्वदेहा दसृजद्विक्ष पंचभूतात्म संज्ञितम्। 44

अतएव मानव शरीर में चलने वाली जैव रासायिनक कियाओं पंच महाभूतों तथा गृह नक्षत्रों आदि से सदैव प्रभावित होते रहा है। इसीलिये कहा भी जाता है कि शरीर का निर्माण वेदों से हुआ है। 45 अतएव सर्वे भवन्तु सुखिन' की दृष्टि से हमारे ऋषि मुनियों ने पंच महाभूतों अर्थात प्रकृति एवं मानवीय क्रियाकलापों तथा जैव रासायिनक कियाओं के मध्य उचित सामंजस्य स्थापित करने की दृष्टि से वास्तुशास्त्र अर्थात स्थापत्य वेद की रचना की है, जिससे मानव दीर्घकाल तक सुखी एवं समृद्धशाली जीवन व्यतीत कर सके। अतएव वास्तुशास्त्र का महत्व प्रतिपादित करते हुये भगवान राम कहते हैं, 'कर्तव्यं वास्तुशमनं सौिमत्रे चिरंजीविभिः।' 46

वर्तमान में हमने प्रकृति के सिद्धान्तों के उलंघन को ही विकास का सर्वोत्कृष्ट सोपान मान लिया है यही कारण है कि आज हमारे पास सुख के पर्याप्त साधन तो उपलब्ध है, किन्तु हम सुखी नहीं है। आज का नगरवासी अर्थोपार्जन का एक यन्त्र मात्र बनकर रह गया है। समस्त विश्व में नगरीकरण के अन्धानुकरण का प्रचलन चल पड़ा है, परिणामतः वर्तमान नगरीय बस्तियों को आवास, जनसंख्या दवाव, गन्दी बस्तियों का प्रसार, पर्यावरण प्रदूषण आदि ने अपने आगोस में ले लिया है। आज मानव का अंतिम लक्ष्य धनोपर्जन है। यदि धन ही मानव का अंतिम लक्ष्य होता तो पश्चिमी देश अशान्ति की आग में न झुलस रहे होते। आज हम चांद पर अवश्य पहुंच गये तथा दूसरे ग्रहों पर मानवीय बस्तियों को बसाने का प्रयास कर रहे हैं, किन्तु यह भी एक कटु सत्य है कि हम अपनी पृथ्वी में स्थित बस्तियों को ही समस्या विहीन बनाने में नाकाम रहे हैं। अतएव कु० ऐलेन सेम्पुल ने ठीक ही कहा है— 'मानव अपनी प्रकृति विजय की डीगें हॉकता फिरता है, जबिक प्रकृति शान्त रहकर भी निरन्तर मानव पर

<sup>44.</sup> स्कन्द, पुराण 5 / 23

<sup>45.</sup> Inaugurating, Age of Enlightenment Publications, India 1996, P.24

<sup>46.</sup> वाल्मीकि, रामायण, 56 / 22

निश्चित प्रभाव डालती है। <sup>47</sup> वस्तुतः हमारी इन समस्याओं का मूल प्रकृति एवं मानव के मध्य सत्तात्मक संघर्ष है। हमें प्रकृति ने विकास के लिये कुछ निश्चत सीमायें प्रदान की है, किन्तु हम इन सीमाओं में रहकर विकास करने के बजाय सीमाओं के उलंघन को विकास मान बैठे हैं। इसी को स्वीकार करते हुये निर्मल कुमार बोस कहते हैं— "Men has been dependent on the physical facts of nature, but he has not been content to live under its limitations and he has always striven progressively to break, through the barriers placed by nature." <sup>48</sup>

वस्तुतः इन मानवीय समस्याओं का प्रमुख कारण हमारा एकांगी विकास है। हमने भौतिक विकास तो चरम सीमा तक कर लिया है, किन्तु आध्यात्मिक विकास में हम अभी भी नवजात शिशु के समान हैं, क्योंकि मानव की रचना केवल भौतिक अंगों से पूर्ण नहीं होती वरन् आत्मा पुरुष्ण प्रमुख माग है जैसा कि चरक संहिता में कहा गया है — 'शरीरेन्द्रियसत्वात्मा संयोगो धारि जीवितम्' 49 अतएव आध्यात्मिक विकास के अभाव में सुख शान्ति की कल्पना करना व्यर्थ है। आज नगर में अनियंत्रित विस्तार, अत्याधिक औद्योगिकरण, गन्दी बस्यों के प्रसार, नगरीय सुविधाओं का आमाव, औसत आयु में व्हास, पर्यावरण प्रदषण, सामाजिक विघटन, बढ़ते हुये अपराध एवं दुर्घटनायें, मानव की बढ़ती हुई संवेदन शून्यता प्राकृतिक प्रकोप ने मानव के समक्ष एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। अतएव इन समस्याओं का समाधान तभी सम्भव है जब हम प्रकृति के सानिध्य में रहकर अपना विकास करें अर्थात अपना आवास, ग्राम नगर स्थापत्य वेद अनुक्त्प निर्मित करें जिससे न केवल व्यक्ति विशेष का चहुंमुखी विकास होगा वरन् सम्पूर्ण समाज का विकास सम्भव है, क्योंकि व्यक्ति पर सर्वाधिक प्रभाव इसके आस — पास के वातावरण का पड़ता है, यदि मानव का आवास प्रकृति के अनुकूल है तो आस — पास का वातावरण स्वस्थ्य होगा तथा मानव का चहुंमुखी विकास होगा।

<sup>47.</sup> जैन, एम. एस., भौगोलिक चिंतन एवं विधितंत्र, साहित्य भवन, आगरा, 1992, पृ. क्र. 430

<sup>48.</sup> Radha Krishnan, Sarvepalli, The Cultural Heritage of India, Swami
Nityaswarupananda secretory, The RamKrishna Mission Institute of culture,
Calcatta, 1958, P. N. 3

<sup>49.</sup> चरक संहिता, 1/स्र रिशान

संयोगो सारि फीवितम वर्ष अस्तर अस्तरिक विकास के बानाव में सुख कार्नेन की कुन्या

# 2.7 वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिक अवधारणा :

वास्तुशास्त्र प्राचीन वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित विषय है। इसकी महत्ता एवं वैज्ञानिकता को न केवल प्राचीन भारतीय वास्तुविदों ने स्वीकारा है, वरन् समस्त विश्व के आधुनिक वास्तुविद एवं वैज्ञानिक एकमत होकर संहर्ष स्वीकारने लगे हैं, क्योंकि वास्तुशास्त्र के समस्त सिद्धांत अर्वाचीन विज्ञान की कसौटी पर खरे सिद्ध हुये हैं और हो रहे हैं। वास्तुशास्त्र के कुछ अपने मूलभूत सिद्धांत हैं जिनका आधुनिक नगर नियोजक एवं वैज्ञानिक उनकी वैज्ञानिकता के कारण संहर्ष अनुसरण कर रहे हैं। यही कारण है कि आज पश्चिमी विश्व भी भारतीय संस्कृति का मार्गानुगामी बन गया है। वास्तुशास्त्र के कुछ प्रमुख सिद्धांत निम्नांकित हैं —

### 2.7.1 दिक् विन्यास (Orintation) :

दिक् विन्यास को दिक् निर्धारण भी कहते हैं। दिक् विन्यास के आशय दिशाओं का सही ज्ञान प्राप्त करना है अर्थात वास्तु के किसी भी भाग को उचित दिशा में स्थापित करना ही दिक् विन्यास है। वास्तुशास्त्र में प्रमुख आठ दिशायें मानी गई हैं — (1) उत्तर (2) ईशान (3) पूर्व (4) आग्नेय (5) दक्षिण (6) नैऋत्य (7) पश्चिम (8) वायव्य। (रेखा चित्र क्र0 1)

जब किसी वास्तु की स्थापना की जाती है जो इसके विभिन्न अंगों (भागों) का उचित दिशानुरूप निर्धारण किया जाता है। इन दिशाओं का वर्गीकरण एवं निर्धारण पूर्णतः प्राकृतिक नियमों पर आधारित होता है। पृथ्वी ही नहीं वरन् समस्त सौर्य मण्डल के लिये सूर्य ऊर्जा का अतिमहत्वपूर्ण स्त्रोत है अतः सूर्य की किरणों में प्रातः काल से संध्या काल तक समयानुसार गुणों में परिवर्तन होता है। एक ओर प्रातः कालीन सौर्य रिश्मयाँ जीवन दायनी है वहीं दूसरी ओर मध्याह कालीन सूर्य की किरणों स्वास्थ्य के लिये हानिकारक भी है। अर्थात वास्तु पर प्रातः काल से संध्याकाल तक सूर्य ऊर्जा के भिन्न – भिन्न प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। यही नहीं रात्रि में भी हमारी वास्तु अन्य ग्रहों नक्षत्रों से प्रभाव से मुक्त नहीं है। अतएव इन प्रभावों को देखते हुये दिशाओं के अनुरूप वास्तु में विभिन्न कार्यों के सम्पादन हेतु स्थान निर्धारित किये जाते हैं। पृथ्वी पर सूर्य से अनेक प्रकार की किरणों पहुंचती हैं। इनमें से कुछ लाभदायक ति। कुछ हानिकारक होती है। हानिकारक किरणों को दो प्रमुख मागों में विभाजित किया जाता है—

the state of the s

- 1. पराबैगनी किरणें
- 2. अवरक्त किरणें

प्रातः काल से संध्या काल तक सभी दिशाओं में इन किरणों के विभिन्न प्रभाव देखने को मिलते हैं और इसी आधार पर प्राचीन ऋषिमुनियों ने दिशाओं एवं काल का निर्धारण किया है। सूर्य से प्रमुख सात प्रकार के किरणों का उत्सर्जन होता है। इनर सात किरणों को वैदिक ग्रन्थों से सूर्य के सात अश्वों के नाम से सम्बोधित किया गया है। इन किरणों की ऋषिमुनियों ने सप्त शक्ति देवताओं के रूप में भी कल्पना की है।

ऋषिमुनियों एवं वास्तुविदों ने सूर्य किरणों के प्रभाव एवं परिणाम इत्यादि का सूक्ष्म अध्ययन कर उनके गुणों के आधार पर नाम निर्धारित किये हैं जो कि आधुनिक नामों से पर्याप्त सामंजस्य रखते हैं।

तालिका क्र0 2.1 सूर्य रिमयों के वैदिक एवं अर्वाचीन नाम

| <b>東</b> 0 | वैदिक नाम              | अर्वाचीन नाम         | देवता का नाम    |
|------------|------------------------|----------------------|-----------------|
| 1.         | कांचनसम                | लाल                  | पर्जन्य         |
| 2.         | स्फटिक निर्मल          | नारंगी               | कश्यप           |
| 3.         | इन्द्र नील             | पीला                 | महे न्द्र       |
| 4.         | वैडूर्य                | हरा                  | सूर्य           |
| 5.         | पद्यराग                | नीला                 | सत्य            |
| 6.         | बज्रक                  | पारवा                | भृष             |
| 7.         | ब्रह्मतेज              | जामुनी               | नभष             |
| काम संब    | र से सुधे के अस्टाना । | edy something of his | e sis de ares y |

<sup>50.</sup> ब्रह्माण्ड पुराण,

13 HE PARKET AND THE PROPERTY OF STREET OF STREET, STR

तालिका क्र0 2.1 की सूर्य किरणों को स्पेट्रोमीटर की सहायता से देखा जा सकता है। (चित्र क्र0 2.)

उपरोक्त किरणों के आधार पर विभिन्न कियाकलाप हेतु ऋषिमुनियों ने काल अर्थात समय का निर्धारण किया है—

# 2.7.1.1 ब्रह्म मूहर्त :

प्रातः 3 बजे से 4.30 तक ब्रह्म काल माना गया है। यह समय साधना, पूजन एवं ईश्वर की आराधना आदि के लिये सर्वोत्तम माना गया है। दृश्य खमय कारावरा में सर्वोधिक शानित

#### 2.7.1.2 ऊषा काल:

प्रातः 4.30 से सूर्य उदय तक का समय ऊषा काल कहा गया है इसे प्रातः भ्रमण, सूर्य स्नान, व्यायाम आदि के लिये निर्धारित किया गया है। इस कार में काराबाक में एकिएक प्रातासमु जारे जारी है।

#### 2.7. 1.3 अरूण काल:

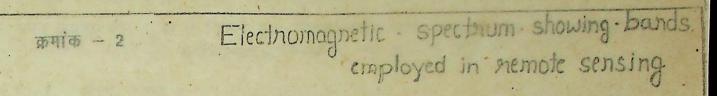
इसे स्नान एवं नित्य कर्म के लिये उत्तम माना गया है। यह सूर्योदय से लगभग 9.30 तक माना गया है। इस समय तक स्ट्री की का भरावक कियों प्रती पर पहुंच - अकी हिती है।

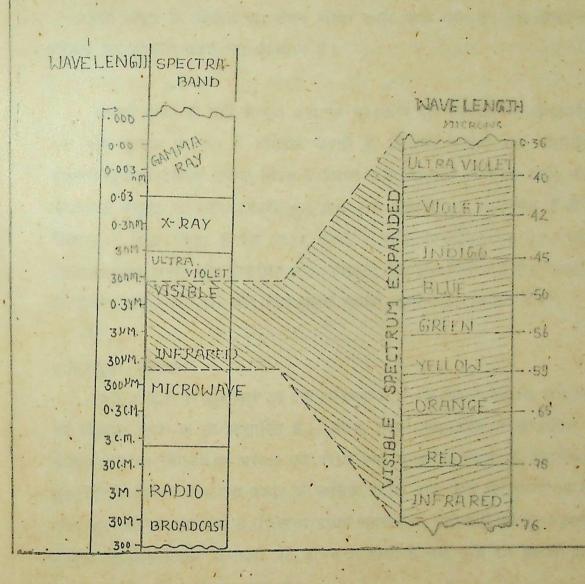
#### 2.7.1.4 प्रातः संघव काल :

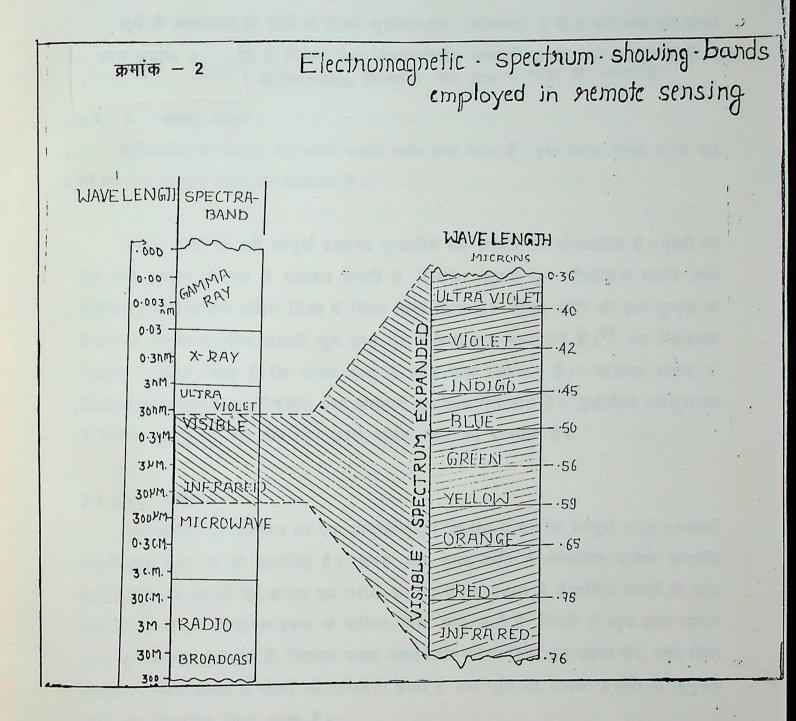
यह काल अरूण काल की समाप्ति तथा मध्यान्ह काल के प्रारम्भ तक माना गया है। इसमें जीवकोपार्जन सम्बन्धी किया कार्य का निर्देश दिया गया है। हा रूमम रूप समि की -

#### 2.7.1.5 मध्यान्ह काल :

यह काल दोपहर से सूर्य के अस्ताचल अर्थात लगभग 12 से 3.00 बजे तक माना जाता है। इस काल में भोजन कर विश्राम करने का प्रावधान है। रख समग्र स्त्री के स्वीधिक शिक्तिकार किरों विकरित होती हैं।







#### 2.7.1.6 अपरान्ह काल

सूर्य के अस्ताचल हो जाने से लेकर सूर्यास्त तक (लगभग) 3 से 6 बजे तक का समय अपरान्ह काल माना जाता है जिसमें पुनः जीवकोपार्जन सम्बन्धी कार्य करने कहा गया है। रख समय तं कि स्त्र के कार्य कर हो जाता है।

#### 1.7. ु. 7. संध्या समय :

सूर्य अस्त के पश्चात का समय संध्या काल कहा गया है। इस समय सन्धा वंदन एवं भोजन कर विश्राम करने का प्रावधान है।

सम्पूर्ण पृथ्वी ही नहीं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड चुम्बकीय बल धाराओं से आच्छादित है। पृथ्वी भी एक महा चुम्बक के रूप में व्यवहार करती है, जिसका उत्तरी ध्रुव भौगोलिक उत्तर तथा दक्षिणी ध्रुव भौगोलिक दक्षिण दिशा में स्थित माना जाता है। मानव शरीर भी एक चुम्बक के समान है मनुष्य का सिर उत्तरी ध्रुव तथा पैर दक्षिणी ध्रुव माने गये हैं। <sup>51</sup> यह चिकित्सा विज्ञान ने सिद्ध किया है कि मानव रक्त में लौह कण विद्यमान है। भौतिक शास्त्र के सिद्धांतानुसार समान ध्रुव विकर्षित तथा असमान ध्रुव आकर्षित होते हैं। इसीलिये वास्तुशास्त्र में दिक्षण अथवा पूर्व की ओर सिर करके शयन करने का प्रावधान है।

# 2.7.2 मृदा परीक्षण

मृदा परीक्षण वास्तुशास्त्र का एक अतिमहत्वपूर्ण सिद्धांत है क्योंकि सम्पूर्ण वास्तु रचनाओं का विकास मृदा पर ही आधारित है। भवन, ग्राम नगर आदि में सम्पादित प्रत्येक मानवीय कार्यकलाप पर मिट्टी का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है वैज्ञानिक शोधों से ज्ञात हुआ है कि मिट्टी में अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं, जिनमें से कुछ लाभ दायक तथा कुछ हानिकारक होते हैं, जिसका प्रभाव भवन तथा भवनवासियों पर पड़ता है। अतः जिस मिट्टी में जिस प्रकार के तत्वों की अधिकता होती है उस भूमि को उसकी प्रकृति के अनुरूप कार्य हेतु निर्धारित किया जाता है।

# 2.7.3 वास्तुपद विन्यास

बगैर योजना बद्ध तरीके से किया गया कार्य पूर्ण रूपेण सफल तथा उद्देश्य की प्राप्ति होने में सहायक नहीं होता है यह ठीक उसी प्रकार है जैसे लक्ष्य विहीन तीर चलाना। जिस

<sup>51.</sup> तारखंड़कर, अनिल रामकृष्ण, वास्तुशास्त्र, कास्मो पब्लिकेशन्स हाऊस धुलिया, महाराष्ट्र, 1996 पृ. क्र. 13

THE THE STATE OF THE PARTY OF T

प्रकार वर्तमान समय में अर्वाचीन नगर नियोजन या अभियान्त्रिक नगर या भवन स्थापना के पूर्व एक मास्टर प्लान तैयार करते हैं और उसी के अनुरूप कार्य सम्पादित किया जाता है, ठीक इसी प्रकार वैदिक काल में स्थापित द्वारा वास्तुपद विन्यास किया जाता था, जिसमें प्राकृतिक नियमों के अनुरूप वास्तु के विभिन्न भागों का निर्धारण कार्य की प्रकृति के आधार पर किया जाता था। वैदिक कालीन स्थापितयों को प्राकृतिक नियमों का पूर्ण ज्ञान था। अतएव उसी आधार पर वास्तु अथवा भवन में सम्पादित होने वाले कार्यों के स्थान का निर्धारण किया जाता था। किन्तु आधुनिक समय में बनाई गई योजनाओं का आधार मात्र वाह्य साज – सज्जा तथा भौतिक सुख सुविधायें हुआ करती हैं तथा प्रकृति के नियमों की उपेक्षा कर दी जाती है।

#### 2.7.4 मान नियोजन :

वर्तमान में जिसे माप अथवा Megerment के नाम से जाना जाता है उसे वैदिक काल में हस्त लक्षण अथवा मान नियोजन कहा जाता था। वैदिक काल में माप के लिये प्रमुख रूप से हस्त का प्रयोग होता था। मान के आधार पर ही वास्तु शास्त्र के अप्रितम ग्रन्थ मानसार का नामकरण हुआ है। मान – माप (Magerment) – सार – निष्कर्ष (Esence) अतएव माप का सार अथवा निष्कर्ष ही मानसार है।

स्थापत्य वेद के सिद्धांतों में मान नियोजन का विशिष्ट महत्व है, क्योंकि गलत अनुपातिक मान को सभी प्रकार की रचनाओं के लिये अशुभ माना गया है क्योंकि वास्तु की माप सही नहीं होगी तो प्रकृति गृह नक्षत्रों आदि के लाभदायक प्रभावों का सदुपयोग नहीं हो पायेगा। अतः इससे व्यक्ति की सम्पूर्ण जैविक प्रणाली प्रभावित होती है परिणामतः हमें अनेकों प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है वैदिक काल में मान नियोजन की विधियाँ अतिसूक्ष्म तथा पूर्णतया वैज्ञानिक पद्धित पर आधारित थी। उस समय मान प्रमुख रूप से क्षेत्रफल गणना, संख्या गणना तथा समय गणना के रूप में किया जाता था। जिस प्रकार वर्तमान में क्षेत्रफलगणना के लिये से.मी., मी.इंच. फुट इत्यादि का प्रयोग किया जाता है वैदिक काल में अंगुल, हस्त व्यान, गब्यूति इत्यादि का प्रयोग किया जाता था। इतना ही नहीं वैदिक काल में किस वर्ण के व्यक्ति के लिये किस माप का भवन बनना है, ग्राम तथा नगर का निवेश कितने क्षेत्रफल में होना है तथा क्षेत्रफल के आधार पर नगर, ग्राम, पुर, खेटक इत्यादि नाम दिये गये थे।

#### 2.7.5. आयादि निर्णय :

किसी भी वस्तु के भार ग्रहण की शक्ति के उपरान्त ही उसका निर्माण कार्य सम्पन्न किया जाना चाहिये। वैदिक काल में यह कार्य आयादि निर्णय के माध्यम से किया जाता था। उदाहरण के लिये यदि किसी भवन का निर्माण करना है तो वहां निवास करने वालों व्यक्तियों की संख्या पर निर्भर करेगा कि उसका क्षेत्रफल कितना रखा जाये अर्थात उसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई इत्यादि की माप क्या हो, क्योंकि वहां निवासित व्यक्तियों को प्राण वायु (आक्सीजन) जैसी मूल भूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही वास्तु की रचना की जायेगी।

#### 2.7.6. पताका छंदस :

हम देखते हैं कि कुछ वास्तु रचनाओं की आकृति आकार देखते ही ज्ञान हो जाता है कि सम्बन्धित वास्तु की रचना का प्रायोाजन अर्थात उद्देश्य क्या है। वैदिक काल में प्रत्येक उद्देश्य के मव हेतु आकार एवं आकृति निश्चित कर दी गई थी, जिसे पताका छंदस कहते हैं। वर्तमान समय में इस प्रकार का नियम अथवा सिद्धांत नहीं है परिणामतः भवन के सामने एक पटल लगाना पड़ता है कि सम्बन्धित वास्तु किस प्रायोजन हेतु निर्मित है। वर्तमान में यदि कोई अशिक्षित अथवा भिन्न भाषा का व्यक्ति देखता है तो उसे पता ही नहीं चलता कि सम्बन्धित भवन किस उद्देश्य हेतु है किन्तु वैदिक काल में उद्देश्य के अनुरूप वास्तु रचना के कारण यह द्विधा नहीं रहती थी।

अतएव निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वास्तुशास्त्र का आधार कपोल कल्पनायें नहीं है, वरन् इसने वैज्ञानिकता के ठोस धरातल पर अपने सिद्धांतों का निर्धारण किया है जो कि न केवल वैदिक काल में ही उपयोगी थे, वरन् ये सिद्धांत सर्वकालीन सिद्धांत है जिनके अनुपालन से मानव का कल्याण सम्भव है।

# अध्याय – उ नगरीय भूगोल का परिचय

# अध्याय – 3 नगरीय भूगोल का परिचय

# अध्याय 3 नगरीय भूगोल का परिचय

# 3.1 नगरीय भूगोल का अर्थ एवं परिमाषा :

'पृथ्वी और उस पर दिखाई देने वाली सभी बातों या तथ्यों का अध्ययन करना या उसके बारे में लिखना ही शाब्दिक अर्थों में भूगोल है । अर्थात भूगोल से हमारा आशय पृथ्वी तथा पृथ्वी से सम्बन्धित सभी प्रत्यक्ष या परोक्ष तथ्यों या बातों का अध्ययन ही भूगोल है, और इन तथ्यों का विश्लेषण करना ही भूगोल का प्रमुख उद्देश्य है । ये सभी बातें पृथ्वी पर असमान रूप से वितरित है इन बातों का किसी स्थान विशेष पर विशेष तत्व क्यों, कहाँ और कैसे उपस्थित है, का तथ्यात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन ही भूगोल का प्रमुख विषय क्षेत्र है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से भूगोल का दो प्रमुख भागों में अध्ययन किया जाता है — (1) भैतिक भूगोल (2) मानव भूगोल । भौतिक भूगोल पृथ्वी से सम्बन्धित सभी भौतिक तत्वों जैसे उच्चावचन, जलवायु, जल—स्थल का वितरण, सौर मण्डल इत्यादि काअध्ययन करता है । अर्थात् पृथ्वी पर प्राकृतिक (भौतिक) पर्यावरण ही भौतिक भूगोल की विषय वस्तु है । मानव भूगोल के अन्तर्गत मानव तथा इसके द्वारा सम्पादित विभिन्न कार्यों एवं प्राकृतिक वातावरण के मध्य स्थापित होने वाले सम्बन्धों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। अर्थात हम मानव भूगोल के अन्तर्गत मानव की अन्योन्य क्रिया में व्यस्त मानव तथा उसके विभिन्न प्रकार के कार्यों का अध्ययन किया जाता है, जो कि पृथ्वी तल पर असमान रूप से वितरित हैं। अर्थात हम इस विवेचन के आधार पर संक्षेप में कह सकते हैं कि 'मानव एवं प्रकृतिक वातावरण के मध्य कार्यात्मक सम्बन्धों एवं परिणामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ही मानव भूगोल है।'

मानव की प्रमुख तीन मूलभूत आवश्यकतायें हैं — भोजन, वस्त्र और आवास । ऐल्सवर्थ हंटिंगटन महोदय ने आश्रय या मकान को भोजन और वस्त्र के बाद तीसरा स्थान दिया है जबिक ब्रूंज महोदय ने आवास को दूसरी नितान्त आवश्यकता बताया है। मानव की आवास की मूलभूत आवश्यकता के कारण ही बस्तियों का उदय सम्भव हो सका है। अर्थात THE THE TOP PIN PERS TO PERS THE PROPERTY OF THE PERSON OF THE PERSON OF THE PERSON

मानव बस्ती मानव का एक महत्वपूर्ण एवं जटिल कार्य है, जिसका अध्ययन मानव भूगोल के अन्तर्गत किया जाता है, क्योंकि मानव बस्तियाँ आस — पास के भैतिक एवं मानवीय वातावरण को न केवल प्रभावित करती है, वरन स्वयं भी प्रभावित होती है। यदि मानव भूगोल के अन्तर्गत बस्तियों का अध्ययन नहीं किया गया तो भूगोल का अध्ययन अधूरा होगा, क्योंकि भूगोल का केन्द्र बिन्दु मानव है। इसी प्रकार अन्य मानवीय कार्यों के आधार पर मानव भूगोल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से अनेक शाखाओं एवं उप शाखाओं के रूप में विभाजित किया गया है। जैसे — आर्थिक भूगोल सामाजिक भूगोल, राजनैतिक भूगोल बस्ति भूगोल, जनसंख्या भूगोल, ऐतिहासिक भूगोल इत्यादि।

बस्ति भूगोल के अन्तर्गत सभी प्रकार की नगरीय एवं अनगरीस बस्तियों का अध्ययन किया जाता है। 'विभिन्न प्रकार के आवासों के सुगठित समूह को बस्ति कहते हैं।' मानव समूह सदैव ही बस्ति के रूप में रहा है, अर्थात बस्ति के अन्तर्गत झुग्गी झोपड़ी से लेकर हुमंजिला इमारतों तक के समूह को सम्मिलित किया जाता है जैसा कि कोहेन महोदय ने कहा है — 'It is concerned not only with the buildings grouped around the permanent farm dwelling but also with the temporary camp of the hunter or hunder or with settlement clusters or agglomerations running the scale from hamlet to village to town, to city and to metropolis.' 1

सभी प्रकार की मानवीय बरितयों में यातायात मार्ग तन्त्र शरीर में फैली हुई नाड़ी जाल के समान फैला होता है, जो कि बरित में संचार परिवहन का कार्य तो करता ही है, साथ ही साथ बरित से बाह्य सम्बन्ध स्थापित करने में भी सहायक होता है । इन सभी तथ्यों का अध् ययन बरित भूगोल के अन्तर्गत किया जाता है ।

बस्तियों में प्रतिपादित होने वाले कार्यों के आधार पर बस्तियों के दो प्रमुख भागों — नगरीय और ग्रामीण बस्ति के रूप में विभाजित कर दिया गया और इसी आधार पर बस्ति भूगोल का भी दो पृथक — पृथक शाखाओं के रूप में विकास हुआ (1) नगरीय भूगोल (2) ग्रामीण भूगोल । नगरीय भूगोल के अन्तर्गत नगरीय पर्यावरण एवं कार्यों का अध्ययन किया

Kohan, C.F., Settelment Geography , American Geography Inventary and prospect, 1954 P.P. 130

्मह सदेव ही बरित के अब में रहा है अब्रांत बरित के बलावेत ज्ञापी की पत्ने के लेकर

जाता है, जबिक ग्रामीण भूगोल के अन्तर्गत समस्त ग्रामीण पर्यावरण एवं कार्यों का अध्ययन किया जाता है ।

नगरीय भूगोल अंग्रेजी भाषा 'Urban Geography' का हिन्दी रूपान्तरण है । अंग्रेजी भाषा का यह अर्बन शब्द अर्बस और अर्बनस शब्दों से मिलकर बना है जिनका कमशः अर्थ नगर और नगर से सम्बन्धित बातें हैं । इस प्रकार नगरीय भूगोल का शाब्दिक अर्थ नगरों का भूगोल है, अर्थात नगरों से सम्बन्धित सम्पूर्ण मानवीय और भौतिक तत्वों का अध्ययन ही नगरीय भूगोल है । नगरीय भूगोल केवल उन्ही कार्यो तत्वों या बातों का अध्ययन करता है, जो नगर से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्धित होती है । अर्थात नगरीय भूगोल नगर का सम्पूर्ण भौतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं ऐतिहासिक विकास का भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन करता है। इसका आशय यह है कि नगरीय भूगोल नगर का अध्ययन केवल एक इकाई के रूप में नहीं करता वरन् नगर का अध्यय विभिन्न दृष्किोणों से करता है । सामान्यतया नगरीय भूगोल को नगरीय बस्तियों के वर्गीकरण का विषय माना जाता है, जैसा कि ग्रिफिथ टेलर का मानना है - 'The study of Urban Geography is yet in its infancy and no generally accepted classification of towns has yet been put forward. '2 सामान्यता नगरीय भूगोल को नगरीय बस्तियों के वर्गीकरण का विषय माना जाता है। किन्तु नगरीय भूगोल को नगरीय बिस्तियों, नगरीय भूगोल अन्य प्रकार बस्तियों से भिन्न नगरीय वर्गीकरण तक सीमित करना अनुचित होगा । अतएव इसके अलावा अन्य विशेषताओं जैसे कार्यात्मक संरचना, जनसंख्या, संस्कृति तथा नगरीय प्रतिरूप एवं अन्य तत्वों से सम्बन्धों का विवेचनात्मक अध्ययन करता है। अतएव संक्षेप में हम कह सकते हैं कि, पृथ्वी तल या उसके किसी प्रदेश की नगरीय बस्तियों के बीच तथा भीतर और अन्य नगरीय एवं अनगरीय प्रदेशों से उनके सम्बन्धों में जो क्षेत्रीय भिन्नतायें पायी जाती है, उनकी वैज्ञानिक व्याख्या से उनका (नगरीय भ्गोल) सम्बन्ध है।

उपर्युक्त विवेचन के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नगरीय भूगोल एक मिश्रित कोटि का विज्ञान है । नगरीय भूगोल एक ओर भौतिक भूगोल के रूप में नगर की आकृति, संरचना, विस्तार, प्रतिरूप आदि का अध्ययन करता है, तो दूसरी ओर मानव भूगोल के रूप में नगरीय कार्यों के आधार पर नगरों को अनगरीय क्षेत्रों से अलग रूप में प्रदर्शित करता है । नगरीय

<sup>2.</sup> Taylor, G., Urban Geography, Methven & Co. Ltd. 36 Essex Street London, 1951 P.P. 15

THE REAL PROPERTY OF THE PROPE

भूगोल केवल नगर के भौतिक परिवेश का ही अध्ययन नहीं करता वरन् यह नगर का एक सामाजिक विज्ञान के रूप में भी अध्ययन करता है, क्योंकि भवन मानव निर्मित एक कृतिम संरचना है न कि प्राकृतिक। नगर ही मानव के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि कार्यों के धुरी केन्द्र होते हैं अतः नगरीय भूगोल एक बस्ति विशेष का अध्ययन शास्त्र है । नगर ही जनसंख्या के केन्द्र बिन्दु होते हैं, और व्यक्ति — व्यक्ति से मिलकर ही समाज का निर्माण होता है तथा नगर का सम्पूर्ण वातावरण इसी समाज की देन होता है । किन्तु केवल जनसंख्या किसी बस्ती को नगर के रूप में प्रदर्शित करने मे सक्षम नहीं है वरन् इस जनसंख्या द्वारा प्रतिपादित कार्यों के आधार पर ही किसी बस्ती को नगर का दर्जा प्राप्त होता है । अर्थात 'नगरीय बस्ति की परिभाषा मूल रूप से प्रकार्य का प्रश्न है न कि जनसंख्या का।'

अर्थात नगरीय भूगोल नगर की सम्पूर्ण ऐतिहासिक भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथ्यों का अध्ययन करता है, जो कि किसी भी बस्ती को नगर बनाने में सहायक होते हैं। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि 'नगरीय भूगोल जहां एक ओर विज्ञान है वहीं दूसरी ओर कला भी है।' नगर की अकारिकी का निर्माण नगर मे निर्मित भवनों, पूजा अथवा प्रार्थना स्थलों, कल — कारखानों बाजारों आदि द्वारा होता है, जो कि एक मनोरम स्थापत्य कला है। नगर का भौतिक एवं कार्यात्मक वातावरण भू—आकृति, आकार, आकृति, जलवायु, जलस्त्रोत, नगरीय एवं अनगरीय क्षेत्रों के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एक विज्ञान है। अतः नगरीय भूगोल को एक कला एवं विज्ञान के रूप में निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है —

'नगरीय भूगोल वह कला एवं विज्ञान है, जिसके अन्तर्गत नगर से सम्बन्धित मानवीय एवं भौतिक पर्यावरण का समग्र रूप से विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है ।'

## 3.2 नगरीय मूगोल का उद्भव एवं विकास :

नगरीय भूगोल भूगोल की एक नूतन शाखा है, जिसने अभी 20 वीं शताब्दी में ही पृथक रूप से अपना अस्तित्व स्थापित किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक यह किसी भी विश्व विद्यालय में भूगोल की अन्य शाखाओं, जैसे — जलवायु विज्ञान, भू—आकृति, विज्ञान या राजनीति भूगोल आदि के समान विशेष शाखा के रूप में स्थापित नहीं था। किन्तु द्वितीय 3. Carter, Harald, The study of Urban Geography, 1976, P.P. 1

विश्व युद्ध के पश्चात अनेकं युरोपीय नगर नष्ट प्रायः हो गये जिनमें अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि समस्याओं ने जन्म ले लिया जिसके कारण सभी स्तरों पर इन नगरों के पुनीनर्माण की आवश्यकता महसूस की जाने लगी । परिणामतः अनेक भूगोल बेत्ताओं ने इनका क्रमबद्ध एवं समायिक रूप अध्ययन प्रारम्भ कर दिया तथा अनेक भूगोल बेत्ताओं ने अनेक व्यक्तिगत नगरो पर आधारित अध्ययन प्रस्तुत किया । द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक नगरीय भूगोल का अध्ययन मानव भूगोल के अन्तर्गत किया जाता था, न कि एक स्वतंत्र शाखा के रूप में क्योंकि इस समय तक इस विषय का क्रमबद्ध तथा सामायिक रूप से विकास तथा अध्ययन प्रारम्भ नहीं हुआ था ।

यदि हम भारतीय वैदिक ग्रन्थों पर दृष्टिपात करें तो केवल नगरीय भूगोल ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भूगोल विषय का वर्णन इन वैदिक ग्रन्थों में अन्य विषयों के साथ मिश्रित रूप से प्राप्त होता है । यही नहीं कुछ भूगोलवेत्ता पुराप्राचीन कालीन (3000 ई. पू. से 500 ई. पू.) ऋग्वैदिक सुनियोजित बस्तियों का अस्तित्व भी स्वीकारते हैं। 4 युजुर्वेद में स्पष्ट रूप से ग्रामीण एवं नगरीय बस्तियों का वर्णन प्राप्त होता है, जो कि नगरीय भूगोल ही नहीं वरन् बस्ति भूगोल का ही एक रूप है । 5 इससे यह प्रतीत होता है कि वैदिक काल में सुनियोजित बस्तियां थी, जिनकी प्राकृतिक शक्तियों (देवी – देवताओं) के रूप में पूजा एवं आराधना की जाती थी, बस्तियों की प्रार्थना के लिये बनेक प्रकार के मन्त्रों का प्रयोग किया जाता था, जिनका विस्तृत विवेचन आज भी वेदों में प्राप्त हो जाता है । इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में नगरीय भूगोल का भी अध्ययन वैदिक काल में किया जाता था। इसी प्रकार का नगरीय वर्णन अथर्वेद में प्राप्त होता है।

महाकाव्य काल में अर्थात रामायण और महाभारत काल में मानव बस्तियों को नगरों एवं ग्रामों के रूप में वर्गीकृत कर दिया गया था जिसके कारण नगरीय भूगोल वैदिक काल की अपेक्षा और अधिक परिष्कृत हो गया था । परिणामतः इस काल में अनेक सुनियोजित नगरों जैसे अयोध्या, मिथिला, द्वारिका, हस्तिनापुर, मथुरा का विकास हो गया था जो कि नगरीय

<sup>4.</sup> Sharma, R.C., Setterment Geography of the India Desert, 1972, 1972, P. 85

<sup>5.</sup> शुक्ल, यजुर्वेद 5/28

<sup>6.</sup> अथर्वेद 3/3/1

भूगोल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है इस प्रकार के नगरों एवं नगरीय व्यवस्था का आज भी आभाव है। अतः इस काल को हम नगरीय विकास की चरम सीमा भी कह सकते हैं। जैसा की बाल्मीिक रामायण में वर्णित अयोध्या एवं लंका नगरी के वैभव एवं नगरीय नियोजन से स्पष्ट है। इसका और अधिक परिष्कृत रूप महाभारत काल में देखने मिलता है। इन्द्रप्रस्थ नगरी का निर्माण देवशिल्पी विश्वकर्मा और दानव शिल्पी मय ने मिलकर की थी। अजे कि आज भी नगर नियोजन का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

महाभारत युद्ध के पश्चात भारतीय साहित्य में भी विशेषीकरण को महत्व दिया जाने लगा। इस विशेषीकरण के प्रवाह से नगर भी अछूते न रह सके हाँ यह बात अवश्य है कि नगरों का विशुद्ध रूप से क्रमबद्ध अध्ययन नहीं किया जा सका , किन्तु पूर्वकाल की अपेक्षा विभिन्न विद्याओं के विशेषीकरण को पर्याप्त महत्व दिया जाने लगा। जिनका प्रमाण पुराणों में भी कुछ मात्रा में परिलक्षित होते हैं, जिन्हें अध्यायों के आधार पर विभिन्न विषयों का विशेषीकरण किया गया। मत्स्यपुराण, विष्णु पुराण, ब्रह्म पुराण, अग्नि पुराण, पद्म पुराण इत्यादि में भूगोल का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है जिनमें विशेषतः भौतिक भूगोल एवं प्रादेशिक भूगोल का अध्ययन किया गया है। पुराणों में नगरीय भूगोल का वर्णन वास्तुशास्त्र एवं अन्य कथाओं के माध्यम से वर्णित है।

मत्स्य पुराण में त्रिपुर नामक महानगर का वर्णन मत्स्य पुराण के 130 एवं 187 अध्यायों में वर्णित है । इससे स्पष्ट है कि विभिन्न विषयों का विशेषीकरण (Specialism) प्रारम्भ हो चुका था । अनेक विषयों का भिन्न – भिन्न शाखाओं के रूप में अध्ययन कौटिल्य के समय से और अधिक परिलक्षित होने लगा और इस समय का विशेषीकृत ग्रन्थ 'कौटिल्य का अर्थशास्त्र' सर्वोत्तम कृति है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में नगर की परिभाषा के अलावा नगरीय अकारिकी, आकार, एवं नगर को विभिन्न कार्यो को प्रकृति अनुरूप नगर के उचित भागों में स्थापना की बात कही है। इस ग्रन्थ में नगर की स्थिति एवं जनसंख्या के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।' आठ सौ गावों के मध्य में स्थानीय नामक नगर बसायें। चार सौ गावों को मिलाकर संग्रहण नामक एक बड़ा गांव बसायें। इसके अलावा

<sup>7.</sup> वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, 2/17

<sup>8.</sup> महाभारत आदि पर्व, 206/28

<sup>9.</sup> गैरोला, वाच्स्पति, कौटित्य का अर्थशास्त्र, पृ. क्र. 91



नगरीय एवं ग्रामीण बस्तियों पर अनेक ग्रन्थों की रचना की गई जो न केवल नगरीय अकारिकी का शिल्पकला की दृष्टि से बल्कि कार्यात्मक दृष्टि से भी विशेष रूप से बस्ति भूगोल पर आधारित ग्रन्थ हैं। जैसे — मयमतम्, मानसार, विश्वकर्मा प्रकाशः, शिल्परत्नम्, समरांग्ण सूत्राधार इत्यादि । समरांग्ण सूत्राधार 1050 ई. में राजा मोज द्वारा पूर्णतः वैदिक ग्रन्थों का अनुसरण करके ही रचा गया था । जैसा कि मानसार में नगर के विषय में स्पष्ट रूप से कार्यों की झलक मिलती है। 10 इसी प्रकार मयमतभूमें भी आकार के आधार पर नगर का वर्गीकरण किया गया है । इस ग्रन्थ में नगर को प्रमुख 6 भागों में वर्गीकृत किया गया है । इसके पश्चात हमारे देश में (लगभग पहलीशती से) विदेशी आक्रमणों के कारण हमारा वैदिक ज्ञान धीरे — धीरे लुप्त होने लगा और कुछ समय पश्चात पश्चिमी शिक्षा के प्रसार के कारण हमारे वैदिक ज्ञान का विकास अवरूद्ध हो गया। इस समय तक पश्चिमी देशों में लगभग सभी विषयों का विशेषीकरण प्रारम्भ हो चुका था, उनमें से भूगोल भी एक था ।

भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी तल पर पाये जाने वाले एवं पृथ्वी से सम्बन्धित सभी तत्वों का अध्ययन प्रारम्भ में सम्मिलित रूप से किया जाता था। किन्तु 17 वीं शताब्दी तक विशीष्टीकरण को महत्ता प्रदान की जाने लगी तथा पृथ्वी और उसके तत्वों से सम्बन्धित ज्ञान को भी अलग — अलग विशिष्ट शाखाओं के रूप में विकसित किया जाने लगा। जैसे — पृथ्वी और ग्रहीय सम्बन्धों को नक्षत्र विज्ञान, पृथ्वी तल की रचनाओं को भू—आकृति विज्ञान, महासागरों का अध्ययन समुद्र विज्ञान, मानव की विभिन्न कियाओं एवं उपलब्धियों का अध्ययन विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के रूप में किया जाने लगा। इस कारण भूगोल एवं इसकी विषय वस्तु में एक प्रश्न चिन्ह लग गया। दूसरे विषयों के विद्वानों द्वारा भूगोल पर यह आक्षेप लगाया जाने लगा कि भूगोल अन्य सामाजिक विज्ञानों का सिमश्रण है।

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में इन्ही आलोचनाओं के फलस्वरूप भूगोल वेत्ताओं के दो वर्गों में विभाजित हो जाने के कारण भूगोल दो वर्गों में विभाजित हो गया (1) भौतिक भूगोल (2) मानव भूगोल। भौतिक भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी एवं उससे सम्बन्धित भैतिक तत्वों जैसे — समुद्र, जलवायु, स्थलाकृतियाँ आदि का अध्ययन किया जाने लगा। इसके प्रमुख रूप से वाल्टर पैक, डेविस, पेशेल आदि विद्वान समर्थक रहे। इसके विपरीत मानव भूगोल का

<sup>10.</sup> प्रसन्न कुमार, आचार्य, (सम्पादक) मानसार, लो पब्लिकेशन्स, प्राईवेट लि., दिल्ली, 10/27-28

केन्द्र बिन्दु मानव माना गया। भूगोल की इस शाखा के प्रमुख विद्वान रेटजेल, कु0 एलेन सेम्पुल, हेकल बकल आदि थे। इसी समय कुछ विद्वानों जैसे हेटनर, रिचथोफिन आदि ने मानवीय कार्य कालापों एवं पृथ्वी के भौतिक तत्वों का सामंजस्य स्थापित करते हुये प्रदेशिक अध्ययनों को महत्व दिया। भूगोल का यह विभाजन भौगोलिक इतिहास में (भौगोलिक द्वैतवाद) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। चूंकि सत्रहवी शताब्दी के प्रसिद्ध भूगोल बेत्ता वारेनियस ने 1750 में ही भूगोल के विशिष्टकरण पर बल दिया था इसलिये कुछ विद्वान उन्हें ही द्वैववादी विचारधारा का पोषक मानते हैं।

इसके पश्चात भूगोल में भी विशिष्टीकरण को महत्व दिया जाने लगा जिसके परिणाम स्वरूप अनेक शाखाओं एवं उपशाखाओं जैसे — सामाजिक भूगोल आर्थिक भूगोल, सामाजिक भूगोल, ग्रामीण भूगोल, प्रादेशिक भूगोल, जनसंख्या भूगोल आदि का विकास हुआ । नगरीय भूगोल 1907 में उस समय उस स्वतन्त्र शाखा के रूप में स्थापित हुआ, जब कुर्त हैसट नामक एक जर्मन विद्वान ने नगरीय भूगोल पर Studte Geographisch Betrachlet' नामक पुस्तक की रचना की । इस पुस्तक में कुर्त हैसट महोदय ने नगरीय भूगोल का अर्थ विषय वस्तु आदि पर विशेष रूप से प्रकाश डाला । इसके पश्चात नगरीय भूगोल का विस्तृत अध्ययन मार्क जेफरसन, पैट्क गेडिस, अल्फ्रेड क्रिस्टालर, स्पेट, मेयर और आर. एल. सिंह आदि विद्वानों ने किया तथा भूगोल की एक स्वतन्त्र शाखा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

### 3.3 नगरीय भूगोल की विषय वस्तु :

नगरीय भूगोल का प्रमुख उद्देश्य नगरीय क्षेत्र में पाये जाने वाले कार्यों का अध्ययन करना है, यह कार्य भूमि उपयोग एवं अन्य बातों पर भी प्रभाव डालते है, जो कि ग्रामीण बस्तियों एवं नगरीय बस्तियों को प्रथक करने वाले तत्व हैं। अतः भूगोल की अन्य शाखाओं की भांति नगरीय भूगोल के अध्ययन का भी केन्द्र बिन्दु मानव है, क्यों कि भूगोलबेत्ता बस्ति को मानव निर्मित अधिवास मानता है, जबिक नगर बस्ति का अभिन्न अंग है। यह मानव तथा नगर के सह सम्बन्धों तथा उससे उत्पन्न परिणामों एवं प्रभावों का अध्ययन करता है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि मानवीय कार्यों के फलस्वरूप नगरों पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पड़ने वाले समस्त प्रभावों का अध्ययन नगरीय भूगोल के अन्तर्गत किया जाता है।

<sup>11.</sup> जैन, एम.एस. भौगोलिक चिन्तर एवं विधितंत्र, 1992, पृ. क्र. 392

नगरीय भूगोल को कुछ विद्वान बस्ति भूगोल भी कहते हैं। यह नाम भूगोल की विषय वस्तु का बोध कराता है। नगर का अध्ययन अनेक विषयों के विद्वानों ने अपने — अपने दृष्टिकोण से किया है जैसे — इतिहासकार नगर का अध्ययन नगर के अतीत को ध्यान में रखकर करता है, तो समाज शास्त्री नगर के जमांककीय आंकड़ों एवं समाजिक दृष्टि से अध्ययन करता है इसी प्रकार एक अर्थशास्त्री नगर का अध्ययन आर्थिक संसाधनों की दृष्टि से करता है। इसी प्रकार भूगोलबेत्ता का भी नगर के प्रति अपना विशेष दृष्टिकोण होता है। लगभग सभी विषयों के विद्वान नगर के केवल एक ही कारक का विस्तृत रूप से अध्ययन करते हैं जबिक एक भूगोलबेत्ता नगर के उत्थाान पतन में सहायक सभी मानवीय एवं भौतिक कारकों से लेकर वर्तमान स्थित एवं भविष्य की आशाओं का भी अध्ययन करता है।

नगर का अध्ययन करते समय भूगोलबेत्ता सर्वप्रथम जिस स्थान पर नगर स्थित होता है उसका अध्ययन करता है । अर्थात नगर कितने क्षेत्रफल पर बसा हुआ है, उसके आस पास का भौतिक एवं मानवीय पर्यावरण जैसे — जलवायु, स्थलाकृतियां, मिट्टी, जल, उद्योग धन्धे, यातायात एवं संचार के साधन, नगर प्रभाव क्षेत्र आदि का अध्ययन करता है, क्योंकि ये वे मूलभूत भौगोलिक कारक है जो किसी भी बस्ति अथवा नगर के उत्थान पतन का महत्वपूर्ण कारण होते हैं । जैसे निम्न अक्षांसीय प्रदेशों की अपेक्षा मध्य अक्षांसों में अधिक विकसित नगर एवं सभ्यताओं का जमाव प्रचीन काल से ही रहा है । अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि नगर विकास सदृश्य रूप से प्रकृति प्रकिया का सम्मान करती है । 12 हेराल्ड कार्टर के अनुसार — 'There followed whale series of studies which can convently be called the rite and situation variety in which the main and was to demonstrate that the character of own was to be derived from thair physical locations. '13

नगरीय अध्ययन में नगर एवं आस — पास की स्थलाकृतियों का अध्ययन भी अपिरहार्य हो जाता है, क्योंकि नगर का विकास बहुत कुछ इन स्थालाकृं तियों से भी प्रभावित होता है । जैसे विश्व के अधिकांश नगर एवं प्राचीन सभ्यतायें पर्वतीय, पठारी भागों की अपेक्षा मैदानी भागों में अधिक विकसित हुये हैं। नदियाँ प्राचीन सभ्यता से ही यातायात का एक महत्वपूर्ण एवं सुलभ साधन रही हैं । इनका महत्व उन प्रदेशों में और अधिक हो जाता है

<sup>12.</sup> Arthur, B. Gallion & Simon Eisner, ibid P.P. 166

<sup>13.</sup> Carter, Herald ibid, P.P. 4

the soul the so was end people deprine beth for but the

जिनमें यातायात के साधनों का विकास किंवन होता है जैसे — पर्वतीय क्षेत्र । इस के विपरीत सुरक्षा की दृष्टि से नगरों का निर्माण पर्वतों एवं टापुओं पर उत्तम माना जाता है, इसी आधार पर राजपूत शासन काल में उदयपुर, चित्तौरगढ, राजिगरी जैसे नगरों का निर्माण किया गया था। इसके अलावा समुद्र तटीय भागों या खिनज क्षेत्रों में औद्योगिक नगरों का जमाव दृष्टिगोचर होता है जैसे लंदन, कलकत्ता, बम्बई, विशाखापट्टनम, बोकारो, जमशेदपुर, भिलाई आदि इसके उत्तम उदाहरण हैं । अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि किसी नगर का अध्ययन एक भौतिक प्रदेश के रूप में भी किया जाता है । नगरीय विकास में भौतिक परिवेश को महत्व देते हुये आर. सी. शर्मा ने ठीक ही लिखा है — 'Through the census period the town behaved differently in different phyriographic regions.' 14

नगरीय भूगोल वेत्ता नगर को एकांकी रूप में अध्ययन नहीं करता बल्कि वह उसके आस पास के ग्रामीण एवं नगरीय सहसम्बन्धों का भी अध्ययन करता है जो कि यातायात एवं संचार के साधनों द्वारा सम्बद्ध होता है । वस्तृतः नगरीय बस्ती को जीवनदान प्रदान करने वाली आस - पास की ग्रामीण बस्तियां ही होती है, जिन पर नगर अपने निवासियों को प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये आश्रित रहता है । इतना ही नहीं वह अपने उद्योगों के लिये इन ग्रामीण बस्तियों से कच्चामाल एवं श्रमिक सेवा भी प्राप्त करता है, जिससे उसके विकास को गति मिलती है। इसके बदले ये नगर इन ग्रामीण बस्तियों को कारखानों में निर्मित सामग्री एवं अन्य द्वितीय एवं तृतीय स्तर की सेवायें भी प्रदान करता है। अतः इस कार्यात्मक सम्बन्ध से नगर अपने आस पास के क्षेत्र को प्रभावित तो करता ही है साथ वह स्वयं भी प्रभावित होता है। इसके अलावा नगर का सम्बन्ध निकटवर्ती अन्य महानगरों, नगरों अथवा कस्बों से भी होता है जिससे नगरों को आर्थिक एवं सामाजिक स्थायित्व की प्राप्ति होती है । अतः नगर का छोटा या बृहद् होना नगर के आर्थिक विकास, यातायात एवं संचार के साधनों पर निर्भर करता है । इसीलिये आर.सी. शर्मा ने ठीक ही कहा है – 'Urban centres of the region are essencially large to small in size. The lack of sound industrial base developed network of nines of communication and transport and trade and commerce could not allow formation and maintains of very large Urban centres. 15

<sup>14.</sup> Sharma, R.C. ibid, P.P. 120

<sup>15.</sup> उपरोक्त पृ. क्र. 119

नगरीय भूगोलबेत्ता नगरीय कार्यों के साथ — साथ उसकी भौतिक विशेषताओं जैसे इमारतें, दुकानें, सड़के, उद्यान आदि का भी अध्ययन करता है, ये सभी स्थान यातायात के साधनों द्वारा नगर के अन्य भागों से जुड़े होते हैं । इन्ही भौतिक विशेषताओं से मिलकर संरचना निर्माण होता है, इसे आकारिकी भी कहते हैं। नगर की सम्पूर्ण नगर की रचना विधि इसमें नगरीय सीमा के अन्तर्गत भूमि उपयोग, भवनों के विभिन्न रूपों, यातायात घनत्व इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

लेविस मम्फोर्ड नगरीय कार्य प्रणाली को चुम्बक और कन्टेनर की संज्ञा देते हैं। 16 कन्टेनर का अर्थ, नगर अनेक इमारतों एवं अन्य भौतिक संरचनाओं का समूह होता है जिसमें अनेक प्रकार के कार्य विकसित होते हैं तथा समय परिवर्तन के साथ — साथ उनका स्वरूप भी परिवर्तित होता रहता है। जैसे कुछ वर्षो पूर्व बम्बई या सूरत में सूती वस्त्र उद्योग हथकरधा पर आधारित था, किन्तु हथकरधा के स्थान पर अब उन्ही इमारतों में आधुनिक मशीनें आ गई हैं। चुम्बक का अर्थ है नगर के अन्दर सेवा योग्य न हो अर्थात जो उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने में असमर्थ हों उन्हें नगर के बाहर फेंकना तथा उत्कृष्ट सेवाओं का नगर की ओर आकर्षित करना। नगर मे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि कार्य सम्पन्न होते हैं, जो कि नगर के विभिन्न स्थानों पर विकसित हो जाते हैं। नगर के विकास की योजना बनाते समय नगर का स्वरूप स्पष्ट होना अतिआवश्यक है।

भूगोलबेत्ता नगर का अध्ययन एक निर्जीव इकाई के रूप में नहीं करता वरन् वह उसे एक सजीव इकाई स्वीकारता है, क्यों कि नगर अपनी संरचना एवं रचना विधि (वास्तु शिल्प) के द्वारा समाज का एक सिक्रिय अंग है । पी. एन. खरे के अनुसार— 'आदर्श नगर से तात्पर्य भौतिक पदार्थ जैसे ईंट, पत्थर, लोहा, चद्दर आदि से नहीं हैं, बिल्क उस नगर के निवासियों के व्यवहार प्रकृति एवं सामाजिक मूल्यों में बहुत कुछ निर्भर है।' <sup>17</sup> नगर प्रमुख रूप से दो कार्य करता है — प्रथम अपनी प्रशासकीय सीमा के अन्तर्गत निवासित व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है द्वितीय प्रशासकीय सीमा से बाहर के पर्याप्त विस्तृत क्षेत्र को सेवायें प्रदान कर प्रभावित करता है एवं स्वयं भी प्रभावित होता है। इन्ही कार्यों को दृष्टिगत रखते हुये भूगोलबेत्ता नगर की वास्तविक सीमाओं का निर्धारण करता है, जो कि सतत् परिवर्तनशील

<sup>16.</sup> Mumford, Lewis, The City in History, London, 1961 P.P. 82-83

<sup>17.</sup> खरे, पी.एन., नगरीय समाज शास्त्र, 1968, पृ. क्र. 102

होती है । इसके अलावा नगरीय रचना के आधार पर भी नगर की भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण किया जाता है । नगर का निर्मित क्षेत्र (Built Up Area) जिसमें नगर का लगातार भाग निर्मित होता है नगरीय क्षेत्र या नगरीय भूमि खण्ड कहलाता है इसे पैट्रिक गेडिस ने नगर माल भी कहा है। इस क्षेत्र के आस — पास एक ऐसा क्षेत्र भी होता है जिसके लोग मुख्य भाग (नगरीय भूमि खण्ड) के कार्य कलापों से सदैव धनिष्ठ रूप से सम्बन्धित रहते हैं । यह नगरीय बस्ती क्षेत्र कहलाता है। इस क्षेत्र के पश्चात एक ऐसा क्षेत्र होता है जो कि नगर के कार्यों से प्रभावित होता है तथा उपर्युक्त दोनों क्षेत्रों की अपेक्षा नगर के चारों ओर अधिक भाग पर विस्तृत होता है जिसे नगरीय प्रदेश की संज्ञा दी जाती है । इस प्रकार एक भूगोलबेत्ता नगर के भूमि उपयोग सम्पूर्ण रूप से अध्ययन करता है । हेराल्ड कार्टर महोदय के अनुसार — 'The basic geographic interest is in land use as a distributed future as an aspect of areal difference'. 18

नगरीय भूगोलबेत्ता नगर की भौगोलिक पृष्ठभूमि में नगर के ऐतिहासिक विकास का भी अध्ययन करता है। भूगोलबेत्ता के लिये स्वयं में एक पूर्ण लक्ष्य तो नहीं होता है किन्तु लक्ष्य प्राप्ति में एक साधन अवश्य होता है। अर्थात भूगोलबेत्ता नगर के विकास के विभिन्न चरणों एवं अवस्थाओं का अध्ययन करता है। ग्रिफिथ टेलर ने 1945 में नगरों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया 19 एवं इसकी मनुष्य के समान अवस्थायें बताई। जिस प्रकार अमेरिकी भूगोलबेत्ता विलियम मोरिस डेविस ने अपरदन चक्र की तीन अवस्थाओं का वर्णन किया है ठीक उसी प्रकार डिकिन्सन महोदय ने भी नगर को तीन अवस्थाओं में विभाजित कर कमशः संरचना प्रकिया और अवस्था का नाम दिया है। नगर की सड़कों ईमारतों का विकसित रूप नगर की भौतिक 'संरचना' का परिचय देते हैं। नगर की सामाजिक आर्थिक आदि विशेषतायें एवं प्रथायें 'प्रकियाओं' के बारे में बोध कराती है एवं ऐतिहासिक विकास उसकी अवस्था का घोतक है।

नगरीय भूगोल में नगर के उन ऐतिहासिक सामाजिक एवं राजनैतिक पहलुओं का भी अध्ययन किया जाता है जिनका नगर को अस्तित्व में जाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । व्यापक ऐतिहासिक राजनैतिक घटनायें नगरीकरण की प्रकृति को प्रभावित करती है । जैसे भारत में अंग्रेजों के आगमन के परिणाम स्वरूप यातायात, संचार के साधनों विज्ञान एवं

<sup>18.</sup> Carter, Harald, ibid, P.P. 171

<sup>19.</sup> Sharma, R.C., ibid P.P. 94



प्रद्योगिकी के प्रसार के कारण नगरों के विकास में तीव्रता आयी । स्वतन्त्रता के पश्चात नगरीयकरण की गति और भी अधिक तीव्र हो गई । जैसे— राजपूत शासन काल में भी भिन्न — भिन्न नगरों का विकास विभिन्न व्यक्तिगत राजनैतिक नीतियों के कारण हुआ । 20

नगरीय भूगोलबेत्ता नगर का अध्ययन जनांकीय आधार पर भी करता है, क्योंकि नगरों की पहचान केवल नगर के कार्यो एवं आकार से नहीं होती वरन् नगर की वास्तविक पहचान वहां निवासित जनसंख्या के आचार, विचार, धर्म, रीति — रिवाज, रहन — सहन, से होती है । बनारस, इलाहाबाद, येरूशलम्, उज्जैन, मक्का मदीना, जैसे नगरों की पहचान धार्मिक कारणों से बनी हुई है । जनसंख्या के आधार पर अनेक विद्वानों ने नगरों का वर्गीकरण किया है ।<sup>21</sup> जैसा कि वर्गेल महोदय की दी हुई परिभाषा से स्पष्ट होता है — 'नगर का तात्पर्य जनसमूह से है । निवास स्थान एवं आयोजन आवश्यक है, परन्तु एकमेव है । यह सम्भव है कि सामाजिक आयोजन एवं भौतिक आयोजन के आधार पर संगठित एक सुन्दर नगर का निर्माण हो जाये फिर भी नगर एक भोपला (Empty - Shell) बना रहेगा । नगर का विकास एवं अस्तित्व जनसमूहों की प्रकृति एवं मूल्यों पर निर्भर है ।<sup>22</sup>

### 3.4 नगर की अवधारणा :

नगर उतने ही प्राचीन हैं जितनी स्वयं मानव सभ्यता किन्तु नगरों की उत्पत्ति एक ऐसी सच्चाई का पर्दापण करती है, जिसको पूरी तरह से पहचान पाना अत्यन्त किवन है। जैसे — जैसे विश्व की जनसंख्या में वृद्धि हुई है वैसे — वैसे नगरों ने भी अपना विकास किया है। नगरों का यह विकास किसी कालखण्ड विशेष की देन नहीं है वरन् यह विकास यात्रा तो तभी प्रारम्भ हो गई थी जब मानव ने जंगली जीवन त्याग कर सामूहिक रूप से रहना प्रारम्भ कर दिया था। इसी लिये नगरों का विकास मानव सभ्यता के विकास के रूप में मापा जाता है। नगरों का सर्वाधिक विकास 1750 की औद्योगिक कान्ति के पश्चात हुआ और विश्व में नगरीय विकास की एक नवीन शक्ति का संचार हुआ।

नगरों की परिभाषा के सम्बन्ध में सभी विद्वान एकमत नहीं है । इसका प्रमुख कारण नगरों का सतत् गतिशाील अवस्था में होना है । जनसंख्या का आकार, धनत्व, क्षेत्रिय

<sup>20.</sup> Sharma, R.C., ibid, P.P. 86

<sup>21.</sup> उपरोक्त पृ.क्र. 94

<sup>22.</sup> खरे, पी. एन. वही पृ. क्र. 102

अधिकार, अलग — अलग देशों में विभिन्न समयों में नगर की परिभाषा एक ही रूप में स्वीकार नहीं की जा सकती है। आर. सी. शर्मा के अनुसार — "In fact the crux of the problem lies in defining a town. The size of population, density and the accupational structure of the clusters are all relevant but because these variables differ from region to region, from country to country and from time to time, no universal definition of village and town can be adopted." 23

नगर शब्द एक संकल्पना है जो कि जर्मनी में Studt इंग्लैण्ड में Town शब्दों का प्रयोग किया जाता रहा है। city शब्द का प्रयोग पहले Town के अर्थ में किया जाता था, किन्तु city का अर्थ वर्तमान में शहर से है जो कि नगर का अतिमहत्वपूर्ण भाग होता है, न कि सम्पूर्ण नगर। अतः ये दोनों शब्द लगभग एक दूसरे के समानार्थी शब्दों के रूप में प्रयोग किया जाते रहे हैं। city शब्द लेटिन भाषा के civitas से बना है जो कि civilization का भी मूल है जिसका तात्पर्य नागरिकता होता है। town के समानर्थी शब्द के रूप में फांस के ville एवं stadt शब्दों का प्रयोग किया जाता है stadt से ही स्वीडन भाषा का शब्द staden (स्टेडन) शब्द बना है जो कि स्वीडन में नगर के अर्थ में प्रयुक्त होता है। फ्रांस में नगर के लिये cite शब्द का प्रयोग किया जाता है।

नगर की एक स्पष्ट परिभाषा देने के लिये आवश्यक है कि उन आधारों का विवेचना किया जाये जो कि किसी भी बस्ती को नगर में परिणित करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। जैसे अनेक विद्वान नगरों को जनसंख्या, नगरीय आकार अथवा प्रशासकीय दृष्टि से परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। नगरों को अधिकांश विद्वान जनसंख्या के आधार पर परिभाषित करने का प्रयास करते हैं जैसा कि प्रो0 वर्गेस महोदय ने कहा है – 'नगर से तात्पर्य केवल जनसमूह से हैं। '24 किन्तु यदि केवल नगरों को जनसंख्या के आधार पर परिभाषित करने वा प्रशन यह उठता है कि किसी नगर के लिये आदर्श जनसंख्या कितनी है ? अतः

<sup>23.</sup> Sharma, R.C. ibid, P.P. 86

<sup>24.</sup> खरे, पी. एन., वही, पृ. क्र. 102



आदर्श जनसंख्या के विषय में भिन्न — भिन्न विद्वानों, देशों, संस्थाओं के अपने — अपने परिस्थिनुरूप मत रहे हैं । जैसे कोटिल्य किसी नगर के लिये 10,000 की जनसंख्या आदर्श मानते हैं <sup>25</sup> जबकि भारत वर्ष में वर्तमान में नगर के लिये 5000 की जनसंख्या मानी ग**ई है**।

कुछ देश इसी कारण किसी भी बस्ती को नगर का दर्जा प्रदान करने के लिये जनसंख्या के अलावा कुछ और योग्यतायें निर्धारित करते हैं जैसे आकार, प्रशासकीय सीमायें, कार्यात्मक प्रतिशत आदि। Censes (1991) के अनुसार वह स्थान या बस्ती नगर है, जहां स्थानीय प्रशासन जैसे नगर निगम नगर पालिका आदि तथा अपने अन्तर्गत कम से कम 5000 की जनसंख्या रखती हो एवं वहां की कार्यशील जनसंख्या का 75 प्रतिशत भाग अप्राथमिक कार्यों में लगा हो तथा 1000 व्यक्ति प्रतिवर्ग मील या 400 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि. मी. धनत्व रखता हो । 26 कुछ विद्वान नगरों को कार्यों के आधार पर परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। नगर वस्तुतः ग्रामीण बस्तियों से कार्यों के आधार पर ही प्रथक किये जाते हैं अतः नगरीय बस्तियों को जन्म देने वाली आस — पास की ग्रामीण बस्तियों ही है। नगर द्वितीयक एवं तृतीयक श्रेणी के कार्यों का सम्पादन करते हैं इसी के आधार पर कोई भी बस्ती नगर का दर्जा प्राप्त करती है। द्वितीयक श्रेणी के कार्यों में प्राकृतिक संसाधनों के मूलरूप में संसोधन कर, उन्हें अधिक उपयोगी बनाना अर्थात वस्तु निर्माण कर तृतीय श्रेणी के कार्यों का सम्पादन करना है। अर्थात यह एक कला, संस्कृति और राजनैतिक उद्देश्य है, न कि संख्यायें जो कि नगर को परिभाषित करते हैं। अतः स्पष्ट होता है कि नगरों की उत्पत्ति एवं महत्व कार्यों के आधार पर होती है न कि जनसंख्या के आधार पर।

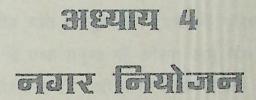
उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नगर को किसी एक आधार पर परिभाषा की सीमा रेखा में बांधना उचित नहीं है क्यों कि नगर किसी एक तत्व का नहीं वरन् लगभग सम्पूर्ण मानवीय क्रियाओं एवं भौतिक पर्यावरण के आधार पर निर्मित होते हैं अतः हम नगर को निम्न शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं –

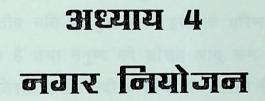
<sup>25.</sup> गैरोला, वाच्स्पति, कौटिल्य अर्थ शास्त्र, पृ. क्र. 92

<sup>26.</sup> Cencse of India, 1991,



'नगर वह बस्ती या मानवीय स्थाई जमघट है जो सतत् एवं घना बसा है तथा जहां देश कालानुरूप उचित आकार वाले भूखण्ड में उचित जनसंख्या निवासित हो एवं अधिकांश जनसंख्या अप्राथमिक कार्यों में संलग्न हो तथा यह बस्ती अपने कार्यों द्वारा आस — पास के क्षेत्र को प्रभावित करें एवं स्वयं भी प्रभावित हो।'







# अध्याय 4

### 4.1. नगर नियोजन का अर्थ एवं परिभाषा :

आज औद्योगीकरण और नगरीयकरण का विकास सम्पूर्ण विश्व में दृष्टिगोचर हो रहा है इन नवीन व्यवस्थाओं के परिणाम स्वरूप परम्परागत व्यवस्थायें नष्ट होती जा रही है तथा नगरीय जीवन दिन प्रति—दिन अतिकष्टप्रद होते जा रहा है वर्तमान में नगरीय समाज में अनेक प्रकार की किमयां दृष्टिगोचर हो रही है आज प्रत्येक राष्ट्र नगरीकरण की अन्धी दौड़ में सम्मिलत हो गया है और नगरीकरण को ही राष्ट्रीय विकास का मापक मान लिया गया है। आज नगरों में आवासों की कमी के कारण महानगरों में नगरीय जनसंख्या के एक बड़े भाग को सड़को पर रात गुजारने के लिये मजबूर होना पड़ा है इसी के कारण नगरों में गन्दी बिस्तयों का प्रसार बड़ी तीव्र गित से हुआ है। इसी के परिणाम स्वरूप मानव स्वस्थ्य में दिनोदिन गिरावट आ रही है तथा मनुष्य की औसत आयु कम होती जा रही है। नगरीय अपराधों का अधिकतम प्रतिशत इन्ही गन्दी बिस्तयों में पनपता है यह एक दुखद सच्चाई है कि कुल नगरीय अपराधों के 65 प्रतिशत अपराध के अपराधी इन्ही गन्दी बिस्तयों के निवासी होते हैं। परिणामतः आज न केवल हमारा जीवन असुरक्षित हुआ है वरन् आपने वाली पीढ़ी के जीवन पर एक प्रश्न चिन्ह लग गया है इसी लिये अतएव हमारी समस्या केवल अपने जीवन स्तर को सुरिक्षित रखने की ही नहीं है वरन् उसे बनाये रखने की आवश्यकता है।

नगर नियोजन को यद्यपि विभिन्न विद्वानों ने अपने — अपने दृष्टिकोण से भिन्न — भिन्न रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है, किन्तु लगभग सभी परिभाषाओं के निष्कर्ष में काफी समानता दृष्टिगोचर होती है। किसी भी नगर को एवं वहां के नगर वासियों के जीवन के मध्य सामंजस्य स्थापित करते हुये यथा सम्भव उनको तथा नगर के वातावरण को सुखी समृद्ध स्वस्थ्य सुन्दर सुविधा सम्पन्न बनाने की दिशा में किये गये व्यवहारिक प्रयास को नगर नियोजन कहा जा सकता है। नगर नियोजन एक व्यवहारिक विषय है जिसके अन्तर्गत

<sup>1.</sup> नायडू, रूकमणी, मध्य प्रदेश के प्रमुख तीन नगरों ;भोपाल, इंदौर, जबलपुरद्ध पर नगरीय करण का एक अध्ययन ;अप्रकाशित शोध प्रबन्धद्ध, 1988, पृ. क्र. 235

FACEP SAL



सम्बन्धित नगर के विभिन्न घटको के विकास या पुर्निनर्माण तथा नये नगरीय क्षेत्रों के निर्माण या विकास की योजनायें नगर को अधिकाधिक समस्या विहीन बनाने के उद्देश्य से प्रस्तुत की जाती है।

प्रो० डडले स्टेम्प के अनुसार :

'नगर नियोजन का मुख्य ध्येय नागरिको के कल्याण तथा उनके जीवन स्तर को उन्नत करना है।'<sup>2</sup>

नगर नियोजन का विषय बड़ा ही व्यापक है यह नगरीय विकास के लिये एक विस्तृत रूप रेखा प्रस्तुत करता है। उसके अच्छी तरह से सम्भावित करता है। यह नगरों का पुर्न निर्माण एवं नगरवासियों के उद्देश्य की भी पूर्ति करता है। यद्यपि ये उद्देश्य भौतिक, आर्थिक सामाजिक आदि हो सकते हैं। वर्तमान आवश्यकताओं को पूर्ण करने के अतिरिक्त भविष्य की आशाओं के अनुरूप नगर का विकास करता है। जिस स्थान पर नगर निर्माण होना है उस स्थान की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भौतिक विशेषताओं का सामूहिक एवं एकांकी रूप से अध्ययन किया जाता है तथा नगर नियोजन द्वारा नगर का ढ़ांचा इस प्रकार तैयार किया जाता है कि नगर उसके भौतिक वातावरण के अनुकूल हो तथा नगर वासियों को समान रूप से यथोचित सुख सुविधाओं का आवंटन हो सके। अतः हम उपर्युक्त विवेचन के आधार पर नगर नियोजन को निम्न शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं —

'नगर एवं नगर वासियों के चहुंमुखी विकास हेतु नगर के भौतिक एवं मानवीय पर्यावरण का यथोचित सामंजस्य स्थापित कर, भविष्य में नगर के विकास को ध्यान में रखते हुये, नगर वासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नगरीय विकास के लिये यथोचित कार्य योजना व्यवहारिक रूप में परिणित करना ही वास्तविक अर्थों में नगर नियोजन है।'

# 4.2. नगर नियोजन का उद्देश्य एवं महत्व :

सनातन से मानव ने अपने कल्याण के लिये ज्ञान की अनेक शाखाओं का विकास पृथक — पृथक रूप से किया है, तथा ज्ञान की लगभग सभी शाखाओं का ध्येय अर्थात उद्देश्य मानवीय कल्याण एवं सुख समृद्धि को दृष्टिगत रखते हुये नगर का नियोजित

<sup>2.</sup> Stamp L.D., Planing and Agriculture, JI, Town Planing Institute, 1950, P.P. 141



विकास करना है। नगर नियोजन के एक या एक से अधिक उद्देश्य हो सकते हैं किन्तु कुछ ऐसे आधारा भूत उद्देश्य होते है, जो सभी प्रकार के नियोजन से अपना सम्बन्ध रखते हैं। आर्थर बी गैलियन ने इन उद्देश्यों में कुछ संशोधन कर एक समुदाय के लोगों का स्वास्थ्य, सुरक्षा समाज कल्याण सुविधा की समृद्धि के लिये नगर के व्यवस्थित विकास और निर्देशन को महत्व दिया है यदि हम इन उद्देश्यों पर गहन चिंतन मनन करे तो प्रतीत होता है कि ये सभी उद्देश्य नगरवासियों के हित को ध्यान में रखकर निर्धारित किये गये हैं, इतना ही नहीं ये सभी उद्देश्य एक दूसरे से अन्त सम्बन्धित भी है न कि प्रथक — प्रथक। अतः हम सार रूप में नगर नियोजन को प्रमुख रूप से स्वास्थ्य, सौन्दर्य, उपयोगी सेवायें व सुविधायें एवं नगर वासियों एवं नगर का चहुंमुखी विकास उद्देश्य कह सकते हैं।

किसी भी राष्ट्र का भविष्य वहां के निवासियों पर निर्भर करता है तथा वर्तमान समय में अधिकांश राष्ट्रों की अधिकतम जनसंख्या नगरों में निवास कर रही है । अतः नगर नियोजन का प्रमुख उद्देश्य नगर वासियों के स्वास्थ्य के लिये उत्तम परिस्थियों का निर्माण करना है। किसी भी नगर का अस्तित्व नगर वासियों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है क्योंकि यदि नगर में नीरसता है, तो वह मनुष्य को मानसिक रूप से प्रसन्न रखने में असमर्थ होगी जिसका मानव स्वास्थ्य पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि किसी नगर को अति सुन्दर एवं नगर वासियों के स्वास्थ्य के लिये उत्तम परिस्थितियों का निर्माण कर दिया गया हो लेकिन आर्थिक विकास की दृष्टि से सुविधा जनक न हो तो यह आदर्श नगर नियोजन नहीं कहलायेगा । क्योंकि कोई भी बस्ति अपने कार्यो के आधार पर ही नगर का दर्जा प्राप्त करती है यदि उसका आर्थिक विकास अवरूद्ध हो गया तो धीरे — धीरे उसका स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य भी क्षीण हो जायेगा क्योंकि नगर के विकास का प्रमुख आधार आर्थिक होता है । अतः नगर में उद्योग व्यापार, आर्थिक विकास को तो महत्व देना चाहिये किन्तु नगर वासियों के सुख, स्वास्थ्य मानसिक एवं शारीरिक विकास को ध्यान में रखकर ।

वर्तमान समय में यदि नगरीय जीवन में किसी बात की विशेष कमी का अनुभव किया जा रहा है तो वह है मानसिक शान्ति। आज मानव भौतिक विकास की चकाचौंध में मानसिक शन्ति को बहुत पीछे छोड़ आया है। आज वह केवल जीवकोपार्जन का यन्त्र मात्र बन कर रह गया है परिणामतः मनुष्य को अनेक मानसिक सामाजिक एवं शारीरिक ब्याधियों ने घेर लिया

B., Gallion, Arthur and simon eisner, the urban pattern city planning and design, Van Nastrand compny, New Yark 1969, P.P. 187



ातर, आहि हिकास को हो गहल देश करिये केन नहर प्रोत्तेश के कुछ स्थाधन

per sin a fermion and the period of the peri

है। आज मनुष्य के पास भोजन तो है किन्तु भूख की कमी है, विस्तार तो है लेकिन नींद नहीं है अर्थात सुख के समस्त साधन तो उपलब्ध है किन्तु वह सुखी नहीं है। आज नगर में पारिवारिक एवं सामाजिक विधटन, मानव की स्वार्थपरक लोलुपता, नगर में बढ़ते अपराध इसी का परिणाम है इसके लिये आवश्यक है कि अब मनुष्य को भौतिक विकास के साथ — साथ आध्मात्मक विकास पर भी ध्यान देना चाहिये क्योंकि अध्यात्म से मानसिक शान्ति की प्राप्ति होती है जो की स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक है। अतः अब नगर की इस भौतिकवादी विचार धारा में परिवर्तन आवश्यक हो गया है। इसी लिये डॉ. उजागर सिंह ने ठीक ही कहा है — 'अधिकांश प्राचीन नगर ऐसी रूग्णावस्था में पहुंच गये हैं जहां रासायनिक दवायें भी अप्रभावित सिद्ध हो रही हैं। अतः विशेषज्ञों की समिति द्वारा उपयुक्त जांच एवं निदान तथा दक्ष नियोजकों के हांथों से इसकी शल्य चिकित्सा ही अति आवश्यक जान पड़ती है।'4

### 4.3 नगर नियोजन के भौगोलिक आधार :

नगर नियोजन के लिये विभिन्न विषयों ने अपने — अपने दृष्टिकोण से आधार निर्धारित कर लिये हैं। इसी प्रकार नगर नियोजन के लिये भूगोल के अपने मौलिक आधार है जिनके आधार पर नगर नियोजन किया जाता है। अन्य विषयों एवं भूगोल के नगर नियोजन के आधारों में केवल इतना अन्तर है कि लगभग सभी विषयों ने केवल नगर की भौतिक विशेषताओं अथवा मात्र अपने विषय से सम्बन्धित तथ्यों को ही नगर नियोजन का आधार माना है जबिक भूगोल न केवल नगर के भौतिक तत्वों पर वरन् समस्त मानवीय, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आधारों पर नगर नियोजन करता है।

नगर नियोजन के आधार सदैव ही परिस्थिति अनुकूल परिवर्तित होते रहे हैं। उदाहरण के लिये 20 वीं श्वदी तक नगरों का नियोजन उनकी भौतिक बनावट जैसे सड़के, उद्यान आदि तक ही सीमित था, किन्तु वर्तमान में नगर नियोजन के आधारों में पर्याप्त परिवर्तन हो गया। जैसे राजपूत शासन काल में नगरों का विकास तत्कालीन राजाओं की भिन्न — भिन्न व्यक्तिगत नीतियों के परिणाम स्वरूप हुआ था। किन्तु वर्तमान में स्थितियां परिवर्तित हो गयी है अतः नगर नियोजन के आधारों में भी समयानुकूल परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

<sup>4.</sup> सिंह, उजागर, नगरीय भूगोल, 1984, पृक्र, 309

<sup>5.</sup> Sharma, R.C., Settelment Geography of the India Desrt, 1972, P.P. 86



नगर नियोजन का प्रमुख उद्देश्य नगर वासियों को अधिकाधिक सुख शान्ति प्रदानकरना है अतः इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर भूगोल वेत्ताओं ने नगर नियोजन के आधार निर्धारित किये हैं। ये आधार नगर के चहुंमुखी नियोजन को ध्यान में रखकर निधरत किये गये हैं, न कि एकांगी विकास को जैसे नगर में नागरिक सेवाओं, उचित यातयात, आकार इत्यादि। यदि कोई मनोरंजन स्थल बहुत अच्छा स्वास्थ्यप्रद है किन्तु वह नगर के बाहर किसी कोने पर बना है तो उसका पूर्ण लाभ नगरवासी प्राप्त नहीं कर सकेंगे क्योंकि नगर के दूसरे कोने से आने वालों के लिये मनोरंजन स्थल पर पहुंचने में कठिनाई होगी। अतः नगर नियोजन नागरिकों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिये। नगर नियोजन के प्रमुख भौगोलिक आधार निम्नांकित हैं—

### 4.3.1 भौतिक विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिये:

नियोजन का प्रमुख उद्देश्य नगर वासियों को उचित भौतिक सुख सुविधाओं का विकास कर सुखी, समृद्धशाली बनाना है। एक नगर ज्यादातर भवनों, सड़कों, लोहे, कांकीट से एवं शीशे का बना होता है तथापि यह सामग्री ही भौतिक नगर के ढांचे का निर्माण करती है। नगर के आर्थिक विकास में कल कारखानों का बड़ा ही महत्व पूर्ण योगदान होता है किन्त् यदि ये कल कारखाने नगर के गलत स्थान पर स्थापित कर दिये गये तो लाभ के स्थान पर नगर में हानि हो सकती है। इन्हें नगर के उचित स्थानों पर रिहायसी क्षेत्रों से दूर स्थापित करना चाहिये जिससे नगरवासी प्रदूषित वातावरण से मुक्त रह सकें। अन्यथा इनसे न केवल स्थानीय नागरिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, वरन् कभी – कभी दुर्घटनाओं में भारी जन-धन की हानि का भी सामना करना पड़ सकता है, जैसे 1984 में भोपाल नगर स्थित यूनियन कार्बाइड संयंत्र से गैस रिसाव के परिणाम स्वरूप हजारों लोगों को अपनी जान से हांथ धोना पड़ा। इसके अलावा नगर में सुरक्षित यातायात एवं संचार प्रणाली विकसित होना चाहिये क्यों कि वर्तमान में नगरीय यातयात अतयन्त असुरक्षित होता जा रहा है अतः सुरक्षित एवं तीव्रगामी यातायात के लिये प्रभावी उपाय करना चाहिये। नगर की वस्तुतः सुन्दरता तो नगर में निर्मित भवनों से होती है किन्तु वर्तमान में विश्व के बड़े - बड़े नगरों, महानगरों में आवास की समस्या दिन प्रति दिन अत्यन्त किराल रूप धारण करती जा रही है। विश्व के प्रसिद्ध नगरों महानगरों जैसे – दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, न्यूयार्क, शंघाई आदि में नगरवासियों

<sup>6.</sup> B., Gallion and simon Eisner ibid, P.P. 198



का एक बहुत बड़ा भाग फुटपाथ पर अपनी रातें गुजारने मजबूर है। अतः नगर नियोजन के समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि प्रत्येक नगरवासी को उसकी आवश्यकता एवं स्तर अनुसार आवास उपलब्ध हो जाये क्योंकि मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकतायें भोजन वस्त्र आवास हैं। इसी प्रकार नगर में उचित एवं सुरक्षित यातयात हेतु सड़कों का निर्माण होना चाहिये।

# 4.3.2 नगर का उपयुक्त कार्यक्षेत्रों में विभाजन :

नगर के विभिन्न कार्यों के अनुरूप भिन्न — भिन्न कार्यक्षेत्रों में विभाजित करना चाहिये जैसे — रिहायसी क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र व्यापारिक क्षेत्र इत्यादि। नगर का विभिन्न कार्यक्षेत्रों में विभाजन न होने से अनेक प्रकार की नगरीय समस्याओं जैसे प्रदूषण, दुर्घटनायें, गन्दी बस्तीयों के प्रसार आदि में पर्याप्त वृद्धि होती है। नगर का 40 प्रतिशत भाग लोक सम्पत्ति एवं 60 प्रतिशत निजी सम्पत्ति के रूप में उपयोग करना चाहिये। नगर में कार्य क्षेत्रों का विभाजन इस प्रकार करना चाहिये कि सभी नगरवासियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। इन कार्यक्षेत्रों में उचित दूरी भी बनाये रखना चाहिये। जिससे समय — समय अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे पर्यावरण, प्रदूषण अथवा गन्दी बस्तियों के प्रसार को रोकने में किठनाई न हो । इन सभी कार्य क्षेत्रों को प्रथक — प्रथक रूप से स्थापित करना चाहिये।

# 4.3.3 गन्दी बस्तियों के प्रसार पर नियन्त्रण :

वर्तमान में नगरों ने अपने क्षेत्रफल में पर्याप्त वृद्धि की है किन्तु इस वृद्धि के फलस्वरूप भी पर्याप्त मात्रा में आवास हेतु भवनों का विकास संभव नहीं हो सका है, क्योंकि नगरों में बाहर से आने वाले व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है, किन्तु इन्हे आवास हेतु उचित व्यवस्था न होने पर इन्हें नगर के आन्तरिक अथवा उनके कार्यक्षेत्र के आस — पास जो स्थान मिलता है वहां पर कच्चा खपरैल झोपड़ी नुमा मकान बनाकर निवास करने लगते हैं किन्तु यहां पर समुचित नागरिक सुविधाओं की आपूर्ति के आभाव में कुछ समय पश्चात यह स्थान एक गन्दी बस्ती का रूप धारण कर लेता है। जिससे यहां का वातावरण अस्वास्थकर एवं अनेक

<sup>7.</sup> Sharma, R.C. ibid, P.P. 166



सामाजिक विसंगतियों को जन्म देने वाला हो जाता है इस कारण इन्हें नगरों का कलंक भी कहा जाता है। विदेशों में इन्हें स्क्वैटर्स, अथवा शेंटी नगर भी कहते हैं। इसे अंग्रेजी में slim Land कहते हैं। डिकिन्सन के अनुसार 'स्लम नगर के उस भाग को कहते हैं जहां पर मकान रहने योग्य न हो और जहां का वातावरण नागरिकों के स्वास्थ्य एवं नैतिकता के लिये हानिकारक हो। वह घना बसा हुआ क्षेत्र जहां भूमि का मूल्य गिर रहा हो, जहां के निवासियों का आर्थिक स्तर निम्न हो जहां अपराधों का अधिक्य हो तथा मृत्यु एवं बीमारियों की दर उच्च हो। यहां पर निवास करने वाले प्रायः गरीब, आशिक्षित, अस्वस्थ एवं अधिकांश प्रवासी होते हैं। मन्दी बस्तियां सामान्यतया व्यापारिक, औद्योगिक केन्द्रों के चारों ओर विकसित पायी जाती है। भारत में नगरीय जनसंख्या का लगभग 10 से 60 प्रतिशत तक गन्दी बस्तियों में निवास करती है। मन्दी वस्तियों का प्रसार केवल अधिकसित अथवा विकासशील देशों में ही नहीं है वरन् विकसित देशों में नगरीय जनसंख्या का एक बहुत भाग इन बस्तियों में निवास करता है। इन बस्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रिय भाषा में जैसे — चाल, कट्टा, अहाता या कबाल बस्ती इत्यादि के नाम से भी जाना जाता है। इन बस्तियों का सामन्य जीवन निम्न स्तर का होता है। यहां पर लगातार घनी आबादी होती है।

इन गन्दी बिस्यों के प्रसार के परिणाम स्वरूप न केवल नगर की सुन्दरता में कमी आती है वरन् वहां के नागरिक अस्वस्थ जीवन जीने मजबूर होते हैं एवं अनेक सामाजिक आर्थिक बुराईयों का भी सामना करना पड़ता है। जिससे नगर का विकास अवरूद्ध होता है अतः इन गन्दी बिस्तयों के प्रसार को रोकने के लिये आवास हेतु समुचित व्यवस्था करना चाहिये एवं नगर की ओर ग्रामीण पलायन पर नियन्त्रण हेतु उपयुक्त उपाय लागू करना चाहिये।

## 4.3.4 व्यापक नियोजन ः

नगर नियोजन व्यापक होना चाहिये अर्थात किसी भी नगर का नियोजन करते समय नियोजन के अन्तर्गत न केवल प्रशासकीय सीमाओं को ध्यान में रखना चाहिये वरन् उसकी भौतिक स्थिति आकार का भी विशेष ध्यान रखना चाहिये अर्थात विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र का नियोजन करना चाहिये। इसके अलावा नियोजन के अन्तर्गत केवल कुछेक तत्वों को ही सम्मिलित नहीं करना चाहिये वरन् नगर नियोजन के अन्तर्गत समस्त मानवीय

<sup>8.</sup> सिंह, उजागर, वही, पृ. क्र. 178

<sup>9.</sup> उपरोक्त, पृ. क्र. 290



CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

(जैसे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि) एवं भौतिक (जैसे जलवायु, आकार, आकृति, स्थिति आदि) तत्वों को ध्यान में रखकर नियोजन करना चाहिये। इसके अतिरिक्त नगर नियोजन के माध्यम से नगर के भौतिक विकास को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि तत्वों से सम्बन्धित कर चेतन स्वरूप प्रदान करना चाहिये।

### 4.3.5 मविष्यपरक नियोजन :

नगर नियोजन भविष्यपरक अर्थात दूरदर्शी होना चाहिये। अर्थात नगर की विकास योजना बनाते समय सदैव भविष्य में होने वाले नगरीय विकास एवं परिवर्तन को ध्यान में रखना चाहिये। नगर नियोजन के लिये भविष्य के कितने वर्षों को ध्यान में रखकर नियोजन करना चाहिये इसका कोई सिद्धान्त नहीं है बल्कि योजना में समय का निर्धारण नगर के विकास की गित निर्धारित कर नियोजन करना चाहिये। किन्तु नियोजन में इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि नियोजन न इतनी अल्प समयाविध के लिये हो कि नगर शीघ ही अनियोजित प्रतीत होने लगे और न ही इतनी दीर्घाविध के लिये किया जाये कि वर्तमान में नगर नियोजन सम्बन्धी बनाये गये आधार सिद्धांत आने वाले समय में परिस्थित अनुकूल न रहे अर्थात उनकी उपादेयता ही समाप्त हो जाये।

# 4.3.6 उचित भूमि उपयोग :

नगर नियोजन में सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो स्थान अथवा भूमि जिस कार्य के लिए निर्धारित की गई है अथवा उपयुक्त है उस भूमि पर वही कार्य सम्पादित करना चाहिए अर्थात नगर में स्थित भूमि का बिना किसी प्रदूषण अथवा हानि के अधिकाधिक प्रयोग हो सके। किन्तु वर्तमान नगरों में भूमि का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है जापान जैसे विकसित देश में कृषिगत भूमि का पाँचवा भाग नगरीय सीमा के अंतर्गत आ गया है। 10 जिसके परिणामस्वरूप वहां खाद्य पदार्थों के उत्पादन पर प्रभाव पड़ा है इसी प्रकार भारत में कबाल नगरों में नगर निगम बन जाने के पश्चात् वह बहुत बड़ा भू—भाग नगरीय क्षेत्र में आ गया जिसमें अभी भी अधिकांशतः गाँव बसे हुए हैं एवं वहाँ अनगरीय कार्यों की प्रमुखता पाई जाती है। 11

<sup>10.</sup> सिंह, उजागर, वही पृ. क्र. 288

<sup>11.</sup> उपरोक्त, पू. क्र. 288



नगरों ही नहीं वरन् समस्त प्रकार की बस्तियों के कार्य वहां स्थित भूमि द्वारा ही प्रमुख रूप से निर्धारित होते हैं। अतः नगर नियोजक को निर्धारित भूमि पर ही निर्धारित कार्य समपादित कराना चाहिये एवं अनुचित भूमि उपयोग पर नियन्त्रण हेतु उपयुक्त उपाय करना चाहिये। इसीलिये नगर नियोजन को मूलतः और अधिकांशतः भूमि उपयोग का कलात्मक विज्ञान भी कहा जाता है।

# 4.4 नगर नियोजन के वास्तुशास्त्रीय आधार :

नगर नियोजन एक सतत् कियाशील प्रकिया है। इसके माध्यम से क्षेत्रीय, नगरीय और स्थानीय कियाशील विकास के दबाव एवं आवश्यकतान्सार आर्थिक विकास एवं उन्नत जीवन स्तर की निरन्तर प्रकिया को विकसित करना ही नगर नियोजन का प्रमुख सैधान्तिक पक्ष है जिसमें जनसंख्या, भौगोलिक स्थिति जलवायू, तापमान, वर्षा, वायू दबाव दिशा प्राकृतिक जलस्त्रोत एवं विकास की व्यवस्थित सम्भावनाओं को देखते हुये वास्तु शास्त्र मे नगर नियोजन के सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया गया है । अर्थात नगर का प्राकृतिक रूप से प्रकृति के नियमानुसार चहुंमुखी विकास करना है। इसके साथ ही नगर नियोजन का आधार प्रकृति के साथ समरसता एवं तदात्म भाव रहा है तथा नगरवासियों के कर्म क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये वास्तुशास्त्र के पुरातन ग्रन्थों में नगर नियोजन के सिद्धान्तों (आधारों) की मीमांसा की गई है। जैसे - शूद्रों के लिये निर्धारित ग्राम अथवा नगर रचना का नाम खेत (Kheta) है। 12 शूद्र का अर्थ यहां किसी जाति अथवा सम्प्रदाय विशेष से नहीं है वरन् हमारे प्राचीन ग्रन्थों मे वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म होते थे । 13 अतः यहां पर शूद्र से आशय निम्न श्रेणी का कार्य (प्राथमिक कार्य) करने वाले अथवा दूसरों की सेवा में संलग्न (जैसे मजदूर वर्ग) व्यक्तियों से है। कोटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में नगर आदि की भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण करते हुये कहा है – 'नदी, वन, गृष्ठि (औषधि वृक्ष), कन्दरा, जलाशय, सेमर वृक्ष शमी वृक्ष तथा क्षीर वृक्ष, बट वृक्ष लगाकर उन्ही के द्वारा सीमा का निर्धारण करें। उपर्युक्त रीति से बसे हुये आठ सौ गांवों के मध्य स्थानीय नामक नगर अथवा महाग्राम बसायें। चार सौ गांवों के मध्य द्रोण मुख नामक उपनगर विशेष दो सौ गांवों के मध्य खार्वटिक नगर विशेष एवं दस गांवों को मिलाकर संग्रहण नामक बड़ा गांव बसाये। 14 नगर

<sup>12.</sup> मयमतम्, 10/16 - 29

<sup>13.</sup> श्रीमद् भगवद्गगीता, 18/40,

<sup>14.</sup> गैरोला, वाचस्पति, कौटिल्य का अर्थ शास्त्र, पृ. क्र. 91



Name that (see the same) and the ten that the part of the tablet in pr

नियोजन में मार्गो एवं वीथियों (गलियों) का भी विशेष महत्व है। मयतमम् के अनुसार वीथियों एवं मार्गो का प्रारम्भ उत्तर या पूर्व से निर्देशित है तथा वीथियों एवं मार्गो की चौड़ाइयों के लिये 13 प्रकार की सम्भावनाओं का विवेचन उपयोग एवं आवश्यकताओं की दृष्टि से किया गया है। अतः नगर नियोजन के वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त निम्नांकित हैं—

### 4.4.1 दिक् विन्यास :

दिक् विन्यास को दिक् निर्धारण भी कहते हैं। किसी भी भाग को अर्थात कार्य की उचित दिशा में स्थापन अर्थात दिशाओं का सही ज्ञान प्राप्त करने को वास्तु का दिक् विन्यास कहते हैं वास्तुशस्त्र के सभी नियम सभी स्थानों पर एवं सभी वास्तु रचनाओं पर समान रूप से लागू होते हैं। ब्रह्माण्ड से वास्तु को प्राप्त होने वाली लाभप्रद ऊर्जा के अधिकतम उपयोग एवं हानिकारक ऊर्जा के दुष्परिणाम की सुरक्षा दृष्टि से दिक् निर्धारण किया जाता है। वास्तु शास्त्र में प्रमुख चार दिशायें उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम तथा चार उपदिशायें ईशान, आग्नेय, नैऋत्य एवं वायव्य है।

जब किसी वास्तु की स्थापना की जाती है तो वास्तु शास्त्र के अनुसार स्थापित होने वाली वास्तु के विभिन्न अंगों (भागों) का उचित दिशानुसार निर्धारण किया जाता है। इन दिशाओं का वर्गीकरण एवं निर्धारण पूर्णतः प्रकृति के नियमों पर आधारित है।

# 4.4.2 प्राकृतिवाद को प्राथमिकता

वास्तु शास्त्र में प्राकृतिक सहयोग को प्राथमिकता प्रदान की गई है जैसा कि श्रीमद् भागवत गीता में कहा गया है — 'मयाध्यक्षेण सुयते चराचरम' अतः प्रकृति के नियमानुसार नगर की अकारिकी, आकार, आकृति, विभिन्न प्रकार के कार्यो हेतु स्थान निर्धारण, भूमि उपयोग, जलपूर्ति इत्यादि की व्यवस्था की जाती है।

अर्वाचीन नगरों में अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे गन्दी बस्तियों का प्रसार भौतिक पर्यावरण प्रदूषण, मानवीय पर्यावरण प्रदूषण, अशान्ति, प्रकृतिक आपदाओं आदि ने लगभग सभी नगरों को अपने आगोस में ले लिया है जबकि ऐतिहासिक साक्ष्यों से प्रमाणित होता है

<sup>15.</sup> श्रीमद, भगवद्गगीता,



नाप्ता गीता में वहा गया है – प्राधाक्षेण सुवते बरावरम् 15 ग्राह प्रकृति के विश्वपानतात

न्त्र की अकारिकी, आकार अवसीत विकास एकार ने कार्यों हेतु रक्षात विकासना कि

कि हमारे यहां वैदिक काल में अनेक बड़े — बड़े नगर थे किन्तु इतनी अधिक समस्यायें नहीं थी। क्या कारण है कि आज के नगर समस्याओं के मकड जाल में फसे हुये हैं और अपनी सारी शिक्त इन समस्याओं को हल करने में लगा रहे हैं किन्तु फिर भी समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल पा रही है परिणामत दिन प्रतिदिन नगरीय जीवन स्तर गिरता जा रहा है जबिक पुरातन नगरों में इस प्रकार की समस्यायें नहीं थी। इसका सर्व प्रमुख कारण यह है कि हमने भौतिक क्षेत्र में तो अशातीत उन्नित की है जबिक हमारा आध्यात्मिक जीवन अविकसित रह गया है परिणामतः हमारा एकांगी विकाश ही हो पाया है। अतः आज नगरीय मानव को प्रकृति के सहयोग से वंचित रहना पड़ रहा है इसिलये वह अपना चहुंमुखी विकास करने में असमर्थ है। अतः नगर का नियोजन यदि प्रकृति के नियमानुसार अर्थात स्थापत्य वेद के आधार पर होगा तो नगरवासियों को प्रकृति का पर्याप्त सहयोग मिलेगा और नगर समस्या विहीन हो अपने चहुंमुखी विकास मे सक्षम हो जायेगा।

# 4.4.3 वर्णानुसार आवास व्यवस्थाः

वैदिक काल से हमारे यहां वर्ण व्यवस्था रही है। 16 वर्ण व्यवस्था का आशय जैसा कि वर्तमान समय में जन्म से लगाया जाता है जैसा नहीं था वरन् वर्ण का निर्धारण व्यक्ति के कर्मानुसार किया जाता था। अतः हमारे यहां प्रमुखतः क्रमशः चार वर्ण ब्रह्मण वर्ण, पूर्व में क्षित्रिय, दक्षिण में वैश्य तथा पश्चिम में शूद्रों को बसाना चाहिये। 17

वर्तमान समय में भी यह वर्ण व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है किन्तु पुरातन समय में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी जबिक आज यह आर्थिक स्थिति पर आधारित है । जैसे वैदिक काल में शूद्रों के लिये अन्यवर्णों की अपेक्षा सबसे छोटे आकार के आवास की व्यवस्था थी। 18 तो वर्तमान समय में भी निम्न स्तर अर्थात मजदूर वर्ग झुग्गी झोपड़ियों में ही निवास कर रहा है । किन्तु समय की आवास व्यवस्था प्रकृति के नियुमानुसार नगरों में वर्णानुसार व्यक्तियों को बसाना था जबिक आज नगरों का अनियमित रूप से विस्तार हो रहा है यही कारण है कि विश्व के बड़े – बड़े नगरों महानगरों में गन्दी बस्तियों के प्रसार एवं आवास की समस्या दिन प्रतिदिन सुरसा के मुह के समान बढ़ती जा रही है।

<sup>16.</sup> मत्स्य पुराण, 254/27

<sup>17.</sup> शास्त्री, रामतेज, कौटिलीय अर्थ शास्त्र, पृ. क्र 83

<sup>18.</sup> मत्स्य पुराण, 254/35 - 36



### 4.4.4 ब्रह्म स्थल की अनिवार्यता :

बह्म स्थल का आशय वास्तु के मध्य में रिक्त छोड़ा गया स्थान होता है। जैसा कि मयमतम् से वर्णित है — 'ब्रह्मा मध्य स्थितः शम्भुस्त मुखस्थाश्चतुः सुराः ।' अर्थात ब्रह्मा वास्तु रचना के मध्य में स्थित होता है। ब्रह्म स्थान रहित वास्तु से प्राकृतिक सहयोग की प्राप्ति नहीं होती है। जैसे आज भी गावों में भवन के मध्य भाग में आंगन बनाने का प्रावधान है इसका प्रमुख कारण प्रकृति प्रदत्त शुद्ध सौर्य, ऊर्जा, वायु इत्यादि (प्रकृतिक सहयोग) लामप्रद उपयोग किया जा सके । ब्रह्म स्थान में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य अथवा स्वच्छता गृह (स्नान गृह) सेप्टिक टैक, गैरिज, स्टोर, रूम इत्यादि नहीं होना चाहिये। 20 नहीं तो वास्तु पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है अर्थात इस स्थान को खुला रखना चाहिये क्योंकि यह स्थान मानव उपयोगी लाभप्रद सर्वाधिक ऊर्जा प्राप्त करने वाला होता है और इसी स्थान से सम्पूर्ण वास्तु रचनाओं में ऊर्जा का संचार ठीक उसी प्रकार होता है जिस प्रकार हृदय से रक्त सम्पूर्ण शरीर में संचारित होता है।

प्रकाश विवर्तनिकी सिद्धान्तानुसार प्रकाश जिस कोण से अपवर्तित होता है उसी कोण से परावर्तित भी होता है और इसी सिद्धान्तानुसार सम्पूर्ण ऊर्जा कार्य करती है क्यों कि ऊर्जा संरक्षण के सिद्धान्त के अनुसार ऊर्जा का न जो विनाश होता है और न ही निर्माण होता है केवल स्वरूप परिवर्तित होता है। वस्तुतः हमारे मनीषियों ने जिस ब्रह्म देव की परिकल्पना की है उसे वर्तमान विद्वान ऊर्जा के नाम से संबोधित करते हैं। ऊर्जा संरक्षण के सिद्धान्त के समान ही हमारे मनीषियों ने ब्रह्म को अजन्मा, निराकार, सर्वव्यापी कहा है। यही स्वरूप ऊर्जा का भी है ऊर्जा को न तो देखा जा सकता है, इसका न निर्माण ही किया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है इसका कोई आकार प्रकार नहीं है यह सम्पूर्ण विश्व में अनेक रूपों में विद्यमान है अतः इसका केवल अनुभव ही किया जा सकता है। इसीलिये श्रीमद भागवत् गीता भी इसी ऊर्जा की विष्णु के रूप में स्तुति की गई है। 21 अतः सार संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ब्रह्म और ऊर्जा वस्तुतः एक ही है केवल हमारे देखने, अनुभव करने, अर्थात हमारी दृष्टि एवं हमारे मनीषियों की दृष्टि में कुछ अन्तर आ गया है।

<sup>19.</sup> मयमतम्, 7/40

<sup>20.</sup> तारखंड़कर, अनिल रामकृष्ण, वास्तुशास्त्र, 1996, पृ. क्र. 32

<sup>21.</sup> श्रीमद् भगवद्ग गीता, मंगलाचरण,



# 4.5 नगर नियोजन के भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों / आधारों का तुलनात्मक अध्ययन :

नगर नियोजन के अनेक भौगोलिक सिद्धान्त (आधार) वास्तु शास्त्रीय नगर नियोजन के सिद्धान्त के ही परिवर्तित रूप है। इन दोनों प्रकार के सिद्धान्तों में बाह्य रूप से अन्तर अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है, किन्तु दोनों लक्ष्य एक ही है अर्थात नगर वासियों को सर्वाधिक सुखी समृद्धशाली बनाना है। अर्वाचीन नगरों में भूमि उपयोग पर अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है एवं नगर को विभिन्न कार्यों के अनुसार विभिन्न भागों मे विभक्त कर विकसित किया जा रहा है । वास्तुशास्त्र में भी इसी प्रकार के कार्यात्मक वर्गीकरण की व्यवस्था है किन्तु वर्तमान (भौगोलिक) एवं वास्तुशास्त्रीय कार्यात्मक वर्गीकरण में मुख्य अन्तर यह है कि वास्तुशास्त्र में कार्य की प्रकृति के अनुसार दिशाओं के आधार पर कार्यात्म क्षेत्रों का वर्गीकरण किया जाता है जबिक वर्तमान में दिशाओं का महत्व लगभग समाप्त हो गया है इसमें केवल भौतिक दृष्टि से वर्गीकरण सम्पन्न किया जाता है।

वास्तुशास्त्रीय नगर नियोजन के सिद्धान्तानुसार नगर में आवास की व्यवस्था वर्णानुसार की जाती है इन चारों वर्णों की इनकी प्रकृति के अनुरूप दिशाओं के आधार पर आवास की व्यवस्था की गयी अर्थात उत्तर में ब्रह्मण, पूर्व में क्षेत्रिय, दिक्षण में शूद्र एवं पिश्चम में वैश्य की सामान्य रूप में आवास का प्रावधान है। 22 किन्तु भौगोलिक सिद्धान्तों में आवास के लिये वर्ण व्यवस्था की पूर्ण रूपेण उपेक्षा कर दी गई है। इस वर्ण व्यवस्था का आशय किसी जातिवाद या सम्प्रदाय वाद से नहीं है वरन् व्यक्ति की कार्य प्रकृति से है। वस्तुतः वर्तमान समय में भी हमें यह वर्ण व्यवस्था अप्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती है क्योंकि आज भी समाज प्रमुख चार वर्गों, उच्चत्तर, उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्गों में विभाजित है अतः यह विभाजन कार्यानुसार न होकर आर्थिक आधार पर है। यदि वर्तमान में वास्तुशसत्रीय वर्ण व्यवस्थानुसार नगरों में आवास की व्यवस्था की जाये तो अनेक नगरीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। क्योंकि आज नगरीय मानव अर्थोपार्जन के लिये कार्यों की नैतिकता एवं अनैतिकता को ताक में रखकर कार्य करते हैं एवं प्राप्त धन से अच्छे से अच्छे आवास प्राप्त करना चाहते हैं। इससे भ्रष्टाचार नैतिक पतन, गन्दी वस्तियों का प्रसार, मानवीय संवेदन शून्यता बढ़ती जा रही है। जबिक वास्तुशास्त्रीय वर्ण व्यवस्थानुसार आवास व्यवस्था करने से व्यक्ति के

<sup>22.</sup> मिश्र, सुरेशचन्द्र, व्यख्याकार, वृहत संहित, रजन पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली, 52/68

कार्यानुरूप आवास की व्यवस्था की जायेगी क्योंकि वास्तुशास्त्र में अलग — अलग वर्णों के लिये भिन्न — भिन्न आकार प्रकारों एवं दिशानुरूप भवनों का प्रावधान है। इससे व्यक्ति अर्थोपार्जन की अंधी दोड़ से स्वतः ही हट जायेगा एवं स्वयं ही अनेक नगरीय समस्याओं का समाधान हो सकेगा।

वास्तुशास्त्रीय नगर नियोजन के सिद्धान्त पूर्णतः प्राकृतिक नियमों पर आधारित है जबिक भौगोलिक नगर नियोजन के सिद्धान्त प्राकृतिक शिक्तयों की उपेक्षा कर केवल उपभोक्तावाद एवं सौन्दर्यता को दृष्टिगत रखते हुये निर्धारित किये गये हैं। अतः वर्तमान समय में नगरवासियों को प्राकृतिक सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है। इसीलिये हमारे ऋषियों ने ठीक ही कहा है 'यथा देह तथा गेह' 3 अतः हमे नगर के भौतिक विकास के साथ — साथ प्राकृतिक विकास पर भी ध्यान देना आवश्यक है तथा नगर नियोजन इस आधार पर किया जाये कि नगर वासियों का अधिभौतिक, अधिदैविक तथा आद्धात्मिक विकास भी हो साथ ही साथ प्राकृतिक नियमों का उलंघन न हो।

सभी प्रकार की वास्तु रचनाओं में ब्रह्म स्थान का वही महत्व है जो मानव शरीर में हृदय का है अर्थात वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तानुसार सभी प्रकार की वास्तु रचनाओं में ब्रह्म स्थान का निर्धारण अनिवार्य होता है। 24 अन्यथा इसके आभाव में प्राकृतिक सहयोग नहीं मिल पाता है जबिक भौगोलिक सिद्धान्तों में ब्रह्म स्थान का सर्वथा आभाव है। परिणामतः वर्तमान में नगरवासियों के पास सुख साधन सम्पन्न है किन्तु सुखी नहीं है। वैदिक कालीन भारतीय नगर जो कि वास्तु शास्त्र के आधार पर नियोजित थे एवं अर्वाचीन नगरों की अकारिकी में भी पर्याप्त अन्तर आ गया है। जहां वैदिक कालीन नगरों में नगर के चारों ओर दीवार एवं शत्रुओं की सुरक्षा की दृष्टि से गहरी खाई द्वारा आवृत किया जाता था जैसा कि विश्वकर्मा प्रकाश में वर्णित है। वही अर्वाचीन नगरों में इस प्रकार की व्यवस्था का सर्वथा आभाव देखा जाता है क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है, अर्थात वैदिक काल में जनसंख्या तो कम थी साथ ही साथ तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियां भी वर्तमान समय से मिन्न थी

<sup>23.</sup> शर्मा, सुरेश्वर, सम्पादक, विज्ञान भारती प्रदीपिका, उदयाचल गुप्तेश्वर, जबलपुर, अक्टूबर 1996

<sup>24.</sup> पाठक, गणेश दत्त, (टीकाकार) विश्वकर्मा प्रकाशः, श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली वाराणसी, 1995

इसी लिये उस समय की नगरीय अकारिकी एवं वर्तमान समय की नगरीय अकारिकी में अन्तर होना स्वभाविक है। अतः आज नगरों को किसी दीवार या खाई के द्वारा सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता है।

आज नगरीय विकास केवल भौतिक सुख सुविधाओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है जो कि सर्वथा अनुचित है हम आज के नगरों में पूर्ण रूप से वैदिक कालीन वास्तुशास्त्र का भी उपयोग कर सकते हैं जैसे — वास्तुशास्त्रीय नगरीय अकारिकी के अन्तर्गत नगर को एक पर कोटे (दीवार) से आवृत करना चाहिये एवं उसके चारों ओर एक गहरी खाई का निर्माण करना चाहिये जो कि वर्तमान समयानुसार अनुपयुक्त है। इसी प्रकार पूर्ण रूप से नगर का विस्तार केवल उपभोगवाद अर्थात प्राकृतिक नियमों का उलंधन कर केवल भौतिक सुख—सुविधाओं के आधार पर विकास करना भी एक भूल होगी यही कारण है कि आज विश्व के बड़े — बड़े महानगर अनेक समस्याओं के आगोस मे अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अतः आवश्यकता आज इस बात की है कि वर्तमान परिवेशानुसार भौगोलिक एवं वास्तु शास्त्रीय सिद्धान्तों के मध्य संतुलन स्थापित कर नगर का विकास किया जाये।

### 4.6 आदर्श नगर की संकल्पना :

एक नगरीय बस्ती तभी एक आदर्श नगर बन सकती है जब वह अपने नगरवासियों के अधिभौतिक, अधिदैविक एवं अध्यात्मिक विकास अर्थात चहुंमुखी विकास में सहायक हो, और यह तभी सम्भव है जब मानवीय पर्यावरण एवं प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य सामंजस्य स्थापित हो, किन्तु अर्वाचीन नगरों में प्राकृतिक संरक्षण के बजाये इसका खुलकर विनास किया जा रहा है अतः नगरों में चहुंओर विकास के नाम पर प्रकृति के नियमों का उलंघन कर मानव प्रकृति का स्वामी बनने का प्रयास कर रहा है। परिणामतः मानव एवं प्रकृति के मध्य सत्ता संघर्ष प्रारम्भ हो गया है जो कि वर्तमान में लगभग चरम सीमा में पहुंच चुका है जबिक मानव जीवन आनन्दपरक होना चाहिये न कि संघर्षपरक। परिणामतः नगर आज अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग समस्याओं के हल करने में लगा देते हैं तथा नगरीय विकास के लिये शक्ति (कर्जा) का आभाव बना रहता है। अतः अर्वाचीन नगरों में मानव एवं प्रकृति के मध्य उपजे सत्ता संघर्ष के कारण दिन प्रतिदिन नगरीय समस्याओं में सुरसा के मुंह के समान वृद्धि होती जा रही है और आधुनिक नगर वासियों का विकास अवरूद्ध पड़ा हुआ है। अतः अब (वर्तमान में) प्रत्येक स्तर पर मानव — प्रकृति के मध्य उपजे सत्ता संघर्ष को समाप्त कर नगरीय जीवन को

सुखी समृद्धशाली बनाये जाने का प्रयास किया जा रहा है। इस सत्ता संघर्ष को समाप्त कर सुखी समृद्धशाली नगरीय जीवन को विकसित करने के लिये अग्रदृष्टा भारतीय मनीषियों ने वैदिक काल में ही स्थापत्य वेद के अनुरूप नगर नियोजन के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था, जिससे नगरवासियों के चहुंमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। अतः वर्तमान में नगरों को स्थापत्य वेद के अनुरूप नियोजित/विकसित करना न केवल उचित होगा वरन् अति आवश्यक भी हो गया है।

#### 4.6.1 आकार :

नगर सदैव ही परिवर्तनशील अवस्था में रहे हैं इस कारण इनकी जनसंख्या एवं आकार सम्बन्धी धारणाओं में भी समयानुसार परिवर्तन होता रहा है। जैसे वैदिक काल में जनसंख्या सीमित होने के कारण उनका आकार भी निश्चित होता था। 25 इसी कारण नगरों को एक प्राचीर (दीवार) से सीमाबद्ध भी कर दिया जाता था। किन्तु वर्तमान समय में सीमित संसाधनों एवं तकनीकि उन्नित के कारण किसी नगर की जनसंख्या एवं आकार को सीमाबद्ध करना सम्भव नहीं है। अतः नगर की जनसंख्या एवं आकार का निर्धारण समयानुकूल आवश्यकतानुसार किया जाना चाहिये। किन्तु नगर का आकार उतना ही विस्तृत किया जाना चाहिये जितना कि प्रशासन को नगरीय व्यवस्था में कोई विशेष कितनाई का सामना न करना पड़े एवं नगर वासियों को समुचित विकास के समान अवसर प्राप्त हो ताकि नगरीय जीवन सुखी एवं समृद्धशाली हो। इसके अलावा नगरीय भूमि का औसत ढाल उत्तर दिशा ईशान दिशा (उत्तर पूर्व) में हो। ईशान कोण में ढाल होने से सम्बन्धित भूमि पर सुख समृद्धि निवास करती है। 26

## 4.6.2 आकृति :

एक आदर्श नगर अन्य वास्तु रचनाओं के समान ही वर्गाकार आकृति में होना चाहिये। 27 क्यों कि इससे नगर के सौदर्य में तो वृद्धि होती ही है साथ ही साथ नगरीय व्यवस्था एवं प्रशासन तन्त्र को नगरीय व्यवस्था स्थापित करने में सुलभता होती है। इसके अलावा ब्रह्म स्थान से उत्सर्जित ऊर्जा की नगर के सभी भागों में आवश्यकतानुसार प्राप्ति (अन्य तत्वों के वास्तुशास्त्रीय नियमानुकूल स्थापित होने पर) सरलता से होती है।

<sup>25.</sup> प्रसन्न कुमार, आचार्य, मानसार, 10/2

<sup>26.</sup> उपरोक्त, 4/1

<sup>27.</sup> उपरोक्त, 4/15

#### 4.6.3 ब्रह्म स्थल :

वास्तु रचना में ब्रह्म स्थल वही महत्व है जो मानव शरीर में हृदय का होता है इसी लिये सभी प्रकार की वास्तु रचनाओं में ब्रह्म स्थल का निर्धारण आवश्यक कहा गया है। 28 जिस प्रकार सम्पूर्ण शरीर में रक्त प्रवाह का नियन्त्रण हृदय द्वारा होता है इसी प्रकार समस्त प्रकार की वास्तु रचनाओं में ऊर्जा का प्रवाह ब्रह्म स्थल के माध्यम से होता है, अतः अनेक वास्तु रचनाओं से मिलकर नगर का निर्माण होता है, इसीलिये नगर में ऊर्जा के समुचित प्रवाह के लिये ब्रह्म स्थल का होना अतिआवश्यक होता है।

ब्रह्म स्थल में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य वर्जित कहा गया है। 29 अतः नगर के मध्य स्थित ब्रह्म स्थल में किभी भी प्रकार का निर्माण कार्य नहीं होना चाहिये। इस ब्रह्म स्थल में खुला भावातीत ध्यान केन्द्र होना चाहिये। यहां प्रतिदिन प्रातः काल एवं सांय काल नगर की कुल जनसंख्या का 1 प्रतिशत भाग भावातीत ध्यान एवं इस एक प्रतिशत के वर्गमूल के बराबर जनसंख्या भवातीत ध्यान एवं सिद्धि कार्यक्रम नियमित रूप से सम्पन्न करें तो नगर में कर्जा का अनुकूल प्रभाव पड़ता है। महर्षि प्रभाव के सिद्धान्तानुसार यदि किसी भी नगर की कुल जनसंख्या का एक प्रतिशत भाग भावातीत ध्यान एवं इस एक प्रतिशत के वर्गमूल के बराबर जनसंख्या भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सांयकाल नियमित रूप से सम्पादित करें तो नगर के विकास पर प्रकृति का अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इस भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम से उत्सर्जित कर्जा सम्पूर्ण नगर को प्रभावित करती है, जिसे कोहरेन्स कहते हैं। 30 अतः नगर के मध्य में वास्तुशास्त्र के नियमानुसार ब्रह्म स्थल हो जिसमें बिना निर्माण कार्य किया हुआ (खुला) भावातीत ध्यान केन्द्र स्थापित होना चाहिये।

### 4.6.4.आवास व्यवस्था

आवास मानव की तीन प्रमुख मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र और आवास) में से तीसरी प्रमुख आवश्यकता है। स्थापत्य वेद के अनुसार नगर में आवास व्यवस्था वर्णानुसार होना चाहिये। यहां पर वर्ण विभाजन का आधार जातिवाद या सम्प्रदायवाद नहीं है वरन् कार्यिक (कर्म) विभाजन है। वर्तमानसमय में भी यह वर्ण व्यवस्था विश्व के लगभग सभी

<sup>28.</sup> मयमतम्, 7/39

<sup>29.</sup> शुक्ल, कमलाकान्त ,सम्पादकद्ध, श्री टोडरमल विरचितं वास्तुसौख्यम्, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी 8/318

<sup>30.</sup> Maharishi Technology of the unified field, age of Enlighlenment
Publications , India, 1984, P.P. 217

देशों में अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक आधार पर देखने मिलती है। अतः नगर में नगरवासियों के निवास हेतु उनकी आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थिति के अनुसार आवास की व्यवस्था होना चाहिये। इससे न केवल आवास की समस्या को रोकने में सफलता मिलेगी वरन् नगरों में व्याप्त गन्दी बस्तियों के उन्मूलन में भी पर्याप्त सहायता मिलेगी। इसके अलावा विभिन्न वर्णों के (कार्यों के) व्यक्तियों की प्रवृत्ति के अनुरूप उसे नगर के उचित स्थान एवं नगर की उचित दिशा में आवास व्यवस्था सुलभ होना चाहिये।

### 4.6.5.परिवहन व्यवस्था

किसी भी नगर में यातायात मार्गों का वही स्थान है जो मानव शरीर में रक्त वाहनियों का है। जिस प्रकार रक्त वाहनियों के माध्यम से रक्त सम्पूर्ण शरीर में प्रवाहित होकर शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है उसी प्रकार नगरीय यातायात के माध्यम से वे सभी नगरीय कार्य सम्पादित होते हैं जिनके कारण किसी बस्ती को नगर की पदवीं प्राप्त हुई है। नगर में मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम की ओर होना चाहिये। 31 नगर में सड़कों की संख्या एवं माप यातायात दबाव के अनुरूप निर्धारित करना चाहिये। मुख्य मार्गों, उपमार्गों के अतिरिक्त नगर में आवश्यकतानुसार गितयों (प्रतोलियों) का भी निर्माण करना चाहिये। इन सभी की माप यातायात दबाव को ध्यान में रखकर निर्धारित की जानी चाहिये। हवाई अड्डा एक खुले क्षेत्र में नगर की वायब्य दिशा में होना चाहिये इसी प्रकार नगर में नगर की वायब्य दिशा में होना चाहिये। तथा इनका सम्बन्ध नगर के अन्य मार्गों से सुलभ यातायात साधनों द्वारा होना चाहिये।

#### 4.6.6 अपवाह तन्त्र :

किसी भी नगर को वहां का प्राकृतिक अपवाह तन्त्र प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अवश्य ही प्रभावित करता है, क्यों कि इसका सीधा प्रभाव नगर की जलमल विसर्जन एवं नगरीय उपयोग हेतु जल आपूर्ति पर पड़ता है। अतः नगर नियोजन के समय नगरीय प्रकृतिक अपवाह तन्त्र का भी अध्ययन करना चाहिये। नगर में उपभोग हेतु जल स्त्रोत ईशान (उत्तर – पूर्व) दिशा में उचित कहा गया है। 32 इसके अलावा जिस स्थान से नगर में जल आपूर्ति की जा रही है उस स्थान में साफ सफाई एवं जल स्त्रोत की साफ सफाई का विशेष

<sup>31.</sup> मयमतम्, 10/17

<sup>32.</sup> पाठक, गणेश दत्त, वही 8/14

ध्यान रखना चाहिये अन्यथा प्रदूषित जल से नगर में अनेक प्रकार की बीमारियों के प्रकोप की सम्भावना रहती है। नगर में मलमूत्र विसर्जन के लिये उचित नालियों का प्रबन्ध अति आवश्यक होता है अन्यथा नगर में सदैव बीमारियों के प्रकोप से इंकार नहीं किया जा सकता है। अतः एक आदर्श नगर में जलमल निकासी स्थान पश्चिम और वायव्य के मध्य होना चाहिये, क्यों कि उत्तर दिशा में नगरीय भूमि का ढाल होने के कारण पश्चिम वायव्य मध्यवर्ती भाग में जल प्रवाह मे सहायता के कारण किसी अन्य दिशा में नगर के बाहर जलमल निकासी स्थल बनाना कितन होगा और सदैव प्रदूषित जल अथवा अवशिष्ट पदार्थ के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होगी। नगर से प्रवाहित प्रदूषित जल को पुर्न शुद्धिकरण कर नगर के समीपवर्ती ग्रामीण बस्ती के कृषि कार्य हेतु सिचाई के रूप में उपयोग किया जा सकता है। किन्तु इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि नगर का उत्सर्जित पदार्थ नालियों के माध्यम से जल स्त्रोत में न मिले अन्यथा नगरवासियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

# 4.6.7 प्रमुख नगरीय सेवा केन्द्र :

एक आदर्श नगर में नगर वासियों के लिये समुचित नगरीय सेवा का सर्वसुलम होना आवश्यक है। नगरों मे शिक्षा का सर्वाधिक महत्व होता है अतः नगर में उचित स्थानों में आवश्यकतानुसार शिक्षा केन्द्रों का होना आवश्यक है किन्तु नगर के प्रमुख शिक्षा केन्द्र नगर की उत्तर दिशा में स्थित होना चाहिये। जैसे लंदन विश्व के सर्वाधिक नगरों में से एक है और इंग्लैण्ड की राजधानी नगर भी हैं। यहां के शिक्षा केन्द्र विश्व विख्यात हैं लंदन विश्व विद्यालय, लंदन नगर के ईशान कोण (ऐशान्य दिशा) में स्थित है। अतः यहां नगर उच्च शिक्षा के लिये प्रसिद्ध होने का एक कारण यह भी है कि यहां के शिक्षा केन्द्र नगर की उपयुक्त वास्तुशास्त्रीय स्थित पर स्थित है। एक आदर्श नगर में उचित चिकित्सा व्यवस्था होना आवश्यक है। चिकित्सालयों पर नगरीय दिशा का परोक्ष रूप से पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यहां पर उपचारित मरीजों के स्वास्थ्य पर भी इसका अप्रत्यक्ष रूप से प्रमाव पड़ता है। जिससे न केवल सम्बन्धित चिकित्सालय का विकास प्रभावित होता है वरन् सम्पूर्ण नगर का विकास भी प्रभावित होता है अतः नगर का प्रमुख चिकित्सालय नगर की वायव्य दिशा में होना चाहिये। इसके अलावा नगरीय आकार एवं जनसंख्या दवाव के अनुरूप नगर में उचित स्थानों पर पर्याप्त चिकित्सा केन्द्रों की वयवस्था करना चाहिये।

<sup>33.</sup> तारखेड़कर, अनिल रामकृष्ण, वही पृ. क्र. 18

्या, संदन नगर के इंशान कोया (वंशान्य, दिसा) ने मिला है। यह सब उत्तर दिस

ा से लिये प्रसिद्ध कोते जा एक जारण यह भी है कि प्रशां से मिला हेन्द्र नगर की जगहन

वास्तुशास्त्र के नियम सार्वभौमिक है अतः ये नियम जिस प्रकार किसी भवन में लागू होते हैं उसी प्रकार यह सम्पूर्ण देश — प्रदेश अथवा ग्राम में भी लागू होते हैं। नगर के प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र पूर्व दिशा में स्थित होना लाभकारी होता है। इससे अधिकारियों एवं कर्म चारियों की कार्य प्रणाली एवं कार्य क्षमता परोक्ष रूप से प्रमावित होती है। जैसे अमेरिका के सभी प्रमुख कार्यालय न्यूयार्क नगर की पूर्व दिशा की ओर स्थित है। 34 किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिये जितना आवश्यक भोजन है उतना ही मनोरंजन भी है। यदि किसी नगर में मनोरंजन की उचित व्यवस्था नहीं है तो इससे भी उस नगर का विकास प्रभावित हो सकता है। क्योंकि व्यक्ति को स्वस्थ्य रखने में मानसिक स्वस्थ्ता भी आवश्यक है। इसे न केवल व्यक्ति का स्वास्थ्य प्रभावित होता है वरन् व्यक्ति की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली एवं कार्य क्षमता पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। अतः एक आदर्श नगर में सभी वर्ग के व्यक्तियों के लिये उचित स्थानों पर मनोरंजन स्थल स्थापित होना चाहिये। नगर के प्रमुख मनोरंजन स्थल उत्तर दिशा में स्थित होना चाहिये। जैसे लंदन के वायत्य दिशा में चिड़ियाघर, रीजन्टस पार्क, द किंग्स सर्कल इत्यादि स्थान बसे हुये है।

नगर वासियों की सुरक्षा के लिये नगर में समुचित सुरक्षा व्यवस्था का होना आवश्यक है इसके लिये उपयुक्त स्थानों पर सुरक्षा भवन (पुलिस चौकी/थाना) होना चाहिये। किन्तु नगर का पुलिस मुख्यालय या छावनी क्षेत्र नगर के पूर्व दिशा की ओर स्थित होना चाहिये। समस्त विश्व में ऊर्जा का अत्याधिक महत्व है अर्थात संक्षेप में कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण विश्व ऊर्जा पूर्ति स्थल आग्नेय दिशा में होना चाहिये। जैसे भारत के सबसे अधिक विकसित नगर बम्बई की आग्नेय दिशा में ट्राम्बे स्थित है जहां पर अणु ऊर्जा शक्ति निर्माण केन्द्र है।

# 4.6.8 व्यापारिक क्षेत्र बाजार व्यवस्था :

किसी भी बस्ती को नगर का दर्जा कार्यात्मक आधार पर ही दिया जाता है अर्थात जनसंख्या, आकार, आकृति आदि के अलावा किसी बस्ती को नगर बनाने मे वहां सम्पादित कार्यों की अहम भूमिका होती है। अतः किसी भी नगर में बाजार की उचित व्यवस्था होना आवश्यक है। नगर में बाजारों का निर्धारण वास्तुशास्त्रीय आधार पर किया जाना चाहिये।

<sup>34.</sup> तारखंड़कर, अनिल, वही, पृ. क्र. 19

### 4.6.9 औद्योगिक क्षेत्र :

किसी भी नगर के अस्तित्व के लिये आर्थिक आधार मूलभूत आधारों में से एक है तथा वर्तमान समय में भी औद्योगिक विकास के कारण अनेक नगर औद्योगिक नगरों (जैसे टाटा नगर, बोकारों, भिलाई, कलकत्ता, बम्बई इत्यादि) के नाम से जाने जाते हैं किन्तु औद्योगिक विकास वहीं तक उचित है जहां तक वह नगर वासियों के विकास में सहायक हो, किन्तु वर्तमान समय में औद्योगिक विकास उपगोवतावाद का सूचक वन गया है जो कि सर्वथा अनुचित है। परिणामः नगरवासियों को पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जैसे कानपुर नगर। अतः हमें नगरों में औद्योगिक विकास का ध्यान तो रखना चाहिये किन्तु इस बात की अत्यन्त सावधानी रखी जाये कि नगर एवं नगरवासियों पर किसी प्रकार का प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। इसके लिये स्थापत्यवेद में उद्योगों को प्रकृति के अनुरूप नगर की विभिन्न दिशाओं में स्थापित करने का प्रावधान है। अतः नगर के बाहर स्थापित होने वाले उद्योग की प्रकृति के अनुरूप उचित दिशा में स्थापित करना चाहिये। नगर की पश्चिम दिशा में प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र विकसित करना चाहिये।

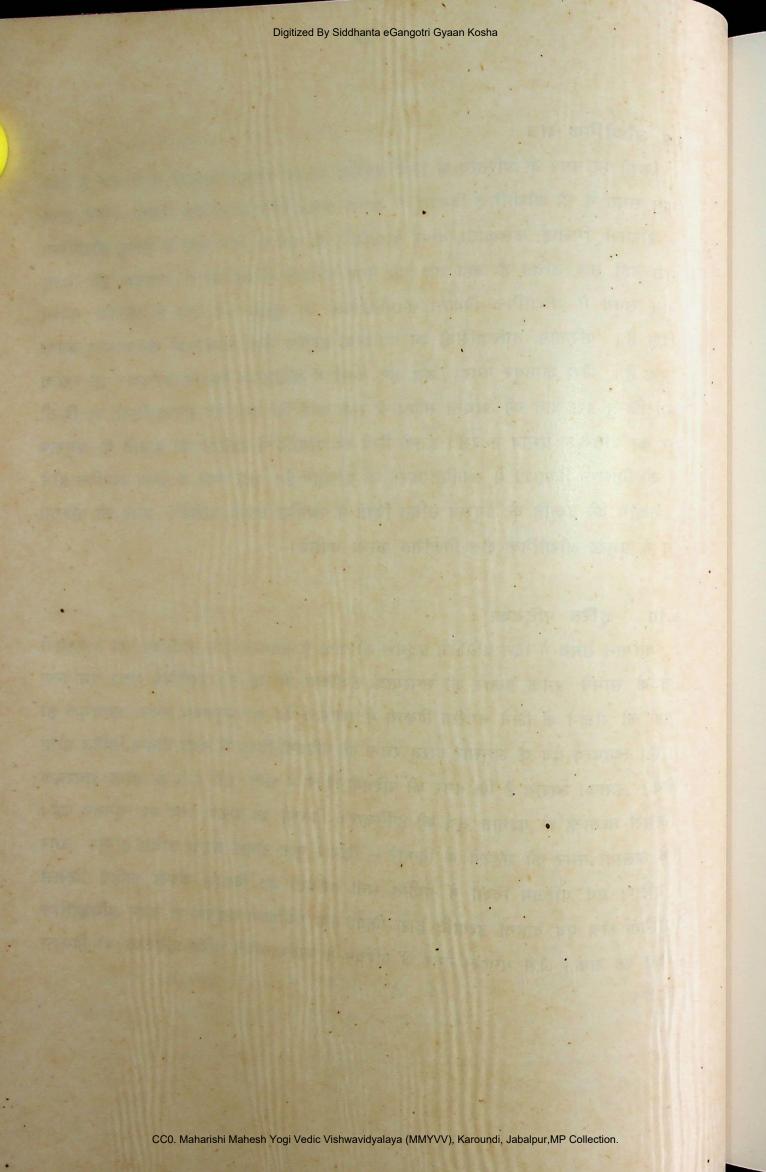
# 4.6.10 हृरित पट्टिका :

वर्तमान समय में दिन प्रतिदिन प्रदूषण की मात्रा में लगातार वृद्धि होती जा रही है जिससे मानव के सामने अनेक प्रकार की समस्यायें उपस्थित हो गई है। इसीलिये आज पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिये नगरीय विकास में स्थापत्य वेद का अनुसरण करना आवश्यक हो गया है। स्थापत्य वेद के अनुसार वास्तु रचना की पश्चिमी दिशा में मोटी दीवार निर्मित होना चाहिये। इसका आशय है कि नगर की पश्चिमी दिशा में घनी हरी पेटी का होना आवश्यक है जिससे मध्यान्ह के पश्चात सूर्य की हानिकारक किरणों का प्रभाव नगर पर न्यूनतम पड़े। इसके अलावा नगर की सड़कों के किनारे – किनारे वृक्षा रोपण करना उचित होगा। नगर की दिक्षण एवं पश्चिम दिशा में पर्याप्त घनी हरीपेटी का विकास करना चाहिये जिससे औद्योगिक क्षेत्र एवं वाहनों इत्यादि द्वारा किया गया पर्यावरण प्रदूषण से नगर अधिकाधिक सुरक्षित रह सके। जैसे भोपाल नगर के पश्चिम में पर्याप्त मोटी हरित पिट्टका का विकास हुआ है।

मानी का किन्द्रीय करते किया क्रिके के मानदार के प्रथम अवस्था के कि । किस कर कार्या

जबलपुर संस्कारधानी नगर एवं भोपाल राजधानी नगर की भोगोलिक का पृष्ठभूमि

जबलपुर संस्कारधानी नगर एवं भोपाल राजधानी नगर की भोगोलिक का पृष्ठभूमि



जबलपुर संस्कारधानी नगर एवं भोपाल राजधानी नगर की भोगोलिक का पृष्ठभूमि

# जबलपुर संस्कारधानी नगर एवं भोपाल राजधानी नगर की भौगोलिक का पृष्ठभूमि

#### 5.1 स्थिति और विस्तार :

जबलपुर संस्कारधानी नगर भारत वर्ष की हृदय स्थली पुण्य सिलला रेवा तट पर 23.10 उत्तरी अक्षांस तथा 79 57° पूर्वी देशान्तर में समुद्र सतह से 393 मीटर की औसत ऊंचाई पर स्थित है। भारत वर्ष का भौगोलिक केन्द्र बिन्दु करोंदी ग्राम यहां से लगभग 60 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहीं से लगभग 22 कि.मी. दूर सिहोरा नामक स्थान से कर्क रेखा गुजरती है। सम्पूर्ण जबलपुर नगर लगभग 224.45 वर्ग कि.मी. वर्ग क्षेत्र में विस्तृत है सम्पूर्ण जबलपुर को प्रशासनिक दृष्टि से प्रमुखतः 7 भागों में विभाजित किया गया है।

भोपाल राजधानी नगर सुरम्य हरी भरी विंध्याचल पर्वत श्रेणियों के मध्य 23° 15' उत्तरी अक्षांस तथा 77° 25' पूर्वी देशान्तर पर समुद्र सतह से 1662 फुट (523 मीटर) की औसत ऊंचाई पर लगभग 284 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर विस्तृत है। यह नगर प्रमुख रूप से तीन उपनगरों के रूप में पुराना भोपाल, तात्याटोपे नगर (नया भोपाल) एवं भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स कारखाना (गोविन्दपुरा आदि) प्रशासनिक दृष्टि से विभाजित है।

राजधानी नगर संस्कारधानी नगर से अधिक क्षेत्रफल में विस्तृत है किन्तु भोपाल नगर जबलपुर नगर की अपेक्षा अधिक सुनियोजित ढ़ंग से विकसित होने के कारण वहां पर (भोपाल) नगरीय परिस्थितियाँ आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास के अधिक अनुकूल है।

### 5.2. जलवायु

जबलपुर नगर में मानसूनी (समशीतोष्ण) प्रकार की जलवायु पाई जाती है। यहां वर्ष में प्रमुख रूप से तीन ऋतुयें होती हैं —

- 1. वर्षा ऋतु मध्य जून से सितम्बर के अंत तक,
- 2. शीत ऋतु अक्टूबर से फरवरी माह के अंत तक तथा
- 3. ग्रीष्म ऋतु मार्च से मध्य जून तक पाई जाती है।

यहां पर मानसूनी जलवायु होने के कारण जहां ग्रीष्म ऋतु में मन को विचलित करने वाली गर्मी पड़ती है वहीं शीत काल में कड़ाके की सर्दी भी पड़ती है। यहां पर सर्वाधिक गर्म माह मई — जून होते हैं यहां पर वर्ष का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से 46 डिग्री सेल्सियस तक मई माह में पाया जाता है। ग्रीष्म काल में कभी — कभी दोपहर के समय गर्म हवा भी चलती है जिसे स्थानीय भाषा में लू कहते हैं। अक्टूबर माह से तापमान में गिरावट आने लगती है तथा दिसम्बर जनवरी माह वर्ष के सबसे ठण्डे माह होते हैं। यहां जनवरी में दिन का तापमान 25.8 डिग्री सेल्सियस से 9.8 डिग्री सेल्सियस तक हो जाता है। शीत ऋतु में यहां शीत लहर चलती है।

जबलपुर नगर में वर्षा जून के अंतिम सप्ताह तक मानसूनी हवाओं के आगमन के साथ ही प्रारम्भ हो जाती है तथा सितम्बर के अंतिम सप्ताह तक कम होकर अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह तक समाप्त हो जाती है यहां पर ओसतन 69 दिन वर्षा होती है यहां पर अधिकांश वर्षा का भाग जुलाई अगस्त माह में प्राप्त हो जाता है। यहां औसत मासिक वर्षा 8.13 से.मी. होती है। यहां पर वायुदाब लगभग सामान्य रहता है। ग्रीष्मकालीन माहों में वायुदाब वर्ष में सबसे कम होता है, इसलिये इस समय लू चलती है तथा शीत काल में सबसे अधिक रहता है, इसलिये शीत लहर का प्रकोप रहता है। शीतकाल में कभी — कभी अरब सागर से उठने वाले तूफान के कारण वर्षा होती है। मौसम में आद्रता (नमी) का प्रभाव समस्त जीव जगत, वनस्पति एवं जलवायु के अन्य कारकों पर पड़ता है। यहां पर न्यूनतम आद्रता ग्रीष्म ऋतु में पाई जाती है तथा मानसून के आगमन के साथ ही पुनः आद्रता में वृद्धि हो जाती है।

भोपाल राजधानी नगर में समशीगोष्ण किस्म की सुहावनी जलवायु पाई जाती है जो कि मानव स्वास्थ्य के लिये उत्तम है। मार्च से मध्य जून तक ग्रीष्म ऋतु होती है। यहां पर 45 डिग्री सेन्टीग्रेट तक तापमान पाया जाता है। यहां पर यह तापकम बढ़ने का प्रमुख कारण सघन बसाहट एवं प्रदूषण की अधिकता होना है। यहां ग्रीष्म काल में उसस भरी गर्मी पड़ती है। शीतकाल में तापमान में पर्याप्त गिरावट आती है और यह 5 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच

जाता है । ग्रीष्म काल में मई एवं जून माह सर्वाधिक गर्म माह होते हैं तथा शाीत काल में दिसम्बर एवं जनवरी माह सर्वाधिक उण्डे माह होते हैं।

यहां पर लगभग मध्य जून से वर्षा दक्षिण पश्चिमी हवाओं के आगमन के साथ ही प्रारम्भ हो जाती है और वर्षा का लगभग 65 प्रतिशत भाग जुलाई — अगस्त माह में प्राप्त हो जाता है। यहां पर साधारणतया वार्षिक वर्षा 90.26 से.मी. तथा औसतन मासिक वर्षा 7.52 से.मी. होती है। सितम्बर के अन्तिम सप्ताह तक वर्षा समाप्त हो जाती है, और अक्टूबर माह से शीत ऋतु लगभग प्रारम्भ हो जाती है। यहां पर वायु प्रवाह दिशा पश्चिमी तथा दक्षिण पश्चिमी रहती है। यहां पर वायु का औसत गति 4 से 9 कि.मी. प्रति घण्टा होती है इसलिये वायु वेग में पहाड़ियाँ अवरोध उत्पन्न करती है तथा इसके कारण वायु दिशा में भी आंशिक रूप से परिवर्तन होते रहते हैं।

जलवायु का समस्त नगर पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव विशेष रूप से नगरीय कार्य प्रणाली एवं नगरवासियों की कार्य — क्षमता पर दृष्टिगोचर होता है। जहां एक ओर जवलपुर नगर में ग्रीष्म काल में लू के थपेड़ों से अनेक व्यक्ति अस्वस्थ्य होते हैं तथा नगरवासियों की कार्य क्षमता में कमी आती है वहीं भोपाल नगर में भीषण उमस भरी गर्मी में कार्य क्षमता में गिरावट तो आती है किन्तु जबलपुर नगर की अपेक्षा अधिक होती है। इस मौसम का प्रभाव नगर के भिन्न — भिन्न भागों में भिन्न — भिन्न मात्रा होती है। इसका सर्वाधिक प्रभाव पुराने भोपाल एवं सघन बस्तियों में विशेष रूप से देखा जा सकता है। शीतकाल में जबलपुर नगर में जहां एक ओर तापमान में पर्याप्त गिरावट आती है तथा शीत लहर के कारण नगरवासियों की कार्य क्षमता प्रभावित होती है वहीं भोपाल नगर पहाड़ियों के मध्य तथा प्राकृतिक आच्छादन के कारण शीत लहर के प्रकोप से आंशिक रूप से सुरक्षित रहता है तथा तापमान में अधिक गिरावट नहीं आ पाती इसका प्रमुख कारण यह भी है कि यहां पर्याप्त मात्रा में औद्योगिकरण को बल मिला है तथा यहां विभिन्न स्त्रोतों से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण की मात्रा जवलपुर नगर की अपेक्षा अधिक है इसलिये तापमान में अधिक गिरावट नहीं आ पाती है। अतः यहां समान्य रूप से तापमान में अधिक अन्तर देखने नहीं मिलता है।

## 5.3 भूगर्भिक संरचना एवं मिट्टी :

जबलपुर संस्कारधानी नगर प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर — पूर्वी भाग में स्थित है। वर्तमान समय में यह भू—गर्भिक हलचलों के कारण चर्चा का विषय बना हुआ है। वास्तव में संस्कारधानी क्षेत्र सोन—नर्मदा भ्रंश घाटी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। यह भ्रश घाटी मध्य प्रदेश गुजरात में लगभग 1312 कि.मी. क्षेत्र में फैली हुई हैं। जबलपुर नगर वास्तव में तीन गतिशील भूमिगत प्लेटों के मध्य बसा हुआ है। जबलपुर नगर यह भाग जो कि कभी भूगर्भिक दृष्टि से सबसे सुरक्षित माना जाता था। किन्तु अब यह भाग भूकम्पीय दृष्टि से अति संवेदनशील क्षेत्रों में गिना जाने लगा है। यहां पर विभिन्न प्रकार की शैल संरचनायें विभिन्न भागों में दृष्टिगोचर होती है। जैसे — बीजावर शैल समूह, दक्कन ट्रेप, मदन महल ग्रेनाइट, लम्हेटा, शैल समूह, क्वार्टनरी शैल समूह आदि।

मिट्टी का निर्माण सम्बन्धित स्थान की शैलगत विशेषताओं, प्राकृतिक वनस्पति एवं जलवायु पर विशेष रूप से निर्मर करता है। संस्कारधानी क्षेत्र में एल्यूमिना, लौह, मैग्नीशिया व चूने युक्त मिट्टी पाई जाती है। पदार्थों में यह मात्रा वहां पाई जाने वाली शैलों की अधिकता या न्यूनता पर निर्मर करती है। अतः यहां पर मिट्टी में स्थानगत विशेषतायें दृष्टिगोचर होती है। यहां प्रमुख रूप से सारिणी कमांक 5.4 के अनुरूप भौमिकीय मिट्टी संरचना दृष्टिगोचर होती है।

भोपाल नगर मालवा के पठार मध्यवर्ती उत्तरी भाग में स्थित है। यह नगर पहाड़ियों के मध्य बसा हुआ है जो कि सिंगार चोली से विंध्याचल श्रेणियों तक एक पट्टी के रूप में फैली हुई।

The Jabalpur are, which falts within the son-normada lincament zone, exposes lithotypes runging in age from archaean to Recent., Esismotecionic studies of Jabalpur Earthquake of 22, May 1997.

<sup>2.</sup> दैनिक भास्कर ;समाचार पत्रद्ध 23 मई 1997, पृ. क्र. 1

<sup>3.</sup> उपरोक्त पू. क्र. 12

तालिका क्र. 5.1 संस्कारधानी : भौमिकीय मिट्टी संरचना

| 雨. | भौमिकीय रचना      | स्तरीय मिट्टी     | स्थानीय नाम        | 71111-7124       |
|----|-------------------|-------------------|--------------------|------------------|
|    |                   | के प्रकार         | स्थानाय नान        | सामान्यतः        |
|    |                   |                   |                    | स्थिति           |
| 1. | बलुआ पत्थर तथा    | मोटी रेतीली       | सेहरा              | लम्हेटाघाट तथा   |
|    | ग्रे नाइट         |                   |                    | मदन महल          |
| 2. | गहराई पर बलुआ     | बालुई गाढ़        | बर्रा              | परियट नदी के     |
|    | पत्थर कड़ी मिट्टी | बालुई मिट्टी      | कबान मुंड          | पास कटनी तथा     |
|    | का जमाद           |                   | दोमट               | पाटन मार्ग के    |
|    | स्तिकीय स         | en el             |                    | मध्य             |
| 3. | बलुआ पत्थर        | बलुई मिट्टी       |                    | पोली पत्थर,      |
|    |                   | उच्चताप सह मिट्टी | THE REAL PROPERTY. | कांचघर           |
|    |                   |                   |                    |                  |
|    |                   |                   |                    |                  |
| 4. | विभिन्न स्तर      | विभिन्न प्रकार की | res form of        | आयुध निर्माणी    |
|    |                   | बलुई मिट्टी       | rgi, meggi         | फैक्ट्री के समीप |
|    |                   |                   |                    | कुण्डम मार्ग पर  |
| 5. | ग्रे नाइट         | दरदरी बलुई        | PER TO             | जबलपुर तालाब     |
|    |                   | मिट्टी            | CAT MAIL           | के समीप          |
|    |                   |                   |                    |                  |

स्त्रोत : जबलपुर विकास योजना प्रारूप 2005, नगर तथा ग्राम निवेश कार्यालय ।

है। यहां पर प्रमुख रूप से विंध्याचल श्रेणी की चट्टाने पाई जाती है जिनमें बलुआ पत्थर प्रमुख है। इसके अलावा यहां पर डेक्कन ट्रेप का लावा स्तर भी है। यहां पर कहीं — कहीं लेटेराइट एवं तलछट भी प्राप्त होता है। Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहां पाई जाने वाली विंध्यन समूह में प्रमुख बलुआ पत्थर है। इसकी गहराई 280 मी. तक है इसे विंध्याचली रीवा श्रेणी भी कहते है। जो प्रायः मध्यम से दीर्घ कणीय सघन परतदार एवं लाल रंग के हैं। डेक्कन ट्रेप के लावा स्तर विंध्यन स्तरों की घाटियों में तथा कहीं कहीं उनके ऊपर फैले हुये दिखाई देते हैं। यह लाल 175 मीटर तक पाया जाता है यह गहरा कत्थाई रंग में मध्यम कणीय है। लावा स्तर के नीचे लेटेराइट पाया जाता है।

तालिका क्र. 5.2 राजधानी नगर की भौमिकीय मिट्टी संरचना

| <b>0</b>  | भौमिकीय संरचना                   | सामन्यतः स्थिति                                |
|-----------|----------------------------------|--|
| 1.        | लाल पत्थर                        | सिगार चोली (मानवा भाड),धरमपुरी, ईदगाह.         |
| at a fire |                                  | सेवनियां गोंड, सिंगपुर, चूनाभट्टी,             |
| दा स्रोम  |                                  | शाहपुरा, लहारपुर, हथाई खेड़ा,चार इमली          |
| 2.        | काली परत                         | नालावेड, सिंगार चोली, धरमपुरी, सेवनियागोंड़    |
| प्राकृति  |                                  | सिंगपुर, शाहपुरा।                              |
| 3.        | मुरम                             | कलिया सोत, शाहपुरा, एम.ए. सी.टी, नाला          |
| dan en    | पति में भी विविधता देखने क्रिक्ट | वेड, हथाई खेड़ा।                               |
| 4.        | क्षार एवं चुना पत्थर             | बी.एच.ई.एल. क्षेत्र, छोला क्षेत्र ।            |
| 5.        | काली मिट्टी                      | छोला क्षेत्र का उत्तरी भाग, चांदबड़ा का पूर्वी |
| 201       |                                  | भाग, सेमरा कलां, हथाई खेड़ा, नरेला शंकरी       |
|           |                                  | बाग सेवनिया, अहमदपुर, बावड़िया कलां,           |
|           |                                  | खजूरी कला जारखेड़ी                             |

स्त्रोत: भोपाल विकास योजना 2005,पृ . 11

यहां पर मिट्टी के निर्माण पर प्रमुखतः स्थानीय चट्टानों का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होता है। यहां पर लेटेराइट मिट्टी का निर्माण लमेटा स्तर की चट्टानों से हुआ है जो कि लावा स्तरीय पहाड़ियों के अपक्षय से लोहा सान्द्रण बढ़ जाने के कारण हुआ है। यह मिट्टी साधारणतः लाल रंग की होती है। इसी प्रकार यहां मुरम एवं क्षार चूना युक्त मिट्टी भी पाई जाती है। यहां पर काली मिट्टी भी पाई जाती है जो कि लावा निर्मित है। यह विशेष रूप से मैदानी भागों में पाई जाती है।

संस्कारधानी एवं राजधानी नगर भूगर्भिक दृष्टि से दक्षिणी प्रायद्वीप के अन्तर्गत ही आते हैं। इसीलिये यहां पर सामान्यतः भूगर्भीय चट्टानों में भी समानता दृष्टिगोचर होती है। दोनों ही स्थानों पर बलुआ पत्थर (send stone) की अधिकता देखने मिलती है। इसी आधार पर मिट्टी का निर्माण हुआ है जिनमें कुछेक अन्य स्थानीय कारकों के प्रभाव के कारण आशिक रूप से अन्तर दिखाई देता है। संस्कारधानी नगर नर्मदा सोन भ्रंश घाटी में तीन भूगर्भिक प्लेटों के मध्य (tadlu) स्थित होने के कारण मूकम्पीय दृष्टि से अतिसंवेदनशील क्षेत्रों में गिना जाने लगा है। जबिक राजधानी नगर भी भूकम्पीय प्रभाव से अछूता नहीं है। यह नर्मदा सोन भ्रंश घाटी से कुछ दूर होने के कारण प्रभावित क्षेत्र (संवेदनशील) माना जा रहा है।

# 5.4 प्राकृतिक वनस्पति :

जलवायु एवं मृद्रा के संयुक्त परिणाम का फल वहां उत्पन्न होने वाली वनस्पित होती है। संस्कारधानी नगर मिट्टी में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होती है अतः इसी आधार पर यहां प्राकृतिक वनस्पित में भी विविधता देखने मिलती है। यहां ग्रीष्म काल में तीव्र गमी तथा शीत काल में कड़ाके की ठण्ड पड़ती है तथा वर्षा समान्यतः 50 से 100 इंच के मध्य होती है अतः यहां पर विशेष रूप से मिश्रित वनों के वृक्ष जैसे महुआ, टीक, सागौन, पलास, अमलताश, आवला, बरगद, पीपल, नीम, आम, इमली, जामुन आदि पाये जाते हैं।

भोपाल नगर से दक्कन लावा संरस्तर वालू का मिश्रित भुरभुरी मिट्टी पाई जाती है। यहां पर सामान्यतः मिश्रित वनों के वृक्ष जैसे आम, जामुन, अशोक, पलास इत्यादि पाये जाते हैं। जबलपुर और भोपाल में प्राकृतिक वनस्पति लगभग समान प्रकार की पाई जाती है। ा पीटी के मध्य (tadiu) निवान होने के वार्षा मुकार्थण दृष्टि से अधिकारिकार्थाल

का रहे कि आधार के बार के बार की ताल की ताल के प्राचन की कार है। जब के प्राचन की कार के प्राचन की कार है।

# 5.5 मू - आकृतिक बनावट :

जबलपुर नगर अपने भौगोलिक स्वरूप को चिरतार्थ करता हुआ 'यथा नाम तथा गुण' के अनुरूप अनेक छोटी बड़ी सुरम्य पहाड़ियों से आवृत्त है। 'जबल' अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ पहाड़ी है तथा पुर संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका आशय नगर है अर्थात पहाड़ियों का नगर। नगर के विभिन्न भागों में रिथत ये छोटी बड़ी पहाड़ियां नगरीय विकास एवं जलवायु पर अपना प्रभाव स्पष्ट रूप से डालती हुई प्रतीत होती है। इन पहाड़ियों में छोटा शिमला बड़ा शिमला, किरयापाथर, सिद्ध बाबा, मदन महल, करोंदी पहाड़ियाँ प्रमुख हैं। नगर के ईशान (उत्तर – पूर्व) में परियट नदी पूर्व में खंदारी नाला, आग्नेय (दिक्षण – पूर्व) में गौर नदी, दिक्षण में नर्मदा नदी, मध्य में ओमती नाला, मोती नाला, शाहनाला, उदना नाला आदि रिथत हैं। इसके अलावा नगर में अनेक तालाब जैसे हनुमानताल, जबलपुर तालाब, खंदारी जलाशय, देवताल, बाल सागर, इत्यादि रिथत है। नगर में कुल 52 तालाब तलैया रिथत है किन्तु इनमें जिनमें से अनेक तालाब समाप्त हो चुके हैं जैसे – मढ़ाताल, रानीताल, श्रीनाथ की तलैया, इत्यादि।

### जबलपुर नगर :

## 5.5.1. पहाड़ियाँ

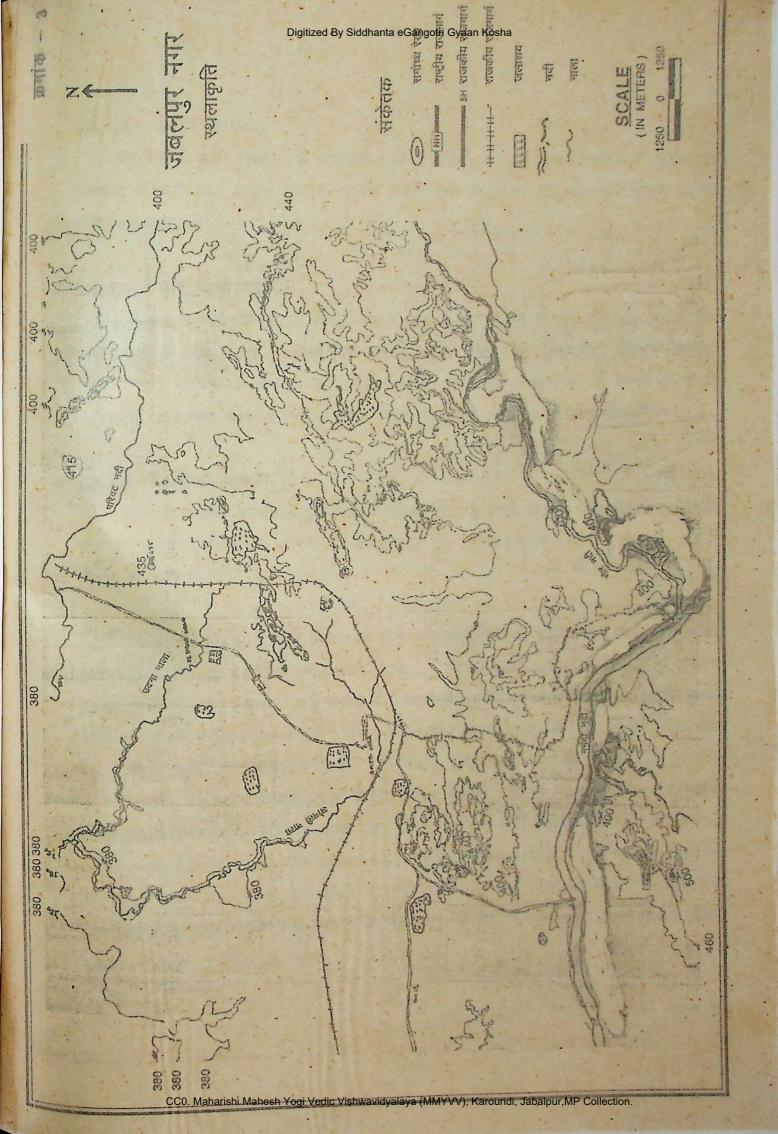
संस्कारधानी नगर जबलपुर में अनेकानेक छोटी – बड़ी पहाड़ियाँ स्थित हैं जिनमें से प्रमुख निम्नांकित हैं –

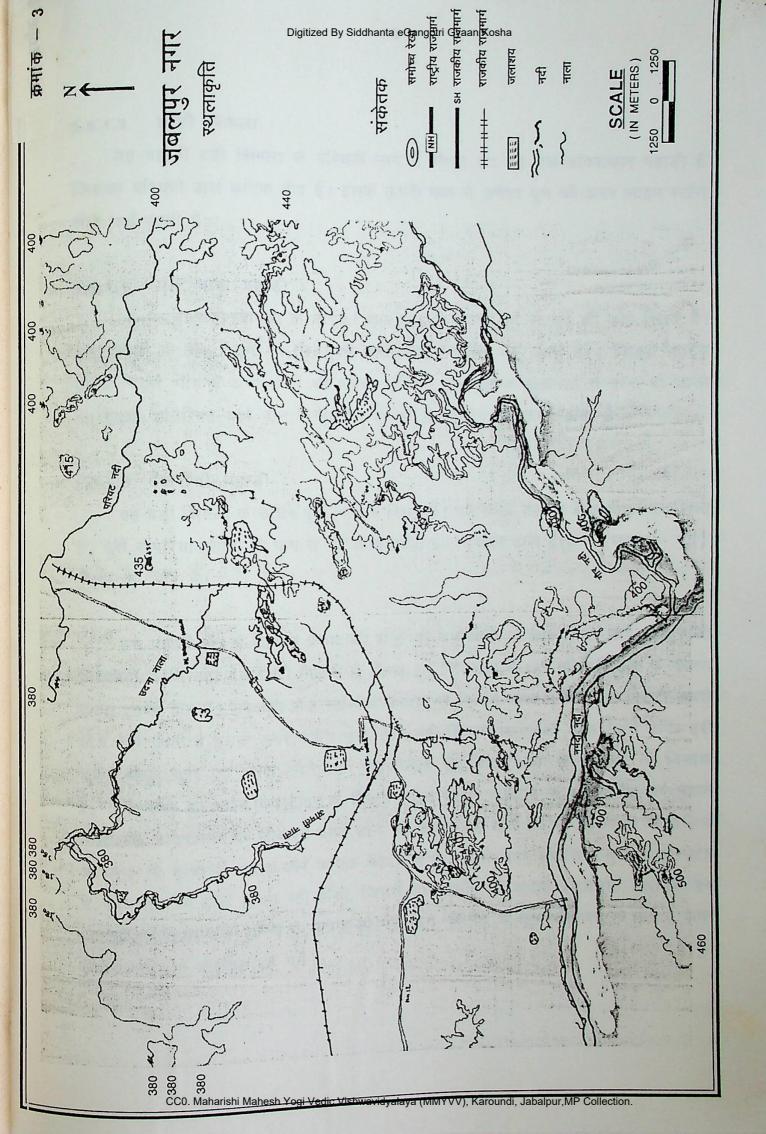
### 5.5.1.1 सीता पहाड़ :

सीता पहाड़ जबलपुर नगर के पूर्व में उत्तर से दक्षिण — पूर्व दिशा की ओर लम्ववत रूप में समुद्र सतह से 473 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस पहाड़ी पर सेना के अधिकारियों कर्मचारियों के आवास तथा कार्यालय स्थित हैं। इस पहाड़ी का नामकरण सीतापार पठार के नाम पर हुआ है।

## 5.5.1.2 बड़ा शिमला :

बड़ा शिमला नामक पहाड़ी नगर की पूर्व दिशा में समुद्र तल से 429 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। ऊपरी सतह पर दक्कन ट्रेप के लावा स्तर पाये जाते हैं जबकि निचले स्तर में अपर गोंडवाना समूह की जबलपुर सेन्डस्टोन एवं वाइट क्ले नामक शैलों का जमाव पाया जाता है। इसके किनारे (Foat) पर तोप गाड़ी निर्माणी संस्थान (Gun Carriage Factory) स्थित है।





## 5.5.1.3. छोटी शिमला :

यह पहाड़ी बड़ी शिमला के पश्चिमी भाग में स्थित है। यह एक शंक्वाकार पहाड़ी है जिसका पश्चिमी ढाल अधिक तीव्र है। इसके ऊपरी भाग में लमेटा युग की अपर लाइम स्टोन शैले पाई जाती है।

#### 5.5.1.4. पाट बाबा पहाड़ी :

यह पहाड़ी बड़ी शिमला के पादुका मध्य भाग में उत्तर पूर्व से पूर्व की ओर स्थित है। इस पहाड़ी में लमेटा युग की छिद्रयुक्त अपन लाइम स्टोन पाई जाती है। जिसके कारण इसके निचले भाग में अन्य भागों की अपेक्षा भूमिगत जल अधिक सुलभता से प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त यहां ग्रीन सेन्डस्टोन एवं ग्रे सेन्डस्टोन भी पाया जाता है।

### 5.5.1.5 करौंदी पहाड़ी :

यह बड़ी शिमला के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। यह समुद्र तल से 440 मीटर पर स्थित है। इसे खमरिया पहाड़ी के नाम से भी जाना जाता है। इसका ढाल ईशान (उत्तर – पूर्व) दिशा की ओर है।

इस पहाड़ी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की शैलों की उपस्थित के कारण यहां पाई जाने वाली मिट्टीयों में भिन्नता देखने को मिलती है, किन्तु इन मिट्टियों में क्षार की अधिकता के कारण उर्वरा शिक्त कम है। जबलपुर सेंड स्टोन के अपक्षय से निर्मित लाल भूरी बलुआ मिट्टी सबसे नीचे पाई जाती है इसके ऊपर सफेद भूरी, हरी, भूरी चिकनी मिट्टियाँ तथा सबसे ऊपर हरी भूरी, नीली भूरी एवं लावा मिट्टियाँ पाई जाती है। पाट बाबा की पहाड़ी में दिनांक 2/12/1988 को माइकोवेव टावर के निकट लाइम स्टोन चट्टानों में 1.5 करोड़ वर्ष पुराने मांसाहारी डायनासौर के जीवाश्म प्राप्त होने के कारण इस क्षेत्र का भूगर्भिक एवं भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से महत्व और अधिक बढ़ गया है। सम्भवतया जुरासिक युग में इस क्षेत्र में मीठे जल की झीलें स्थित रही होंगी, जिसमें डायनासौर की अनेक प्रजातियाँ हलचलों एवं ज्वालामुखी उद्गार के कारण ये समाप्त हो गये होंगे, जिनमें से कुछ जीवाश्म के रूप में अपर ज्वालामुखी उद्गार के कारण ये समाप्त हो गये होंगे, जिनमें से कुछ जीवाश्म के रूप में अपर लाइम स्टोन में संरक्षित रह गये।

#### 5.5.1.3. छोटी शिमला :

यह पहाड़ी बड़ी शिमला के पश्चिमी भाग में स्थित है। यह एक शंक्वाकार पहाड़ी है जिसका पश्चिमी ढाल अधिक तीव्र है। इसके ऊपरी भाग में लमेटा युग की अपर लाइम स्टोन शैले पाई जाती है।

#### 5.5.1.4. पाट बाबा पहाड़ी :

यह पहाड़ी बड़ी शिमला के पादुका मध्य भाग में उत्तर पूर्व से पूर्व की ओर स्थित है। इस पहाड़ी में लमेटा युग की छिद्रयुक्त अपन लाइम स्टोन पाई जाती है। जिसके कारण इसके निचले भाग में अन्य भागों की अपेक्षा भूमिगत जल अधिक सुलभता से प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त यहां ग्रीन सेन्डस्टोन एवं ग्रे सेन्डस्टोन भी पाया जाता है।

### 5.5.1.5 करौंदी पहाड़ी :

यह बड़ी शिमला के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। यह समुद्र तल से 440 मीटर पर स्थित है। इसे खमरिया पहाड़ी के नाम से भी जाना जाता है। इसका ढाल ईशान (उत्तर – पूर्व) दिशा की ओर है।

इस पहाड़ी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की शैलों की उपस्थित के कारण यहां पाई जाने वाली मिट्टीयों में भिन्नता देखने को मिलती है, किन्तु इन मिट्टियों में क्षार की अधिकता के कारण उर्वरा शिवत कम है। जबलपुर सेंड स्टोन के अपक्षय से निर्मित लाल भूरी बलुआ मिट्टी सबसे नीचे पाई जाती है इसके ऊपर सफेद भूरी, हरी, भूरी चिकनी मिट्टियाँ तथा सबसे ऊपर हरी भूरी, नीली भूरी एवं लावा मिट्टियाँ पाई जाती है। पाट बाबा की पहाड़ी में दिनांक 2/12/1988 को माइकोवेव टावर के निकट लाइम स्टोन चट्टानों में 1.5 करोड़ वर्ष पुराने मांसाहारी डायनासौर के जीवाश्म प्राप्त होने के कारण इस क्षेत्र का भूगर्भिक एवं भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से महत्व और अधिक बढ़ गया है। सम्भवत्या जुरासिक युग में इस क्षेत्र में मीठे जल की झीलें स्थित रही होंगी, जिसमें डायनासौर की अनेक प्रजातियाँ हलचलों एवं ज्वालामुखी उद्गार के कारण ये समाप्त हो गये होंगे, जिनमें से कुछ जीवाश्म के रूप में अपर लाइम स्टोन में संरक्षित रह गये।

#### 5.5.1.3. छोटी शिमला :

यह पहाड़ी बड़ी शिमला के पश्चिमी भाग में स्थित है। यह एक शंक्वाकार पहाड़ी है जिसका पश्चिमी ढाल अधिक तीव्र है। इसके ऊपरी भाग में लमेटा युग की अपर लाइम स्टोन शैले पाई जाती है।

#### 5.5.1.4. पाट बाबा पहाड़ी :

यह पहाड़ी बड़ी शिमला के पादुका मध्य भाग में उत्तर पूर्व से पूर्व की ओर स्थित है। इस पहाड़ी में लमेटा युग की छिद्रयुक्त अपन लाइम स्टोन पाई जाती है। जिसके कारण इसके निचले भाग में अन्य भागों की अपेक्षा भूमिगत जल अधिक सुलभता से प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त यहां ग्रीन सेन्डस्टोन एवं ग्रे सेन्डस्टोन भी पाया जाता है।

#### 5.5.1.5 करौंदी पहाड़ी :

यह बड़ी शिमला के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। यह समुद्र तल से 440 मीटर पर स्थित है। इसे खमरिया पहाड़ी के नाम से भी जाना जाता है। इसका ढाल ईशान (उत्तर – पूर्व) दिशा की ओर है।

इस पहाड़ी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की शैलों की उपस्थित के कारण यहां पाई जाने वाली मिट्टीयों में भिन्नता देखने को मिलती है, किन्तु इन मिट्टियों में क्षार की अधिकता के कारण उर्वरा शक्ति कम है। जबलपुर सेंड स्टोन के अपक्षय से निर्मित लाल भूरी बलुआ मिट्टी सबसे नीचे पाई जाती है इसके ऊपर सफेद भूरी, हरी, भूरी चिकनी मिट्टियाँ तथा सबसे ऊपर हरी भूरी, नीली भूरी एवं लावा मिट्टियाँ पाई जाती है। पाट बाबा की पहाड़ी में दिनांक 2/12/1988 को माइकोवेव टावर के निकट लाइम स्टोन चट्टानों में 1.5 करोड़ वर्ष पुराने मांसाहारी डायनासौर के जीवाश्म प्राप्त होने के कारण इस क्षेत्र का भूगर्भिक एवं भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से महत्व और अधिक बढ़ गया है। सम्भवतया जुरासिक युग में इस क्षेत्र में मीठे जल की झीलें स्थित रही होंगी, जिसमें डायनासौर की अनेक प्रजातियाँ हलचलों एवं ज्वालामुखी उद्गार के कारण ये समाप्त हो गये होंगे, जिनमें से कुछ जीवाश्म के रूप में अपर लाइम स्टोन में संरक्षित रह गये।

#### 5.5.1.6 मदन महल पहाड़ी:

यह पहाड़ी नगर की नैऋत्य (दक्षिण — पश्चिम) दिशा में स्थित है। इस पहाड़ी का नामकरण गौड़ राजा मदन सिंह के नाम पर हुआ है। इस पहाड़ी पर मदन सिंह ने एक किला बनवाया था जो कि अभी भी अपनी जर्जर अवस्था में स्थित है।, जिसे मदन महल कहा जाता है। यह पहाड़ी समुद्र सतह से 469 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह पहाड़ी ग्रेनाइट से निर्मित है।

#### 5.5.2 अपवाह तन्त्र :

जबलपुर नगर का औसतन रूप से ढाल पूर्व से पश्चिम की ओर है। नगर के उत्तर पूर्व में परियट नदी पूर्व से पश्चिम तथा दक्षिण में नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर जबलपुर नगर की प्राकृतिक सीमा के रूप में प्रवाहित होती है। उत्तर में स्थित मैदानी भाग का सामान्य ढाल वायव्य (उत्तर – पश्चिम) दिशा की ओर है। मध्यवर्ती एवं नगर उत्तरी भाग का जल ओमती एवं मोती नाला के माध्यम से परियट नदी में प्रवाहित होता है यह आगे जाकर हिरन नदी में मिल जाती है, जो कि नर्मदा नदी की एक सहायक नदी है। नगर के पूर्वी भाग का जल करोंदी तथा खंदारी नाला के माध्यम से गौर नदी में प्रवाहित होता है। गौर नदी नगर की आग्नेय (दक्षिण – पूर्वी) दिशा में नर्मदा नदी में मिल जाती है।

#### 5.5.3 तालाब :

जबलपुर नगर में वर्तमान में दो प्रमुख जलाशय खंदारी नगर के पूर्व में तथा परियट नगर के उत्तर पूर्व में स्थित है जो कि नगर की जल आपूर्ति के अत्यन्त महत्वपूर्ण स्त्रोत है। इसके अलावा जनश्रुतियों के अनुसार नगर में कुल 52 तालाब तलैया है। जैसे — सूपाताल, हनुमालताल, देवताल, मढ़ाताल, माढ़ोताल, आधारताल, रानीताल, जबलपुर तालाब महानद्दा ठाकुर ताल, बाल सागर, श्री नाथ की तलैया, मान तलैया, जूड़ी तलैया आदि हैं, जिनमें से अनेक ताल तलैया जैसे भंवर ताल, हांथीताल, सूपाताल, श्रीनाथ की तलैया, मछरहाई इत्यादि समाप्त चुकी हैं अथवा प्रशासन की उपेक्षा के कारण कचड़े के ढेर के रूम में परिवर्तित हो चुकी हैं।

### भोपाल नगर :

भोपाल नगर मालवा के पठार में स्थित सुरम्य पहाड़ियों के मध्य बसा नगर है इसका वाल उत्तर तथा दक्षिण पूर्व की ओर है। नगर के उत्तर पश्चिम तथा दक्षिण पश्चिम में प्रमुख

क्तप से पहाड़ियां विद्यमान है। इस नगर की प्रमुख पहाड़िया निम्नांकित हैं-

## 1. सिंगार चोली :

यह पहाड़ी नगर की सर्वाधिक ऊँची पहाड़ी है इसकी समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 625 मीटर है।

#### 2. श्यामला गिरी:

यह नगर के पश्चिमी भाग में समुद्र सतह से लगभग 601 मिटर की औसत ऊँचाई लिये रिथत है। इस पहाड़ी पर आकाशवाणी भवन तथा आदिवासी अनुसंधान केन्द्र, पॉलिटेक्निक महाविद्यालय रिथत होने के कारण इस पहाड़ी का सामरिक दृष्टि से महत्व बढ़ गया है।

## ई.एम.सी.टी :

यह नगर के दक्षिणी भाग में स्थित है इसकी समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 520 मीटर है।

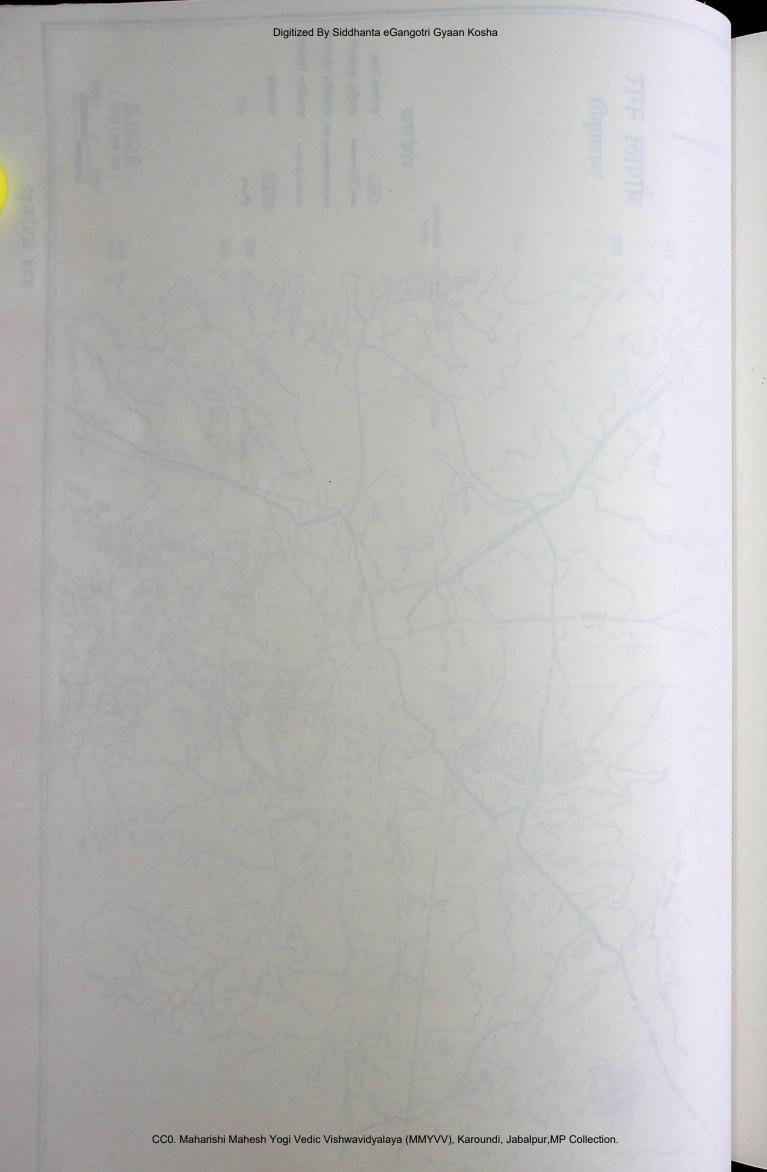
#### 4. अरेरा हिल्स :

यह नगर की प्रमुख पहाड़ियों में से एक है। यह बड़ी झील के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 540 मीटर है। इस पहाड़ी में वल्लभ भवन, सतपुड़ा भवन, विध्याचल भवन, विधान सभा भवन, लक्ष्मी नारायण मन्दिर जैसे महत्वपूर्ण स्थल स्थित हैं।

उपरोक्त पहाड़ियों के अलावा नगर में लालघाटी (540), शाहपुरा (500 मी) मिसरौद (460 मी.) ट्रिएम.सी.टी (520) आदि पहाड़ियाँ हैं।

भोपाल राजधानी नगर सुरम्य पहाड़ियों के मध्य बसा हुआ है जिसका अपवाह तन्त्र कहीं वृक्ष प्रतिरूप के समान है तो कहीं समान्तर अर्थात इसका अपवाह प्रतिरूप नगर के भिन्न – भिन्न रूथानों में भिन्न – भिन्न रूप में प्रतीत होता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह क्षेत्र पहाड़ी है अतः जिस ओर ढाल अधिक हो गया अपवाह तन्त्र उसी ओर विकसित होने लगा। इस नगर का औसत ढाल उत्तर एवं आग्नेय दिशा की ओर है। यहां पर नगरीय

क्रमाक - 4



प्रदूषित ढाल एवं बरसाती जल का निकास प्रमुख रूप से मुख्य तीन शाखाओं द्वारा होता है।

भोपाल नगर की उत्तर पूर्व ईशान दिशा में हलाली नदी प्रवाहित होती है। इसके माध्यम से पुट्ठा मिल आदि का एवं पुराने भोपाल का प्रदूषित जल एक नाले के माध्यम से हलाली नदी में मिलता है। आगे जाकर यह नदी विदिशा के निकट वेतवा नदी में मिल जाती है। हलाली नदी का अधिकांश जल समीपवर्ती कृषि क्षेत्र द्वारा सिंचाई के कार्य में उपयोग किया जाता है। इस नगर की आग्नेय (दक्षिण पूर्व) दिशा में किलयासोत नामक नदी प्रवाहित होती है। बी.एच.ई.एल. मिसरौद, मण्डीदीप आदि जैसे औद्योगिक प्रदूषित जल किलयासोत के माध्यम प्रवाहित होता है। यह नदी बेतवा नदी में भोजपुर के निकट मिलती है। इस नदी में अधिकांश औद्योगिक क्षेत्रों का प्रदूषित जल प्रवाहित होता है। इसके अलावा नगर की नैरिक्त दक्षिण पश्चिम दिशा में छोटे – छोटे नालों के माध्यम से प्रदूषित जल कोलार नदी में मिलता है जो कि अन्त में नर्मदा नदी से मिल जाती है।

भोपाल नगर में निदयों के अलावा तालाब भी अपवाह तन्त्र को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । भोपाल तथा आस — पास लगभग 14 तालाब है। ईसी लिये कहा भी जाता है 'तालों में भोपाल ताल बाकी सब तलैया। इनमें से बड़ा तालाब, छोटा तालाब, भदभदा, प्रमुख हैं। बड़ी झील में लगभग 36.1 किलोमीटर तथा छोटी झील लगभग 9. 60 किलोमीटर क्षेत्र के अपवाह तन्त्र को प्रभावित करती है। बड़ी झील से भोपाल नगर की जल आपूर्ति व्यवस्था को नियन्त्रित किया जाता है। महानदी, उत्तरी भाग से कटनी नदी, केन नदी उत्तर पूर्व भाग से प्रवाहित होती है।

## 5.6 जबलपुर संस्कारधानी एवं भोपाल राजधानी नगरों की ऐतिहासिक पृष्ठीभूमि :

5.6.1 जबलपुर की ऐतिहासिक विकास यात्रा :

जबलपुर नगर का इतिहास बड़ा ही गौरवमयी रहा है। यह पहले त्रिपुरी के नाम से जाना जाता था जो अब मुख्य नगर से लगभग 16 कि.मी. दूर तेवर नामक गांव के रूप में परिणित

<sup>4.</sup> हुसैन, हा., माजिद, भोपाल का इतिहास ;सन् ०००१ से 1997 तकद्ध मई 1997 पृ. 38

<sup>5.</sup> हुसैन, हा. माजिद, वही पृ. क्र. 36

<sup>6.</sup> उपरोक्त पृ. 38

<sup>7.</sup> उपरोक्त पृ. 38

हो गया है। त्रिपुरी का वर्णन रामायण, महाभारत एवं पुराणों में भी देखने मिलता है। यहां पर मौर्य शासन काल भी रहा है इसका पता अशोक के रूपनाथ शिलालेख से लगता है कि यहां लगभग 300 ई. पू. मौर्यों के आधीन रहा है। इसके पश्चात सतवाहन वश 165 ई. से 193 ई. वोधिवंश (325 ई से 400 ई. ) 49 शताब्दी से गुप्तवंश का शासन रहा तथा 550 ई. से कलचुरियों का सामराज्य स्थापित हो गया। उस समय इनकी राजधानी महिष्मति थी, किन्तु इसकी वास्तविक वैभवशाली विकास यात्रा 8 वी शदी से कल्चुरी शासन का उदय से प्रारम्भ होती है जब कल्चुरियों ने इसे अपनी राजधानी बनाया। आज भी तेवर ग्राम कल्चुरी शासन काल की स्थापत्य कला मूक रूप में कहता हुआ प्रतीत होता है। वहां पर इस काल के अनेक अवशेष मिले हैं जो रानी दुर्गावती पुरातत्व संग्रहालय जबलपुर मे संग्रहित है। 1200 ई. के पश्चात कल्चुरी शासन काल का अन्त हो गया और गोड़ शासन की स्थापना हुई इस शासन के संस्थापक यदुराय (जादोरा) माने जाते हैं। इसी का वर्णन मिलक मोहम्मद जायसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ पदमावत मे किया है। गोंड़ वंश में भी मदन सिंह दलपतशाहि, संग्रामशाह जैसे प्रमुख शासक रहे हैं। 1564 में रानी दुर्गावती मुगलों से युद्ध करते हुये वीरगति को प्राप्त हुई। इसके पश्चात गोंड़ वंश का अंत हो गया तथा इस क्षेत्र से मुगल वंश की शासन व्यवस्था स्थापित हुई । 1779 में इस क्षेत्र का काम काज पेशवाओं (मराठों) के हांथ चला गया। 1797 में पेशवाओं ने जबलपुर को मण्डला रघुजी भौसले को दे दिया, तथा 1797 से 1810 तक भौसले यह नगर के अधिपत्य में रहा इस समय अराजकता एवं कुशासन का बोल बाला हो गया। 1818 में अंग्रेजों की शासन व्यवस्था लागू हो गई । 1860 में भारत सरकार के आदेश से मध्य प्रदेश एक चीफ कमिस्नरी प्रदेश बनाया गया । इसमें 19 जिलों को निर्माण किया गया उनमें जबामी एक था। 1939 को त्रिपुरी में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 52 वां अधिवेशन हुआ तथा 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया। उसके पश्चात यहां देश प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक व्यापारिक प्रतिष्ठाान एवं संस्थान स्थापित किये गये।

55:2 संस्कारधानी नगर की नामोत्पत्ति :

संस्कारधानी की नामोपत्पित विचारात्मक, द्वन्द से परे नहीं है। अर्थात जबलपुर नाम के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों के पृथक – पृथक दृष्टि कोण है। कल्चुरी काल में यह जाबलिपत्तनम या जाऊलीपत्तन के नाम से जाना जाता था । डाँ० हीरालाल राय का मत है कि जबलपुर से

राय, ए.के., जबलपुर दर्पण, ९४ पृ. क्र. ६

16 कि.मी. त्रिपुरी (वर्तमान तेवर गांव) कल्चुरी राजाओं की राजधानी थी इन राजाओं के कई ताग्रपत्रों में जाऊलीपत्तला या जाऊलीपत्तनम् का उल्लेख हुआ है 9 यही जबलपुर का पुराना नाम ज्ञात होता है। यह जाबालिऋषि से सम्बन्धित है जाबालिऋषि चर्वाक परम्परा के एक प्रख्यात ऋषि थे इन्होने चित्रकूट में भगवान राम को अध्योध्या लौट आने का परामर्श दिया था किन्तु तत्कालीन समय में त्रिपुरी में शैवमत का प्रचलन था इसीलिये इन्हें संभवतः यहां से निर्वासित कर दिया गया जिन्होंने यहां से 6 मील दूर पहाड़ियों को अपनी तपस्थली बनाई जो कि जाबालिपत्तला बनी जिसका अपभ्रंश जाऊलीपत्तला बना। किन्तु जबालिपुर जालौर (राजस्थान) का प्राचीन नाम है। जो कि तत्कालीन समय का प्रख्यात व्यापारिक नगर प्रो0 विश्वम्भर शरण पाठक ने 'Jabalpur the arigin the significesh of the name' नामक मोनोग्राम प्रकाशित 1989 किया है जिसमें उन्होंने स्वीकार किया है कि भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से जाबालिपुर से जालोर तो हो सकता है, किन्तु जाऊली या जबल नहीं हो सकता। डाँ० प्रबुद्ध प्रकाश ने (कुरूक्षेत्र विश्व विद्यालय अपने ग्रन्थ आसपेक्ट ऑफ इंडिया हिस्ट्री एण्ड सिवलाइजेशन में जबलपुर नगर का नामकरण हूणें से सम्बन्धित किया है। आपका मत है कि छटवीं शती में मालवा पर हूंणों का अधिकार था किन्तु स्कन्द गुप्त ने इन्हें उत्तर की ओर खदेड़ दिया जो कि कुछ समय तक सिन्ध नदी के पश्चिमी भाग पर राज्य करते रहे इसके पश्चात यहां से भी भगा दिये जाने के कारण जाबुल और आवस्तदा सरोवर एवं गजनी नदी के तट पर राज्य करते रहे इस कारण इन्हें जाबुल के नाम से भी जाना जाने लगा। कुछ समय पश्चात वे पुनः मालवा में बस गये। कल्चुरी नरेश गंगेय देव के पुत्र कर्ण ने हूण राजकुमारी अवल्या देवी से विवाह किया जिससे यशः कर्ण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ उसी के ताम्रपत्र में सर्वप्रथम जाऊलीपतन का उल्लेख प्राप्त होता है।11

देवासुर संग्राम के समय भगवास शंकर ने दानव शिल्पी मय द्वारा रचित वाण नाम असुर की राजधानी त्रिपुर को भष्मसात किया था जो कि जलकर नर्मदा नदी के तट पर आ गिरा जिस कारण इसका नाम ज्वालेश्वर पड़ा । 12 इस त्रिपुरान्तक कथा का एक शिलालेख त्रिपुरी से भी प्राप्त हुआ है। शिलालेख देवासुर संग्राम ही नहीं वरन् आर्यो एवं आर्योत्तर जातियों के

<sup>9.</sup> चौबे, एम. सी., जबलपुर अतीत दर्शन, जिला योजना मण्डल, एवं भारतीय संस्कृति निधि, 1994 पृ ँक्र. 1

<sup>10.</sup> Sharma, R.C., Sattlement Geography of the Indian desert, 1972, P.P. 86

<sup>11.</sup> चौबे, एम. सी. वही पृ . क्र. 1

<sup>12.</sup> मत्स्य पुराण , 188/8

HATE OF THE BUTTON OF THE STATE OF THE PARTY OF THE PARTY

A THE STATE OF THE PART OF THE

मध्य होने वाले संघर्षों का भी बोध कराता है। क्योंकि कल्चुरियों और धार के परमारों के मध्य राज्य की सीमाओं को लेकर परस्पर संघर्ष चलता रहता था जिसके परिणाम स्वरूप परमारों ने इस नगर को जलाकर नष्ट कर दिया था । 13

अतः उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि इस नगर को कल्चुरी काल में या उसके पूर्व 'जाऊलीपतन' के नाम से जाना जाता था। क्यों कि यह सर्वविदित है कि नर्मदा नदी अति प्राचीनतम नदियों में से एक है जिसे सिकन्दर के साथ आया हुआ सेनापित टालेमी नोम्माडोस (Nommados) या नम्माडियस (Nammadius) के नाम से जानते थे । 14 उस समय इसका प्रवाह अति तीव्र था। 15 इसलिये तत्कालीन समय में नर्मदा नदी का उपयोग परिवहन के साधन के रूप में किया जाता था तथा यह एक बहुत बड़ा बंदरगाह बन गया था। जिसे भौगोलिक भाषा में पत्तन कहा जाता है। अजय मिश्र शास्त्री भी उस समय का प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र मानते हैं 16 किन्तु बाद में कुछ भूगर्भिक एवं भौगोलिक परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप नर्मदा नदी का प्रवाह कम हो गया। अतः तत्कालीन समय में इस नगर का नाम जाऊलीपत्तन भौगोलिक दृष्टि से रखा गया था। 1924 में विनोवा भावे जबलपुर आये जिन्होंने यहां की सांस्कृतिक विरासत को देखते हुये जबलपुर नगर को 'संस्कारधानी' नाम से अलंकृत किया।

### 5.6.3. राजधानी नगर की ऐतिहासिक विकास यात्रा :

भारत वर्ष में कुछेक ही ऐसे नगर होंगे जिनका इतिहास राजधानी (भोपाल) नगर के समान विख्यात होगा। मालवा पठार के मध्य बालुका प्रस्तर की एक छोटी किन्तु ऊंची नीची पहाड़ी पर स्थित यह नगर अपने निर्माण काल से ही राजनैतिक घुव रहा है। इसके अलावा इस क्षेत्र का वर्णन काली दास के अमर काव्य मेघदूत में भी है जिनका यक्ष रूपी उत्तरी 

चौबे, एम.सी. वही, पृ. क्र. 1 13.

Srivastava, P.N., M.P. Distt. Gazetter, (Jabalpur Distt.) 1968, P.P. 6 14.

स्कन्द पुराण, रीवा खण्ड, 15.

कुन्द्रा, ओम प्रकाश, (सम्पादक) म. प्र. विकास वार्षिकी, राधिका प्रकाशन प्रा. लि., भोपाल, 1985 पृ. क्र. 37 16.

चुके थे किन्तु बाद में यह नगर दूसरे राजाओं के अकमणों से नष्ट हो गया। जैसा कि इलिओट महोदय ने लिखा है 'भोपाल' को राजा — भोज ने बसाया था किन्तु इसके निर्माण के कुछ समय बाद यह ध्वस्त होकर एक ग्राम स्वरूप ही रह गया, जो कि तालाब के किनारे पर स्थित था। चूंकि राजाभोज न केवल एक शासक थे वरन् एक बहुत बड़े विद्वान भी थे उनके द्वारा रचित वास्तुशास्त्रीय ग्रंथ' समरांग्ण सूत्राधार आज भी प्रेरणा स्त्रोत है। अतः राजा भोज ने भोपाल नगर का निर्माण वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर किया था। 1055 में राजा भोज की मृत्यु हो गई। 18

राजा भोज की मृत्यु के पश्चात परमार वंश का विघंटन हो गया तथा 1236 से मालवा (भोपाल) पर एम्सउद्दीन अल्तमश के शासन से 1600 ई. तक मुगल शासन रहा। <sup>19</sup> लगभग 1600 ई. में भोपाल नगर से लगभग 100 कि.मी. दूर गिन्नौरगढ़ नामक रियासत थी जहां पर गौंड़ राजा निजामशाह का शासन था, जिसका किला अभी भी जीर्णावस्था में तत्कालीन समय का मूक दर्शक है। इसी समय लड़ाई के दौरान निजामशाह की मृत्यु हो गई और इसकी पितन कमलावती (कमलापति) भोपाल में आकर रहने लगी । रानी कमलापति अपने पति का बदला लेना चाहती थी इसी समय दोस्त मोहम्मद खान ने औरंगजेब की सेना को त्याग कर भोपाल के आस – पास के क्षेत्र में अपना शासन स्थापित कर लिया था। दोस्त मोहम्मद्खान की मदद से रानी कमलापति ने अपने पति के हत्यारे को मार कर भोपाल का महल्राज भी पुराने किले पर कमला पार्क में आधा डूबा हुआ है। 20 1708 में दोस्त मोहम्मद खान ने भोपाल में कब्जा कर लिया तथा 1726 तक शासन किया और 1726 में इसकी मृत्यु हो गई इसके पश्चात 1726 से 1742 तक मुहम्मद खान ने शासन किया। इसके पश्चात फौज मुहम्मद खान ध्यात मुहम्मद खान कुदसिया वेगम, नवाब शाह जहां वेगम, नवाब, सुल्तान जहां बेगम, आदि ने शासन किया । औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मराठों का शासन रहा नही तथा यहां पर मराठों ने अपना अधिपत्य जमा लिया। 1947 में भारत आजाद हो गया तथा 1 नवम्बर 1956 को मध्य प्रदेश राज्य के गठन के साथ ही इस नगर को राजधानी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

<sup>17.</sup> हुसैन, हा. माजिद, भोपाल का इतिहास, मई 1997, पृ. क्र. 69

<sup>18.</sup> उपरोक्त, पृ. क्र. 70

<sup>19.</sup> उपरोक्त, पृ. क्र. 20

<sup>20.</sup> उपरोक्त पृ. क्र. 21

### 5.6.4 भोपाल राजधानी नगर की नामोत्पत्ति :

भोपाल राजधानी नगर के नाम पर भी इतिहासकारों के पर्याप्त मतभेद हैं। किन्तु सामान्यतः ऐतिहासिक दृष्टि से यह माना जाता है कि भोपाल नगर का नामकरण 'राजा भेज' के नाम पर हुआ है। <sup>21</sup> यहीं पर राजाभोज इसका नाम भीम कुण्ड था, <sup>22</sup> 1405 में पहाड़ काटकर द्वारा होशंग्रशाह गौरी ने पानी बहा दिया था। <sup>23</sup> राजा भोज द्वारा 900 वर्ष पूर्व भोजपुर के पास ताल बनवाया गया था जिसका क्षेत्रफल लगभग 350 वर्ग मील था। <sup>24</sup> इसी बांध के निकट विशाल शिव मन्दिर भी स्थित है जो इतिहास में दूसरे सोमनाथ के नाम से विख्यात था। <sup>25</sup> पुश्ता बांध को हिन्दी में पाल कहा जाता है <sup>26</sup> इसी लिये यह भोजपाल के नाम से प्रसिद्ध हो गया तदान्तर भोजपाल से भूपाल <sup>27</sup> और अब यह राजधानी नगर भोपाल बन चुका है।

#### 5.4 संस्कारधानी एवं राजधानी की आर्थिक पृष्ठ मूमि :

किसी भी प्रकार की बस्ती को अस्तित्व में लाने के लिये आर्थिक कारकों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है और आर्थिक किया में बिस्तियों के विभाजन का एक प्रमुख आधार बनती है तथा बिस्तियों को विभिन्न वर्गों जैसे ग्राम कस्बा, नगर, महानगर, इत्यादि में विभाजित किया जाता है। अर्थात सार संक्षेप में यह कहा जाये कि नगरों को जीवन प्रदान करने वाली वहां (नगरीय बस्ती में) सम्पादित होने वाली आर्थिक कियायों ही है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अर्थात आर्थिक कार्य नगर को जीवन ज्योति प्रदान करते हैं। आर्थिक कियाओं के अन्तर्गत जन सभी आर्थिक कियाओं को सम्मिलित किया जाता है। जिसके माध्यम से मनुष्य धनोपार्जन करता है चाहे वह कृषि जैसी प्राथमिक आर्थिक किया हो अथवा वृहद उद्योग जैसी तृतीयक श्रेणी की आर्थिक किया हो। अतः किसी भी बस्ती को नगर कहलाने के लिये अपने

2

<sup>21.</sup> दैनिक, नव-भारत, समाचार पत्र, (भोपाल) 3 अगस्त 1998

<sup>22.</sup> हुसैन, हा. माजिद वही पृ. क्र. 19

<sup>23.</sup> उपरोक्त, पृ. क्र. 36

<sup>24.</sup> कुन्द्र, ओम प्रकाश, (सम्पादक) म.प्र. विकास वार्षिकी, 1992 - 93

<sup>25.</sup> उपरोक्त,

<sup>26.</sup> हुसैन, हा. माजिद, पृ. क्र. 36

<sup>27.</sup> कुन्द्रा, ओम प्रकाश, म.प्र. विकास वार्षिकी, 1992 - 93

नोपाल राजातानी नेपर के बाद पर जो द्वितायातालें के प्रांत ति ति विक

न्यान्यतः ऐतिहासियाः है देन अपन कार्याता है कि भोगात नगर को मुख्यान साथ बंज

आप में कम से कम 75 प्रतिशत आकृषिगत कार्यों में संलग्न जनसंख्या को समेटे रखना आवश्यक है। अतः वर्तमान समय में नगरों में द्वतीयक एवं तृतीयक श्रेणी की आर्थिक कियाओं की बाहुल्यता है। पश्चिमी देशों के नगरों में तो अकृषिगत कार्यों का प्रतिशत 90 तक चला जाता है। जैसे— जापान, कनाडा) अतः किसी भी नगर को अस्तित्व में लाने के लिये वहां रिश्चत आर्थिक कारक अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। जैसे प्राचीन समय में भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के अधिकांश नगर निवयों या समुद्री तटों, खनिज क्षेत्रों अथवा व्यवसाय व्यापार के सुविधा युक्त स्थानों पर ही विकसित हुये थे।

जबलपुर संस्कारधानी नगर अपने आप में आर्थिक विकास की असीम सम्भावनायें लिये ह्ये हैं किन्तु उचित नीतियों एवं प्रबन्ध के आभाव में ये सम्भावनायें मात्र भावनायें बनकर रह गई है। संस्कारधानी केवल मानवीय संस्कारों की ही खान नहीं है वरन इसके पास आर्थिक संसाधनों के भी विपुल भण्डार है। प्रकृति ने संस्कारधानी को अनेक खनिज उपहार में दिये हैं किन्तु अभी तक उनका समुचित उपयोग नहीं हो पाया है। जबलपुर जिले के उत्तर पूर्व में स्थित अगरिया गोसलपुर, विजोरी, कान्हवारा आदि में लौह अयरक के निक्षेपण मिले हैं। यहां पर यह क्वार्ट जाइट शैल एवं क्ले चट्टानों के मध्य मिलता है।<sup>28</sup> इसी प्रकार यहां पर उत्तम वाक्साइट के भण्डार पाये गये है (महगवां धनवाही सरसवाही, टिकरिया आदि में) जिनमें एल्यूमीनियम की मात्रा 60 से 65 प्रतिशत तक मिलती है।<sup>29</sup> इसके अलावा यहां पर चीनी मिट्टी जबलपुर नगर में स्थित छोटी शिमला नामक पहाड़ी तथा लम्हेटाघाट से प्राप्त होती है। फायरक्ले (अग्नि सह मिट्टी) जिसका उपयोग भटि्टयों की ईटे तथा भटि्टयों को बनाने में उपयोग होता है, पिपरिया और हुआर नामक स्थानों में प्राप्त होती है। इसके अलावा यहां पर संगमरमर, भेड़ाघाट से फेल्सपार लम्हेटाघाट से तथा चूने का पत्थर डोलोमाइट जबलपुर जिले के कटनी तहसील (वर्तमान कटनी जिला) से प्राप्त होता है। इसके अलावा यहां आग्नेय चट्टानों की अधिकता के कारण पर्याप्त मात्रा में भवन निर्माण हेतु पत्थर मिट्टी तथा संगमरमर प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त याहं पर्याप्त मात्रा में वन संसाधन उपलब्ध है।

राजधानी (भोपाल) नगर वस्तुतः प्रारम्भ से ही राजनैतिक केन्द्र बिन्दु के रूप में चर्चित रहा है। यहां पर किसी विशेष खनिज सम्पदा की विपुलता नहीं है, किन्तु फिर भी यह नगर

<sup>28.</sup> कुमार, प्रमिला, मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, 1977, पृ. क्र. 103

<sup>29.</sup> उपरोक्त, पृ. क्र. 106

अंतर है। जेरी- (स्वापान कनाता) अर्थ- किसी को नगर को अधिवाद के लाह के **क्षा**र के किस

े ज्यान होता है, चित्रहियां और हजार नावक स्थानों में बाच हाती है। इंसके बताबा कर

राजनैतिक एवं आर्थिक कार्यकलापों के कारण देश ही नहीं सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप में प्रसिद्ध है। यहां पर प्रमुखतः विध्ययन समूह की चट्टानों से कांच बालू मलाजपुर के निकट प्राप्त होता है जो कि कांच बनाने के लिये उपयोग में लाया जाता है। इसके अलावा कहीं — कही अगेट, केन्सीडोनी तथा जैस्पर जैसे कीमती पत्थर मिलते हैं। यहां पर विध्यन समूह का बलुआ पत्थर प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध है जो कि विशेष रूप से भवन निर्माण में उपयोग किया जाता है।

संस्कारधानी नगर भारत वर्ष के हृदय स्थल में स्थित होने के कारण यहां पर आधारभूत उद्योगों को ही बढ़ावा दिया गया है। यह देश के मध्य स्थित होने के कारण सुरक्षित स्थान माना जाता है। इसी सुक्षात्मक दृष्टि को ध्यान में रखते हुये अंग्रेज शासकों ने देश के प्रमुख रक्षा संस्थानों की स्थापना की थी जो कि आज भी कार्यरत है। इनमें गन कैरिज फैक्ट्री जी. सी.एफ. आर्डनेंस फैक्ट्री खमरिया (ओ.एफ.के.) सी.ओ.डी. तथा वाहन फैक्ट्री, टेलीग्राफ फैक्ट्र प्रमुख है। यहां पर देश की रक्षा के लिये गोला—बारूद, गाड़ियों एवं वन्दूकों का निर्माण किया जाता है। इसके अलावा आटा चक्की उद्योग, चीनी मिट्टी उद्योग, (पाइप, खपरे, ईट, बर्तन) आदि हैं जो कि इस नगर के आर्थिक स्तंभ के रूप में स्थित प्रमुख है। जबलपुर नगर में लकड़ी चीरने के ही लगभग 40 कारखाने कार्यरत हैं। <sup>30</sup> इसके अलावा यहां पर हथकरधा, बीड़ी, अगरबत्ती, अचार, मुरब्बा, बिस्किट लघु एवं कुटीर उद्योग हैं। यहां पर मध्य प्रदेश के लगभग 9.35 प्रतिशत लघु उद्योग स्थापित है।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल नगर एक औद्योगिक नगर बनता जा रहा है यहां पर वृहद उद्योगों की अपेक्षा लघु एवं कुटीर उद्योग कम पाये जाते हैं। यहां मध्य प्रदेश के कुल लघु उद्योगों के मात्र 3.2 प्रतिशत लघु उद्योग स्थापित है। <sup>32</sup> किन्तु राजनैतिक एवं प्रदेश का प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र होने के कारण इस नगर में उद्योगों को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है। इतना नहीं 1960 में ब्रिटेन की सहायता से भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड की स्थापना से यहां औद्योगिक कान्ति आ गई और अब यह नगर न केवल राजमैतिक नगर के रूप मैं अपनी पहुंचान बनायें हुये हैं वरम एक औद्योगिक नगरी के रूप मैं अपनी पहुंचान बना रहा है। भारत

<sup>30.</sup> कुमार, प्रेमिला, वही पृ. क्रे. 145

<sup>31.</sup> उपरोक्त, पू. क्र. 140

<sup>32.</sup> उपरोक्त, पू. क्र. 140

हेवी इलेक्ट्रीकल लिमिटेड के निकट इंडस्ट्यल स्टेट में अनेक लघु उद्योग स्थापित हो गये हैं। इसके अलावा यहां सूती वस्त्र उद्योग, मैदा मिल, पुट्ठा बनाने का कारखाना, रासायनिक खाद कारखाना, कांच उद्योग, आदि स्थापित है।

जबलपुर संस्कारधानी में औद्योगिक विकास के लगभग सभी प्राकृतिक साधन सुलभ हैं केवल आवश्यकता शासन की कुशल नीतियों एवं प्रभावशील राजनैतिक प्रतिनिधित्व की है, क्योंकि जहां एक ओर यहां पर्याप्त मात्रा में खिनज भण्डार हैं वहीं दूसरी ओर श्रम शिक्त भी इस क्षेत्र में विपुल मात्रा में भरी पड़ी है। राजधानी नगर वर्तमान मे राजनैतिक नगर के अलावा औद्योगिक नगर के नाम से भी प्रसिद्ध हो रहा है। यहां औद्योगिक विकास का प्रमुख कारण प्रभावशाली राजनैतिक प्रतिनिधित्व प्रदेश के राजनैतिक केन्द्र होने के कारण उद्योगों को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है। अतः इस औद्योगीकरण से तो नगर के कुछेक क्षेत्रों जैसे गंन्दी बिस्तयों का प्रसार में कुछ समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। अतः यहां औद्योगिक विकास के साथ — साथ इसके उचित नियोजन की भी आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।

### 5.% जबलपुर संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों की जनसंख्या :

किसी भी नगर का अस्तित्व वहां की जनसंख्या पर ही निर्भर करता है। नगर का जन्म जनसंख्या के दबाव के परिणाम स्वरूप होता है। अतः किसी भी नगर की विकास योजना बनाते समय उस नगर की जनसंख्या का अध्ययन अति आवश्यक होता है क्योंकि नगर की योजना सम्बन्धित जनसंख्या के लिये ही होता है। अतः जनसंख्या के आधार पर ही नगर की सेवाओं जैसे पेयजल, यातायात, सफाई, बाजार, शैक्षणिक एवं सामाजिक आदि सुविधाओं का निर्धारण जनसंख्या दबाव के अनुरूप ही किया जाता है।

श्रास्थानी की जनसंख्या दिकास :

संस्कारधानी नगर की जनसंख्या 1991 की जनगणनानुसार 888916 है। नगर में सर्वप्रथम 1872 में जनगणना का कार्य सम्पन्न किया गया था उस समय इस नगर की कुल जनसंख्या 55188 थी। इस समय यह सेन्ट्रल प्रोविजन्स के अन्तर्गत आता था। इस जनगणना का सबसे बड़ा रोचक तथ्य यह था कि जबलपुर और नागपुर की जनसंख्या समान थी। इसके पश्चात 1881 में जनगणना हुई तब नगर की जनसंख्या 75.709 हो गई अर्थात 9 वर्ष में 20521 व्यक्तियों की वृद्धि हुई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई है।

तालिका क्र0 5.5

जबलपुर नगर जनसंख्या विकास (1901 — 91)

| वर्ष | कुल जनसंख्या      | जनसंख्या परिवर्तन दर<br>(प्रतिशत में) |
|------|-------------------|---------------------------------------|
| 1901 | 90,316            | <del>-</del>                          |
| 1911 | 100,665           | 11.44                                 |
| 1921 | 108,793           | 08.09                                 |
| 1931 | 124,382           | 14.33                                 |
| 1941 | 178,339           | 43.38                                 |
| 1951 | 256.998           | 44.11                                 |
| 1961 | 376,014           | 42.81                                 |
| 1971 | 534,845           | 45.73                                 |
| 1981 | 757,303           | 41.59                                 |
| 1991 | 8888, <b>3</b> 16 | 17.37                                 |

स्त्रोतः जनगणना पुस्तिका, 1991, II-ए, म.प्र. जनगणना संचालनालय, भोपाल।

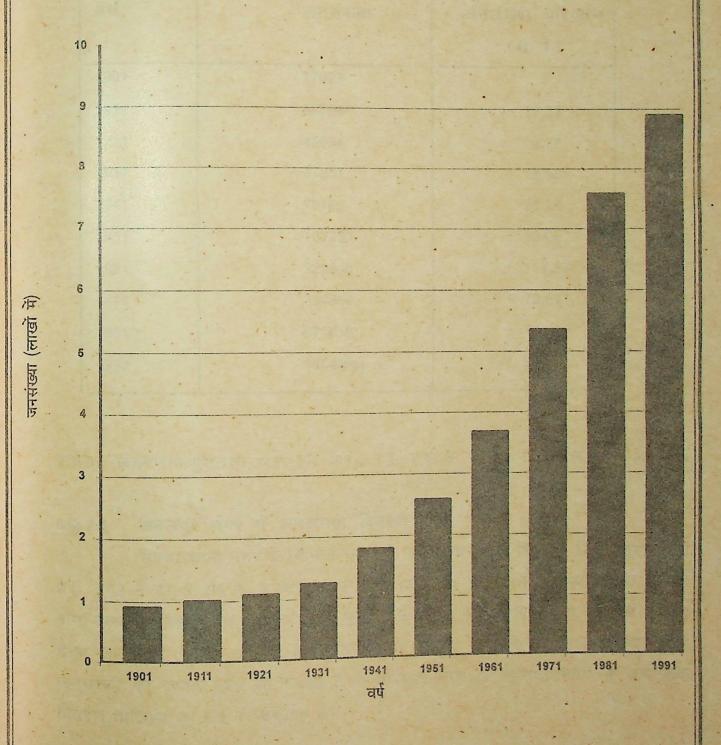
भोपाल नगर प्रारम्भ से ही राजनैतिक केन्द्र बिन्दु होने के करण यहां जनसंख्या में पर्याप्त मात्रा में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। राजधानी नगर भोपाल की जनसंख्या 1958 में 37,539 थी। 33 1991 की जनगणना के अनुसार भोपाल नगर की कुल जनसंख्या 10,62,771 थी जिसमें 56,1,208 पुरूष एवं 501563 रित्रयाँ थी। 1901 से 1991 जनसंख्या विकास दर तालिका क्र. 5.6 के अनुसार रही है।

<sup>33.</sup> हुसैन, हा. माजिद, पृ. क्र. 5

to the contract of the same and the same and the same of the same

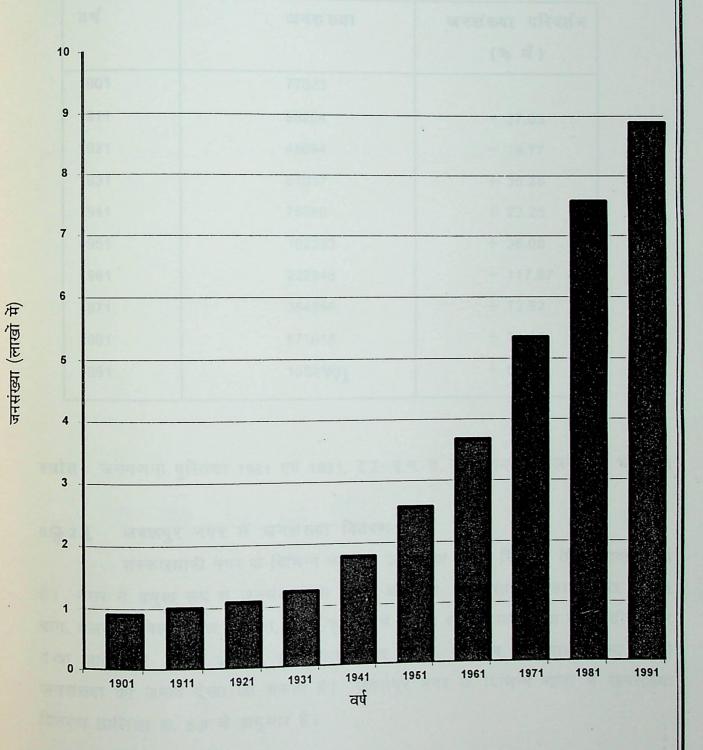
## जबलपुर नगर - जनसंख्या विकास

(1901 - 1991)



## जबलपुर नगर - जनसंख्या विकास

(1901 - 1991)



तालिका क. 5.6 भोपाल नगर जनसंख्या विकास (1901 से 1991 तक)

| वर्ष | जनसं ख्या | जनसंख्या परिवर्तन |
|------|-----------|-------------------|
|      |           | (% में)           |
| 1901 | 77023     |                   |
| 1911 | 56204     | - 27.03           |
| 1921 | 45094     | - 19.77           |
| 1931 | 61037     | + 35.36           |
| 1941 | 75288     | + 23.25           |
| 1951 | 102333    | + 36.00           |
| 1961 | 222948    | + 117.87          |
| 1971 | 384859    | + 72.62           |
| 1981 | 671018    | + 74.35           |
| 1991 | 1062771   | + 58.51           |

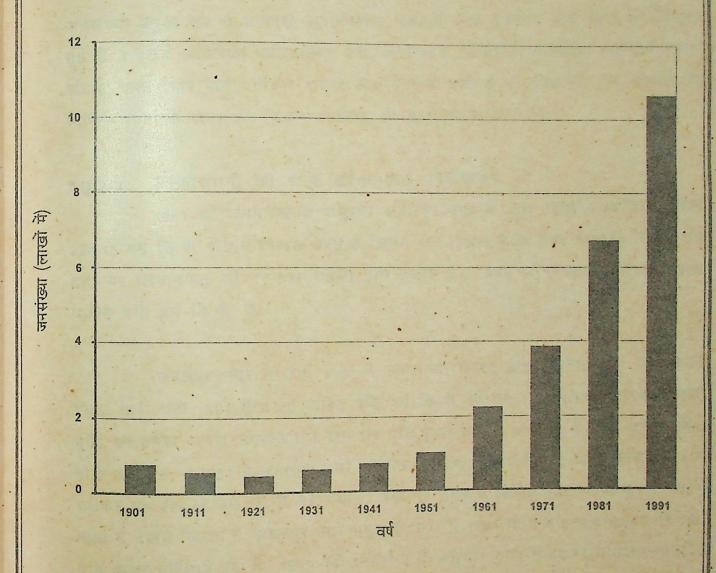
स्त्रोतः जनगणना पुस्तिका 1981 एवं 1991, II-ए,म. प्र. जनगणना संचालनालय, भोपाल।

#### 5. 2.1 जबलपुर नगर में जनसंख्या वितरण :

संस्कारधानी नगर के विभिन्न भागों में जनसंख्या घनत्व भिन्न — भिन्न पाया जाता है। नगर में प्रमुख रूप से जनसंख्या का जमाव अंधेरदेव, हनुमानताल, बड़ा फुहारा, बल्देव बाग, बेलबाग, मिलोनिगंज, सराफा, छोटा फुहारा, में विशेष रूप से जनसंख्या के केन्द्रीयकरण देखा जाता है। इसके अलावा, अधारताल, मदार टेकरी, कांचघर, लालमाटी, केन्ट में भी जनसंख्या का जमाव देखा जा सकता है। जबलपुर नगर के विभिन्न भागों में जनसंख्या वितरण तालिका क्र. 5.9 के अनुसार है।

## भोपाल नगर - जनसंख्या विकास

(1901 - 1991)

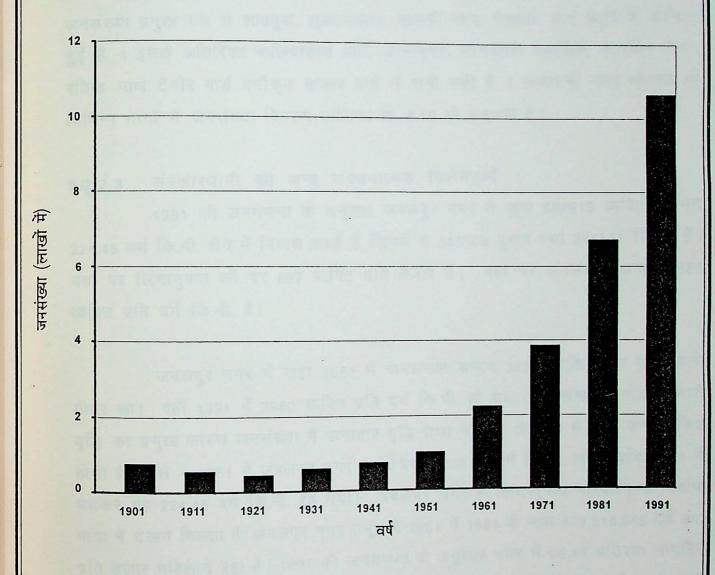




क्रमांक - 6

# भोपाल नगर - जनसंख्या विकास

(1901 - 1991)



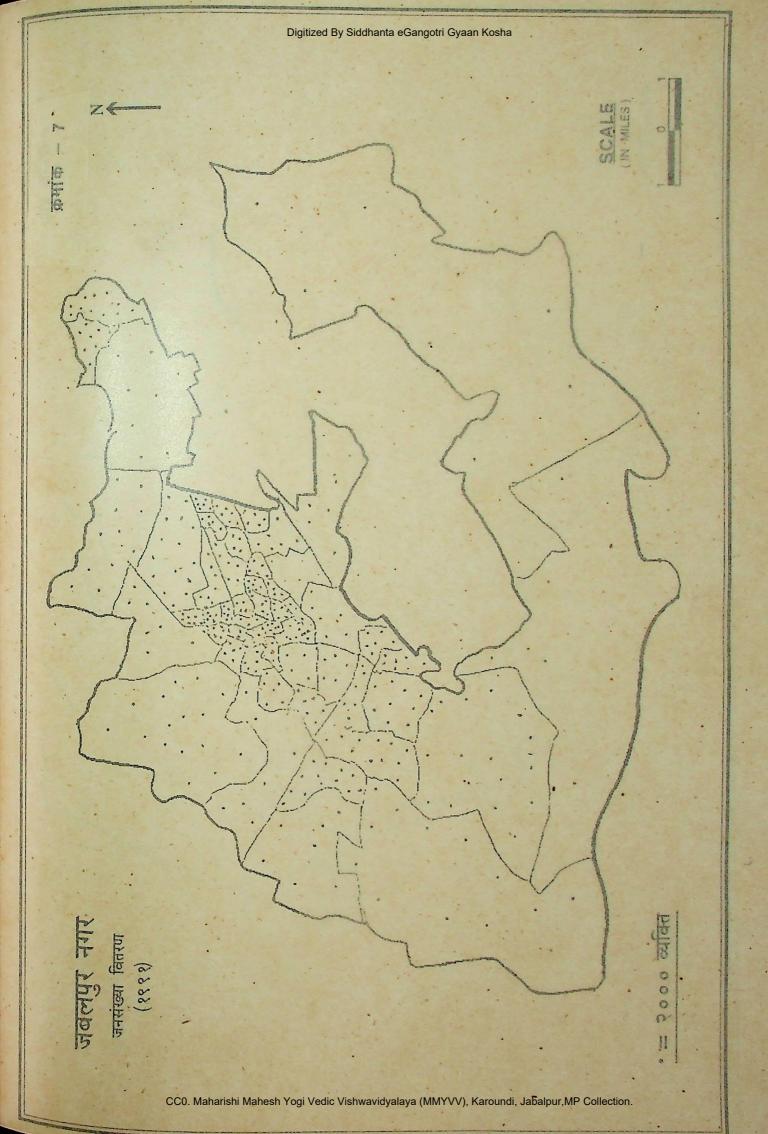
5.02.2. राजधानी नगर भोपाल में जनसंख्या का वितरण :

भोपाल नगर में जनसंख्या के वितरण पर आर्थिक कियाओं जैसे कल — कारखानों बजारों एवं भू—आकृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पहाड़ियों पर समतल क्षेत्र की अपेक्षा कम आबादी है एवं उच्च श्रेणी के व्यक्तियों के आवास एवं बड़े प्रशासनिक कार्यालय विशेष रूप से दृष्टिगोचर होते हैं जैसे श्यमला गिरी अरेरा हिल्स आदि। भोपाल नगर की जनसंख्या प्रमुख रूप से शाहपुरा, सुल्तानाबाद, शास्त्री नगर, ऐशबाग वार्ड आदि में केन्द्रित हुई है। इसके अतिरिक्त कलियासोत वार्ड, अन्नानगर, सोनागिरी मैदामिल, मालवीय नगर, रिवन्द्र नाथ टैगोर वार्ड वर्गीकृत बाजार वार्ड में घनी बसी है। राजधानी नगर भोपाल के विभिन्न भागों में जनसंख्या वितरण तालिका क्र. 5.10 के अनुसार है।

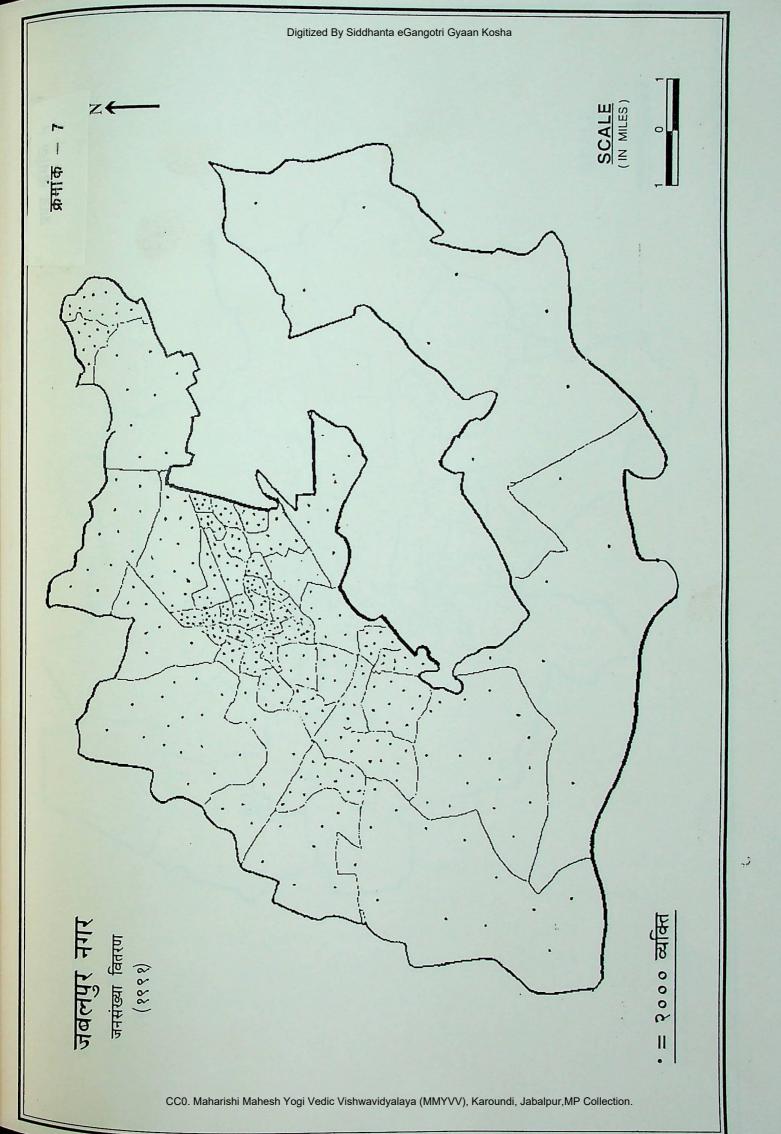
#### 5.7.2.3 संस्कारधानी की अन्य संरचनात्मक विशेषतायें :

1991 की जनगणना के अनुसार जबलपुर नगर में कुल 888916 व्यक्ति लगभग 224.45 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में निवास करते हैं जिनमें से 345509 पुरूष तथा 245541 स्त्रियां हैं। यहां पर लिंगानुपात की दर 897 व्यक्ति प्रति हजार हैं। यहां पर जनसंख्या धनत्व 3960 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

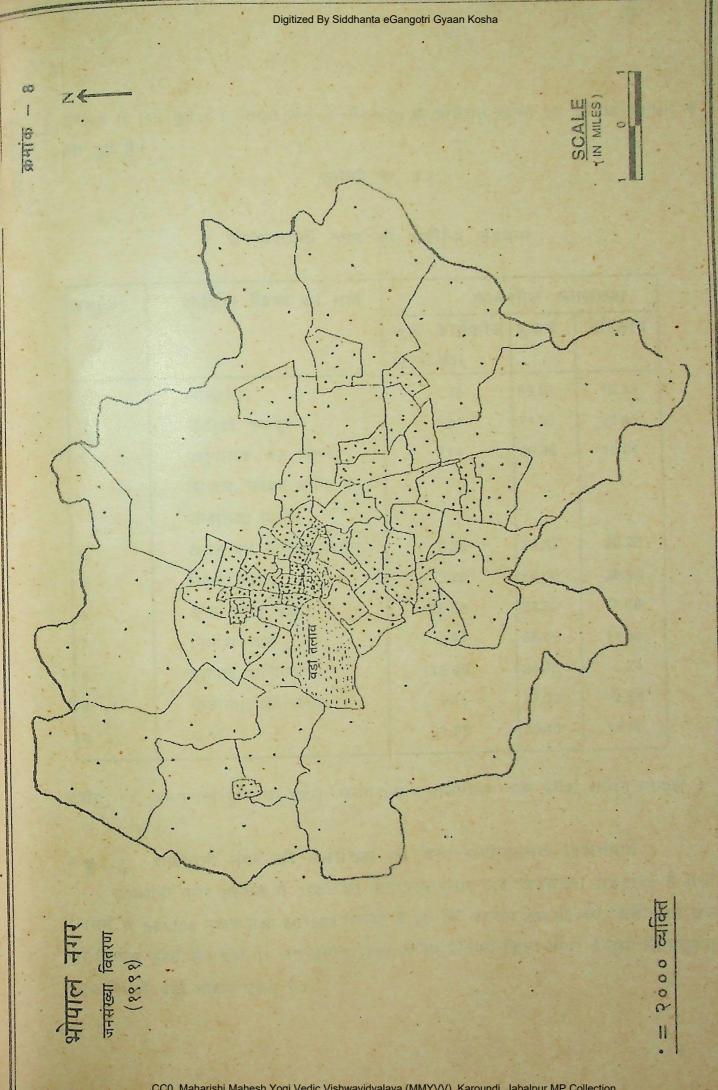
जबलपुर नगर में जहां 1981 में जनसंख्या घनत्व 3283 व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर था। वहीं 1991 में 3960 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो गया। जनसंख्या घनत्व में भारी वृद्धि का प्रमुख कारण जनसंख्या में लगातार वृद्धि तथा नगरीय क्षेत्रफल में कुछ कमी अंकित होना है। जैसे — 1981 में जबलपुर नगर का क्षेत्रफल 230.64 वर्ग कि.मी. था, जबिक 1991 में घटकर यह 224.45 वर्ग कि.मी. रह गया। जबलपुर नगर में लिंगानुपात परिवर्तन भी पर्याप्त मात्रा में देखने मिलता है, जबलपुर नगर समूह में 1961 में 1991 के मध्य 809,816,849 एवं 882 प्रति हजार महिलायें रहा है। 1991 की जनगणना के अनुसार नगर में 66.44 प्रतिशत नागरिक साक्षर हैं जिनमें से 73.15 प्रतिशत पुरूष एवं 58.94 प्रतिशत महिलायें साक्षर हैं। जबलपुर नगर की कुल जनसंख्या का लगभग 27 प्रतिशत जनसंख्या ही कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत आती है, जिसमें से सर्वाधिक जनसंख्या 62,773 (26.8 प्रतिशत) अन्य घरेलू उद्योगों अर्थात वस्तु निर्माण, लघु कुटीर उद्योगों में लगी हुई है। इसमें 87.48 प्रतिशत पुरूष एवं 12. 52 महिला कार्यकर्ता हैं। इसके अलावा लगभग 45,936 (19.08 प्रतिशत) व्यक्ति व्यापार

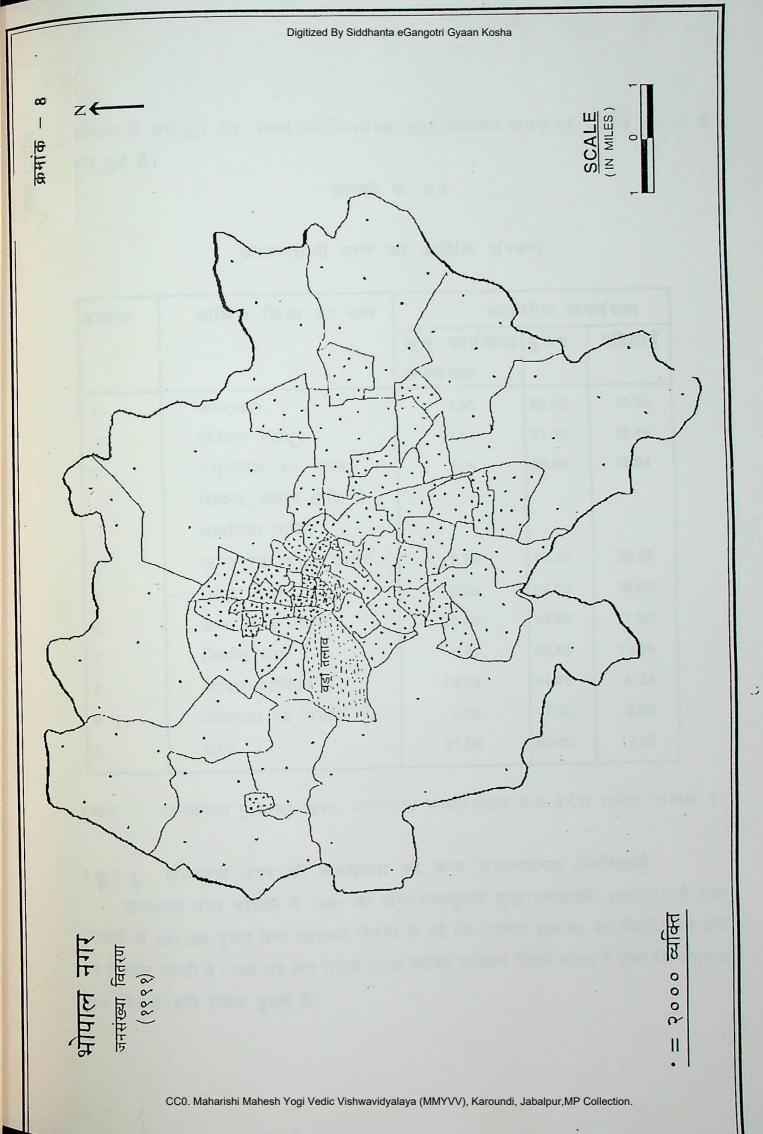


Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha











वाणिज्य में लगे हुये हैं। सबरो कम जनसंख्या 0.35 प्रतिशत खनन एवं खनिज उद्योगों में लगी हुई है।

सारणी क. 5.7

#### संस्कारधानी नगर की आर्थिक संरचना

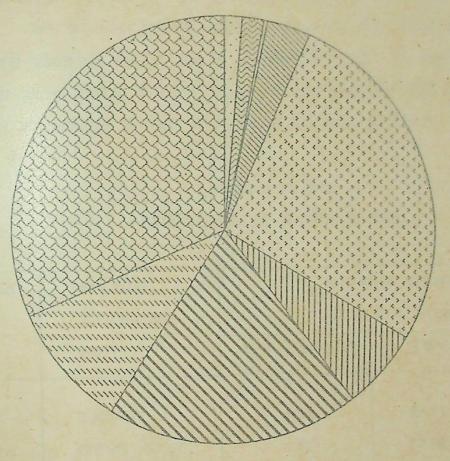
| कमांक | आर्थिक किया का नाम    | कार्यशील जनसंख्या |       |          |
|-------|-----------------------|-------------------|-------|----------|
|       |                       | कुल कार्यशील      | पुरूष | महिलायें |
|       |                       | जनसं ख्या         |       |          |
| 1     | कास्तकार              | 1.38              | 89.65 | 10.35    |
| 2.    | खेतीहर मजदूर          | 1.61              | 71.55 | 28.45    |
| 3.    | पशुपालक, वन, मत्स्य   | 2.04              | 89.96 | 10.04    |
|       | शिकार, उद्यान् आदि से |                   |       |          |
|       | सम्बन्धित व्यक्ति     |                   |       |          |
| 4.    | खनन एवं खनिज उद्योग   | 0.35              | 79.32 | 20.28    |
| 5.    | घरेलू उद्योग          | 3.26              | 64.00 | 36.00    |
| 6.    | अन्य घरेलू उद्योग     | 26.08             | 92.50 | 7.50     |
| 7.    | निर्माण कार्य         | 5.91              | 88.45 | 11.55    |
| 8.    | व्यापार वाणिज्य       | 19.08             | 94.76 | 5.24     |
| 9.    | यातायात एवं संचार     | 9.16              | 97.32 | 2.68     |
| 10.   | अन्य                  | 31.08             | 80.40 | 19.60    |

स्त्रोत : जनगणना पुस्तिका 1991, जनगणना संचालनालय मध्य प्रदेश शासन भोपाल ।

## 5 😭 2. 💪 राजधानी नगर की जनसंख्या की अन्य संरचनात्मक विशेषतायें :

राजधानी नगर भोपाल में 1991 की जनगणनानुसार कुल जनसंख्या 1062771 है तथा जिसमें से 561208 पुरूष तथा 501563 स्त्रियाँ हैं जो कि लगभग 284.90 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर निवास करती है। यहां पर जन घनत्व 3730 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलो मीटर है तथा लिंगानुपात 894 स्त्रियाँ प्रति हजार पुरूष है।

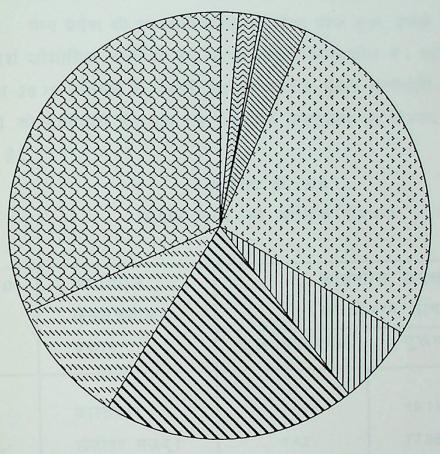
## जवलपुर नगर - आर्थिक संरचना



- 🖸 कास्तकार
- 🖾 खेतीहर मजदूर
- 🔳 पशुपालक, वन,मत्स्य, शिकार, उद्यान आदि से सम्बन्धित व्यक्ति
- 🛚 खनन एवं खनिज उद्योग
- 🖾 घरेलू उद्योग
- 🛚 अन्य घरेलू उद्योग
- Ш निर्माण कार्य
- 🛛 व्यापार वाणिज्य
- 🖾 यातायात् एवं संचार
- ध अन्य

### जबलपुर नगर - आर्थिक संरचना

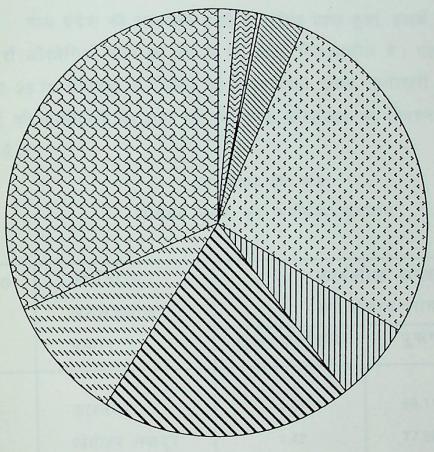
(१९९१)



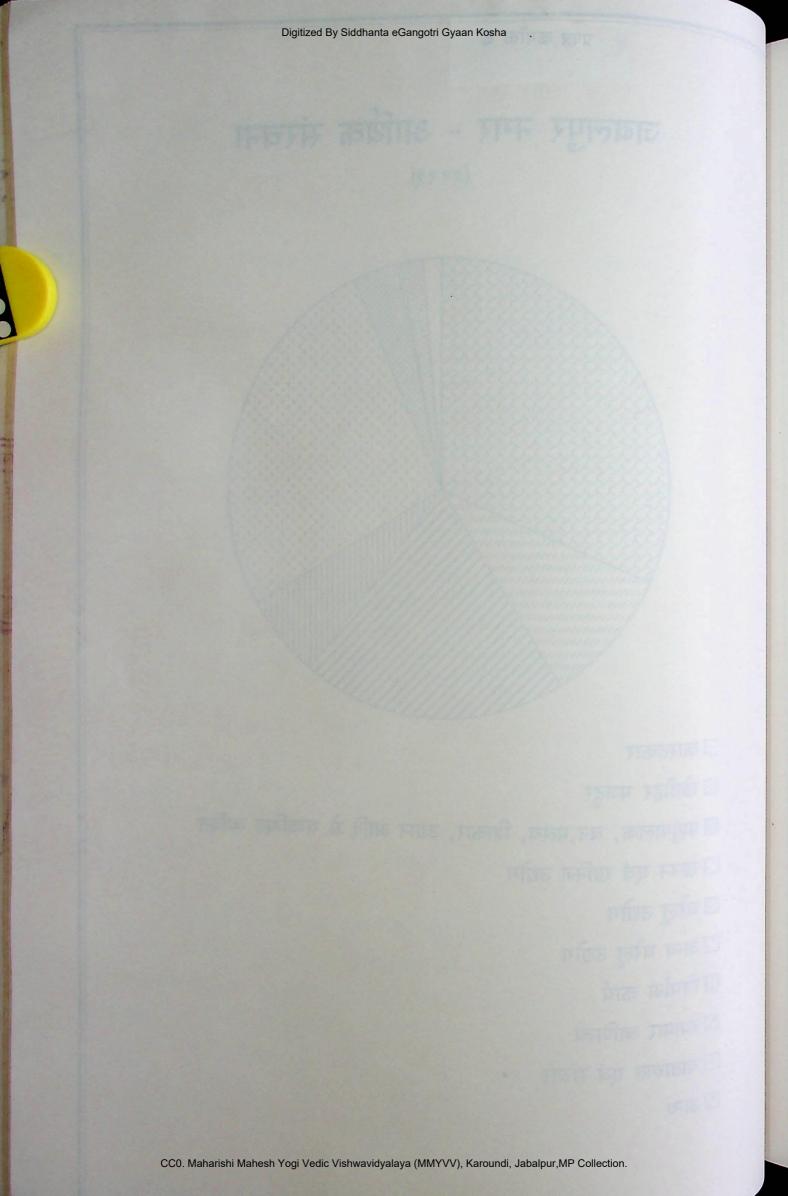
- 🖸 कास्तकार
- 🖾 खेतीहर मजदूर
- 🔳 पशुपालक, वन,मतस्य, शिकार, उद्यान आदि से सम्बन्धित व्यक्ति
- 🛚 खनन एवं खनिज उद्योग
- ा घरेलू उद्योग
- 🛚 अन्य घरेलू उद्योग
- Ш निर्माण कार्य
- 🛛 व्यापार वाणिज्य
- 🖾 यातायात एवं संचार
- 🖾 अन्य

## जबलपुर नगर - आर्थिक संरचना

(१९९१)



- 🖸 कास्तकार
- छ खेतीहर मजदूर
- 🕅 पशुपालक, वन,मत्स्य, शिकार, उद्यान आदि से सम्बन्धित व्यक्ति
- 🛚 खनन एवं खनिज उद्योग
- ⊠ घरेलू उद्योग
- 🛚 अन्य घरेलू उद्योग
- Ш निर्माण कार्य
- 🛛 व्यापार वाणिज्य
- 🖾 यातायात एवं संचार
- 🖾 अन्य



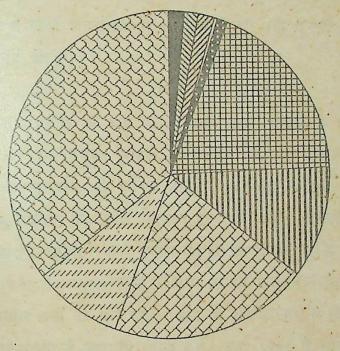
राजधानी नगर भोपाल प्रदेश का राजनैतिक केन्द्र बिन्दु तथा पर्याप्त आर्थिक विकास के परिणाम स्वरूप शिक्षा का समुचित विकास हुआ है यहां पर कुल 60 प्रतिशत साक्षर व्यक्ति निवासित हैं जिनमें से 58.50 प्रतिशत पुरूष तथा 41.50 प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। भोपाल नगर प्रमुख रूप से राजनैतिक नगर के रूप में उभरा है इसका स्वरूप उस समय और निखर गया जब इसे 1956 में मध्य प्रदेश की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त हुआ, इसके पश्चात अब यह नगर एक आदर्श औद्योगिक नगर के रूप में भी सतत् विकासशील है। यहां पर कुल कार्यशील जनसंख्या 28.75 प्रतिशत है जिसमें 86.03 प्रतिशत पुरूष भागीदारी तथा 13.96 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी है। यहां पर कार्यशील जनसंख्या का विवरण तालिका क्र. 5.8 के अनुसार है।

तालिका क्र. 5.8 भोपाल नगर की आर्थिक संरचना

| 页0  | कार्य शील           | कार्यशील जनसंख्या     |       |          |  |
|-----|---------------------|-----------------------|-------|----------|--|
|     | जनसंख्याका          | का संलग्न भाग (% में) |       |          |  |
|     | प्रकार              | कुल कार्यशील          | पुरूष | महिलायें |  |
|     |                     |                       |       |          |  |
| 1.  | कास्तकार            | 1.54                  | 89.11 | 10.88    |  |
| 2.  | खेतीहर मजदूर        | 1.42                  | 77.98 | 22.02    |  |
| 3.  | अन्य प्राथमिक       | 1.72                  | 86.68 | 13.31    |  |
|     | उद्योग              |                       |       |          |  |
| 4.  | खनन एवं खनिज        | 0.36                  | 64.13 | 35.87    |  |
|     | उद्योग              |                       |       |          |  |
| 5.  | पारिवारिक घरेलू     | 1.05                  | 58.20 | 41.80    |  |
|     | उद्योग              |                       |       |          |  |
| 6.  | अन्य घरेलू उद्योग   | 18.41                 | 93.83 | 6.17     |  |
| 7.  | गृह निर्माण कार्य   | 10.99                 | 86.20 | 13.80    |  |
| 8.  | व्यापार एवं वाणिज्य | 20.27                 | 94.28 | 5.71     |  |
| 9.  | यातायात एवं संचार   |                       | 96.66 | 3.33     |  |
| 10. | अन्य सेवायें        | 35.31                 | 75.72 | 24.27    |  |
|     |                     |                       |       |          |  |

क्रमांक - 10

# भोपाल नगर - आर्थिक संरचना

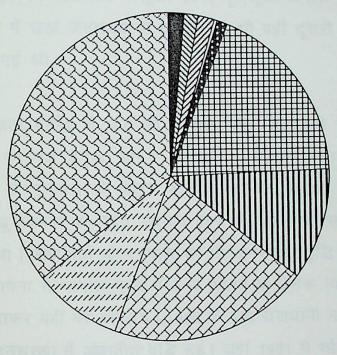


- कास्तकार
- 🛛 खेतीहर मजदूर
- 🛮 पशुपालक, वन, मत्स्य, शिकार, उद्यान आदि से सम्बन्धित व्यक्ति
- □ खनन एवं खनिज उद्योग
- 🖪 घरेलू उद्योग
- 🖽 अन्य घरेलू उद्योग
- Шनिर्माण कार्य
- 🛭 व्यापार वाणिज्य
- 🖾 यातायात एवं संचार
- 🛭 अन्य

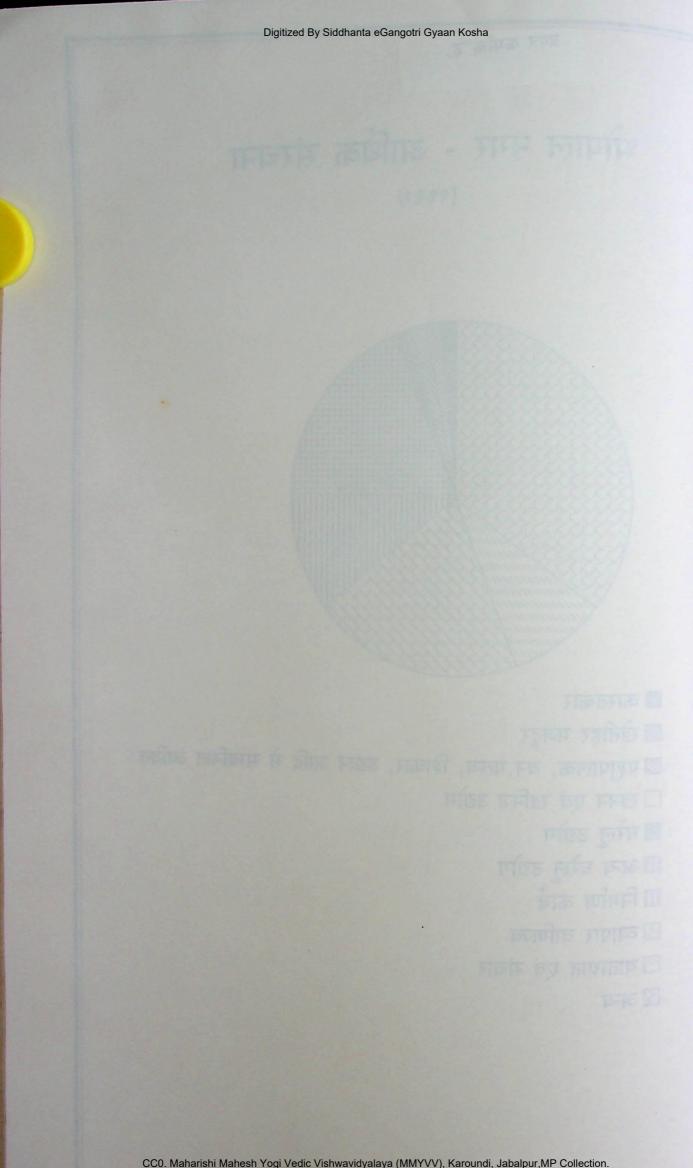
क्रमांक - 10

### भोपाल नगर - आर्थिक संरचना

(१९९१)



- 🔳 कास्तकार
- 🛚 खेतीहर मजदूर
- 🛮 पशुपालक, वन,मत्स्य, शिकार, उद्यान आदि से सम्बन्धित व्यक्ति
- □ खनन एवं खनिज उद्योग
- 🛮 घरेलू उद्योग
- ⊞ अन्य घरेलू उद्योग
- Ш निर्माण कार्य
- 🛚 व्यापार वाणिज्य
- 🖾 यातायात एवं संचार
- 🛚 अन्य



जबलपुर संस्कारधानी नगर में भोपाल नगर की अपेक्षा जनसंख्या का केन्द्रयकरण एवं उतार — चढ़ाव अधिक हुआ है क्योंकि भोपाल नगर प्रारम्भ से ही राजनैतिक केन्द्र होने के कारण जहां एक ओर यहां जनसंख्या के केन्द्रीयकरण को प्रोत्साहन मिला है वहीं दूसरी ओर 1901 से 1921 तक जनसंख्या दृष्टि की अपेक्षा जनसंख्या व्हास अंकित किया गया है जबिक संस्कारधानी नगर में 1901 में बढ़कर यह 10,8,793 हो गई थी। इसका प्रमुख कारण था कि 1901 से 1921 की कालाविध में सूखा एवं एन्यूफ्लूजा बीमारी के प्रकोप का जबलपुर की अपेक्षा भोपाल नगर में जहां जनसंख्या में कमी आयी थी वहीं दूसरी ओर जबलपुर में जनसंख्या वृद्धि अंकित की गई थी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी भोपाल नगर राजधानी बनने के कारण जहां जनसंख्या केन्द्रीकरण का एक प्रमुख कारण विरथापितों ने यहां जनसंख्या वृद्धि में अपना महत्वपूर्ण विरथापितों के पुनर्वास के कारण 400 से बढ़कर 14000 हो गई। 34 जबिक जबलपुर में राजनैतिक धुवीकरण का पूर्वतः आभाव होने के कारण जनसंख्या वृद्धि दर भोपाल की अपेक्षा कम रही तथा विस्थापितों के पुनवास का भी जनसंख्या वृद्धि पर नगण्य प्रभाव पड़ा। 1956 में भेल की स्थापना से भोपाल नगर में अन्य प्रदेशों के अनेक व्यक्ति कर्मचारियों एवं अधिकारियों के क्रप में आकर यहीं पर बस गये। 1960 के बाद राजधानी नगर में अनेक उद्योगों की स्थापना के कारण जनसंख्या में आशातीत वृद्धि हुई। जहां 1961 में भोपाल नगर की जनसंख्या 384859 थी वहीं 1991 में यह 1063662 हो गई अर्थात 6,78803 व्यक्तियों की वृद्धि हुई वहीं जबलपुर नगर की जनसंख्या 1961 में 367014 से बढ़कर 1991 में 888916 हुई अर्थात 521902 व्यक्तियों की मात्र वृद्धि हुई अर्थात भोपाल नगर में जबलपुर नगर की अपेक्षा विगत 30 वर्षों में 1,56,901 अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि हुई। अतः सार संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भोपाल नगर में अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि राजनैतिक एवं पर्याप्त औद्योगिक विकास का परिणाम है। जबिक जबलपुर नगर में इन देनों तत्वों का पर्याप्त मात्रा में आभाव है।

<sup>34.</sup> हुसैन, हा. माजिद, वही पृ. क्र. 5

#### अध्याय ६

संस्कारधानी एवं राजधानी नगर की नगरीय अकारिकी सम्बन्धी विश्लेषण

#### अध्याय 6

#### संस्कारधानी एवं राजधानी नगर की नगरीय अकारिकी सम्बन्धी विश्लेषण :

#### सामान्य परिचय :

मोहम्मद अतुल्लाह (1985) के अनुसार नगरों का अकारकीय अध्ययन प्रमुख दो उद्देश्यों — प्रथम नगरीय बनावट (Structure) तथा द्वितीय नगरीय बनावट के निर्धारक तत्वों एवं नगरीय प्रतिरूप (Pettern) के लिये अध्ययन किया जाता है। अर्थात नगरीय अकारिकों के अन्तर्गत नगरीय सीमाओं के अन्तर्गत आने वाली सभी विशेषताओं और प्रतिरूपों को जैसे — नगरीय भूमि उपयोग नगर के विभिन्न कार्य क्षेत्रों, बसाव स्थान, इमारतों की विशेषताओं, नगरीय बसाव पर मानवीय रीति रिवाज आदि का योगदान आदि का सिम्मिलत रूप से अध्ययन किया जाता है। यदि हम वर्तमान में बृहद आकार के नगरों पर दृष्टिगत करें तों प्रमुखतः दो बातें हमारे सामने आती हैं — प्रथम विभिन्न रूपों में हमें भूमि उपयोग में समानता नहीं दिखाई देती है, जैसे — कहीं दुकाने ही दुकान हैं तो कहीं रिहायसी क्षेत्र में एकता दिखाई देती है तो कहीं पर कारखानों का जमघट लगा हुआ मिलता है । इस प्रकार नगरीय भूमि उपयोग में पर्याप्त विषमता देखने मिलती है। द्वितीय — इमारतों के बहय स्वरूप एवं स्थान के अनुरूप क्रम में विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है जैसे कहीं — कहीं एक मंजिला इमारतें हैं तो कहीं पर बहुमंजिला इमारतों की सघनता है तो कहीं — कहीं झुग्गी — झोपड़ियों का जमघट अतः सार रूप में नगर की भीतरी संरचना और स्वरूप को प्रमुख रूप से नगरीय अकारिकी में सम्मिलत किया जाता है ।

नगरीय अकारिकी के अन्तर्गत नगरीय कार्यक्षेत्रों का अध्ययन अति महत्वपूर्ण होता है "क्यों कि इन्ही कार्यों के फलस्वरूप कोई भी बस्ती नगर कहलाने का गौरव प्राप्त करती है तथा इन कार्यक्षेत्रों का प्रभाव नगरीय अकारिकी को अत्यन्त प्रभावित करते हैं अतः इन्हें विभिन्न कार्यक्षेत्रों में नगरीय विकास (अवस्था) को ध्यान में रखकर निर्धारित किये जाते हैं। किन्तु इन कार्य क्षेत्रों को एक दूसरे से पूर्णतः प्रथक करना अत्यन्त कठिन कार्य है क्यों कि सामानतः एक क्षेत्र दूसरे क्षेत्र की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं तथा एका—एक कोई कार्य क्षेत्र

<sup>1.</sup> Ataullah Moh., Urban land: its use and misuse, Amar Prakhan Delhi. 1985

समाप्त नहीं हो जाता वरन् कुछ दूरी तक संक्रमण क्षेत्र (पेटी) का निर्माण करता है। जैसे आवासीय परिसरों में अनेक औद्योगिक एवं व्यापारिक संस्थान स्थापित हो जाते हैं। नगरों में भूमि उपयोग के आधार पर प्रमुख चार श्रेणियों में विभाजित किया जाता है – कृषि आवासीय व्यापारिक एवं औद्योगिक ।<sup>2</sup>

अतः सार संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि नगरीय अकारिकी के अन्तर्गत ने केवल नगर की भौतिक विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है वरन् इसके अन्तर्गत नगर की कार्यात्मक विशेषताओं जैसे भूमि उपयोग तथा इसके विकास में मानवीय किया कलापों रीति रिवाजों इत्यादि का भी अध्ययन किया जाता है क्यों कि इन्ही सभी तत्वों के सम्मिलित प्रयास से नगरीय अकारकी का निर्माण होता है।

### 6.1 संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों का मूमि उपयोग वितरण :

जबलपुर संस्कारधानी नगर अपने विकास की किशोरावस्था में है। अतः अभी यहां पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्षेत्र अलग — अलग दृष्टिगोचर होते हैं। आगामी विकास योजना प्रारूप में सर्वाधिक 3600 हेक्टयर भूमि आवास हेतु आवंटित की गई है जो कि सम्पूर्ण भूमि उपयोग का 50 प्रतिशत है जबिक इसके विपरीत वाणिज्यिक कार्य हेतु सबसे कम 408 हेक्टयर भूमि आवंटित की गई है जो कि कुल भूमि उपयोग का मात्र 5.7 प्रतिशत भाग है। आगामी विकास योजना 2005 में औसतन रूप से 6 हेक्टयर भूमि प्रति हजार व्यक्तियों का प्रावधाना है। इस विकास योजना में 7200 हेक्टयर भूमि का विकास प्रस्तावित है जबिक वर्तमान में 4500 हेक्टयर भूमि का विकास हो चुका है अर्थात अभी कुल 37.5 प्रतिशत भूमि का विकास शेष है।न्यूनतम भूमि वाणिज्यिक कार्य हेतु 408 हेक्ट. प्रस्तावित की गई है। (सारणी क. 6.1)

भोपाल राजधानी नगर अब महानगरों की श्रेणी में आता है। यह नगर प्रदेश का राजधानी नगर होने के कारण यहां का विकास बड़ी तीव्र गित से हुआ है। अतः नगर में विभिन कार्यों के विकास के कारण कुछ कार्य क्षेत्र तो स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं जैसे — अरेरा कालोनी पूर्णतः आवासीय क्षेत्र है जबिक गोविन्दपुरा पूर्णतः औद्योगिक केन्द्र है, किन्तु कुछ भागों में तीव्र विकास तथा समुचित भू — प्रबन्धन के आभाव में कार्य क्षेत्र आपस में संक्रमण

Gallion Arther B., and sinmon Eirher. The Urban pattern city Planning and Design, 1996, van nostrand company 450 west 33rd street, New Yark. P.P.

पेटी का निर्माण करते हुथे प्रतीत होते हैं। जैसे — पुराना भोपाल आदि। आगामी विकास योजना प्रारूप 2005 में कुल 17500 हेक्टयर भूमि का विकास प्रस्तावित है जबकि अभी तक कुल 7851 हेक्टयर भूमि का विकास किया जा चुका है अर्थात अभी 55.14 प्रतिशत भूमि का विकास होना शेष है। (सारिणी क. 6.2) इस योजना के तहत आवासीय परिसरों हेतु सर्वाधिक 8190 हेक्टयर भूमि आवंटित की गई है जो कुल भूमि उपयोग का लगभग 46.8 प्रतिशत भाग है इसके विपरीत सार्वजनिक उपयोग के लिये सबसे कम 488 हेक्टयर भूमि आवंटित

भाग है इसके विपरीत सार्वजिनक उपयोग के लिये सबसे कम 488 हेक्टयर भूमि आवंटित की गई है जो कुल भूमि उपयोग की मात्र 2.78 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त वाणिज्यिक, औद्योगिक, मनोरंजन आदि कार्यों के लिये भी समुचित भूमि के विकास का प्रावधान इस योजना के तहत किया गया है।

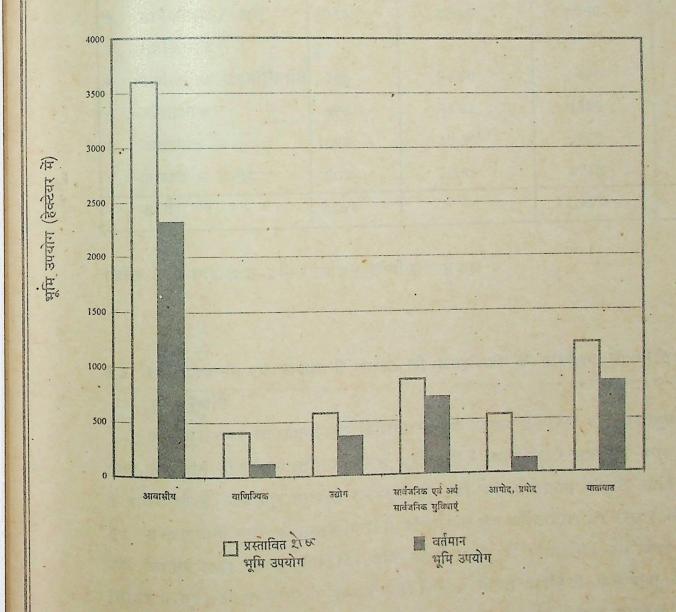
सारणी क. 6.1

संस्कारधानी : भूमि उपयोग वितरण

| <b>車</b> 0 | मूमि उपयोग श्रेणी   | वर्त मान  |         | प्रस्तावित |         |
|------------|---------------------|-----------|---------|------------|---------|
|            |                     | क्षेत्रफल | प्रतिशत | क्षेत्रफल  | प्रतिशत |
| 1.         | आवासीय              | 2328      | 64.67   | 3600       | 50.00   |
| 2.         | वाणिज्यिक           | 124       | 30.40   | 408        | 5.67    |
| 3.         | <b>औद्योगिक</b>     | 368       | 63.88   | 576        | 8.0     |
| 4.         | सार्वजनिक / अर्ध    | 714       | 81.50   | 876        | 12.1    |
|            | सार्वजनिक सुविधायें |           |         |            |         |
| 5.         | आमोद – प्रमोद       | 139       | 25.74   | 540        | 7.5     |
| 6.         | यातायात परिवहन      | 847       | 70.78   | 1200       | 16.67   |
|            |                     |           |         |            |         |
|            | योग                 | 4500      |         | 7200       |         |

स्त्रोत: नगर तथा ग्राम नियोजन कार्यालय जबलपुर

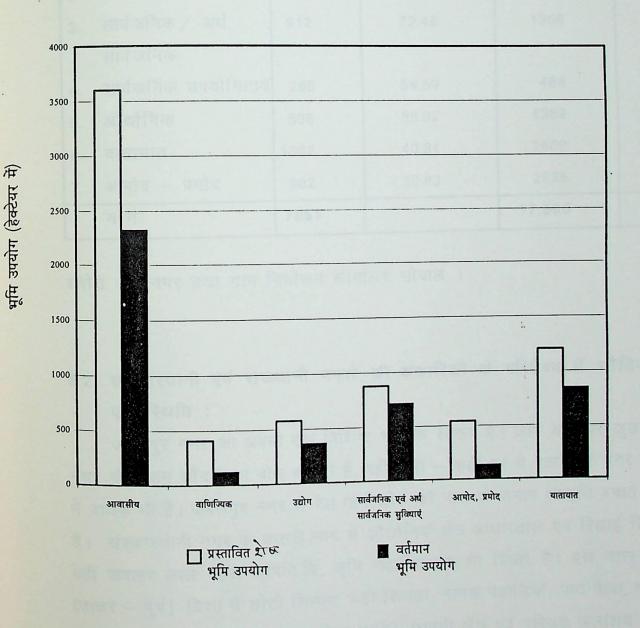
## जबलपुर नगर - भूमि उपयोग



भूमि उपयोग के प्रकार

# जबलपुर नगर - भूमि उपयोग

(१९९४)



भूमि उपयोग के प्रकार

सारणी क. 6.2 राजधानी: मूमि उपयोग वितरण

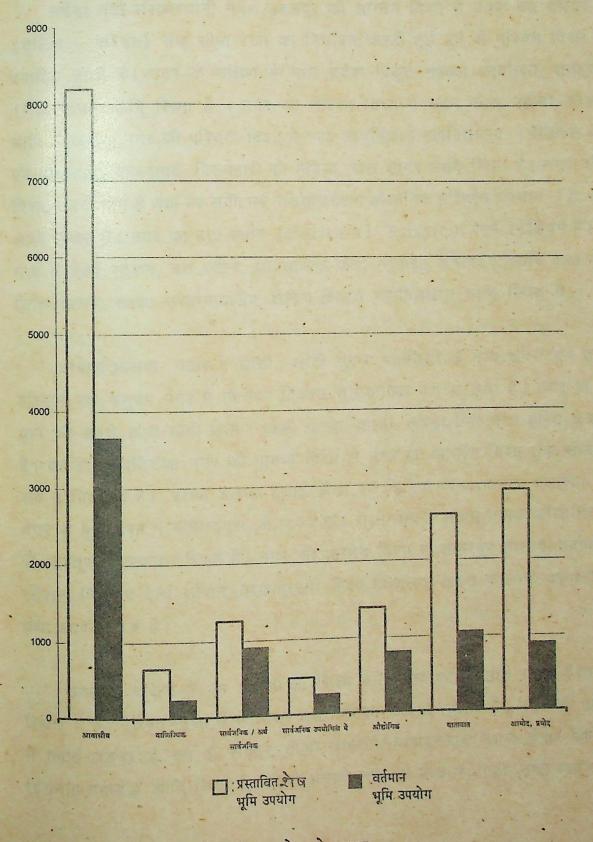
| क 0 मूमि उपयोग श्रेणी |                       | भूमि उपयोग वर्तमान |         | मूमि उपयोग प्रस्तावित |         |
|-----------------------|-----------------------|--------------------|---------|-----------------------|---------|
|                       |                       | क्षेत्रफल          | प्रतिशत | क्षेत्रफल             | प्रतिशत |
|                       |                       | (हे. में)          |         | (हे. में)             |         |
| 1.                    | आवासीय                | 3660               | 44.68   | 8190                  | 46.84   |
| 2.                    | वाणिज्यिक             | 243                | 37.38   | 650                   | 3.71    |
| 3.                    | सार्वजनिक / अर्ध      | 912                | 72.49   | 1258                  | 7.18    |
|                       | सार्वजनिक             |                    |         |                       |         |
| 4.                    | सार्वजनिक उपयोगितायें | 266                | 54.50   | 488                   | 2.78    |
| 5.                    | औद्योगिक              | 806                | 58.02   | 1389                  | 7.93    |
| 6.                    | यातायात               | 1062               | 40.84   | 2600                  | 14.84   |
| 7.                    | आमोद – प्रमोद         | 902                | 30.83   | 2925                  | 16.71   |
|                       | योग                   | 7851               |         | 17,500                |         |

स्त्रोत: नगर तथा ग्राम नियोजन कार्यालय भोपाल ।

# 6.2. संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों की अकारिकी के परिपेक्ष्य में भौतिक आकार एवं स्थिति :

जबलपुर नगर का अपना एक विशिष्ट भौतिक स्वरूप है। जहां यहां पर कुछ पहाड़ियां नगर के उत्तम सौंदर्य का बोध कराती है, वहीं कहीं – कहीं पर ये पहाड़ियां नगर के विकास में बाधक भी है। जबलपुर नगर से रेल मार्ग घोड़े की नाल के समान आकृति बनाते हुये जाता है। संस्कारधानी नगर के उत्तरी भाग में औद्योगिक क्षेत्र आधारताल एवं रिछाई स्थित है तो वहीं जवाहर लाल नेहरू कृषिवि.वि., कृषि महाविद्यालय भी स्थित है। इस नगर के ईशान जित्तर – पूर्व) दिशा में छोटी शिमला, बड़ी शिमला, नामक पहाड़ियाँ, पाट बाबा, मन्दिर, रक्षा संस्थान (जैसे – जी.सी.एफ., खमरिया आदि) छावनी क्षेत्र एवं परियट जलाशय स्थित है। इस नगर के पूर्व में छावनी क्षेत्र के अलावा रानी दुर्गावती वि.वि., शासकीय महाकौशल

# भोपाल नगर - भूमि उपयोग

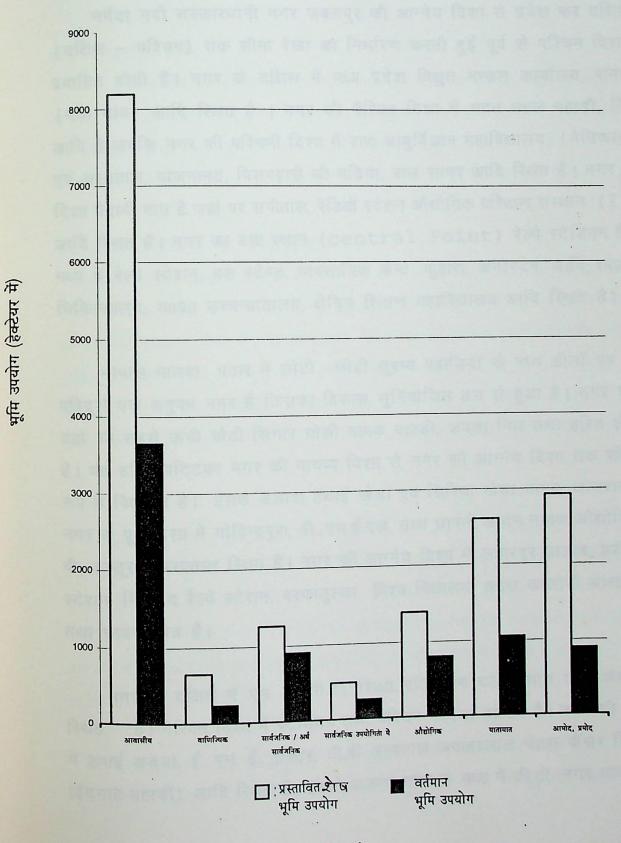


भूमि उपयोग (हेक्टेयर में)

भूमि उपयोग के प्रकार CCO. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

क्रमांक - 12

# भोपाल नगर - भूमि उपयोग



भूमि उपयोग के प्रकार CCO. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

महाविद्यालय, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, खंदारी जलाशय सीता पहाड़ी एवं अनेक छोटी – छोटी पहाड़ियों के अलावा डुमना विमानतल भी स्थित है। नगर की आग्नेय (दक्षिण – पूर्व) दिशा में छावनी क्षेत्र, गौर नदी एवं कृषि क्षेत्र विस्तारित है।

नर्मदा नदी संस्कारधानी नगर जबलपुर की आग्नेय दिशा से प्रवेश कर दक्षिण, नैरिक्त (दक्षिण — पश्चिम) तक सीमा रेखा का निर्धारण करती हुई पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है। नगर के दक्षिण में मध्य प्रदेश विद्युत मण्डल कार्यालय, रामपुर पहाड़ी (नया गांव) आदि स्थित है। नगर की नैरिक्त दिशा में मदन महल पहाड़ी, तिलवाराघट आदि है जबिक नगर की पश्चिमी दिशा में शा० आयुर्विज्ञान महाविद्यालय (मेडिकल कॉलेज) एवं अस्पताल, वाजनामठ, पिसनहारी की मिढ़िया, बाल सागर आदि स्थित है। नगर की वायत्य दिशा मैदानी भाग है जहां पर रानीताल, रेडियों स्टेशन औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.) आदि स्थित हैं। नगर का ब्रह्म स्थान (central Point) रेल्वे स्टेडियम है। नगर के मध्य में रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड, व्यवसायिक केन्द्र फुहारा, अन्धेरदेव, आदि शा० एवं निजी विकित्सालय, म०प्र० उच्चन्यायालय, क्षेत्रिय शिक्षण महाविद्यालय आदि स्थित है।

भोपाल मालवा पठार में छोटी —छोटी सुरम्य पहाड़ियों के मध्य झीलों एवं तालाबों से परिपूर्ण एक अनुपम नगर है जिसका विकास सुनियोजित ढंग से हुआ है। नगर के उत्तर में यहां की सबसे ऊंची चोटी सिंगार चोली नामक पहाड़ी, कपड़ा मिल तथा हरित क्षेत्र विद्यमान है। यह हरित पट्टिका नगर की वायव्य दिशा से नगर की आग्नेय दिशा तक सीमा रेखा के रूप मे विद्यमान है। इसके अलावा हथाई खेड़ा एवं झिरिया खेड़ा नामक जलाशय स्थित है। नगर के पूर्व दिशा में गोविन्दपुरा, बी. एच.ई.एल. तथा छावनी आदम नामक औद्योगिक क्षेत्र एवं वी. कस्तूरबा अस्पताल स्थित है। नगर की आग्नेय दिशा में लहारपुर तालाब, हबीबगंज, रेल्वे स्टेशन, मिसरोद रेल्वे स्टेशन, बरकातुल्ला विश्व विद्यालय, अरेरा कालोनी आवासीय परिसर तथा छावनी क्षेत्र है।

नगर के दक्षिण में एम. ए. सी.टी. शिक्षा प्रतिष्ठाान किलयासोत तथा केरवा जलाशय रिथत है। नैरिक्त दिशा में स्टेडियम तथा पश्चिम में बड़ा तालाब है। नगर की वायव्य दिशा में हवाई अड्डा, ई. एम. ई. सेक्टर, टी.बी अस्पताल जवाहरलाल नेहरू केंसर चिकित्सालय (ईदगाह पहाड़ी) आदि स्थित है। इसके अलावा नगर के मध्य में टी.टी. नगर व्यवसायिक क्षेत्र,

the state of the same of the s

WE REPORTE THE CASE A DAM OF THE DESIGN THE IS DISCUSSED THE COURT HERE

छोटा तालाब, विधान सभा भवन, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, ताजुल एवं मोती मस्जिद, गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, हमीदिया अस्पताल, सुल्तानिया महिला चिकित्सालय, इन्दिरा गांधी गैस राहत महिला एवं बाल चिकित्सालय, पुराना सचिवालय, पॉलिटेक्निक कॉलेज आदि स्थित हैं।

# 6.3. रिहायसी क्षेत्र :

आवासीय क्षेत्र अथवा आवासीय पेट्री से आशय नगर के उस भू भाग से है जहां पर भूमि उपयोग का अधिकांश भाग निवास हेतु प्रयुक्त किया जाता है। सामन्यतः आय वर्ग के आधार पर निवास क्षेत्रों को प्रमुख तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है। जिसका वितरण संस्कारधानी नगर जबलपुर तथा राजधानी नगर भोपाल में निम्नानुसार है —

# 6.3.1 उच्च रिहायसी या आवासीय क्षेत्र :

उच्च वर्गीय आवासीय क्षेत्र के अन्तर्गत नगर के उस भाग को सम्मिलित किया गया है जहां पर अधिकांशतः उद्योगपित, मन्त्री, प्रशासिनक अधिकारी एवं उच्च आय वर्ग के व्यक्तियों के आवास (गृह) होते हैं। संस्कारधानी नगर जबलपुर में प्रमुखतः सिविल लाइन्स राइट टाऊन, नेपियर टाऊन, रामपुर, सदर (नर्मदा रोड) पचपेढ़ी आदि में उच्च वर्गीय आवासों की अधिकता है। ये क्षेत्र सुनिश्चित योजनानुसार बसाये गये हैं। वर्तमान में रामपुर से होते हुये बरगी हिल्स एवं ग्वारीघाट रोड में उच्च वर्गीय आवासीय क्षेत्र का विस्तार तीव्र गित से हो रहा है।

राजधानी नगर भोपाल में प्रमुख रूप से अरेरा कॉलोनी, शिवाजी नगर, टी.टी. नगर, श्यामला हिल्स, सुरेन्द्र नगर (वि.वि. के सामने) स्वामी दयानन्द नगर, सिविल लाइन्स, चार इमली आदि क्षेत्र में उच्च वर्गीय आवास क्षेत्र विद्यमान है। इन क्षेत्रों को सुनिश्चित योजनानुसार विकसित किया गया है अतः इस क्षेत्र का वातावरण स्वास्थ्य वर्धक प्रदूषण रहित है तथा वर्तमान में इस क्षेत्र को और अधिक नियोजित रूप से बसाने का प्रस्ताव भोपाल विकास योजना वर्तमान में इस क्षेत्र को और अधिक नियोजित रूप से बसाने का प्रस्ताव भोपाल विकास योजना वर्तमान के अन्तर्गत किया गया है।

संस्कारधानी नगर जबलपुर में गोल बाजार, राइट टाऊन, नेपियर टाऊन आदि क्षेत्रों में जनसंख्या के अधिक दबाव के कारण आवासीय भूमि की कमी महसूस की जाने लगी है। अतः इस क्षेत्र का विकास पुर्नयोजना के आधार पर किया जाना चाहिये। राइट टाऊन गोलबाजार आदि में स्थित बड़े चिकित्सालयों को स्थानान्तरित कर भूमि को रियायसी भाग के रूप में उपयोग में लाना चाहिये। इसी प्रकार राजधानी नगर भोपाल में टी.टी. नगर में दिनों दिन व्यवसायिक प्रतिष्ठानों की अधिकता होती जा रही है जिन पर रोक लगाकर आवासीय परिसर हेतु प्रोत्साहन देना चाहिये। अरेरा कालोनी शिवाजी नगर में पर्याप्त व्यापारिक संस्थान न होने के कारण रहवासियों को पर्याप्त असुविधायें होती है अतः यहां दैनिक उपभोग की वस्तुओं के लिये पर्याप्त दुकानों को प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिये।

#### 6.3.2. मध्यम वर्गीय रिहायसी क्षेत्र :

जबलपुर में अधिकांशत मध्यम वर्गीय परिवार निवास करते हैं। इसमें प्रमुखतया आध् गरताल, गोहलपुर, गोकलपुर, रांझी, खमरिया, व्यवहारबाग, घमापुर, हनुमानताल, सराफा बाजार, चेरीताल, मिलोनीगंज, कोतवाली, दमोह नाका, गोरखपुर, त्रिपुरी, मदन महल, क्षेत्र में मध्यम आय वर्ग के लोग निवास करते हैं (कर्मचारी, शिक्षाकर्मी, या छोटे व्यवसायी आदि) ये क्षेत्र किसी योजनानुसार नहीं बसाये गये हैं वरन् जिसे जहां स्थान मिला उसने अपनी आवश्यकतानुसार आवास बना लिया। इस क्षेत्र में अधिकांश निवास स्थान दो से तीन मंजिला तक हैं जिसमें अनेक आवासों के प्रथम तल (Ground Flour) में अपनी जीवन यापन से सम्बन्धित रोजगार आदि चलाते हैं।

राजधानी नगर भोपाल में मध्यम आय वर्गीय परिवार प्रमुखतः, बी.एच.ई.एल. क्षेत्र, बड़े एवं छोटे तालाब के तटवर्ती भाग, सदर मंजिल, एब्राहिमपुरा, बैरागढ़, हबीबगंज, गोविन्दपुरा, शाहपुरा, मण्डीद्वीप, जहांगीराबाद, आदि क्षेत्रों में निवास कर रहे है। इस क्षेत्र का तीव्रगामी विकास नगर राजधानी बनने के पश्चात प्रारम्भ हुआ किन्तु प्रारम्भ में तो इन क्षेत्रों की आवासीय व्यवस्था पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया किन्तु बाद में नगर को सुनियोजित बसाने की दृष्टि से इन क्षेत्रों में भी आवासीय व्यवस्था पर पर्याप्त ध्यान दिया जाने लगा है।

जबलपुर और भोपाल नगर में मध्यम आय वर्गीय आवासीय क्षेत्र का विस्तार उर्ध्वाधर रूप में अधिक हुआ है अर्थात इस क्षेत्र में प्राय दो से तीन मंजिला भवन देखने मिलते हैं। दिन प्रति दिन नगरों में बढ़ती जनसंख्या दबाव के परिणाम स्वरूप नगरीय वाह्य क्षेत्र की ओर आवासीय परिसरों में लगातार वृद्धि हो रही है।

#### 6.3.4 निम्न वर्गीय आवासीय क्षेत्र :

इस क्षेत्र के अन्तर्गत नगर के उस भाग को लिया गया है जो कि निम्न आय वर्गीय लोगों द्वारा निवासित हैं। इस क्षेत्र में अधिकांशतः मजदूर एवं अन्य निम्न आय वर्गीय व्यक्ति जैसे साइकिल रिक्सा चालक, आटो चालक, दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी अथवा दुकानों, होटलों में कार्य करने वाले व्यक्ति निवास करते हैं।

संस्कारधानी नगर में प्रमुख रूप से गुरन्दी, बेलबाग, मदार टेकरी, खटीक मोहल्ला, नया मुहल्ला, लालमाटी, गोहलपुर, सूजी मुहल्ला, हाऊबाग, रामपुर मढाताल आदि में निम्न आय वर्गीय परिवारों के आवास स्थित हैं राजधानी नगर भोपाल में निम्न अन्य वर्गीय क्षेत्र बी.एच. ई.एल., रोशनपुरा, गोविन्दपुरा, पुराना भोपाल, बैरागढ़ मार्ग आदि पर विस्तृत है। इसके अलावा यह क्षेत्र दोनों नगरों में रेल्वे लाइन एवं राज्य मार्ग, एवं राष्ट्रीय राजमार्ग सड़क के किनारे — किनारे स्थापित हो चुका है। इस क्षेत्र में निवास करने वाले प्रमुख रूप से बाहर से आये व्यक्ति होते हैं जो कि नगर में किराये से मकान लेने में असमर्थ होते हैं अतः उन्हें जहां भी स्थान मिलता है वहीं अपना अस्थाई आवास, झोपड़ी अथवा कच्चे मकान के रूप में स्थापित कर लेते हैं। यह क्षेत्र योजनानुसार विकसित न होने के कारण स्थित दिनों दिन ओर अधिक दयनीय होती जा रही है।

### 6.4. व्यापारिक क्षेत्र (Commercial Zone) :

संस्कारधानी नगर म0प्र0 का एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है। यहां पर प्रमुख रूप में खद्यान्न, लकड़ी का सामान, चीनी, मिट्टी का सामान, बीड़ी, अगरबत्ती आदि बाहर भेजा जाता है। इस नगर का व्यापारिक केन्द्र फुहारा क्षेत्र है जहाँ पर सम्बन्धित, वस्तु के नाम से बाजार का नाम जाना जाता है, जैसे सब्जी मण्डी फलमण्डी, खोवा मण्डी, सराफा बाजार आदि । बल्देव बाग, निवाड़गंज, मिलोनीगंज में खाद्यान्न, कृषि उपकरण एवं रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाइयों का व्यवसाय केन्द्रित है। अन्धेरदेव, भानतलैया में वस्त्र एवं इलेक्ट्रानिक्स फुटवेयर व्यापार का केन्द्रीय करण हुआ था। जहां गंजीपुरा में महिला प्रसाधन सामग्री मशीनरी, स्टेशनरी, फुटवेयर आदि के व्यवसाय के केन्द्रीयकरण हुआ है वहीं गुरन्दी में प्लास्टिक का समान, दैनिक उपभोग की वस्तुओं का व्यवसाय स्थापित है। मढ़ाताल भी एक नवीन व्यवसायिक केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है जहां इलेक्ट्रानिक्स फर्नीचर, रेडिमेड वस्त्रों की दुकानों का केन्द्रीय करण हो रहा है। इसके अलावा, ओमती, केन्ट (सदर)

गोरखपुर, रामपुर, गोकलपुर, रांझी, खमरिया, इन्द्रा मार्केट, मदन महल, आधारताल में भी सब्जी, वस्त्र हार्डवेयर, किराना, स्टेशनरी आदि की दुकानों का केन्द्रीयकरण हो रहा है।

राजधानी नगर भोपाल प्रदेश की राजधानी होने के साथ — साथ एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र भी है । यहां पर प्रमुख रूप में कृषि उपज, वस्त्र आदि का बड़ी मात्रा में व्यापार किया जाता है। कृषि उपज का व्यापार प्रमुख रूप से मंगलवारा, टी.टी. नगर शाहजहांनाबाद, जहांगीराबाद, में केन्द्रित है। कृषि उपज के अलावा शहर में अन्य दैनिक उपभोग के अनेक व्यापारिक केन्द्र हैं। टी.टी. नगर में रेडीमेड वस्त्र, इलेक्ट्रानिक्स सब्जी, फल एवं स्टेशनरी की दुकानों का केन्द्रीयकरण हुआ है। लोहा बाजार में हार्डवेयर की दुकानों का प्रमुख रूप से केन्द्रीयकरण हुआ है। इसके अतिरिक्त इतवारा, बुधवारा, इब्राहिम पुरा, शाहपुरा आदि अन्य छोटे प्रमुख व्यपारिक केन्द्र हैं जो कि विकासशील हैं जहां दैनिक उपभोग की वस्तुओं का थोक एवं फुटकर व्यापार होता है।

#### 6.5. औद्योगिक क्षेत्र :

जबलपुर संस्कारधानी नगर अपने आप में औद्योगिक विकास की असीम सम्भावनायें समेटे हुये है, किन्तु यहां पर्याप्त औद्योगिक विकास योजनाओं एवं प्रबन्धन के आभाव में सम्भावनायें मात्र सम्भावनायें बनकर ही रह गई हैं क्योंकि यहां पर सामरिक औद्योगिक विकास हेतु जहां एक ओर प्रकृति प्रदत्त स्वास्थ्य वर्धक जलवायु, असीम वन एवं खनिज संपदा है तो वहीं पर्याप्त मात्रा में सस्ता श्रम सुलभ है। फिर भी संस्कारधानी नगर ने अनेक कित्नाइयों के बावजूद स्वतन्त्रता प्राप्ति के 50 वर्षों में पर्याप्त औद्योगिक विकास कर औद्योगिक सम्भावनाओं के प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत किया है। जिला रोजगार केन्द्र जबलपुर जिले में कुल 10973 उद्योग पंजीकृत हैं जिनमें से जबलपुर नगर में मात्र 175 लघु औद्योगिक इकाइयाँ संचालित हैं जिनमें से 61 इकाईयाँ 500000 (पांच लाख) से अधिक पूंजी निवेश की है।

संस्कारधानी नगर जबलपुर का सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र आधारताल, रिछाई क्षेत्र है। यह औद्योगिक पेटी नगर के उत्तरी भाग में स्थित है। यहां पर मशीनों के कलपुर्जे, फर्नीचर, लोहे की आलमारी, कूलर, सीमेन्ट पाइप, आटा चक्की, साबुन, मशीनों के कलपुर्जे आदि के कारखाने स्थित हैं। संस्कारधानी क्षेत्र का द्वितीय प्रमुख ओद्योगिक क्षेत्र नगर के उत्तर पूर्वी (ईशान) दिशा में स्थित है । इस क्षेत्र का महत्व न केवल जबलपुर नगर के लिये है वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिये है, क्यों कि इस औद्योगिक क्षेत्र में देश के प्रमुख सुरक्षा संस्थानों में से कुछ संस्थान स्थित हैं, इसीलिये जबलपुर नगर देश के अतिसंवेदनशील और महत्वपूर्ण नगरों में गिना जाता है। इस औद्योगिक क्षेत्र में तोप गाड़ी कारखाना (G.C.F.) आयुध निमाणी खमरिया (O.F.K.), केन्द्रीय शस्त्रागार, (C.O.D.), ग्रे आयरन फाउन्ड्री तथा व्हीकल फैक्ट्री स्थित है। इस औद्योगिक क्षेत्र का प्रबन्ध सेना एवं रक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। यह क्षेत्र लगभग 24 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है।

इसके अलावा नगर का दक्षिणी भाग लघु एवं कुटीर उद्योग केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है। यहीं पर परफेक्ट पाटरी कम्पनी भी है जो कि चीनी मिट्टी के पाइप, खपड़े, ईंटों इत्यादि का उत्पादन करती है। इसके अतिरिक्त इस नगर में लकड़ी उद्योग भी पर्याप्त मात्रा में विकसित हुआ यह प्रमुख रूप से गढ़ा, पुरवा, कछपुरा, मदन महल, में विस्तृत है।

राजधानी नगर भोपाल में 1956 में मध्य प्रदेश के पुर्नगठन के पश्चात राजधानी बनने के पश्चात औद्योगिक विकास में गित आई और वर्तमान समय में यह नगर भारत के महानगरों की श्रेणी में आ गया है तथा यहां पर पर्याप्त मात्रा में औद्योगिक विकास हुआ है। इसका सबसे प्रमुख कारण राजनीति एवं प्रशासनिक सेवाओं का केन्द्र होने के कारण उपयुक्त औद्योगिक विकास योजनायें तथा उत्कृष्ट प्रबन्धन की सुविधायें प्राप्त होना है। इसके अतिरिक्त प्रमुख रेल एवं सड़क मार्गों से जुड़ा होना भी है। यहां प्रमुख रूप से मशीनरी, कपड़ा, साबुन, खाद्य सामग्री, उद्योग स्थापित है। जिला उद्योग कार्यालय में 1998 — 99 में नगर में कुल 10650 उद्योग पंजीकृत है जिनमें 100000 से 2500000 रूपये तक का पूंजी निवेश हुआ है तथा 2500000 से 30000000 रूपये की लागत वाले 15 उद्योग संचालित हैं।

नगर का सबसे प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र बी.एच.ई.एल. (गोविन्दपुरा) है यहां पर भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड का कारखाना स्थित है। इसमें बिजली का सामान जैसे ट्रांसफार्मर आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा यहां पर अन्य दूसरे कारखाने जैसे मैदा मिल, पुट्ठा मिल आदि भी स्थित है। बी.एच.ई.एल. औद्योगिक क्षेत्र के अलावा काली परेड तथा हबीब गंज औद्योगिक क्षेत्र हैं जहां पर रासायनिक, खाद्य, मशीनरी, कपड़ा मिल इत्यादि के कारखानों का केन्द्रीयकरण हुआ है। इसके अतिरिक्त बरखेड़ा में लकड़ी उद्योग का केन्द्रीयकरण हुआ है।

संस्कारधानी नगर में जहां औद्योगिक विकास की अनेक सम्भावनायें होते हुये भी पर्याप्त औद्योगिक विकास के आभाव में यहां उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन का सदुपयोग नहीं हो पा रहा है वहीं राजधानी नगर भोपाल में अत्याधिक औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण प्रदूषण की एवं उचित आवास समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। क्योंकि पहले जो कारखाने अथवा औद्योगिक संस्थानों को निर्मित किया गया था मात्र तत्कालीन नगरीय विकास दृष्टि से ही स्थान निर्धारित कर दिया गया था अर्थात दूरदर्शिता का आभाव रहा है इस कारण पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई है। जैसे गोविन्दपुरा अब नगर के लगभग मध्य में आने लगा है। (क्षेत्रफल की दृष्टि से)। इसी प्रकार जिस गति से औद्योगीकरण मे वृद्धि हुई है उस गति से उचित आवासीय सुविधाओं का निर्माण नहीं कराया गया है। जिससे गन्दी बस्ती के प्रसार को प्रोत्साहन मिला है। क्योंकि कारखानों में काम करने वाला मजदूर वर्ग आस — पास के गांवों या कस्बो से आता है, जो कि आवास का ऊँचा किराया देने में असमर्थ होता है, इसीलिये कारखानों के आस पास ही अपना झोपड़ीनुमा आवास निर्मित कर लेता है। अतः संस्कारधानी नगर में उचित औद्योगिक नीति के माध्यम से औद्योगिक विकास की अति आवश्यकता है तथा राजधानी नगर में मावी उद्योगों के योजनानुसार रस्थापना की आवश्यकता है।

#### 6.6. अन्य क्षेत्र :

#### 6.6.1 शिक्षा क्षेत्र :

यदि मनुष्य का चिंतन आचार, विचार तथा सामाजिक मूल्य नगरीय है तो वे ग्रामों में रहते हुये नगरीकृत हैं। अतः मनुष्य के आचार, विचार, व्यवहार का मुख्य आधार शिक्षा है। यदि व्यक्ति को उचित समय एवं स्थान पर उचित शिक्षा एवं संस्कार दिये जाते हैं तो वह एक आदर्श नागरिक का जीवन व्यतीत करता है, इसीलिये पी.एन. खरे ने ठीक ही कहा है — आदर्श नगर से तात्पर्य भौतिक पदार्थ जैसे — ईट, पत्थर, लोहा, चद्दर आदि से नहीं है, बल्कि उस नगर के निवासियों के व्यवहार एवं प्रकृति तथा सामाजिक मूल्यों पर बहुत कुछ निर्भर है। 3

<sup>3.</sup> खरे, पी.एन., नगरीय समाजशास्त्र, पृ. क्र. 102

अतः एक आदर्श नगर में शिक्षण संस्थान ऐसे स्थान पर स्थापित होना चाहिये जहां पर न्यूनतम अधिकतम नगरवासी लाभान्वित हो सकें। अतः शैक्षणिक संस्थानों को केवल किसी निश्चित क्षेत्र में स्थापित नहीं करना चाहिये। वरन् नगर वासियों की सुविधा का भी ध्यान रखना चाहिये।

जबलपुर नगर प्रारम्भ से ही शिक्षा का केन्द्र रहा है इसीलिये विनोबा भावे जी ने इसे संस्कारों की राजधानी अर्थात 'संस्कारधानी' नाम दिया है। यहां पर वर्तमान समय में कुल तीन विश्वविद्यालय, 60 महाविद्यालय, 96 उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, 48 माध्यमिक तथा 170 प्राथमिक शालायें स्थित हैं। इसके अलावा अनेक निजी एवं शा0 तकनीकि संस्थान संचालित हैं।

इस नगर के उत्तर में जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, यांन्त्रिकी महाविद्यालय एवं अनेक उच्चतर माध्यमिक तथा प्राथमिक विद्यालय स्थित है। यहां से 60 कि.मी. दूर करों दी ग्राम मे महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय बनना प्रस्तावित है। इस नगर के पूर्वी भाग में रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय, शा0 विज्ञान महाविद्यालय, शा0 महाकौशल कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नवयुग महाविद्यालय, गोविन्दराम सेकसरिया, महाविद्यालय, कमला औयुर्वेदिक महाविद्यालय, शा0 पशु चिकित्सा महाविद्यालय एवं सेन्ट एलायसिस महाविद्यालय, उत्तर पूर्व में खमरिया कला महाविद्यालय के अलावा इस क्षेत्र में भी अनेक प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चत्तर विद्यालय स्थित है।

नगर के मध्यवर्ती भाग में प्रान्तीय शिक्षण महाविद्यालय, पालिटेक्निक, शा0 मनोविज्ञान, हितकारणी महिला, हितकारणी विधि, भातखण्डे, केसरवानी, डी.एन. जैन, मनकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य, गृह विज्ञान महर्षि महिला एवं गुरू गोविन्द सिंह खालसा महाविद्यालय तथा महर्षि महेश योगी वैदिक विश्व विद्यालय स्थित है। इसी क्षेत्र में संयुक्त संचालक एवं उपसंचालक (शिक्षा विभाग) कार्यालय स्थित है इसके अलावा अनेक प्राथमिक, माध्यमिक हाई एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। नगर के दक्षिणी भाग में हवाबाग महिला महा

<sup>4.</sup> Ataullah, Moh., ibid P.P. 183

<sup>5.</sup> शिक्षा दर्पण, मंचद्वीप, जबलपुर, 1996 पृ. क्र. 22

विद्यालय पश्चिम में अयुर्विज्ञान महाविद्यालय (मेडिकल कॉलेजो, महर्षि अरविन्द महाविद्यालय, उत्तर — पश्चिम में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.) के अलावा अनेक विद्यालय एवं तकनीकि शिक्षण संस्थान स्थित हैं।

तालिका क0 6.3

## संस्कारधानी नगर शैक्षणिक स्थिति

| <b>화</b> 0 | संस्था का स्तर       | सं ख्या |
|------------|----------------------|---------|
| 1.         | शा० प्राथमिक शालायें | 170     |
| 2.         | शा० मा० शालायें      | 48      |
| 3.         | अशासकीय हाई स्कूल    | 36      |
| 4.         | उ० मा० विद्यालय      | 96*     |
| 5.         | महाविद्यालय          | 60*     |
| 6.         | विश्व विद्यालय       | 03*     |

\* अशासकीय एवं शासकीय सम्मिलत शिक्षण संस्थाओं की संख्या स्त्रोत : विकास खण्ड कार्यालय, फूटाताल, जबलपुर श्वं राजी दुर्जीवित विद्या विद्यालयः अन्नमपुर १

राजधानी नगर भोपाल प्रारम्भ से ही राजनीति का केन्द्र होने के कारण शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ रही है, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा मध्य प्रदेश के पुर्नगठन के पश्चात यहां शिक्षा संस्थानों में अशातीत वृद्धि हुई है। यहां पर 62 महाविद्यालय, 26 शा0 उच्चत्तर माध्यमिक, 8 शा0 हाई स्कूल, के अतिरिक्त अनेक निजी विद्यालय एवं तकनीकि शिक्षण संस्थान संचालित हैं।

भोपाल नगर के दक्षिण पूर्व में बरकातुल्ला विश्व विद्यालय स्थित है। अधिकांश शैक्षणिक संस्थाएं नगर के पूर्व दक्षिण — पूर्व दक्षिण एवं मध्य भाग में स्थित है। बी.एस.एस.एस. महा. कस्तूरबा कन्या महा० शासकीय महाविद्यालय, फोनीफाई महाविद्यालय, जोहरी प्रोफेशलल कॉलेज, यूनानी चिकित्सा महा0, विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ओरिय ऑफ टेक्नालाजी नगर के पूर्व में आदि स्थित है जबिक दक्षिण स्वामी विवेका राजीव गांधी महाविद्यालय, एम.ए. सी.टी. महाविद्यालय, चित्रांश ए.डी. कॉलेज, मौलाने नाजाद, इंस्टीट्यूट महाविद्यालय, श्रीराम महाविद्यालय, आर.उ.बी. बालंगा इंस्टीट्यूट ऑफ रिशयन इंस्टीट्यूट, इंग्नू आदि स्थित हैं।

तालिका क.6.4

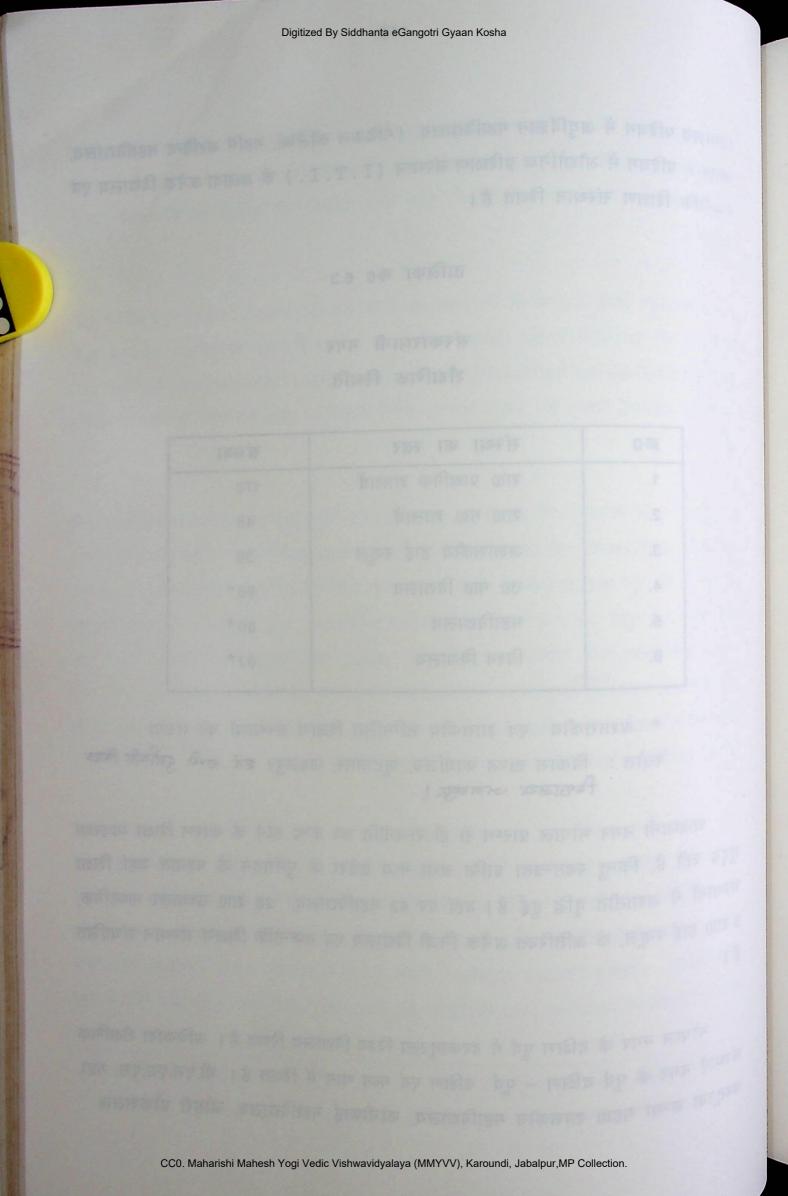
## राजधानी नगर शैक्षणिक स्थिति

| 页. | संस्था का प्रकार        | संख्या |
|----|-------------------------|--------|
| 1. | शा० प्राथमिक शालायें    | 100    |
| 2. | शा० माध्यमिक शालायें    | 67     |
| 3. | शा0 हाई स्कूल           | 08     |
| 4. | शा० हायर रोकन्ड्री रकूल | 26     |
| 5. | महा विद्यालय            | 62     |
| 6. | विश्व विद्यालय          | 01     |

स्त्रोत: उप संचालक कार्यालय, शिक्षा, जिला भोपाल एवं बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल।

नगर के दक्षिण पूर्व में यूनिक महाविद्यालय स्थित है इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र मं अनेक उच्चत्तर माध्यमिक, हाई स्कूल, माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय तथा अनेक तकनीिक प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान स्थित है।

नगर के मध्य में एम.बी.एम. कॉलेज, महारानी लक्ष्मी बाई महिला महाविद्यालय, शास. होन्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, हनीमन होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, एक्सटाल महाविद्यालय, रेणु महाविद्यालय, जय हिन्द डिफेन्स महाविद्यालय, एल.बी.एस. कॉलेज



कॉलेज, यूनानी चिकित्सा महा0, विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ओरियन्टल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी नगर के पूर्व में आदि स्थित है जबिक दक्षिण स्वामी विवेकानन्द कॉलेज, राजीव गांधी महाविद्यालय, एम.ए. सी.टी. महाविद्यालय, चित्रांश ए.डी. कॉलेज, मौलाना आजाद, इंस्टीट्यूट महाविद्यालय, श्रीराम महाविद्यालय, आर.उ.बी. बालंगा इंस्टीट्यूट ऑफ रिशयन इंस्टीट्यूट, इंग्नू आदि स्थित हैं।

तालिका क.6.4

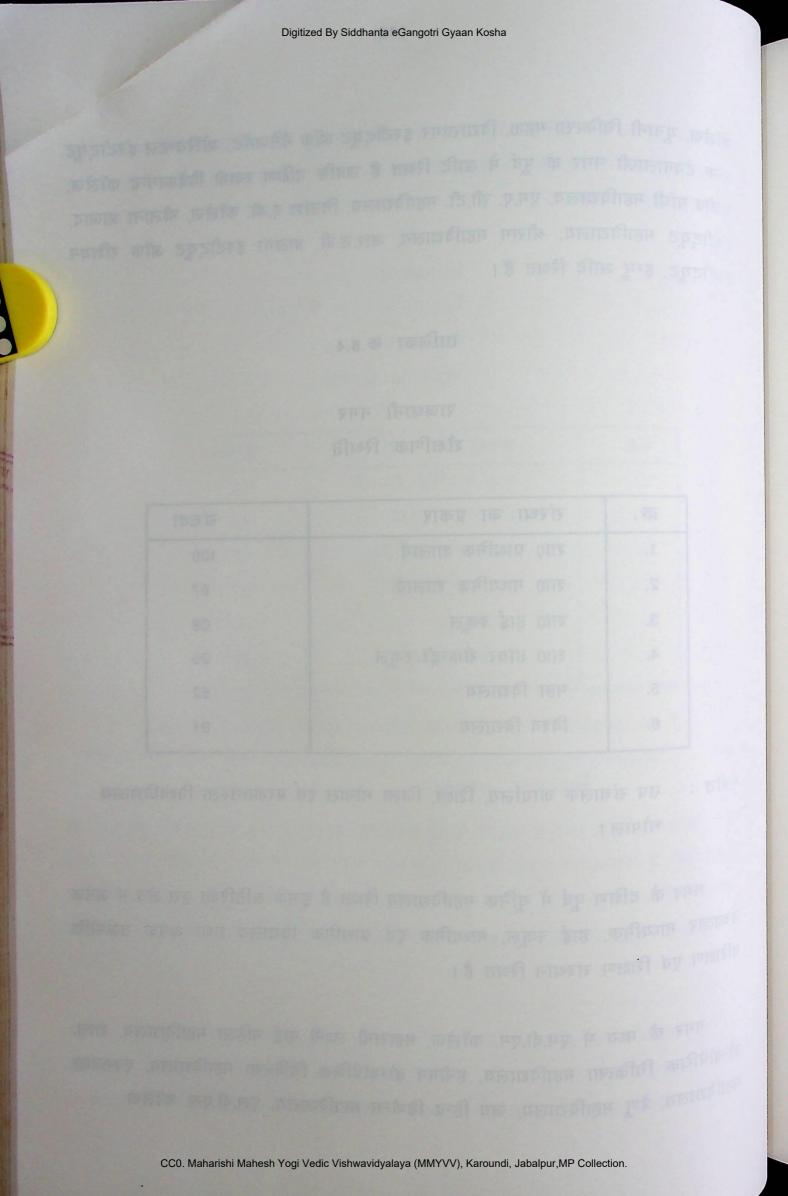
# राजधानी नगर शैक्षणिक स्थिति

| 頭. | संस्था का प्रकार        | संख्या |
|----|-------------------------|--------|
| 1. | शा० प्राथमिक शालायें    | 100    |
| 2. | शा० माध्यमिक शालायें    | 67     |
| 3. | शा0 हाई स्कूल           | 08     |
| 4. | शा० हायर रोकन्ड्री रकूल | 26     |
| 5. | महा विद्यालय            | 62     |
| 6. | विश्व विद्यालय          | 01     |

स्त्रोत: उप संचालक कार्यालय, शिक्षा, जिला भोपाल एवं बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल।

नगर के दक्षिण पूर्व में यूनिक महाविद्यालय स्थित है इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र मं अनेक उच्चत्तर माध्यमिक, हाई स्कूल, माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय तथा अनेक तकनीिक प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान स्थित है।

नगर के मध्य में एम.बी.एम. कॉलेज, महारानी लक्ष्मी बाई महिला महाविद्यालय, शास. होन्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, हनीमन होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, एक्सटाल महाविद्यालय, रेणु महाविद्यालय, जय हिन्द डिफेन्स महाविद्यालय, एल.बी.एस. कॉलेज



कॉलेज, यूनानी चिकित्सा महा0, विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ओरियन्टल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी नगर के पूर्व में आदि स्थित है जबिक दक्षिण स्वामी विवेकानन्द कॉलेज, राजीव गांधी महाविद्यालय, एम.ए. सी.टी. महाविद्यालय, चित्रांश ए.डी. कॉलेज, मौलाना आजाद, इंस्टीट्यूट महाविद्यालय, श्रीराम महाविद्यालय, आर.उ.बी. बालंगा इंस्टीट्यूट ऑफ रिशयन इंस्टीट्यूट, इग्नू आदि स्थित हैं।

तालिका क.6.4

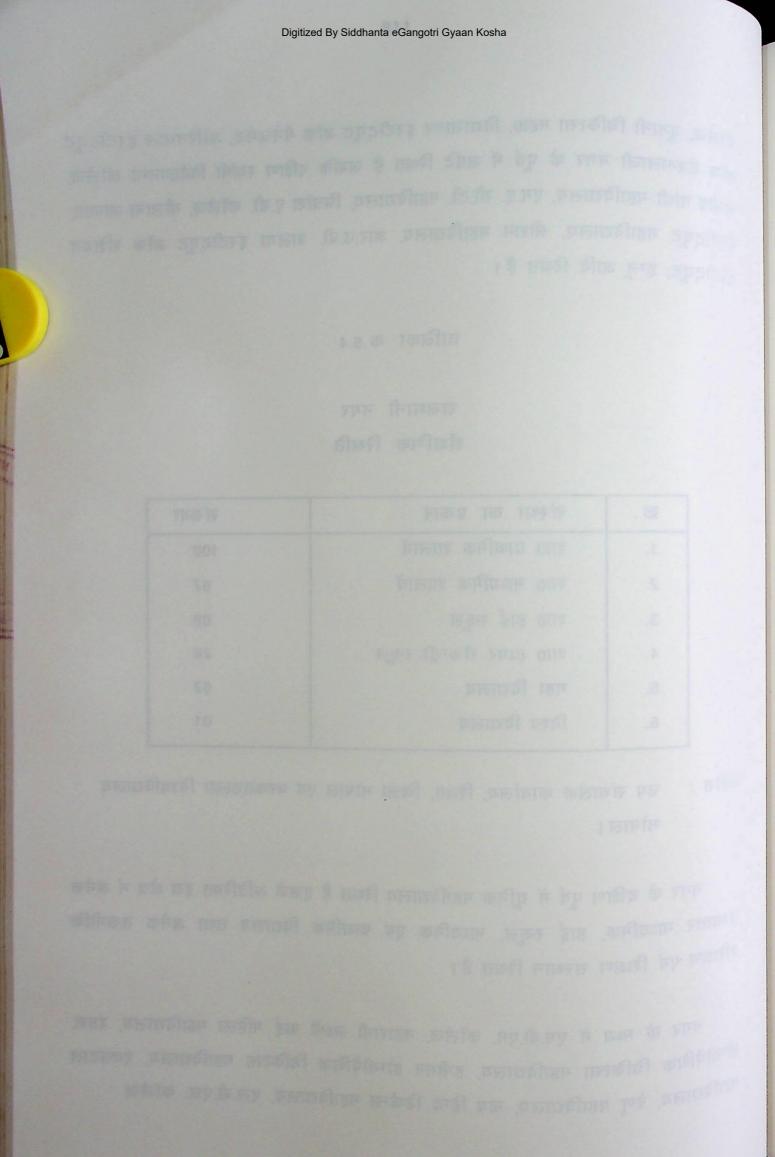
# राजधानी नगर

| T | 頭. | संस्था का प्रकार         | सं ख्या |
|---|----|--------------------------|---------|
|   | 1. | शा० प्राथमिक शालायें     | 100     |
|   | 2. | शा० माध्यमिक शालायें     | 67      |
|   | 3. | शा0 हाई स्कूल            | 08      |
|   | 4. | शा० हायर रौकन्ड्री स्कूल | 26      |
|   | 5. | महा विद्यालय             | 62      |
|   | 6. | विश्व विद्यालय           | 01      |

स्त्रोत : उप संचालक कार्यालय, शिक्षा, जिला भोपाल एवं बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल।

नगर के दक्षिण पूर्व में यूनिक महाविद्यालय स्थित है इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र मं अनेक उच्चत्तर माध्यमिक, हाई स्कूल, माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय तथा अनेक तकनीिक प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान स्थित है।

नगर के मध्य में एम.बी.एम. कॉलेज, महारानी लक्ष्मी बाई महिला महाविद्यालय, शास. होन्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, हनीमन होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, एक्सटाल महाविद्यालय, रेणु महाविद्यालय, जय हिन्द डिफेन्स महाविद्यालय, एल.बी.एस. कॉलेज



महर्षि योगी वैदिक वि.वि., इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेसनल एजूकेशन रिसर्च सेंटर आदि स्थित हैं। पिश्चम में पालिटेक्निक महाविद्यालय, टी.टी.आई. महाविद्यालय आदि स्थित हैं। उ. प्र. में गांधी चिकित्सालय आदि स्थित है जबिक उत्तर दिशा में शा0 गीतांजली कन्याकुमारी विद्यालय, पी.जी.वी.टी. कालेज, शा0 एजुकेशन कॉलेज, शा0 महाविद्यालय आदि स्थित हैं। इसके अलावा एम.पी.नगर में 6, रोशनपुरा में 1, मंडीद्वीप में—2, शाहजहांनाबाद में 2, महाविद्यालय के अलावा संपूर्ण नगर में अनेक निजी एवं शा0 प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर, एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा अनेक तकनीकी प्रशिक्षण एवं शैक्षणिक संस्थान स्थापित हैं

#### 6.6.2 प्रशासनिक क्षेत्र :

प्रशासिनक सेवा केन्द्र का नगर में अति महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि वहीं से सम्पूर्ण नगर का प्रशासन तन्त्र संचालित होता है। इसका नगर के लिये उतना ही महत्व है जितना की घोड़े के लिये लगाम (घोड़े को काबू में रखने की रस्सी) का होता है। संस्कारधानी नगर में राज्य, सम्भागीय एवं अनेक जिला स्तरीय प्रशासिनक कार्यालय स्थापित हैं जिनमें से अधिकांशतः जवाहर लाल नेहरू, दयानन्द सरस्वती एवं सिविल लाइन क्षेत्र में स्थित हैं। इनमें प्रमुखतः मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय टेलीफोन एक्सचेन्ज, जिला पंचायत कार्यालय, तहसील कार्यालय, जिलाध्यक्ष कार्यालय, पुलिस अधिक्षक कार्यालय, रेल्वे क्षेत्रीय (जोन) कार्यालय, डी.आर.एम. कार्यालय, आर.टी.ओ., प्रधान डाकघर, लोक निर्माण विभाग (P.W.D.) कार्यालय नगर एवं ग्राम नियोजन कार्यालय तथा नगर निगम कार्यालय है। इसके अतिरिक्त रामपुर में म.प्र. विद्युत मण्डल कार्यालय, शहीद स्मारक में जिला लघु उद्योग कार्यालय, माध्यमिक शिक्षा मण्डल कार्यालय मढ़ाताल में स्थित है। इसके अतिरिक्त छावनी क्षेत्र में म.प्र. विहार, उड़ीसा एरिया मुख्यालय, (H.Q.M.P.E.B.& O.) जम्मू काश्मीर रायफल्स कार्यालय स्थित है। इसके अतिरिक्त छावनी क्षेत्र में म.प्र. विहार, उड़ीसा एरिया मुख्यालय, (H.Q.M.P.E.B.& O.) जम्मू काश्मीर रायफल्स कार्यालय स्थित है। इसके अतिरिक्त छावनी केन्द्र तथा ग्वारीघाट रोड में ग्रेनेडियर्स रेजीमेन्टल सेन्टर स्थित है। इसके अलावा अनेक स्थानीय जिला सम्माग स्तरीय निजी एवं शासकीय कार्यालय स्थित है।

राजधानी नगर भोपाल में राष्ट्रीय सम्भाग एवं जिला स्तरीय अनेक शासकीय एवं अशासकीय कार्यालय स्थित हैं, जो कि प्रमुख रूप से मुख्य नगर, तात्याटोपे नगर, अरेरा हिल्स आदि में प्रमुख रूप से केन्द्रित हैं टेलिफोन एक्सचेन्ज, रिजस्ट्रार को आपरेटिव, आदिम जाति कल्याण, गजेटियर कार्यालय, जिलाध्यक्ष एवं पुलिस अधिक्षक कार्यालय आदि पुराने भोपाल

well as a pre-officer of the page is no sepo of the S med prejute property

(मुख्य नगर) रिथत पुराने सिववालय में संचालित हैं। टी.टी नगर में बैंक, हथकरधा कार्यालय, मुख्य पोस्ट ऑफिस इत्यादि केन्द्रित हैं। न्यू मार्केट के पास ही जवाहर चौक में गन्दी बस्ती एवं नगर तथा ग्राम नियोजन कार्यालय रिथत है। इसके अलावा शिवाजी नगर में भारतीय स्टेट बैंक का क्षीय कार्यालय रिथत है, 1250 में नर्मदा भवन है जहां पर भारतीय सर्वेक्षण विभाग का मानचित्र विकय केन्द्र स्वास्थ विभाग तथा पी.एच.ई. के कार्यालय रिथत हैं।

यहां कार्यालयों में सर्वप्रमुख अरेरा हिल्स स्थित बल्लभ भवन है। जहां से सम्पूर्ण मध्य प्रदेश राज्य का प्रशासन तन्त्र संचालित होता है। बल्लभ भवन के एक ओर सतपुड़ा भवन तथा दूसरी ओर विंध्याचल भवन स्थित है इसी के पीछे बैंक ऑफ इंडिया तथा मौसम विभाग केन्द्र स्थित हैं। सतपुड़ा भवन तथा विंध्याचल भवन में भोपाल नगर के सभी कार्यालयों के मुख्य कार्यालय स्थित हैं। जिनमें वन विभाग, शिक्षा विभाग, जनगणना विभाग, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव, हाऊसिंग बोर्ड कार्यालय प्रमुख हैं। बल्लभ भवन के पास ही विधान सभा भवन स्थित हैं। इसके अलावा बी.एच.ई. एल. कार्यालय उद्योग एवं रोजगार कार्यालय, माध्यमिक शिक्षा मण्डल कार्यालय (बोर्ड ऑफिस), व्यवसायिक प्रवेश परीक्षा मण्डल कार्यालय के अतिरिक्त नगर में अनेक राष्ट्रीय, राजस्तरीय, सम्भागीय जिला स्तरीय तथा स्थानीय शासकीय एवं अशासकीय कार्यालय स्थित हैं।

#### 6.3. स्वास्थ्य सुविधायें :

एक आदर्श नगर में समुचित स्वास्थ्य सेवाओं का होना आवश्यक है ये स्वास्थ्य सेवायें अधिकाधिक नगर वासियों को न्यूनतम व्यय एवं श्रम पर तत्काल उपलब्ध होना चाहिये अतः स्वास्थ्य केन्द्रों की नगर में समुचित व्यवस्था का होना आवश्यक है अर्थात स्वास्थ्य केन्द्र नगर का एक अभिन्न अंग हैं मो० अताउल्लाह के शब्दों में "In all the towns, hospitals are inadequate in number for the population recurred to be served." अतः जनसंख्या की मांग के अनुपात से स्वास्थ्य केन्द्र होना चाहिये।

संस्कारधानी नगर जबलपुर में जनसंख्या की दृष्टि से स्वास्थ्य सुविधायें अत्यन्त सीमित हैं। सुभाष चन्द्र बोस अस्पताल (मेडिकल कॉलेज चिकित्सालय) नगर के पश्चिमी दिशा में राष्ट्रीय राजमार्ग कमांक 7 त्रिपुरी वार्ड में स्थित हैं, जबलपुर जिला चिकित्सालय (विक्टोरिया अस्पताल) नगर के मध्य में स्थित है। एलगिन महिला चिकित्सालय एवं रेल्वे चिकित्सालय

<sup>6</sup> Ataullah ibid, P.P. 209

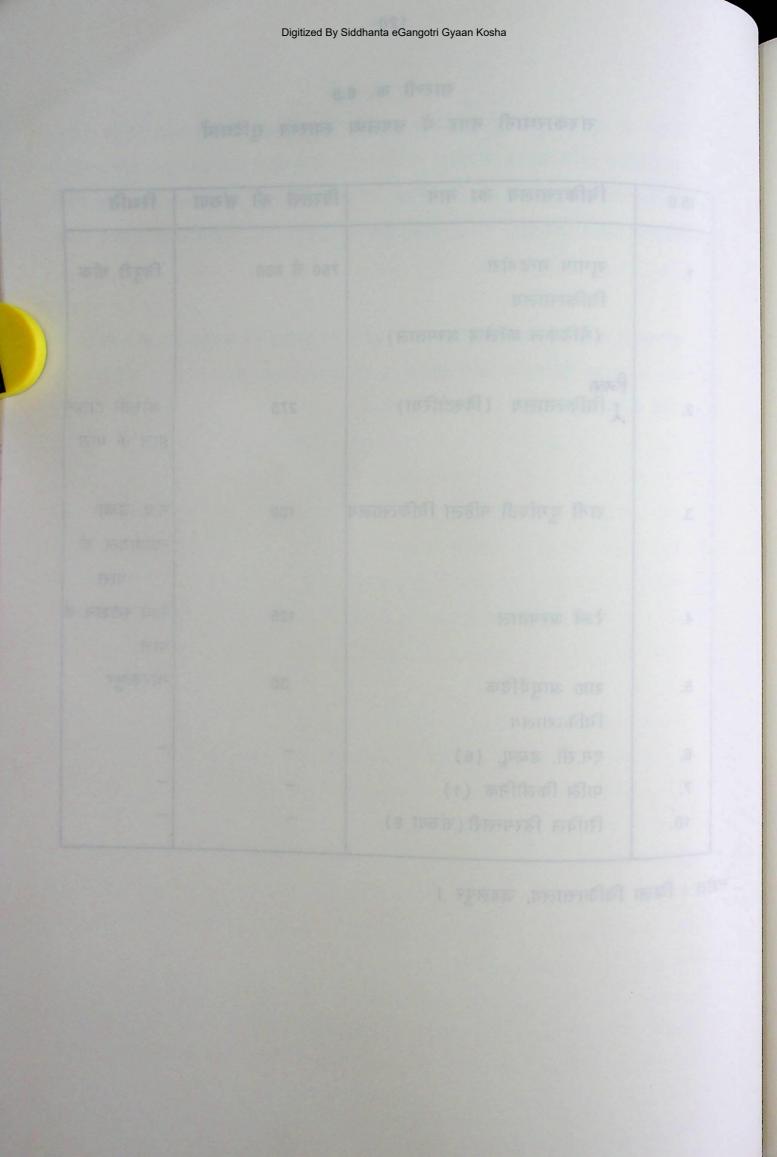
रेल्वे स्टेशन के पास ही स्थित है जबिक मध्य प्रदेश विद्युत मण्डल चिकित्सालय रामपुर में तथा शास. आर्युवेदिक विकित्सालय गोरखपुर में स्थित हैं। मन्नू लाल जगन्नाथ ट्रस्ट चिकित्सालय नगर के मध्यवर्ती भाग छावनी क्षेत्र में सैनिक अस्पताल स्थित हैं। इसके अलावा अनेक निजी चिकित्सालय (जैसे जबलपुर, मार्वल सिटी, नेशनल आदि) एवं शासकीय औषधालय स्थित है।

राजधानी नगर भोपाल राजनैतिक केन्द्र एवं उच्च प्रशासनिक कार्यकलाप होने के कारण यहां पर 16 प्रमुख शासकीय चिकित्सालय, 2 Comunity Helth Centre, 63 उपस्वास्थ्य केन्द्र, 26 सिविल डिस्पेन्सरी स्थित हैं।

सारणी क. 6.5 संस्कारधानी नगर में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधायें

| <b>む</b> 0 | चिकित्सालय का नाम                 | विस्तरो की संख्या | स्थिति           |
|------------|-----------------------------------|-------------------|------------------|
| 98         | (Fertilies ) (B)                  | R. D. SERBER      |                  |
| 1.         | सुभाष चन्द्रबोस                   | 750 से 800        | त्रिपुरी चौक     |
|            | चिकित्सालय                        |                   | 1200 3000        |
|            | (मेडिकल कॉलेज अस्पताल)            |                   |                  |
| 2.         | जिला<br>र्विकित्सालय (विक्टोरिया) | 275               | ओमती टाऊन        |
|            | व्यक्त साथी सेन राहत              | 2610              | हाल के पास       |
|            | क्रिक्त पर्व बाल विविध्यक्तात्व   |                   |                  |
| 3.         | रानी दुर्गांवती महिला चिकित्सालय  | 100               | म.प्र. उच्च      |
|            | विवास बाब काटब्                   | 30                | न्यायायल के      |
|            | विकल्सालय                         |                   | पास              |
| 4.         | रेल्वे अस्पताल                    | 125               | रेल्वे स्टेशन के |
|            | काहर साथ नेएक है प्राप्त केल      | 125               | पास              |
| 5.         | शा० आयुर्वेदिक                    | 30                | गोरखपुर          |
|            | विकिस्सालय                        | 320               | State See        |
| 6.         | एम.सी. डब्ल्यू. (६)               | 30 -              | -136             |
| 7.         | पालि किलीनिक (1)                  | -                 | -3 975           |
| 10.        | सिविल डिस्पन्सरी (संख्या 8)       | -                 | - till sur u     |

स्त्रोत : जिला चिकित्सालय, जबलपुर ।



सारणी क. 6.6 राजधानी नगर में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधायें :

| <b>車</b> 0 | चिकित्सालय                      | विस्तरों की संख्या        | स्थिति              |
|------------|---------------------------------|---------------------------|---------------------|
|            | A                               | The parties of the same   |                     |
| 1.         | जिला चिकित्सालय                 | 206                       | 1250, तुलसी         |
| # 100gg    | ( जे.पी. अस्पताल)               | nta sunaz a giaz a        | नगर                 |
| 2.         | सुलतानिया महिला                 | estricet the un           | an sprawhi          |
| provi      | चिकित्सालय                      | accommodate fu            | ture growth         |
| 3.         | इन्द्ररा गांधी गैस राहत         | 75                        | id have             |
| consi      | महिला एवं बाल चिकित्सालय        | open land which           | h includes          |
| 4.         | हमीदिया अस्पताल                 | 823                       | सदर मंजिल           |
| 5.         | कैलाश नाथ काटजू                 | 30                        | रंग महल             |
|            | चिकित्सालय                      |                           | न्यू मार्केट        |
| 6.         | कस्तूरबा गांधी चिकित्सालय       | 450                       | बी.एच.ई. एल.        |
| 7.         | जवाहर लाल नेहरू                 | 125                       | ईदगाह हिल्स         |
| genera     | कैंसर चिकित्सालय                | के बेद्धन जारि विवाद है   | that it ago         |
| 8.         | टी.बी. अस्पताल                  | 320                       | ईदगाह हिल्स         |
| 9.         | साकिर अली चिकित्साल             | 30                        | भारत टाकीज          |
| gnizali    | प्रात्त संग्रालय, सीमांकर गुम्त | । श्रीकारत राजन श्रेस     | के पास              |
| 10.        | Comunity Helth                  | and—a st farth a          | गांधी नगर एवं       |
| Tettare    | Center(2)                       | s mile the first \$       | वैरसिया             |
| 11.        | उपस्वास्थ्य केन्द्र             | -                         | गांधी नगर 36        |
|            |                                 | r sur garano di           | वैरसिया             |
| 12         | (63)<br>सिविल डिस्पेन्सरी       | व अवस्त = तकते के जिले हो | व्य वे प्रधानिये का |
| 12.        |                                 | and a second and          | त्रम क्षीला व चीवन  |
|            | (25)                            |                           |                     |

स्त्रोत : जिला चिकित्सालय, कस्तूरबा, हमीदिया, कैंसर टी.बी., इंदिरा गांधी चिकित्सालय भोपाल।

## 6.6.4. आमोद - प्रमोद स्थल :

मानव जीवन के लिये जितना अधिक भोजन आवश्यक है उतना ही मनोरंजन भी है क्यों कि दिन भर के कार्य कलाप से व्यक्ति मानसिक तनाव एवं शारीरिक थकान महसूस करता है अतः इससे मुक्ति पाने के लिये उपयुक्त मनोरंजन का होना आवश्यक होता है। अतः एक आदर्श नगर में सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों के लिये स्वास्थ्य वर्धक आमोद — प्रमोद के साध नों का होना आवश्यक है। मनोरंजन के साधनों में वे सभी साधन सम्मिलित किये जा सकते हैं जिनके माध्यम से मानसिक तनाव एवं शारीरिक थकावट से मुक्ति पाने में सहायता प्राप्त होती है। मो० अताजल्लाह के अनुसार "To restricet the urban sprawhl provide recreation and to accommodate future growth of other uses, each urban centre should have a considerable amount of open land which includes agricultural fields, orchands, parks and play grounds."

जबलपुर संस्कारधानी नगर में अनेक ऐतिहासिक इमारतें, बाल उद्यान, वन — उद्यान, पुस्तकालय धार्मिक स्थल, सिनेमा गृह खेल के मैदान आदि स्थित हैं। जिनमें से प्रमुख बाल — उद्यान, टैगोर उद्यान (केन्ट) नगर निगम बाल उद्यान, भंवरताल उद्यान, शैलपर्ण उद्यान, मदन महल, पिसनहारी मिंद्रिया, गुप्तेश्वर मंदिर, बाजना मठ, पाटबाबा मिन्दिर, रानी दुर्गावती पुरातत्व संग्रहालय, रिवशंकर शुक्ला कीडांगन, टाऊन हाल, पुस्तकालय, केन्द्रीय पुस्तकालय, शहीद स्मारक, मानस भवन, के अतिरिक्त 12 सिनेमा घर एवं अनेक निजी पुस्तकालय, छोटे — छोटे उद्यान, कीडांगन एवं धार्मिक स्थल स्थित हैं।

भोपाल राजधानी नगर में अनेक तालाब, उद्यान, पुस्तकालय एतिहासिक एवं धार्मिक इमारतें, सभागृह, एवं खेल के मैदान हैं। भापोल नगर तालाबों के लिये प्रसिद्ध है इसलिये कहा भी जाता है 'तालों में ताल बाकी सब तलैया'। रानी के कमलापित बाकी सब रनैया'9 भोपाल में प्रमुख रूप से दो तालाब बड़ा तालाब एवं छोटा तालाब हैं इसके अलावा भदभदा, मोतिया तालाब, मसूनई तालाब (शाहपुरा) आदि हैं। यहां पर अनेक उद्यान भी है। यहां पर सर्व प्रथम

<sup>7.</sup> Ataulla ibid P.P. 202

नबाव कुदिशया बेगम ने अपने पित के नाम पर छोटे तालाब के किनारे एक बाग बनवाया था जिसका नाम 'नजर बाग' 10 रखा जो कि वर्तमान में पुलिस मुख्यालय जहाँगीराबाद के अहाते में स्थित है। इसके अलावा नीलम पार्क, यादगारे शाहजहाँनी पार्क, बाग निशात, अफजा, फिरदौस पार्क, चिनार पार्क, कमला पार्क, किलोल पार्क, वन विहार एवं मयूर पार्क प्रमुख हैं। इसके अलावा लाल परेड मैदान, राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, इकबाल मैदान, दशहरा मैदान, केन्द्रीय ग्रन्थालय, इकबाल ग्रन्थालय, ताजुल, जामा, मोती मिर्जिद, लक्ष्मी नारायण गणेश, भोजपुर का शिवमन्दिर आदि यहां के प्रसिद्ध आमोद — प्रमोद के स्थल हैं। इसके अलावा 16 सिनेमा गृह एवं अनेक नीजी एवं सामाजिक छोटे बड़े उद्यान, पुस्तकालय धार्मिक एवं एतिहासिक स्थल हैं।

#### 6.6.5. गन्दी बस्ती :

डिकिन्सन के अनुसार स्लम (गन्दी बस्ती) नगर के उस भाग को कहते हैं जहां पर मकान रहने योग्य न हों और जहां का वातावरण नागरिकों के स्वास्थ्य एवं उनकी नैतिकता के लिये हानिकारक हो। अतः गन्दी बस्ती क्षेत्र किसी नगर के निवासियों के लिये एक अभिशाप के समान ही होता है वहां के निवासियों को समुचित नगरीय सुविधायें नहीं मिल पाती साथ ही वहां पर अस्वथकर वातावरण उत्पन्न होता है अतः ये किसी नगर के लिये कलंक के समान ही होती है। गन्दी बस्तियों का विकास प्रमुख रूप से नगर में बाहर से आने वाले मजदूर वर्ग एवं दिशाहीन योजनाओं के कारण होता है।

जबलपुर संस्कारधानी नगर में प्रमुखतया कांचघर, घमापुर, लालमाटी, शोभापुर, आध् गिरताल, मदार टेकरी, नया मुहल्ला, गोहलपुर, करियापाथर, ठक्कर ग्राम, भरतीपुर, गुरन्दी, मोतीनाला, नरसिंह वार्ड, गढ़ा पुरवा, गंगा सागर, सूजी मोहल्ला आदि में गंदी बस्तियों (झुग्गी झोपड़ियों) के केन्द्रीय करण देखा जाता है। इसके अलावा रेल्वे एवं सड़क मार्ग के किनारे – किनारे भी पर्याप्त मात्रा में गन्दी बस्तियों का प्रसार हो रहा है।

भोपाल राजधानी का विकास एक सुनिश्चित योजनानुसार हुआ है किन्तु फिर भी अनेक स्थानों जैसे बी.एच.ई.एल. क्षेत्र, बैरसिया रोड, बड़े एवं छोटे तालाब के किनारे, कमलाघाटी, संजय नगर विदिशा रोड भदभदा रोड, कपड़ा मिल के पास पुट्ठा मिल के पास, इस्लामपुरा

<sup>8.</sup> सिंह, उजागर, नगरीय भूगोल, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पृ. क्र. 178

आदि में गन्दी बस्यों का प्रसार हुआ है। इसके अतिरिक्त रेल्वे मार्ग के किनारे — किनारे भी इनका पर्याप्त विस्तार हुआ है।

जबलपुर संस्कारधानी नगर जबलपुर का समुचित भूमि उपयोग के आभाव में आशानुकूल विकास नहीं हो पाया है जैसे जबलपुर विकास योजना प्रारूप 2005 में आवास हेतु कुल भूमि उपयोग की 50 प्रतिशत भूमि का निर्धारण किया गया है किन्तु उचित कियान्यवयन के आभाव में नगर में गन्दी बिस्तयों में कोई कमी नजर नहीं आती है। जबिक वाणिज्यक उपयोग हेतु 5.7 प्रतिशत भूमि आवंटित कर वाणिज्यक विकास को उपेक्षित हुआ दृष्टिगोचर होता है। अतः इसी कारण औद्योगिक विकास भी अवरूद्ध है क्योंकि व्यवसाय एवं उद्योग आपस में अर्न्तसम्बन्धित हैं। नगर की कुछ भौतिक पिरिस्थितियाँ नगरीय विकास में सहायक है जबिक कुछ वाधक भी हैं जैसे नगर के मध्य स्थित कुछ पहाड़ियाँ अनायास ही स्थित है इनके समतलीकरण द्वारा एक अच्छा रिहायसी क्षेत्र उपलब्ध कराया जा सकता है। यहां रिहायसी क्षेत्र के उचित प्रबन्धन के आमाव में अति उच्च घनत्व होने के कारण गन्दी बस्तियों का प्रसार हुआ है। इसके अतिरिक्त व्यवसायिक एवं आवासीय विकास के आभाव में नगर को अतिकमण का सामना करना पड़ रहा है। यहां शिक्षा की उचित व्यवस्था तो है, स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त मात्रा में कमी अनुभव की जा रही है।

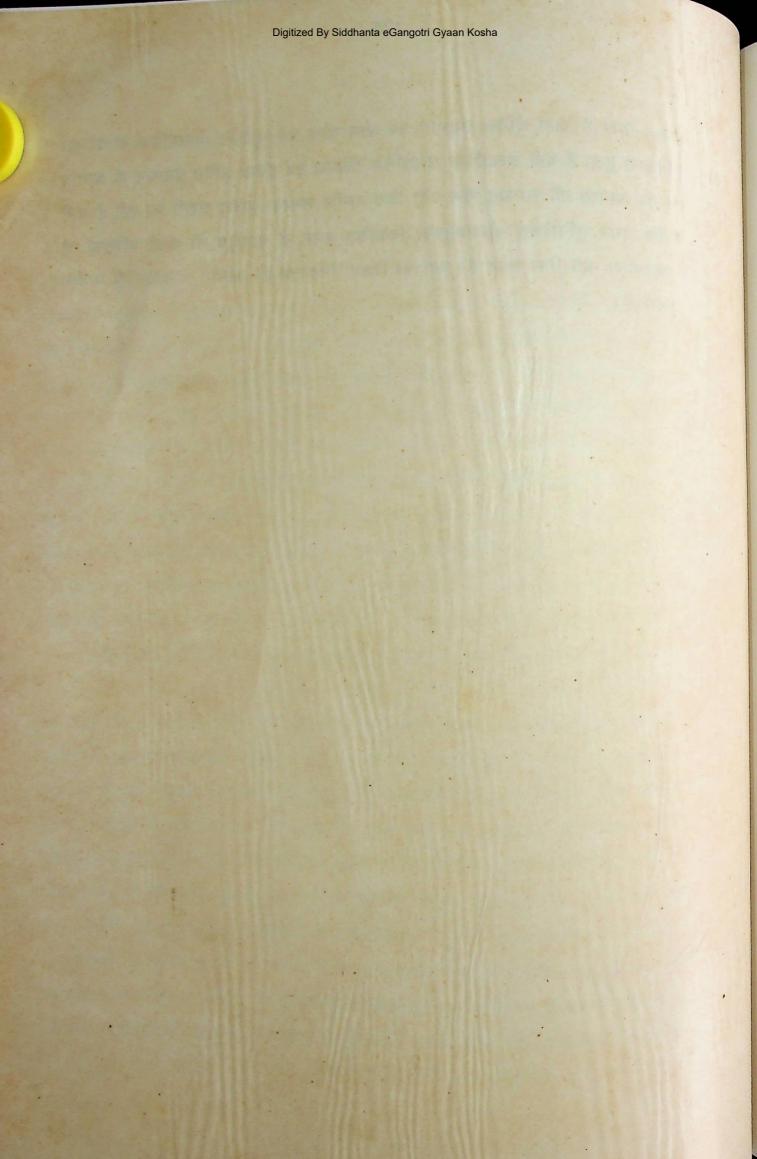
भोपाल नगर राजधानी में उच्च प्रशासनिक एवं राजनैतिक केन्द्र होने के कारण नगर को एक सुनिश्चित योजनानुसार विकसित किया गया है किन्तु अधिक जनसंख्या दबाव के कारण यह विकास कुछ क्षेत्रों में ही दृष्टिगोचर होता है जबिक कुछ भागों में विकास या तो अवरूद्ध है या फिर कच्छप गित से चलने के कारण समय पर योजनाओं का लाभ नगरवासियों को प्राप्त मिंहां हो पाता हैं। जैसे विकास योजमा प्रान्तप 2005 में आयासीय परिसर हेतु कुल प्रस्तिवित मूमिका मात्र 44.68 प्रतिशत क्षेत्र का ही विकास किया जाना सम्भव हो सका है इसी कारण मुख्य नगर (पुराना भोपाल) क्षेत्र में नगरीय सुविधायें जैसे — प्रदूषण, जल, जल — मल निकासी व्यवस्था के आभाव में तथा उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण मानवीय जीवन स्तर घटता जा रहा है अर्थात नागरिक समुचित नगरीय सुविधाओं के आभाव में निवास कर रहे हैं। जबिक इसके विपरीत टी.टी. नगर, अरेरा कॉलोनी आदि एक सुनिश्चत योजनानुसार बसाकर एक सुन्दर नगर का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

or where wheeler alpo to the ter you fee his is for a pro-

भोपाल नगर में जहां दैनिक उपभोग एवं अन्य थोक एवं फुटकर व्यवसायिक केन्द्रों का समुचित विकास हुआ है वहीं अत्याधिक औद्योगिक विकास एवं इसके उचित प्रबन्धन के आभाव में प्रदूषण एवं आवास की समस्या दिन प्रति दिन गम्भीर समस्या धारण करती जा रही है यही कारण है कि नगर सुनिश्चित योजनानुसार विकसित करने के बावजूद भी गन्दी बस्तियों से नगर को छुटकारा नहीं गिल राका है। यहां पर शिक्षा चिकित्सा एवं आगोद — प्रगोद के पर्याप्त साधन सुलभ है।

#### अध्याय ७

स्थापत्य वेद के अनुसार संस्कारधानी एवं राजधानी के प्रमुख तत्वों की स्थिति का अध्ययन



#### अध्याय ७

स्थापत्य वेद्ध के अनुसार संस्कारधानी एवं राजधानी के प्रमुख तत्वों की स्थिति का अध्ययन

#### अध्याय 7

# स्थापत्य वेद के अनुसार संस्कारधानी एवं राजधानी के प्रमुख तत्वों की स्थिति का अध्ययन

वर्तमान में नगरीय भूमि पर बढ़ता हुआ जनसंख्या दबाव, मानव की बढ़ती हुई महत्वकांक्षी लोलुपता, मानवीय सचरित्र का व्हास, पर्यावरण प्रदूषण, मानव एवं प्रकृति के मध्य संघर्ष आदि ने नगरीय जीवन के आगे एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। ये सभी समस्यायें किसी न किसी रूप में एक दूसरे से अर्न्तसम्बन्धित हैं। यही कारण है कि आज प्रत्येक स्तर पर नगरीय जीवन को इन समस्याओं से मुक्त कराने हेतु प्रयास किये जा रहे है। आज के भौतिक वादी जीवन में मानव जीव कोपार्जन का एक यन्त्र मात्र बनकर रह गया है, इसलिये आवश्यक हो गया है कि कोई ऐसा विकल्प अवश्क ही खोजा जाना चाहिये कि जिसके माध्यम से मानव का भौतिक विकास तो हो इसके अतिरिक्त उसका अध्यात्मिक विकास भी हो और मानव अधिकाधिक समय तक सुख शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सके।

स्थापत्य वेद के सिद्धान्त सभी प्रकार की वास्तु रचनाओं में सार्वभौमिक रूप से लागू होते हैं, 1 चाहे वह किसी की झोपड़ी हो या राजमहल, गांव हो या नगर या फिर राज्य हो या राष्ट्र। जिस प्रकार स्थापत्य वेद के अनुसार किसी भवन आदि का निर्माण अधिकाधिक प्राकृतिक सहयोग को ध्यान में रखकर किया जाता है उसी प्रकार किसी नगर के नियोजन में भी प्राकृतिक शिक्तयों एवं उनके सहयोग का समुचित ध्यान रखा जाता है जिससे नगरवासियों का चहुंमुखी विकास हो और नगर में अधिकाधिक समय तक सुखशान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें। नगर में स्थापित विभिन्न मानवीय कार्य कलाप क्षेत्रों (रिहायसी औद्योगिक, व्यापारिक आदि) एवं प्राकृतिक तत्वों जैसे (धरातल, आकार, विस्तार अपवाह तन्त्र जलवायु) आदि का नगर वासियों के कार्य कलापों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है, जिससे उनका जीवन एवं कार्य क्षमता भी प्रभावित होती है, क्योंकि सम्पूर्ण प्रकृति पंचतत्वों से निर्मित है और मानव प्रकृति का एक अभिन्न अंग है अतः प्राकृतिक तत्वों का मानव एवं उसके प्रत्येक कार्य कलाप पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ना स्वभाविक है। इस प्राकृतिक प्रभाव को न केवल मारतीय मनीषी स्वीकारते हैं वरन भूगोल के जन्मदाता कहे जाने वाले पिश्चमी भूगोल वेत्ता

<sup>1.</sup> पाठक, गणेश दत्त, (टीकाकार), विश्वकर्मा प्रकाशः, ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली, वाराणसी, 1995, 1/15

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रेट जेल भी स्वीकारते हुये कहते हैं कि 'मानव तथा प्रकृति में जो पारस्परिक सम्बन्ध था, वह ईश्वरीय सृजन उद्देश्य के अनुसार था।'

# 7.1 भौतिक स्थिति :

जबलपुर नगर संस्कारधानी 23. 10 उत्तरी अक्षांस 79. 57 पूर्वी देशान्तर में समुद्र सतह से 397 मीटर की ओसत केंचाई पर स्थित है। नगर की ईशान दिशा में परियट नदी है। जहां से नगर के बहुत बड़े भाग में जल आपूर्ति की जाती है, जो कि नगर की उत्तरी सीमा बनाती हुई पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है इसी दिशा में करियापाथर नामक पहाड़ी स्थित है। यहीं से खंदारी नाला पूर्व से पश्चिम की ओर नगर की आग्नेय एवं दक्षिण दिशा से होता हुआ नगर की नैरिक्त दिशा में नर्मदा नदी में मिल जाता है। नगर की आग्नेय दिशा में गौर नदी प्रवाहित होती हुई नर्मदा नदी में मिल जाती है और नगर की आग्नेय दिशा में नर्मदा नदी नगर निगम सीमा में प्रवेश कर नगर की दक्षिणी एवं नैरिक्त सीमा का निर्धारण करती हुई पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है। नगर के लगभग मध्य में मदन महल पहाड़ी स्थित है। नगर का पृर्वी भाग छावनी क्षेत्र के अन्तर्गत है अतः नगर निगम सीमा से सम्मिलित नहीं किया गया है। नगर का पश्चिमी तथा उत्तरी भाग लगभग समतल है।

नगर का औसत ढाल पश्चिमी दिशा की ओर है जो कि वास्तुशास्त्रीय नियमानुसार शोक एवं संघर्ष (कलह) उत्पन्न करने वाला है। यह सर्वविदित है कि जबलपुर नगर देश के अति संवेदनशील नगरों में गिना जाता है। नगर की ईशान उत्तर एवं पूर्व दिशा में परियट नदी, जबलपुर जलाशय एवं खंदारी जलाशय स्थित है जो कि वास्तुशास्त्रानुसार नगर में सुख समृद्धि बड़ाने में सहायक है। नगर की उत्तर दिशा में करिया पाथर, पूर्व में सीता पहाड़, छोटी शिमला, बड़ी शिमला तथा मध्य में ब्रह्म स्थल में मदन महल पहाड़ी वास्तुशास्त्र के नियमों के विरूद्ध स्थित है। अतः ये नगर की उन्नित एवं समृद्धि में बाधा उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। नगर की आग्नेय, दिक्षण एवं नैऋत्य दिशा में स्थित नर्मदा गौर नदी आदि भी नगर की सुख समृद्धि में वाधक हैं क्योंकि स्थापत्य वेद में जल स्त्रोत की स्थित दिक्षण

<sup>2.</sup> मिश्रा, अनूप (सम्पादक) श्रीमण्डन सूत्राधारितरिचेती वास्तुराज बल्लभः, मास्टर खेलाड़ी लाल, कचौड़ी गली, वाराणसी, 1996 1/17

<sup>3.</sup> पाठक, गणेश दत्त, वही 8/14

<sup>4.</sup> उपरोक्त, 1/37

आग्नेय एवं नैऋक्त में अशुभ कही गई है। नगर का नैऋत्य भाग बढ़ा हुआ है तथा पूर्वी भाग (छावनी क्षेत्र) नगर निगम सीमा में सम्मिलित न किये जाने के कारण कटा हुआ है। जो कि एक वास्तुदोष है। 5 यह भी नगर के विकास में अवरोधक है।

भोपाल नगर राजधानी 23.16 उत्तरी अक्षांस एवं 77.25 पूर्वी न देशान्तर में समुद्र सतह रा लगभग 1797 फीट की औरात ऊँचाई पर रिथत है। भोपाल नगर वरत्तः सुरम्य झीलों एवं पहाडियों का नगर है। यहाँ पर दक्षिण में शाहपुरा एवं एम.ए.सी.टी. की पहाड़ी है। उत्तर पश्चिम (वायव्य) दिशा में ईदगाह पहाड़ी स्थित है नगर के मध्य भाग में श्यामला एवं विरला (अरेरा) गिरी भी स्थित है। नगर की ईशान दिशा में हथाई खेड़ा आग्नेय में लाहरपुर पश्चिम में बड़ा तालाब स्थित है। नगर के नैऋत्य में केरबां एवं कलियासोत जलाशय स्थित है। जहां से कलियासोत नदी आग्नेय दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई भोजपुर के पास वेतवा नदी में मिल जाती है। नगर के पिश्चम में कोलांस नदी है। छोटे तालाब से पात्रा नदी का उद्गम होता है जो कि ईशान दिशा की ओर बहती हुई वैरसिया के समीप हलाली नदी में मिल जाती है।

नगर का ओसत ढाल ईशान दिशा की ओर है जो कि वास्तु शास्त्रीय दृष्टि से नगर के विकास में सहायक है। 6 जहां एक ओर नगर के दक्षिण में स्थित शाहपुरा पहाड़ी वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से नगर के विकास में सहायक है वहीं नगर की वायव्य दिशा में स्थित ईदगाह पहाड़ी एवं मध्य में स्थित अरेरा एवं श्यामला गिरी नगर के विकास में अवरोधक है। नगर की आग्नेय दिशा में स्थित लाहरपुर जलाशय एवं नैऋत्य में स्थित केरवां एवं कलियासोत जलाशय नगर के मध्य में छोटा तालाब नगर के विकास में प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं 7 वहीं ईशान दिशा में स्थित हथाई खेड़ा, पश्चिम में स्थित बड़ा तालाब आदि नगर के विकास में सहयोग प्रदान करती है।8

संस्कारधानी नगर के ब्रह्म स्थल के अन्तर्गत भंवरताल उद्याल सिविक सेन्टर, उद्यान,

मत्स्य प्राण, 253/50

<sup>6.</sup> पाठक, गणेश दत्त, वही 1/49

शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ, समरांग्ड. सूत्राधार भवन निवेश, लक्षमन दास, मेहरचंद पब्लिकेशन्स, दिल्ली ४/38

पाठक, गणेश दत्त, वही 8/15

नेहरू (नगर निगम) उद्यान, ज्योति सिनेमा, आनन्द सिनेमा, महर्षि योगी वैदिक विश्व विद्यालय एवं महा विद्यालय, नगर निगम कार्यालय, बस स्टेण्ड स्थित हैं। इसके अतिरिक्त ब्रह्म स्थल के लगभग मध्य के ब्रह्म स्थल सामान्य बसाहट वाला क्षेत्र है।

स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार ब्रह्म स्थल पर किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य का निर्मेध है। 9 किन्तु वर्तमान में लगभग सभी नगरों का ब्रह्म स्थल (केन्द्रीय भाग ) अत्यन्त सघन बसाहट एवं नगरीय कार्यों का केन्द्र बिन्दु होता है, यही कारण है कि आज नगरीय जीवन में प्रकृति के सहयोग का अभाव देखा जा रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि सभी नगरों का विकास केन्द्र से बाहर की ओर होता है। अतएव केन्द्रीय भाग अत्यन्त सधन क्षेत्र बन जाता है। संस्कारधानी नगर का ब्रह्म स्थल सामान्य वसाव का क्षेत्र है किन्तु यहां पर रेल्वे लाइन एवं बस स्टेण्ड की स्थिति स्थापत्य वेद के प्रतिकूल है। इसके अतिरिक्त अन्य निर्माण कार्य जैसे छविगृह, पुल आदि की स्थिति भी स्थापत्य वेद के अनुरूप नहीं कही जा सकती, क्योंकि स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार ब्रह्म स्थल खुला क्षेत्र होना चाहिये। 10 इस सबका जबलपुर नगर के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता रहा है। इसके अलावा नगर के तीन उद्यान (भंवरताल, नेहरू एवं सिविक सेन्टर) का ब्रह्म स्थल में स्थित होना लाभदायक है।

राजधानी नगर के ब्रह्म स्थल नगर का प्रमुख व्यवसायिक एवं प्रशासनिक केन्द्र तात्या टोपे (टी.टी.) नगर है। जिसके अन्तर्गत न्यू मार्केट, विधान सभा भवन, वल्लभ भवन, सतपुड़ा भवन, विंध्याचल भवन, लक्ष्मी नारायण मन्दिर जेल पुलिस मैदान, किलोल एवं नैहरू उद्यान, छोटे तालाब का कुछ भाग स्थित है। इसके अतिरिक्त ब्रह्म स्थल में अरेरा हिल्स स्थित है।

नगर के ब्रह्म स्थल में नगर एवं राज्य के प्रमुख प्रशासनिक कार्यालय विद्यान सभा जैसे राजनैतिक केन्द्र स्थित होने के कारण इसकी राजनैतिक ख्याति राष्ट्रीय स्तर पर है। <sup>11</sup>इसी प्रकार तात्या टोपे नगर जैसे व्यवसायिक स्थित होने के कारण जहां एक ओर नगरीय विकास पर ब्रह्म स्थल में निर्माण कार्य के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है वहीं दूसरी ओर यह अन्य स्थापत्य वेद के तत्वों के अनुकूल होने से अच्छा व्यवसायिक नगर भी है। इस के अतिरिक्त

<sup>9.</sup> शास्त्री, उमेश, वास्तुविज्ञानम्, 5/32

<sup>10.</sup> शुक्र नीतिः 1/218

<sup>11.</sup> मयमतम, 10 / 19

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha DEFINITE A THE REAL PROPERTY TO PER SUSPECTOR OF THE PARTY. अरेरा हिल्स एवं छोटा तालाब ब्रह्म स्थल में स्थित होने के कारण नगर के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। क्यों कि स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार ब्रह्म स्थल में किसी प्रकार का भार या गड्ढा (तालाब, पुल, कुंआ) आदि अथवा जलस्त्रोत उचित नहीं है। 12 किन्तु दूसरी ओर यह क्षेत्र मुख्य नगर के अन्य भागों की अपेक्षा विरल बसा है अर्थात खुला क्षेत्र अधिक है तथा यहीं पर पुलिस मैदान, किलोल तथा नेहरू पार्क स्थित होना नगर के विकास के लिये लाभदायक है।

संस्कारधानी एवं राजधानी नगर बड़े नगर हैं जिनकी प्रशासकीय सीमायें अनेक ग्रामों को भी अपने आगोस में ले लेती है तो दूसरी ओर जबलपुर नगर का प्रमुख भाग छावनी क्षेत्र नगर निगम सीमा के अन्तर्गत नहीं आता है। अतः प्रशासनिक सीमाओं के आधार पर लगभग सम्पूर्ण प्रमुख नगर Main City) ब्रह्म स्थल के अन्तर्गत आ जाती है जबकि बाह्य क्षेत्र निम्न धनत्व एवं ग्रामीण क्षेत्र है जो कि उचित नहीं है नियोजन की दृष्टि से दोनों नगरों के मुख्य नगरों का ब्रह्म स्थल निर्धारित किया गया है।

#### 7.3. आवासीय व्यवस्था :

स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार आवास व्यवस्था वर्णानुसार होना चाहिये। 13 जिससे नगर में निवासित सभी वर्णों के व्यक्तियों का चहुं मुखी विकास होता है। यहाँ पर वर्ण के निर्धारण का आशय व्यक्ति के जीवकोपार्जन के लिये किया जाने वाले कर्म से है। अर्थात कर्म की प्राकृति के अनुसार ही व्यक्ति का वर्ण निर्धारित किया गया है। और इसी प्रकार की व्यवस्था वैदिक काल में भी थी जिसके आधार पर स्थापत्य वेद में वर्णानुसार आवास व्यवस्था का निर्धारण किया गया है। अतः हमारे वैदिक काल में समाज को चार वर्णों में वर्गीकृत किया गया था ।

(1) ब्राह्मण : समाज के वे व्यक्ति जो पूजा धर्म शिक्षा आदि कार्यों से जीवकोपार्जन करते

हैं या सम्बन्धित है।

(2) क्षत्रिय: समाज के इस वर्ग के अन्तर्गत सेना पुलिस आदि अर्थात वे व्यक्ति जा समाज की रक्षा आदि कार्यों से सम्बन्धित होते हैं, को रखा गया है।

शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ, वही 38/2

<sup>13.</sup> मयमतम्, 89/10

(3) वैश्य : समाज के इस वर्ग के अन्तर्गत व्यापार वाणिज्य एवं उद्योग में संलग्न व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है।

(4) शूद्र : इस वर्ग के अन्तर्गत समाज के निम्न आय वर्ग के अथवा जैसे दैनिक वेतन भोगी कर्मी, मजदूर वर्ग आदि को सम्मिलित किया गया है।

जबलपुर संस्कारधानी में सिविल लाइन्स, पचपेढ़ी, नेपियर टाऊन, राइट टाऊन, गोल बाजार, आधारताल, यंत्री महाविद्यालय परिसर रांझी, रामपुर (नर्मदा रोड) ग्वारीघाट में ब्रह्मण वर्ण के व्यक्ति आवासित हैं। केन्ट क्षेत्र जो कि जबलपुर नगर निगम सीमा में सम्मिलित नहीं है क्षित्रिय वर्ण के अन्तर्गत आवासित है। इसके अलावा क्षित्रिय वर्ण के अन्तर्गत पुलिस लाईन (केन्द्रीय कारागार के पास) एवं विभिन्न थाना क्षेत्रों के पास आवासिय परिसर स्थित है। राइट टाउन, गढ़ाफाटक, बल्देवबाग, फुहारा, सराफा, अन्धेरदेव, हनुमानताल, दीक्षितपुरा, गोरखपुर, मदन महल, त्रिपुरी, गढ़ा, दमोह नाका गुरन्दी, मढ़ाताल, रांझी, गोकलपुर, आदि क्षेत्र में अधिकांशतः वैश्व वर्ग से सम्बन्धित व्यक्ति निवास करते हैं। शूद्र वर्ण से सम्बन्धित व्यक्ति मदार टेकरी, बेलबाग, न्या मुहल्ला, माढ़ोताल, फूटाताल आदि क्षेत्रों में निवास करते हैं। इसके अलावा राजकीय वर्ग के व्यक्ति प्रमुख सिविल लाइन, राइट टाउन गोलबाजार, नेपियर टाउन, नर्मदा रोड में निवास करते हैं। स्थापत्य वेद के अनुसार ब्रह्मण क्षत्रियों, वैश्य एवं शूद्र आदि वर्ण के व्यक्तियों को कमशः नगर की उत्तर पूर्व दक्षिण, पश्चिम दिशा में निवास करना चाहिये। जबिक ब्रह्मण वर्ण निवासित रामपुर एवं ग्वारीघाट क्षेत्र नगर की दक्षिण दिशा में स्थित हैं जबिक राइट टाउन नेपियर टाउन आदि ब्रह्म स्थल में स्थापित है तथा सिविल लाइन पचपेढ़ी पूर्व में एवं आधारताल उत्तर में स्थित हैं जबिक रांझी यंत्री महाविद्यालय परिसर ईशान में स्थित है। जिसमें से रामपुर एवं ग्वारीघाट क्षेत्र वर्णानुसार आवास की दृष्टि से दोषपूर्ण है जबिक राइट टाउन, नेपियर टाउन, पचपेढ़ी सिविल लाइन आंशिक रूप से दोषपूर्ण है। यह सुर्व विदित है कि जबलपुर नगर शिक्षा के क्षेत्र तथा धार्मिक सांस्कृतिक कार्यों में तो अग्रणी है किन्तु शिक्षा की श्रेणी (Quality) एवं धार्मिक क्षेत्र में वर्चस्व स्थापित नहीं कर पाया है। राजकीय वर्ग की आवासीय व्यवस्था नर्मदा रोड एवं सिविल लाइन को छोड़ कर शेष स्थापत्य वेद के अनुकूल है।

राजधानी नगर भोपाल में प्रोफेसर कालोनी शिवाजी नगर, संजय एवं वैभव नगर (वि.वि. के सामने), श्यामला हिल्स, सुन्दर मंजिल, एम.पी. नगर आदि में ब्रह्मण वर्ण के व्यक्ति निवास करते हैं। जबिक क्षित्रिय वर्ण निवासित छावनी क्षेत्र दक्षिण में स्थित है इसके अतिरिक्त विभिन्न थानाओं के आस पास एवं केन्द्रीय कारागर के पास आवासीय परिसर है। वैश्यवर्ण के अन्तर्गत टी.टी. नगर, बी.एच.ई.एल. क्षेत्र वैरागढ़ पुराना भोपाल आदि क्षेत्र निवासित है जबिक सूद्र वर्ण के अन्तर्गत इस्लामपुरा, गोविन्दपुरा, शाहपुरा इसके अलावा विभिन्न औद्योगिक संस्थानों (कारखानों) के पास बने संस्थान में कार्य करने वाले मजदूरों एवं कर्मचारियों के लिये बनाये गये आवासीय परिसर निवासित है। राजकीय अधिकारियों अरेरा कालोनी श्यामला हिल्स, तुलसी नगर, तुलसी नगर, सिविल लाइन्स, स्वामी दयानन्द नगर, चार इमली आदि क्षेत्र में निवासित है।

## 7.4 औद्योगिक स्थिति :

संस्कारधानी नगर के उत्तर में नगर का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र रिछाई एवं आधारताल स्थित है। जबलपुर नगर में 500000 से 2500000 रूपये तक की पूंजी लागत के 61 उद्योगों में से 15 रिछाई एवं 10 आधारताल क्षेत्र में स्थित है। 14 इसके अलावा राइट टाउन, बल्देव बाग, रानीताल, माढ़ोताल, भरतीपुर आदि में उद्योग केन्द्रित है। इस नगर में प्रमुख रूप से खाद्य, मशीनरी, कोल्ड स्टोरेज, रसायन, चीनी, मिट्टी के बर्तनों, बीड़ी अगरबत्ती, हाथकरधा आदि के उद्योग स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त यहां का एक प्रमुख रूप से नगर के पश्चिमी भाग में स्थित मदन महल, गढ़ा पुरवा आदि क्षेत्रों में केन्द्रित है। नगर की ईशान दिशा में देश के प्रमुख आयुध निर्माणी संस्थान स्थापित है, जिनका प्रबन्धन केन्द्र सरकार द्वारा किया जाता हैं, किन्तु प्रायः ये रक्षा संस्थान नगर निगम सीमा के बाहर स्थापित है। इन रक्षा संस्थानों में जी.सी.एफ., खमरिया, ग्रे आयरन फाउन्ड्री स्थित है। इसके अतिरिक्त वाहन निर्माणी (व्हीकल फैक्ट्री) संस्थान स्थापित हैं।

जबलपुर नगर अनेक औद्योगिक आधारभूत सुविधाओं के होते हुये भी अन्य नगरों की अपेक्षा औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ है इसका कारण जहां एक ओर उत्तम राजनैतिक नेतृत्व अथवा उत्तम प्रबन्धन का अभाव है वहीं इसका एक दूसरा प्रमुख कारण औद्योगिक क्षेत्र का नगर में स्थापत्य वेद के नियमों के प्रतिकूल स्थापित होना भी है। स्थापत्य वेद में उत्तर तथा ईशान दिशा को खुले स्थान (जैसे उद्यान, धार्मिक स्थल) आदि के रूप

<sup>14.</sup> जिला उद्योग कार्यालय, जबलपुर से प्राप्त आकड़ो के आधार पर ।

में छोड़ने का प्रावधान है। 15 जबिक नगर की रिथित ठीक इसके विपरीत हैं अर्थात नगर का अधिकांश सघन औद्योगिक विकास इसी दिशा में हुआ है किन्तु स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार आयुध निर्माणी संस्थान आग्नेय दिशा में तथा सामग्री संग्रहण केन्द्र पश्चिम दिशा में होना चाहिये। 16 अतः जबलपुर नगर मे औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने हेतु स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार औद्योगिक क्षेत्र के पुर्न नियोजन की आवश्यकता है।

राजधानी नगर भोपाल का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र बी.एच.ई.एल. गोविन्दपुरा नगर के पूर्व में तथा कालीपरेड नगर की दिशा में स्थापित है। इसके अलावा न्यू मार्केट एम.पी. नगर, पुराना भोपाल एवं नगर के दक्षिणी भाग में स्थित हबीब गंज क्षेत्र में भी कुछ उद्योग स्थापित है। नगर में कुल 10650 लघु उद्योग (2500000 रूपये तक पूंजी निवेश वालें तथा 15 बृहद / मध्यम उद्योग (25 लाख से 3 करोड़ तक की पूंजी निवेश वाले) स्थापित है। 17 इस नगर में प्रमुख रूप से रसायन, कपड़ा, मशीनरी विद्युत सामग्री, उद्योग प्रमुख है।

स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार नगर की पूर्व दिशा में भारी निर्माण कार्य उपयुक्त नहीं है अर्थात अधिकाधिक खुला क्षेत्र (Open Spece) रखने का प्रावधान है। 18 जबकि नगर के पूर्व में ही बी.एच.ई.एल. गोविन्दपुरा जैसे वृहद औद्योगिक केन्द्र स्थापित है। किन्तु इसके बावजूद भी नगर का यह क्षेत्र सत्त विकासशील है इसका प्रमुख कारण इस क्षेत्र में पुराने शहर (पुराना भोपाल) की अपेक्षा बसाहट की अपेक्षा खुले स्थान जैसे उद्यान चौड़ी सड़कें इत्यादि का होना है जो कि स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों की दृष्टि से विकास के लिये उपयुक्त है। अतः भविष्य में विकास योजनायें बनाते समय इस बात का अवश्य ही ध्यान रखा जाना चाहिये कि बसाहट घनत्व एवं खुले क्षेत्र के अनुपात का वर्तमान सन्तुलन बना रहे। इस नगर के उत्तर में ही स्थित छोला क्षेत्र में यूनियन कार्बाईड गैस संयन्त्र था जिसमें 1984 में गैस रिसाव से हजारों लोगों की मौत हुई थी। यह सयन्त्र अब बन्द कर दिया गया है। इस दुर्घटना का कारण भी इस संयन्त्र का स्थापत्य वेद के विपरीत स्थापित होना था क्यों कि स्थापत्य वेदानुसार नगर के उत्तर में उद्योगों की स्थापना कार्य का अनुचित है। 19 इसी प्रकार बी.एच.

मत्स्य प्राणा -254 ८२-5

शर्मा, सुरेशवर, (सम्पादक), विज्ञान भारती प्रदीपिका, अप्रेल 1997, पृ. क्र. 69

जिला उद्योग, कार्यालय, मोपाल, से प्राप्त आंकडों के आधार पर 17.

<sup>18.</sup> मत्स्य पुराण, 254/3-5

<sup>19.</sup> पाठक, गणेश दत्त, वही 1/28

े वह 10650 समु प्रधान (2500000 रूपये) तक पूजी निवेश पालेश तथा 15 वहर नवत

रवापरय वेद के शिव्हान्तान्यात् वगर की वर्ष दिशा में भारी विमांश कार्य उपयास करी

रणंत विकायिक खुला क्षेत्र (Open: Spece). एसले का प्राथम है। <sup>18</sup> जबकि बला

ई.एल. क्षेत्र का नगर के पूर्व में स्थित होने के कारण नगर का जितना अधिक औद्योगिक विकास होना चाहिये था उतना नहीं हो सका जैसे पास ही लगे इन्दौर एवं देवास नगरों में औद्योगिक विकास हुआ है जबिक इन नगरों में भोपाल की अपेक्षा कम प्रबन्धन राजनैतिक सुविधायें सुलभ है। यदि बी.एच.ई.एल. क्षेत्र नगर की आग्नेय दिशा में एवं गोविन्दपुरा पश्चिम में होता तो नगर का और अधिक विकास संभव था। क्योंकि बी.एच.ई.एल. कारखाना विद्युत उपकरणों से सम्बन्धित होने के कारण आग्नेय दिशा में होना उचित है।

# 7.5 व्यवसायिक स्थिति :

जबलपुर नगर संस्कारधानी का प्रमुख व्यवसायिक क्षेत्र नगर की उत्तर दिशा में बड़ा फुहारा स्थित है। यह नगर का प्रमुख थोक एवं फुटकर क्रय — विक्रय केन्द्र है। इसके यहां विकसित होने का प्रमुख कारण यह है कि जबलपुर नगर का विकास यहीं से प्रारम्भ हुआ है और धीरे — धीरे नगर इस भाग के चारों ओर विकसित होते गया और यह भाग भी नगर की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित होते गया। इस भाग में प्रमुख रूप से सब्जी, परिवहन / यातायात का व्यवसाय विकसित हुआ है। इसके अतिरिक्त मढ़ाताल (सिविक सेन्टर) में कपड़ा, हार्डवेयर, फर्नीचर अध्ययन सामग्री के व्यवसायक का केन्द्रीय करण हुआ है जो कि नगर के उत्तर दिशा में ब्रह्म स्थल से लगे (सभीप) क्षेत्र में स्थित है। इसके अतिरिक्त नगर में अन्य क्षेत्रों में भी अनेक क्षेत्र छोटे — छोटे व्यवसायिक केन्द्रों के रूप में उमर रहे हैं। जैसे ज्योति टॉकिज के आस पास के क्षेत्र में होटल व्यवसाय एवं रेडीमेड वस्त्र व्यवसाय विकसित हुआ है। इसके अलावा केन्ट गोरखपुर रांझी, गोकलपुर, आधारताल, सतपुला आदि मदन महल आदि में भी सब्जी एवं अन्य घरेलू सामान जैसे किराना आदि व्यवसायिक केन्द्र के रूप में अवस्थित है। मदन महल, गढ़ा पुरवा आदि क्षेत्र में हार्डवेयर मकान निर्माण सामग्री विकय केन्द्र के रूप में विकसत हो रहा है।

स्थापत्य वेद के सिद्धान्त पूर्ण रूपेण प्रकृति पर आधारित है अतः स्थापत्य वेद के सिद्धान्त पर काल एवं स्थान का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है अर्थात इस पर जलवायु भू आकृति अन्य भौगोलिक एवं प्राकृतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है और इसी प्रभाव एवं तत्वों के आधार पर स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। अतः भारतीय स्थापत्य वेद (Indian Archiology) के सिद्धान्तों को भारतीय भौतिक एवं सामाजिक परिवेश की दृष्टि से प्रतिपादित किया गया है।

क्षा से सम्बन्धित होते. को कारण आस्त्रेय दिश्य में होना प्रधिय है।

TERRIE BY BELLEVIE OF THE PROPERTY OF THE PROP

। है किए का दूरित से प्रतिपादित किया पद्म है।

संस्कारधानी के उत्तर में रिथत व्यवसायिक क्षेत्र फुहारा एवं आधारताल रथापत्य वेद की दिष्ट से मिश्रित प्रभाव कारी है क्योंकि कुछ वस्तु जैसे हार्डवेयर या अनाज (खाद्यान्न) व्यवसाय क्षेत्र पश्चिम एवं वायव्य में होना चाहिये<sup>20</sup> किन्तु उत्तर में इनकी स्थिति निर्षिद्ध है। इसके विपरित सब्जी, फल, किराना आदि की स्थिति उत्तर एवं ईशान दिशा होना चाहिये 21 क्यों कि भारत वर्ष की उत्तर एवं ईशान दिशा में हिमालय पर्वत स्थित है तथा ईशान एवं उत्तर दिशा में अन्य दिशाओं की अपेक्षा कम तापमान रहने के कारण सब्जियाँ एवं फल – फूल इत्यादि में ताजगी बनी रहती है जबकि खाद्यान्न (अनाज) आदि के लिये पश्चिमी एवं वायत्य दिशा इस लिये निर्धारित की गई है क्योंकि पश्चिम दिशा में संतुलित ताप (न अधिक गर्म, अरैर न अधिक उण्डा) के कारण खाद्यान्नों को कीड़ों आदि से सुरक्षित रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त बड़ा फुहारा क्षेत्र में अर्न्तव्यवसायिक क्षेत्र का निर्धारण स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों पर आंशिक रूप से स्थित होने के कारण इसका नगर विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है इसका सर्वोत्तम प्रमाण वह क्षेत्र स्वयं है जिसका सर्वाधिक गति से व्यवसायिक विकास हुआ है। इसके अतिरिक्त स्थापत्यवेदानुसार नगर के मध्य में लगभग सभी उपयोगी वस्तुओं का बाजार उपलब्ध होना चाहिये<sup>22</sup> जिसकी पूर्ती संस्कारधानी नगर में बड़ा फुहारा क्षेत्र करता है। इसके अलावा उत्तर में सिविक सेन्टर भी नगर में स्थापत्य वेद की दृष्टि से उपयुक्त दिशा में स्थित है। ज्योति टॉकिज क्षेत्र में स्थित होटल व्यवसाय स्थापत्य वेद की दृष्टि से उचित नहीं है। 23 यही कारण है कि अनेक नगर जबलपुर से छोटे होते हुये भी होटल व्यवसाय में विकसित है जबिक जबलपुर नहीं। जैसे खजुराहो, पचमढ़ी आदि। इसके अतिरिक्त रांझी, खमरिया, गोकलपुर व्यवसायिक क्षेत्र स्थापत्य वेद के अनुरूप होने के कारण नगर के विकास पर इन क्षेत्रों का अनुकूल प्रभाव पड़ता है जबकि केन्ट, गोरखपुर आदि का नगर के विकास पर पतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि यहां होटल व्यवसाय होना चाहिये था किन्तु यहां सब्जी कपड़े एवं अन्य घरेलू उपयोग का व्यवसाय है। इसके अलावा मदन महल, गढ़ा पुरवा आदि क्षेत्र में उचित व्यवसाय स्थित होने के कारण नगर के व्यवसायिक विकास में सहायक है।

<sup>20.</sup> मयमतम् 10/80

<sup>21.</sup> उपरोक्त 10/81

<sup>22.</sup> उपरोक्त 10/86-87,

<sup>23.</sup> उपरोक्त 10 / 82

भोपाल नगर राजधानी का प्रमुख व्यवसायिक केन्द्र पुराना भोपाल स्थित मंगलवारा , इतवारा, बुधवारा, लोहा मण्डी, इत्यादि हैं जो कि भोपाल नगर के उत्तर मध्य में स्थित होने के कारण नगर के विकास में उचित प्रभाव पड़ता है, किन्तु नगर के दक्षिण में स्थित तात्या टोपे नगर (न्यू मार्केंट) भी एक नवीन व्यवसायिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहा है इसका नगर के विकास में मिश्रित रूप से प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। क्योंकि जहां नगरीय दृष्टि से यह स्थापत्य वेद के अनुरूप स्थित नहीं है वहीं इसके अन्तरिक समायोजन आंशिक रूप से स्थापत्य वेद के अनुरूप दृष्टिगोचर होता है। इसके अलावा नगर के पश्चिम में बैरागढ़ के नाम से एक अन्य व्यवसायिक क्षेत्र विकसित हुआ है जो कि स्थापत्य वेद की दृष्टि से नरगीय विकास के लिये उपयुक्त है। अर्थात इस क्षेत्र का नगरीय विकास में अनुकूल प्रभाव है। इसके अलावा नगर के विभिन्न भागों में फुटकर विकय केन्द्र विस्तारित है जैसे शाहपुरा, शाहजहांनाबाद, जहाँगीराबाद, इब्राहिमपुरा, रविशंकर बाजार, मोटर स्टैण्ड इत्यादि।

भोपाल नगर का अधिकांश व्यवसायिक क्षेत्र स्थापत्य वेद के अनुरूप होने के कारण नगरीय विकास में सहायक है। क्योंकि व्यवसायिक दृष्टि से यदि देखा जाये तो भोपाल नगर स्वभाविक रूप से विकसित दृष्टिगोचर होता है इतना ही नहीं भोपाल नगर की कार्यशली जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत भाग व्यापार वाणिज्य से जुड़ी हुई है जो कि कुल कार्यशी जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत है।

### शिक्षा :

जबलपुर नगर संस्कारधनी के उत्तर में जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय तथा पूर्व में रानी दुर्गावती विशव विद्यालय एवं मध्य में महर्षि महेश योगी वैदिक विशव विद्यालय स्थित है। उत्तर में कृषि महाविद्यालय ईशान में यंत्री महाविद्यालय, पूर्व में शा0 विज्ञान तथां महाकौशल कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय पश्चिम में चिकित्सा महाविद्यालय एवं मध्य में महर्षि महेश योगी महिला, मानकुंवर बाई एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय स्थित है।

स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार विद्या अध्ययन केन्द्र का सर्वोत्तम स्थान उत्तर माना गया है।24 इसके अतिरिक्त ईशान एवं पूर्व भी हो सकता है।25 संस्कारधानी नगर में शक्षिक

<sup>24.</sup> शुक्र नीतिः 226/1

शर्मा, सुरेश्वर, (सम्पादक) वही पृ.क. 69 25.

केन्द्रों की रिथिति वारतुशारत्रानुकूल है। संस्कारधानी शब्द का आशय ही संस्कारों की राजधानी है। अर्थात शिक्षा के क्षेत्र में इस नगर का महत्वपूर्ण स्थान है। यह प्रदेश का ऐसा पहला अथवा एक मात्र नगर है जहां पर तीन विश्व विद्यालय स्थित है इसके अतिरिक्त युग ऋषि पुज्यनीय महर्षि महेश योगी जी ने भी इस नगर के उत्तर में स्थित करोंदी ग्राम में विश्व की सबसे ऊंची (2222 फीट) वैदिक शिक्षा हेतु भारत के ब्रह्म स्थल करोंदी ग्राम जो कि मुख्य नगर से 60 कि.मी. की दूरी पर है, में विश्व की सबसे ऊंची इमारत बनाने का निर्णय लिया है। जिसमें शैक्षणिक गतिविधियां संचालित होंगी। संस्थाओं की स्थानगत विशेषतायें अथवा स्थिति वास्तु अनुकूल न होने के कारण उत्तम श्रेणी की शिक्षा का आभाव है एवं शिक्षा क्षेत्र के प्रबन्धन में लगातार समस्यायें दृष्टि गोचर होती रहती है।

भोपाल नगर राजधानी स्थित बरकतउल्ला विश्व विद्यालय नगर की आग्नेय दिशा में स्थित है इसके अलावा महर्षि महेश योगी वैदिक वि.वि. की शाखा मध्य में स्थित है। नगर के दक्षिण में एम.ए., सी.टी. कॉलेज है। नगर के पश्चिम में पॉलिटेक्निक एवं हमीदिया महाविद्यालय एवं वायत्य में मेडिकल कॉलेज स्थित है। इसके अतिरिक्त उच्चत्तर माध्यमिक तक की शिक्षा के लिये नगर को पांच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है

- 1. तात्या टोपे नगर (नगर कन्या)
- 2. नगर क. 2
- 3. बैरागढ़
- 4. नगर संख्या 3
- 5. नगर संख्या 4

भोपाल नगर में स्थित शैक्षणिक संस्थान औसतन रूप से स्थापत्य वेद के नियमानुसार स्थित नहीं है क्यों कि नगर का प्रमुख उच्च शिक्षा केन्द्र बरकतउल्ल विश्व विद्यालय आग्नेय दिशा में रिथत है किन्तु इसकी वारतु अनुरूप रथानीय विशेषताओं के कारण अच्छी शिक्षा का केन्द्र है। इसके अतिरिक्त नगर की अधिकांश प्रमुख शैक्षणिक संस्थायें नगर के दिक्षण एवं पश्चिम दिशा में है जो कि वास्तु अनुकूल नहीं है। 26 यही कारण है कि नगर में जनसंख्या एवं यहां के राजनैतिक विकास के मानदण्डों के अनुरूप शिक्षा क्षेत्र विकसित नहीं है। नगर

<sup>26.</sup> मत्स्य प्राण, 256/33

के वायच्य में मेडिकल कॉलेज वास्तु अनुरूप है क्योंकि वास्तुशास्त्र में चिकित्सालय की व्यवस्था का शिक्षा का ईशान दिशा में होना उचित है। जिराका नगर के विकास में अनुकूल प्रभाव है। चिकित्सा की व्यवस्था का प्रावधान उत्तर और ईशान दिशा के मध्य है, 27 क्योंकि प्रातः कालीन सौर्य ऊर्जा रोगी के स्वास्थ्य में भी हो सकता है। क्योंकि भारत में सामान्यतया वायु दिशा उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर होती है अतएव रोगी का स्वच्छ वायु प्राप्त होने से वह शीघ्र रोगमुक्त होगा।

## 7.7. चिकित्सा व्यवस्था :

वर्तमान में नगरों में अत्याधिक जनसंख्या दबाव, सामाजिक एवं प्राकृतिक प्रदूषण के कारण नित्य नये रोग जन्म ले रहे हैं। अतएव नगरीय मनुष्य की औसत आयु दिन प्रतिदिन घटती चली जा रही है। अतः नगरीय जीवन को दवाओं पर जीवित रहने वाला कहा जाये जो कोई अतिश्योक्ति न होगी। अतः नगरों में चिकित्सालयों की व्यवस्था इस प्रकार होना चाहिये कि इसका लाभ प्रत्येक नगरवासी को शीघातिशीघ उसकी स्थिति एवं परिवेश अनुरूप प्राप्त हो सके तथा इसका आस — पास के पर्यावरण पर दुष्प्रभाव भी न पड़े एवं रोगी भी शीर्घ स्वस्थ्य हो जाये। अतः इस आधार पर नगर में चिकित्सालयों में उचित स्वास्थ्य लाभ के लिये प्राकृतिक सहयोग अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार नगर की वायव्य दिशा (उत्तर — पश्चिम) में चिकित्सालय रिथत होना उचित एवं स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से अधिकाधिक उपयुक्त है। क्योंकि भारतीय स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों में भारतीय भौगोलिक स्थिति का विशेष ध्यान रख गया है। यही कारण है कि विश्व के विभिन्न भागों में स्थापत्य वेद क सिद्धान्तों में आंश्विक रूप से अन्तर दृष्टिगोचर होता है। भारतवर्ष में वायुप्रवाह सामान्यतया उत्तर — पश्चिम (वायत्य) से दिक्षण — पूर्व (आग्नेय) की ओर रहता है तथा आग्नेय कोण की अपेक्षा वायव्य कोण में तापमान कम होता है अतः रोगी को स्वस्थ वातावरण (जैसे स्वच्छ वायु, प्रकाश उचित तापमान हत्यादि) की उपलब्धता अनिवार्य होती है। अतः इस दृष्टि से स्थापत्य वेद में वायव्य दिशा में चिकित्सालय का प्रावधान रखा गया है।

<sup>27.</sup> पाठक, गणशे दत्त, वहा^2/18

रांस्कारधानी नगर के उत्तर मे जिला विकित्सालय (सेठ गोविन्द दास) शा0 महिला चिकित्सालय (एिल्गिन) मध्य रेल्वे चिकित्सालय ईशान में जी.सी.एफ., व्हीकल, खमरिया चिकित्सालय, पूर्व में सैनिक चिकित्सालय (मिल्ट्री अस्पताल) नैऋत्य में म.प्र. विद्युत मण्डल चिकित्सालय, पश्चिम में मेंडिकल (सुभाष चन्द्र बोस चिकित्सालय) स्थित है। इसके अतिरिक्त नगर के लगभग मध्य (ब्रह्म स्थल से बाहर) वायव्य कोण में निजी चिकित्सालयों का केन्द्रीय करण हुआ है।

संस्कारधानी नगर के अधिकांश शासकीय चिकित्सालय स्थापत्य वेद के सिद्धान्त के अनुकूल स्थापित नहीं है इसके कारण इनका समुचित विकास नहीं हो पाया है और ये सदैव ही किसी न किसी समस्या से ग्रसित रहते हैं। अतएवं यहां उपलब्ध उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं संस्कारधानी की पर्याप्ता के बावजूद इसके अलावा कुछ पूर्ण चिकित्सालयों का केन्द्रीयकरण हुआ है।

संस्कारधानी नगर के अधिकांश शासकीय चिकित्सालय स्थापत्य वेद के सिद्यांत के अनुकुल स्थापित नहीं है इसके कारण इनका समुचित विकास नहीं हो पाया है और ये सदैव ही किसी न किसी समस्या से ग्रिसत रहते हैं अतएवं यहां उपलब्ध उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं संस्कारधानी एवं क्षेत्रीय पर्याप्तता के बावजूद भी शा0 चिकित्सालयों में सामान्य जनहेतु यथोचित सुविधाओं का आभाव है । 28 इसके अलावा कुछ शा0 विकित्सालयों की आन्तरिक संरचना, स्थिति बनावट आदि में स्थापत्ववेद के अधिकांश नियमों का पालन किया गया है (जैसे म०प्र० विघुत मण्डल चिकित्सालय) जिसके कारण इनमें अन्य शा0 चिकित्सालयों की अपेक्षा कम समस्यायें दृस्टिगोचर होती हैं । इसके विपरीत निजी चिकित्सालयों की विकास यात्रा अर्थात् उनका विकास शासकीय चिकित्सालयों की अपेक्षा बेहतर है एवं अधिक लोकप्रिय मी है । इसका कारण जहां एक ओर अच्छी प्रबंधकीय व्यवस्था है वहीं दूसरी ओर इनका स्थापत्यवेद के अनुकूल स्थापित होना भी है ।

राजधानी नगर भोपाल के उत्तर में सुलतानिया महिला चिकित्सालय, इन्दिरा गांधी महिला बाल चिकित्सालय, बी०एच०ई०एल० चिकित्सालय, दक्षिण में जिला चिकित्सालय (जे०पी०चिकित्सालय), सैनिक चिकित्सालय (Miltry Hospital) वायव्य में

<sup>28.</sup> जबलपुर विकास योजना प्रारूप, 2005, पृ. क्र. 63

हमीदिया चिकित्सालय, जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय (कैंसर) टी०बी० चिकित्सालय तथा मध्य में कैलाशनाथ काटजू चिकित्सालय (रंग महल के पास) स्थित है । इसके अतिरिक्त नगर में दो कम्न्यूटी हेल्थ सेन्टर, गांधी नगर वैरसिया क्षेत्र के अन्तर्गत 63 उपस्वास्थ्य केन्द्र म0प्र0 विध्त मण्डल चिकित्सालय रेल्वे चिकित्सालय स्थित है । इसके अलावा नगर में अनेक निजी चिकित्सालय, सिविल डिस्पेन्सरी कार्यरत है।

भोपाल नगर एवं क्षेत्रीय केन्द्र स्थित हैं किन्तु जन सामान्य के लिये यथोचित सुविधाओं की कमी है ।29 इसका कारण यह है कि अनेक चिकित्सालय स्थापत्य वेद के सिद्धांतों के अनुकूल स्थित नहीं है अर्थात नगर में उनकी स्थिति न तो स्थापत्य वेदानुरूप है और न ही व्यक्तिगत रिथति भी स्थापत्य वेद के अनुकूल है जिस कारण से इन चिकित्सालयों में अनेक समस्यायें (जैसे वित्तीय संकट, रोगी एवं कर्मचारियों में असंतोष) आदि की स्थित बनी रहती है इसके विपरीत चिकित्सालय जो नगर एवं व्यक्तिगत रूप में भी स्थापत्य वेद के अधिकांश नियमों का परिपालन कर रहे हैं उनके उत्तरोत्तर विकास संतोष – जनक है जैसे जवाहर साल निहरू चिकित्यसालय हिमीदिया इसके अतिरिक्त कुछ चिकित्सालय ऐसे भी हैं जे। नगरीय दृष्टि से स्थापत्य वेद के अनुरूप है किन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के विपरीत स्थित है या व्यक्तिगत रूप से स्थापत्य वेद के अधिकाधिक नियमों का परिपालन तो करते हैं किन्तु नगरीय दृष्टि से स्थापत्य वेद के अनुरूप स्थित नहीं है ऐसे चिकित्सालयों का विकास एवं उनकी लोकप्रियता मध्यम कही जा सकती है जैसे जे.पी. (जिला चिकित्सालय), कस्तूरबा चिकित्सालय आदि।

## 7.8. प्रशासनिक व्यवस्था :

प्रशासन तन्त्र सभी प्रकार की बस्तियों का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग होता है क्योंकि प्रशासन तन्त्र बिना मानव वस्ति बिना मस्तिष्क के शरीर के समान है। अतः प्रशासन तन्त्र के द्वारा ही नगरो एवं सभी प्रकार की बस्तियों मे नियम – कानून तथा उसके विकास की योजनायें उचित रूप से निर्मित एवं कार्यान्वित की जाती है। स्थापत्य वेद के अनुसार नगर के मध्यवर्ती भाग प्रशासकीय कार्यालयों के लिये सर्वोत्तम कहे गये हैं।30

मोपाल विकास योजना प्रारूप 2005 पृ. क्र. 64

<sup>30.</sup> शुक्र नीतिः 1/218

to a promy very made small title

BISTA HO ST

जबलपुर नगर संस्कारधानी के मध्यवर्ती उत्तरी - पूर्वी क्षेत्र में प्रशासनिक केन्द्रों का केन्द्रीय करण हुआ है। यहां पर प्रमुख रूप से पुलिस अधिक्षक, कार्यालय, जिलाध्यक्ष कार्यालय, जिला एवं उच्च न्यायालय, संयुक्त संचालक (शिक्षा) एवं उपसंचालक (शिक्षा) कार्यालय, रेल्वे क्षेत्रिय कार्यालय, नगर निगम कार्यालय स्थित है। इसके अलावा नगर के पूर्व में छावनी क्षेत्र में नगर निगम प्रशासन से अलग छावनी प्रशासनिक केन्द्र है।

भोपाल नगर राजधानी में प्रशासनिक केन्द्रों का जमाव नगर के मध्यवर्ती उत्तरी एवं उत्तरी प्रवीं भाग (ब्रह्म स्थल एवं उससे लगे हुये भाग टी.टी. नगर एवं अरेरा हिल्स आदि) में हुआ है। इस क्षेत्र में न केवल नगरीय प्रशासनिक कार्यालय स्थित हैं बल्कि क्षेत्रीय एवं पादेशिक स्तर के प्रशासनिक कार्यालय भी स्थित है, जिन में से प्रमुख वल्लभ भवन, विंध्याचल भवन, सतपुड़ा भवन, विधान सभा भवन, मुख्य डाकघर, पुराना सचिवालय, बोर्ड ऑफिस इत्यादि हैं।

संस्कारधानी एवं राजधानी में प्रशासनिक सेवा क्षेत्र की स्थिति स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों का अधिकाधिक परिपालन करते हैं जिससे दोनों नगरों की प्रशासकीय व्यवस्था में अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण राजधानी नगर स्थित स्वयं नव निर्मित विधान सभा भवन है जिसे 1997 — 98 में ...... पुरस्कार से सम्मानित किया गया है साथ ही साथ म.प्र. विधान !! सभा कार्यालय में पंचायती राज जैसे निर्णयों / प्रस्तावों ने म.प्र. शासन की प्रशासनिक शक्तियों के हस्तान्तरण के कारण समूचे देश में अग्रणी रहा है। किन्तु इसके अलावा कुछ कार्यालय व्यक्तिगत रूप से स्थापत्य वेद के नियमों के प्रतिकूल स्थित होने के कारण अनेक समस्याओं से धिरे नजर आते हैं। जैसे संस्कारधानी नगर में स्थित म.प्र. उच्च न्यायालय के सदैव स्थानान्तरण आदि की खबरे / समस्यायें उत्पन्न होती दिखाई देती हैं।

#### 7.9. यातायात व्यवस्था :

मानवीय बस्तियों में यातायात मार्गों का ठीक वही महत्व है, जो मानव शरीर में रक्त वाहिनयों का होता है। वस्तुतः नगर का लगभग सम्पूर्ण जीवन ही यातायात द्वारा संचारित होता है। अर्थात यातायात के साधनों ( सड़क मार्ग, रेल मार्ग नदी इत्यादि) के माध्यम से ही नगर क्षेत्रीय एवं अन्य नगरों तथा आस पास की ग्रामीण बस्तियों से अपना सम्बन्ध बनाने में समर्थ होता है। अतः नगरीय अकारिकी में यातायात के माध्यमों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक अनुमान के अनुसार महानगरों के लगभग 25 प्रतिशत भूमि भाग पर परिवहन के साधन अवस्थित होते हैं। 31 अतः एक आदर्श नगर मे दुर्घटना एवं भयरहित, दुतगामी तथा पर्यावरण प्रदूषण रहित यातायात व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता होती है। एक अनुमान के अनुसार अमेरिका जैसे विकसित देशों में प्रतिवर्ष वाहन दुर्घटनाओं से लगभग 36 हजार व्यक्तियों की मौत होती है। 32 अतएव नगर में नगरीय स्विधा एवं स्रक्षा की दृष्टि से यातायात की उचित व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक होती है। इस दृष्टि से वर्तमान में नगरीय यातायात तन्त्र के विकास में स्थापत्य वेद के नियमों की सहायता लेना आवश्यक हो गया है। स्थापत्य वेद के अनुसार सड़कें सीधी और एक दूसरे 90 अंश पर होना चाहिये। 33 अर्थात नगर का विकास चौक पट्टी (Chek Board) प्रतिरूप में होना चाहिये।। इस प्रकार का प्रयोग जहां तीन हजार वर्ष ईसा पूर्व सिन्धु घाटी के मोहन जोदड़ों हड़प्पा आदि नगरों में किया था। 34 वहीं जयपुर और चण्डीगढ़ जैसे आधुनिक महानगरों का विकास भी चैक बोर्ड प्रतिरूप पर ही किया गया है।

जबलपुर नगर संस्कारधानी म.प्र. के प्रमुख नगरों में से एक है अतः इस नगर का सम्बन्ध ा रेल एवं सड़क माध्यम से प्रदेश के प्रमुख नगरों एवं क्षेत्रीय भागों से है। यहां पर प्रमुख रूप से राष्ट्रीय राजमार्ग क. 7 (नागपुर – मिर्जापुर) है, जो उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा में नगर के मध्य से होता हुआ जाता है, इसी प्रकार राष्ट्रीय राजमार्ग क. 12 भी पूर्व से पश्चिम की ओर नगर के मध्य से गुजरता है यह जबलपुर को भोपाल एवं कोटा से जोड़ता है। इसी प्रकार राजमार्ग क. 22 पूर्व से पश्चिम की ओर नगर के मध्य से जाता है। जो कि डिण्डोरी को नगरसिंहपुर, आग्नेय (दक्षिण – पूर्व) से वायव्य (उत्तर – पश्चिम) को नगर के मध्य से जाता है। जो मण्डला को दमोह से मिलाता है। वर्तमान समय से राष्ट्रीय राजमार्ग क.7 के लिये वाईपास रोड जबलपुर नगर को उत्तर से पश्चिम होते हुये दक्षिण तक बनाया गया है इससे नगर में बाहरी वाहन नगर के वाईपास मार्ग से ही भेजने का प्रावधान है, क्यों कि इस मार्ग के नगर के मध्य से गुजरने के कारण अनेक दुर्घटनायें घटती रहती हैं इससे दुर्घटनाओं में कुछ कमी आने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त नगर में ब्राडगेज एवं मीटर गेज रेल मार्ग भी उपलब्ध है। ब्रांड गेज देश के प्रमुख नगरों जैसे दिल्ली, बम्बई, भोपाल, इलाहाबाद, इन्दौर

सिंह, उजागर, वही पृ. क्र. 344

<sup>32.</sup> 

शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ, समरांग्ड. सूत्राधार भवन निवेश, मेहरचंद लक्षमन दास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1994, पृ. क्र. 98

शास्त्री, आचार्य चतुरसेन, वैदिक संस्कृति : पौराणिक प्रभाव, प्र. क्र. 142 34.

आदि को नगर से जोड़ता है यह नगर के उत्तर से प्रवेश करती है और पिश्चम को चली जाती है। मीटर गेज नागपुर एवं गोंदिया को सीधा जबलपुर से जोड़ती है यह नगर के दक्षिण से प्रवेश करती है। इसके अतिरिक्त डुमना हवाई अड्डा का कार्य नगर को हवाई यातायात सुलभ कराने हेतु चल रहा है। यह हवाई अड्डा वर्तमान में नगर के ईशान में स्थित है। लेकिन जबलपुर विकास योजना प्रारूप 2005 में इसे नगर के नैरिक्त में तेवर एवं सगड़ा ग्राम में विकसित करने का प्रावधान है, क्योंकि वर्तमान हवाई अड्डा डुमना में स्थित है जहां तक जाने का मार्ग प्रतिबन्धित क्षेत्र से होकर जाता है इस लिये हवाई पट्टी के विकास के लिये यह क्षेत्र अनुकूल नहीं है।

जबलपुर नगर के यातायात का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यहां की यातायात व्यवस्था आंशिक रूप से ही स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों का पालन करती है। जैसे राष्ट्रीय राजमार्ग क्र.12 कमशः उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम को नगर की वाह्य सीमा तक सीधे जाते हैं जो कि स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुकूल है। जबिक यही मार्ग मुख्य नगर (केन्द्रीय भाग) में पहुंचने पर अतिकमण युक्त एवं लहरदार (टेडे—मेडे) हो जाते हैं। इसके अलावा राजमार्ग क्र.37 आग्नेय दिशा से नगर में प्रवेश कर वायव्य दिशा से होता हुआ जाता है जो कि स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के प्रतिकृत है। निर्माणधीन वाईपास मार्ग (राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 7) भी स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं है क्योंकि यह सीधा न होकर वृत्ताकार है। इसी प्रकार हवाई अड्डा भी स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों की अनुकूल दिशा में स्थित नहीं है। अतः इन सभी के परिणाम स्वरूप नगर में यातायात व्यवस्था का मिश्रित प्रभाव परिलक्षित होता है। इसका स्पष्ट प्रभाव यह है कि जबलपुर नगर जनसंख्या का मिश्रित प्रभाव परिलक्षित होता है। इसका स्पष्ट प्रभाव यह है कि जबलपुर नगर जनसंख्या की दृष्टि से महानगरों की श्रेणी में पहुंचा जा रहा है जबिक न तो महानगरों जैसा दुतगामी यातायात ही सुलभ हैं और न ही योजनायें और यिद योजनायें बनी भी है तो केवल फाइलों में ही सिमट कर रह गई है।

भोपाल नगर राजधानी प्रदेश ही नहीं वरन् देश प्रमुख महानगरों में से एक है अतः राजधानी नगर भोपाल का राष्ट्रीय यातायात प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान है। जिसके द्वारा यह देश के विभिन्न महानगरों के अन्य क्षेत्रीय जिला एवं सम्भागीय केन्द्रों से रेल सड़क एवं वायु सेवा के विभिन्न महानगरों के अन्य क्षेत्रीय जिला एवं सम्भागीय केन्द्रों से रेल सड़क एवं वायु सेवा के सुविधा से जुड़ा है। यहां पर पांच क्षेत्रीय सड़क मार्गों, दो रेल्वे लाइनों तथा वायु सेवा की सुविधा उपलब्ध है। नगर की वायव्य दिशा में वैरागढ़ के पास ई.एम.ई. सेक्टर में हवाई अड्डा

अवरिश्रत है । इसके अलावा वैरशिया रोड नगर मे उत्तर दिशा से प्रवेश कर मध्य भाग से होता हुआ दक्षिण से कोलार को जाता है। इसी प्रकार पूर्व से रायसेन नगर के मध्य से होती हुई पश्चिम को इन्दौर को जाता है। नगर के आग्नेय से होशंगाबाद रोड प्रवेश कर वायव्य से होता हुआ नरसिंहगढ़ को जाता है एवं ईशान से विदिशा रोड प्रवेश कर नैऋत्य से होता हुआ विलिकसगंज को जाता है। इसके अलावा नगर की ईशान से रेल्वे लाइन प्रवेश करती है जो पश्चिम से सिहोर को तथा दक्षिण से होशंगाबाद को जाती है।

भोपाल नगर राजधानी के यातायात का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यहां पर यातायात व्यवस्था पूर्णतः तारक प्रतिरूप पर अवस्थित है और इसी आधार पर नगर का विकास भी हुआ है। अतः नगर की यातायात व्यवस्था कुछ हद तक स्थापत्य यहां पर मिश्रित प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जैसे बैरसिया तथा रायसेन रोड कमशः उत्तर एवं पूर्व से नगर में प्रवेश कर स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों का पालन करते हैं, किन्तु नगर के मध्य मे ये मार्ग अतिकमण युक्त एवं दिशा विहीन तथा अनियमित (टेडे-मेडे) हो जाते हैं । जो कि यातायात को प्रभावशाली बनाने में प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इसके अलावा आग्नेय दिशा से होशंगाबाद रोड, ईशान से विदिशा रोड तथा रेल मार्गो का प्रवेश अनुचित कहा गया है। नगर की वायव्य दिशा में हवाई अड्डा स्थित है जो नगर के यातायात तन्त्र को प्रभावशाली बनाने में अनुकूल प्रभाव पडता है।

7.10 जल पूर्ति व्यवस्थाः

जल मानव जीवन के लिये आवश्यकता है तथा प्रकृति प्रदत्त पंचमहाभूतों मे से एक है। बर्भ समस्त क्रियाओं के कि हमारी अधिकांश प्राचीन सभ्यतायें अतः जल न केवल घरेलू उपयोग के लिये। यही कारण है कि हमारी अधिकांश प्राचीन सभ्यतायें जल स्त्रोतों के किनारे ही विकसित हुई है जैसे सिन्धु घाटी की सभ्यता सिन्धु नदी, रोम की सभ्यता नील नदी आदि। अतः नगर में जल पूर्ति की उचित व्यवस्था होना चाहिये क्योंकि जहां यह मानव के जीवन का आधार है वहीं प्रदूषित होने पर जीवन के लिये अत्यन्त घातक भी हो सकता है। इसी दृष्टि से स्थापत्य वेद के अनुसार जल पूर्ति व्यवस्था (जल स्त्रोत) ईशान (उत्तर – पूर्व) दिशा में उत्तम कही गई है।

संस्कारधानी नगर ही प्रदेश का एक ऐसा नगर है जो जल आपूर्ति हेतु स्वयं पर निर्भर है। जबलपुर नगर मे जल आपूर्ति के प्रमुख तीन स्त्रोत है। जिसमें सर्वप्रथम परियट जलाशय है जो नगर की ईशान दिशा में स्थित है। खंदारी जलाशय नगर की पूर्व दिशा में तथा नर्मदा नदी दक्षिण दिशा में स्थित है। इसके अलावा गौर नदी फगुआ नाला एवं ट्यूबवेल हेण्डपम्प प्राप्ति का मुख्य स्त्रोत है। अतःनगर में प्रतिदिन लगभग 27 मिलियन गैलन जल की आपूर्ति विभिन्न स्त्रोतों से की जाती है। जबकि जल की आवश्यकता 36 मिलियन गैलन प्रतिदिन होती है अतः 9 मिलियन गैलन जल की नगर में प्रतिदिन आवश्यकता बनी रहती है।

तालिका क0 7.1 जबलपुर नगर में जल आपूर्ति क्षमता का वितरण

| क 0 | जल स्त्रोत   | जल प्रदाय क्षमता<br>(मि. गैलन प्रतिदिन) |
|-----|--|---|
|     | nofitant ten 2   |   |
| 1.  | परियट जलाशय एवं फगुआ   | 9                                       |
|     | नाला में पंपों द्वारा  |   |
| 本0  | जल स्त्रीत   | जल पदाव कामला                           |
| 2.  | खंदारी जलाशय एवं गौर   | 5                                       |
|     | नदी मे पम्पों द्वारा   |   |
|     | इस वासंव   |   |
| 3.  | नर्मदा नदी   | 9                                       |
| 3.  | इस इंदेर   |   |
| 4.  | ट्यूबवेल एवं हेण्ड पम्पों द्वारा   | 4                                       |
|     | THE SHARE SEED AND SE | 27 मिलियन गैलन/दिन                      |
|     | कुल जल प्रदाय क्षमता   | 27 निर्धायम गरा ग्र                     |

स्त्रोत: जबलपुर विकास योजना प्रारूप 2005 पृ.क. 60

भोपाल नगर में जल स्त्रोतों की स्थिति आंशिक रूप से स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों का पालन करती हैं जैसे बड़ा तालाब नगर के पश्चिम में स्थित है जो कि स्थापत्य वेद के

सिद्धान्तों के अनुकूल है। 35 जबिक हथाई खेड़ा कोलार आदि स्थापत्य वेद के सिद्धान्त के अनुकूल नहीं है।

भोपाल नगर राजधानी में प्रमुख रूप से जल स्त्रोत द्वारा जल आपूर्ति की जाती । जिसमें सबसे बड़ा जल आपूर्ति स्त्रोत बड़ा तालाव है जो कि नगर के पश्चिम में स्थित है जबकि कोलार बांध नैरिक्त (दक्षिण पश्चिम) में स्थित है। इसके अलावा हथाई खेड़ा जो कि ईशान दिशा में स्थित है तथा ट्यूबवेल एवं हेण्ड पम्प आदि के द्वारा भी जल की आपूर्ति की जाती है। मोपाल एक महानगर है अतः यहां सकल उपभोग हेतु प्रतिदिन लगभग 53.5 मिलयन गैलन जल की आपूर्ति ही की जाती है तथा यहां की आवश्यकता 56 मिलियन गैलन प्रतिदिन है अतएव लगभग 2.5 मिलियन गैलन जल की प्रतिदिन आवश्यकता बनी रहती है।

तालिका क0 7.2 भोपाल नगर में जल आपूर्ति क्षमता विवरण

| क 0                | OICH CAICH                            | जल प्रदाय क्षामता<br>(मिलिययन गैलन/दिन) |
|--------------------|---------------------------------------|---|
| THE REAL PROPERTY. | त्वी स्थल हार महर्भ देवारी स्वतंत्र ह |   |
| 1.                 | बड़ा तालाब                            | 26                                      |
|                    |                                       | 21                                      |
| 2.                 | कोलार                                 | 1.5                                     |
| 3.                 | हताई खेडा                             |   |
|                    | ट्यूब वेल एवं अन्य भूगर्मिक स्त्रोत   | 5                                       |
| 4.                 |                                       | 53.5                                    |
| जा क               | कुल जल प्रदाय क्षमता                  | THE P COURSE OF BE                      |
| remes às           | म खबबूबत नहीं माना नवा है है जाता ह   |   |

स्त्रोत: भोपाल विकास योजना प्रारूप 2005 पृ. क0 69

<sup>35.</sup> पाठक, गणेश दत्त, 8/14

संस्कारधानी नगर जबलपुर मे रिथत जल स्त्रोत आंशिक रूप से स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों का अनुशीलन करते हैं। जैसे परियट नदी नगर के ईशान में रिथत है जबिक खंदारी जलाशय, गौर नदी एवं नर्मदा नदी स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल के प्रतिकूल रिथत है।

# 7.11 जल - मल निकासी व्यवस्था :

नगर के स्वच्छ वातावरण एवं स्वास्थ्य के लिये नगर में उचित जल मल निकासी अत्यन्त आवश्यक होती है। जबलपुर नगर में स्वच्छता एवं मानवीय स्वास्थ्य की दृष्टि से जल – मल निकासी व्यवस्था का पर्याप्त आभाव है। सम्पूर्ण नगर का प्रदूषित जल ओमती नाला एवं मोती नाला में मिल जाता है। ये नाले नगर के मध्य से होकर गुजरते हैं जिससे नगर वासियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नगर के कई भागों में नाली का यह बदबूदार गन्दा पानी सड़क में फैल जाता है। अतः इससे नगर वासियों को अनेक प्रकार की बीमारी होने की आशंका रहती है। अतः जबलपुर नगर में जलमल प्रवाह की उचित व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता है। इसी प्रकार नगर के ठोस अपशिष्ठ के विसर्जन की नगर में उत्तम व्यवस्था नहीं है।

संस्कारधानी नगर जल मल निकासी व्यवस्था हेतु जबलपुर विकास योजना 2005 के अन्तर्गत स्वास्थ्य यान्त्रिकी विभाग ने एक वृहत जल मल योजना तैयार की है जो दो चरणों में लागू की जायेगी। प्रथम चरण के अन्तर्गत उखरी नाले के निकट जलमल शोधन संयंत्र स्थापित किये जाने का प्रावधान है जो कि मुख्य नगर के अत्यन्त समीपन्यव्य दिशा में स्थित है तथा इसी चरण में एक स्टेवलपृजेशन पॉण्ड रिझवा ग्राम के निकट स्थापित करने का प्रावधान है जो कि नगर की वायव्य दिशा में स्थित है। उत्तर वायव्य के मध्य जल मल विसर्जन का स्थापत्य वेद मे उपयुक्त नहीं माना गया है। 36 अतः इस यरण में प्रस्तावित दोनों संयंत्रों की स्थित स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं है।

राजधानी नगर भोपाल के कुछ भागों में जैसे भेल (BHEL) एवं टी. टी. नगर आदि में ही व्यवस्थित जल मल निकासी की व्यवस्था है तथा पुराने शहर में यह योजना कार्यान्वित की जा रही है। पुराने शहर (जैसे इस्लामपुरा, मंगलवारा इत्यादि) में पुरातन तरीके से ही

<sup>36.</sup> मत्स्य पुराण, 256/1

खुली नालियों के माध्यम रो जलमल विरार्जन किया जाता है। इसके अतिरिक्त छोटे एवं बड़े तालाब में भी नगर का प्रदूषित जल एवं अन्य ठोस अपशिष्ठ आता है जिससे इसका जल निरन्तर प्रदूषित हो रहा है। इसके अलावा नगर का उत्तर – पूर्वी भाग का जल हलाली नदी, नगर के दक्षिण पश्चिम (नैऋत्य) का जल कोलार नदी में प्रवाहित होता है जिसमें से हलाली एवं कालियासोत बेतवा से तथा कोलार नदी नर्मदा से मिल जाती है।

नगर के उत्तर एवं उत्तर पूर्वी भाग का जल हलाली नदी में प्रवाहित होता है। हलाली नदी नगर के उत्तर में है अतः यह स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुरूप तो है किन्तु नगर में जल आपूर्ति की दृष्टि से यह नदी उपर्युक्त नहीं है अतः यहां पर प्रदूषित जल का विसर्जन उचित नहीं है इसके अलावा किलया सोत एवं कोलार नगर के दक्षिण से स्थित है अतएव यहां पर जल मल विसर्जल स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। 37 अतः नगर में जलमल निकासी व्यवस्था का अध्ययन कर इसका उचित समाधान आवश्यक है।

# 7.12 मनोरंजन (आमोद - प्रमोद के साधन) :

वर्तमान नगरीय जीवन लगभग यन्त्रीकृत हो चुका है अर्थात वह केवल ध्नोपार्जन का एक यन्त्र मात्र बनकर रह गया है अतः उसका उद्देश्य केवल जीवकोपार्जन तक ही सीमित होकर रह गया है एवं जीवन के अन्य विकास जैसे आध्यात्मिक सामाजिक सांस्कृतिक आदि उससे दूर होते जा रहे हैं। अर्थात वर्तमान में अर्थ प्राप्ति ही सम्पूर्ण सुख एवं आनन्द का पर्याय बन चुका है इसलिये आज के नगरीय जीवन को आध्यात्मः सांस्कृति, सामाजिक विकास की ओर उन्मुख करने हेतु नगर में सभी आयु वर्ग के लिये उचित एवं सुलभ मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराना एक अनिवार्यता बन चुकी है। क्योंकि मानव का सम्पूर्ण विकास केवल शारीरिक अथवा आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं है वरन मनुष्य का चहुंमुखी अधिदैविक आध्यात्मिक एवं अधि मौतिक विकास ही मानव जीवन का वास्तविक रूप में सम्पूर्ण विकास है। अतः नगर में अधि मौतिक विकास ही मानव जीवन का वास्तविक रूप में सम्पूर्ण विकास है। अतः नगर में उचित स्थान पर सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों के लिये मनोरंजन के साधन जैसे उद्यान, उपित स्थान पर सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों के लिये मनोरंजन के साधन जैसे उद्यान, प्रस्तकालय, धार्मिक एवं सांस्कृतिक भवन, खेल के मैदान आदि उपलब्ध होना स्थलों को नगर फेफड़ा कहा जा सकता है। अ

<sup>37.</sup> पाठक, गणेश दत्त, वही 1/33

<sup>38.</sup> सिंह, उजागर, वही पृ. क्र. 328

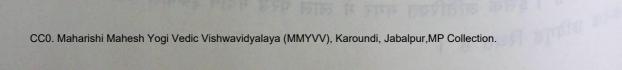
मान के न्या के न्या के क्योंका के कि का क्योंका के कि नाम के

संस्कारधानी नगर में मनोरंजन के साधनों के विकास की पर्याप्त सम्भवनायें उपलब्ध है। वर्तमान में यहां पर लगभग नगर के मध्य में भंवरताल पार्क, नेहरू पार्क, (नगर निगम), गांधी भवन पुस्तकालय, केन्द्रीय पुस्तकालय, रहीद स्मारक, पिश्चम में शैल पर्ण उद्यान, मदन महल पहाड़ी, पिसनहारी की मिंढ्या, वाजना मठ, (भैरो मिन्दर) भेड़ाघाट आदि उपलब्ध हैं। दक्षिण में ग्वारीघाट (धार्मिक स्थल) दर्शनीय स्थल स्थित हैं, पूर्व में खंदारी जलाशय (पिकनिक स्थल) छोटी शिमला, बद्धी शिमला, पाटबाबा, मंन्दिर आदि स्थित है। इसके अलावा जबलपुर नगर में 52 तालाब एवं 9 छविगृह हैं जिनमें से अनेक तृज्द हो चुके हैं केवल 22 जलाशय शेष बचे हैं, जिनका भविष्य भी अनिश्चित हैं।

संस्कारधानी नगर जबलपुर के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नगर के अधिकांश आमोद — प्रमोद के स्थल दक्षिण एवं पिश्चिमी भाग में स्थित है जबिक स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार अधिकांश खुला क्षेत्र (मनोरंजक) उत्तर एवं पूर्व दिशा में होना चाहिये। अतः आमोद — प्रमोद हेतु निर्मित स्थलों का नगरवासियों पर मिश्रित प्रमाव पड़ता है अर्थात नगर वासियों को इन स्थलों से जितनी अधिक मानसिक शान्ति प्राप्त होना चाहिये वह नहीं हो पाती है और इसका नगर के समग्र विकास पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। किन्तु नगर के पिश्चम में स्थित भेड़ाघाट विश्व प्रसिद्ध का एक कारण जहां वहां नर्मदा एवं संगमरमर की प्राप्ति है वहीं दूसरी ओर कल्चुरी ऐतिहासिक शिल्प का प्राप्त होना भी है। यह स्थल जबलपुर नगर सीमा के अन्तर्गत नहीं आता है अतः इस स्थल पर जबलपुर नगर से सम्बन्धित दिशानुरूप स्थापत्य वेद के सिद्धान्त लागू नहीं होते हैं जैसे नगर के पूर्व में स्थित छावनी क्षेत्र।

राजधानी नगर भोपाल सुरम्य पहाड़ियों के मध्य स्थित एक सुन्दर नगर है। यहां पर आमोद प्रमोद के साधनों के विकास की पर्याप्त सम्भावनायें प्रारम्भ से ही रही है तथा स्थानीय अगमोद प्रमोद के साधनों का कुछ सीमा तक सदुपयोग भी किया है। अर्थात यहां पर प्रयाप्त आमोद प्रमोद के साधन उपलब्ध है। यहां नगर के मध्यवर्ती भाग में श्यामला हिल्स, अरेरा हिल्स, चिनार पार्क, यादगार शहाजनी पार्क, केन्द्रीय, पुस्तकालय, लक्ष्मीनारायण मंदिर, अरेरा हिल्स, चिनार पार्क, वाजऊल मस्जिद, पश्चिम में कमला पार्क, किलोल पार्क उत्तर मोती मस्जिद, जामा मस्जिद, ताजऊल मस्जिद, पश्चिम में कमला पार्क, किलोल पार्क उत्तर मोती मुफा मन्दिर, पूर्व में हथाई खेड़ा आग्नेय में लहारपुर भोजपुर 28 कि0मी0 में लालधाटी गुफा मन्दिर, पूर्व में हथाई खेड़ा आग्नेय में लहारपुर भोजपुर 28 कि0मी0 भीमबेटका। भोपाल से 40 कि0मी0 दक्षिण में कलिया स्रोत, केरवा, भदभदा आदि स्थल अवस्थित है। इसके अतिरिक्त नगर में लाल परेड मैदान इकबाल मैदान मानव संग्रहालय एवं अवस्थित है। इसके अतिरिक्त नगर में लाल परेड मैदान इकबाल मैदान मानव संग्रहालय एवं

अनेक छविगृह स्थित है।



की मरिजद, जामा मरिजाद, ताजकत मरिजाद, पश्चिम में दमसा पार्ज, किलांस पार्च उत्तर

राजधानी नगर भोपाल के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नगर के अधिकांश आमोद प्रमोद स्थल नगर के मध्यवर्ती तथा पिश्चमी भाग में स्थित हैं। स्थापत्य वेद के अनुसार वस्तु का मध्यवर्ती भाग खुला क्षेत्र होना चाहिये। अतः सिद्धांत के अनुसार नगर में उपलब्ध मनोरंजक स्थलों का प्रतिकूल प्रभाव की अपेक्षा अनुकूल प्रभात नगरीय वतावरण पर अधिक पड़ता है क्योंकि पिश्चमी भाग में उपलब्ध आमोद—प्रमोद स्थलों की अपेक्षा मध्यवर्ती, उत्तरी एवं पूर्वी भाग में अधिक खुला क्षेत्र है।

## अध्याय - 8

संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों के स्थापत्य विपरीत तत्वों से उत्पन्न ढुष्परिणाम एवं उनकी रोकथाम हेतु सुझाव

## अध्याय - ८

संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों के स्थापत्य विपरीत तत्वों से उत्पन्न दुष्परिणाम एवं उनकी रोकथाम हेतु सुझाव

#### अध्याय - 8

संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों के स्थापत्य विपरीत तत्वों से उत्पन्न दुष्परिणाग एवं उनकी रोकथाम हेतु सुझाव

सामान्य परिचय :

किसी भी नगर का विकास मात्र किसी एक वस्तु या कारक अथवा तत्व का परिणाम नहीं होता है अर्थात किसी भी नगर के विकास नगर से सम्बन्धित सभी भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों के सामंजस्य का परिणाम होता है। अतः किसी नगर का अध्ययन एवं नियोजन करते समय नगर से सम्बन्धित समस्त पहलुओं का ध्यान रखना अति आवश्यक होता है और यदि किसी तत्व अथवा पहलू की उपेक्षा कर दी जाये तो नगर का विकास किसी न किसी स्तर पर अधूरा रहता है वह स्तर चाहे प्राकृतिक हो अथवा मानवीय। नगर नियोजन के इन तत्वों में प्राकृतिक सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। अतः नगर नियोजन के पगाकृतिक सहयोग का अधिकाधिक लाभ नगर वासियों को कैसे प्राप्त हो इस बात का ध्यान रखना अति आवश्यक है। अर्थात नगर नियोजन में स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

स्थापत्य वेद को अनेक विद्वान मात्र सौन्दर्य वृद्धि का शास्त्र मानते हैं जो कि उचित नहीं है स्थापत्य वेद मात्र नगर की सौन्दर्य वृद्धि तक ही सीमित नहीं है वरन् स्थापत्य वेद नगर में सम्पादित विभिन्न प्रकार्यों, सेवा क्षेत्रों, भूमि उपयोग आदि का प्रकृति सहयोग के दृष्टिकोण से उचित मार्गदर्शन प्रदान करता है। अर्थात यदि नगर वासियों को प्रकृति का सहयोग प्राप्त नहीं होगा तो नगर का चहुं मंखी विकास सम्भव नहीं है क्योंकि नगरीय विकास के बल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है वरन सामाजिक सांस्कृतिक विकास होना भी आवश्यक है। जैसे विकास तक सीमित नहीं है वरन सामाजिक सांस्कृतिक विकास होना भी आवश्यक है। जैसे विकास तक सीमित नहीं है वरन सामाजिक सांस्कृतिक विकास होना भी आवश्यक है। जैसे विकास तक नगरीय जीवन अति कष्ट कलकत्ता, कानपुर आदि नगरों में गन्दगी एवं मिलों के धुये के कारण नगरीय जीवन अति कष्ट पर हो गया है, अतः नगर नियोजन का सबसे किठन कार्य यह होता है कि उसे उपलब्ध साध्य पर हो गया है, अतः नगर नियोजन का सबसे किठन कार्य यह होता है कि उसे उपलब्ध साध्य हो। और परिस्थितियों के आधार पर सौन्दर्य, स्वास्थ्य और सुविधा में सन्तुलन स्थापित करना गये अतः नगर का विकास का क्या अर्थ जो विकास के नाम पर विनास का माध्यम बने। पड़ता है। अतएव ऐसे विकास का क्या अर्थ जो विकास के नाम पर विनास का माध्यम बने। अतः नगर का विकास स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुरूप करना ही उचित है, जिससे समस्त अतः नगर का विकास स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुरूप करना ही उचित है, जिससे समस्त अतः नगर का विकास क्यापत्य वेद के सिद्धान्तों करते हुये महिष् महेश योगी की भूतल पर स्वर्ग के अवतरण' की परिकल्पना को चिरतार्थ कर सकते हैं।

# गौतिक रिथति :

किसी भी बस्ती के विकास में भौतिक स्थिति का अत्यनत गहरा प्रभाव पड़ता है। क्यों कि भौतिक स्थिति के आधार पर ही नगर का आर्थिक सामाजिक भौगोलिक ढांचा तैयार होता है। 1 जो कि नगरीय विकास का प्रमुख आधार बनता है। यहां पर भौतिक स्थिति का आशय नगर एवं उसके आस पास के सम्पूर्ण प्राकृतिक परिवेश (जैसे जलवायु, आकार, आकृति उच्चावचन इत्यादि) से है जिसका नगर नियोजन में महत्वपूर्ण स्थान है,<sup>2</sup> तथा इसी आधार पर प्रशासन तन्त्र अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करता है। स्थापत्य वेद की दृष्टि से नगर की वर्गाकार आकृति (Shape) सर्वोत्तम कही गई है। 3 इसके अलावा आयताकार वृत्ताकार एवं अर्धचन्द्राकार में भी नगर नियोजन या निर्माण किया जा सकता है।

संस्कारधानी नगर का अनियमित आकृति में विकास हुआ है। इस नगर का पूर्वी एवं ईशान भाग कटा हुआ है अर्थात नगर निगम सीमा से अलग छावनी क्षेत्र के अन्तर्गत स्थित है, जो कि स्थापत्यवेद की दृष्टि से नगरीय विकास के लिये उपयुक्त नहीं है। क्योंकि स्थापत्य वेद के अनुसार वास्तु का किसी भी दिशा में कम होना विकास के लिये उचित नहीं है। राजधानी नगर भोपाल की ईशान आग्नेय एवं नेऋत्य दिशा का भाग कटा होने के कारण अनियमित आकृति में परिवर्तित हो गया है जो कि नगरीय विकास के लिये भी उचित नहीं माना जाता है।

संस्कारधानी नगर की आकृति के सुधार के लिये छावनी क्षेत्र को नगर निगम सीमा के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाना चाहिये। नगर को पश्चिम की ओर अन्य दिशाओं में नगर की वर्गीकार या आयताकार आकृति हेतु वास्तुशास्त्रानुसार नगरीय सीमाओं का पुनर्निधारण करना चाहिये। इसके अलावा सम्पूर्ण नगर का विकास वर्गाकार उपनगरों में विभाजित कर विकास की योजनायें बनाना चाहिये। यदि उपनगरों की आकृति वर्गाकार सम्भव न हो तो आयताकार, वृत्ताकार, अर्धचन्द्राकार आकृति में भी विभाजित कर विकसित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त दो या दो से अधिक उपनगरों के मध्य 1/4 कि.मी. से 1/2 कि.मी. की सीमा रेखा हरित पटि्टका (Green Belt) के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। सभी उपनगरों

Gallion, Arthur, B., and Eisner, simon, The Urban pattern, city planning and design, New Yark, 1969 P.P. 188

पाठक, गणेश दत्त, (टीकाकार) , विश्वकर्मा प्रकाशः ठाकुर प्रसाद पुस्तक मण्डार, कचौडी गली, वाराणसी, 1995, 1/41

मयमतम्, 10/3

में सभी नगरीय सुविधाओं की व्यवस्था एवं अन्तरिक संरचना वास्तुशास्त्र के अनुसार होना चाहिये इसके अलावा सभी उपनगरों के मध्य में उपनगर के सम्पूर्ण आकार का नौवां भाग खुले मैदान (ब्रह्म स्थल) के रूप में विकसित किया जाना चाहिये जिसे भवातीत ध्यान केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिये किन्तु इस पर किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य अर्थात भवन इत्यादि नहीं निर्मित करना चाहिये।

## 8.2 ओद्योगिक क्षेत्र :

वर्तमान में उद्योगों को आर्थिक दृष्टि से नगरों का प्राणतत्व कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, किन्तु नगर में उद्योगों की स्थिति इस प्रकार से होना चाहिये कि इससे नगर को कोई हानि न हो अर्थात नगर वासियों को किसी भी प्रकार की असुविधा जेसे वायु प्रदूषण, ध्विन प्रदूषण, जल प्रदूषण, भीड़भाड़, झुग्गी झोपड़ी / गन्दी बस्ती का प्रसार आदि समस्याओं का सामना न करना पड़े, और न ही ऐसे स्थान पर स्थित हो जहां पर आवागमन या किसी प्रकार की असुविधा के कारण औद्योगिक विकास में बाधा उत्पन्न हो । इस दृष्टि से स्थापत्य येद में उद्योगों की प्रकृति की दृष्टि से नगर की सम्बन्धित दिशाओं में स्थापित करने का सुझाव दिया गया है। जैसे अस्त्र शस्त्र निर्माण उद्योग को आग्नेय दिशा में स्थापित करने का प्रावधान है।

संस्कारधानी नगर जबलपुर का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र आधारताल एवं रिछाई क्षेत्र है जो कि नगर की उत्तर दिशा में स्थित है इसके अतिरिक्त राइट टाऊन, बल्देव बाग, भरतीपुर, माढोताल, मदन महल, रानीताल आदि में उद्योग केन्द्रित है। इसके अतिरिक्त नगर की ईशान दिशा में जी.सी.एफ. वाहन निर्माणी संस्थान, खमरिया एवं सी.ओ.डी. जैसे रक्षा औद्योगिक संस्थान स्थित हैं। राजधानी नगर भोपाल का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र बी.एच.ई.एल. एवं संस्थान स्थित हैं। राजधानी नगर भोपाल का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र बी.एच.ई.एल. एवं गोविन्दपुरा है जो कि नगर की पूर्व दिशा में तथा मण्डीद्वीप आग्नेय दिशा में स्थित है। इसके अलावा पुरान भोपाल, एम.पी. नगर एवं हबीब गंज में भी अनेक उद्योग स्थित है जो कि भोपाल अलावा पुरान भोपाल, एम.पी. नगर एवं हबीब गंज में स्थित है।

स्थापत्य वेद में उद्योगों की स्थापना नगर की पिश्चमी एवं नैऋत्य दिशा में उपयुक्त माना गया है। किन्तु संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों में यह स्थिति विपरीत पाई जा रही

<sup>5.</sup> शर्मा, सुरेश्वर, विज्ञान भारती प्रदीपिका, अप्रेल 1997

है। वास्तु अर्थात नगर के उत्तरी एवं पश्चिमी गाम को अधिकाधिक खुला (Open) रखने का प्रावधान है और यहीं पर उपर्युक्त नगरों में उद्योगों की स्थापना हुई है। अतः इन नगरों के औद्योगिक विकास में अनेक समस्यायें हैं जहां जबलपुर नगर में बीमार औद्योगिक इकाईयों की संख्या औद्योगिक अवरोध हेतु पर्याप्त है वहीं भोपाल नगर में 1998 — 99 में 22 मध्यम वर्गीय (25 लाख से 3 करोड़ तक निवेश) में से 7 बन्द हो चुके हैं एवं मात्र 15 संचालित हैं। इसी प्रकार जबलपुर में 25 लाख से 3 करोड़ लागत के एक भी उद्योग पंजीकृत नहीं है। भोपाल नगर के गोविन्दपुरा एवं बी.एच.ई.एल. क्षेत्र के विकास में भी स्थापत्य वेद का पर्याप्त योगदान है क्योंकि जहां यह नगर के लिये स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार प्रतिकूल दिशा में स्थित है वहीं दूसरी ओर इसकी आन्तरिक संरचना स्थापत्यवेदानुसार है। अतः राजधानी नगर का औद्योगिक विकास उसकी स्थिति के अनुरूप जितना होना चाहिये था नहीं हो पाया है इसके विपरीत इसके निकटवर्ती इन्दोर देवास जैसे नगरों का पर्याप्त औद्योगिक विकास हुआ है इसी प्रकार जबलपुर नगर आर्थिक दृष्टि से विकास की समस्त सम्भावनायें होते हुये भी पर्याप्त मात्रा में अविकसित है।

अतएव दोनों नगरों का औद्योगिक पुनर्नियोजन आवश्यक प्रतीत होता है। जबलपुर नगर के औद्योगिक क्षेत्र आधारताल एवं रिछाई का आन्तरिक प्रतिस्थापन (पुनर्नियोजन) स्थापत्य वेद के अनुरूप किया जाना चाहिये एवं इस क्षेत्र में उद्योगों की स्थापना पर रोक लगाना चाहिये। नगर के औद्योगिक विकास हेतु नगर के पिश्चिमी भाग में मेड़ाघाट के पास नये उद्योगों की स्थापना करना उचित होगा। नगर में रिथित रक्षा आयुध निर्माणी संस्थानों का वर्तमान स्थानों से उनका स्थान परिवर्तन अत्यन्त व्यय साध्य एवं किवन होगा इसिलये उनका केवल क्षेत्रीय एवं आन्तरिक पुनर्नियोजन स्थापत्य वेद के अनुरूप किया जाना चाहिये। इसके अलावा नगर के मध्यवर्ती भाग जैसे रानीताल, नेपियर टाउन, राइट आउन, भरतीपुर आदि में स्थित उद्योगों के नगर के पिश्चिमी भाग या नैऋत्य में स्थान्तरित कर दिया जाना चाहिये।

भोपाल नगर के औद्योगिक विकास हेतु वर्तमान औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, बी.एच.ई.एल. एवं मण्डीद्वीप में नये उद्योगों की स्थापना पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये तथा नया औद्योगिक क्षेत्र नगर के नैऋत्य दिशा में नगर के वाह्य भाग में विकसित किया जाना चाहिये। क्यों कि नगर के पश्चिम में बड़ा तालाब स्थित है जो कि नगरीय जल आपूर्ति का एक अतिमहत्वपूर्ण नगर के पश्चिम में बड़ा तालाब स्थित है जो कि नगरीय जल आपूर्ति का एक अतिमहत्वपूर्ण

<sup>6.</sup> औद्योगिक विकास निगम कार्यालय, भोपाल, से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ।

साधन है अतः नगर के पश्चिमी भाग में उद्योगों की स्थापना जल प्रदूषण की दृष्टि से उचित नहीं है। अतः नगर की नैऋत्य दिशा में नवीन औद्योगिक केन्द्र की स्थापना उचित है तथा यहां पुराने भोपाल, एम.पी. नगर, हबीब गंज आदि क्षेत्रों में स्थापित उद्योगों का स्थानान्तरण कर देना चाहिये।

## 8.3 व्यापारिक क्षेत्र :

जबलपुर नगर संस्कारधानी का प्रमुख व्यवसायिक केन्द्र बड़ा फुहारा नगर के उत्तर मध्य में स्थित है। यहां नगर ही नहीं वरन क्षेत्र के प्रमुख थोक एवं फुटकर व्यवसायिक संस्थान हैं। यहां पर प्रमुख रूप से अनाज, सब्जी, फल, कपड़ा, फुटवेयर, इलेक्ट्रानिक्स पार्टस, सोना, चांदी, महिला सौंदर्य प्रसादधन स्टोर्स, बर्तन भण्डार इत्यादि स्थित हैं। नगर के वायव्य में मढ़ाताल एक नवीन औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है यहां पर वस्त्र, सिनेमा, होटल व्यवसाय प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है। इसके अलावा सम्पूर्ण नगर जैसे सदर, गोरखपुर, मदन महल, गढ़ा त्रिपुरी, रामपुर, रेल्वे स्टेशन (इन्द्रा मार्केट) आधारताल, रांझी, गोकलपुर, दमोह नाका इत्यादि भी नवीन व्यवसायिक केन्द्र के रूप में विकसित हो रहे है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण नगर में विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक प्रतिष्ठान स्थित हैं।

भोपाल नगर राजधानी का प्रमुख व्यवायिक केन्द्र पुराना भोपाल में नगर के उत्तर दिशा में मंगलवारा, बुधवारा, इतवारा, लोहा मण्डी आदि के नाम से स्थित है। नगर का दूसरा व्यवसायिक केन्द्र तात्याटोपे नगर के पिश्चम में वैरागढ़ के नाम से प्रसिद्ध है जो कि नगर की दक्षिण दिशा में स्थित है। उपर्युक्त व्यापारिक केन्द्रों में प्रमुखतया कपड़ा, हार्डवेयर, अनाज, फल, सब्जी, होटल, व्यवसाय, सिनेमा व्यवसाय की प्रधानता है। शाहपुरा, शिवाजी नगर, एल, सब्जी, होटल, व्यवसाय, सिनेमा व्यवसाय की प्रधानता है। शाहपुरा, शिवाजी नगर, रिविशंकर बाजार, बी.एच.ई.एल. गोविन्द पुरा, पिपलानी आदि नवीन व्यवसायिक केन्द्र के रूप में विकसित हो रहे है।। इसके अलावा सम्पूर्ण नगर में दैनिक उपभोग की वस्तुओं के फुटकर केन्द्र बिखरे हुये हैं।

स्थापत्य वेद के सिद्धान्तानुसार नगर का प्रमुख व्यवसायिक संस्थान उत्तर में होना चाहिये। र् इस दृष्टि से जबलपुर नगर में व्यवसाय विकसित अवस्था में है। किन्तु इसका प्रत्यक्ष एवं पूर्ण लाभ नगर को नहीं मिल पाने का प्रमुख कारण इस क्षेत्र की आन्तरिक संरचना

<sup>7.</sup> शर्मा, सुरेश्वर वही पृ. क्र. 69

स्थापत्य वेद के अनुरूप न होना है जैसे फुहारा उत्तर में सूनरहाई अर्थात आभूषण केन्द्र स्थित हैं जो कि आग्नेय दिशा में होना चाहिये था। इसी प्रकार होटल व्यवसाय नगर की वायत्य दिशा में स्थित है। जिसे आग्नेय दिशा में स्थित होना चाहिये। 8 अतः जबलपुर नगर के व्यवसायिक क्षेत्र के आन्तरिक पुनर्नियोजन को आवश्यकता अनुभव की जा रही है। अतः इस क्षेत्र के आन्तरिक भाग का स्थापत्य वेदानुरूप नियोजन किया जाना चाहिये। राजधानी नगर भोपाल के उत्तर में पुराने भोपाल में स्थापित व्यवसायिक क्षेत्र स्थापत्य वेद के अनुरूप है जो कि स्वभाविक रूप से विकसित अवस्था में दृष्टि गोचर होना है। नगर के दक्षिण में स्थापित तात्या टोपे नगर एवं बैरागढ़ का आन्तरिक स्थापन स्थापत्य वेद के अनुरूप होने का कारण विकसित है किन्तु उत्तर में स्थापित क्षेत्र की अपेक्षा अभी भी विकास यात्रा में पीछे है जबिक यहां पर उत्तरी क्षेत्र की अपेक्षा अधिक सुविधायें उपलब्ध हैं। अतएव नगर के दक्षिण भाग में व्यवसायिक प्रतिष्ठानों की स्थापना को रोकने के उपाय करना चाहिये तथा उत्तर में व्यवसाय हेतु और अधिक भूमि का विकास करना चाहिये तथा नगर के अन्य व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को स्थापत्य वेद के अनुरूप स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिये।

8.4 जल आपूर्ति :

जीवन के तीन प्रमुख मूलाधारों (जल, वायु एवं भोजन) में जल एक अतिविशिष्ठ घटक है अतएव प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुरूप स्वस्छ जल की प्राप्ति अत्यन्त आवश्यक एउवं आधार भूत कार्य है।। जबलपुर नगर में जल पूर्ति के प्रमुख तीन स्त्रोत हैं ईशान में परियट जलाशय (9मि.गै./दि), पूर्व, आग्नेय में खंदारी एवं गौर नदी (5 मि. गै. दिन) तथा दक्षिण में नर्मदा नदी (9 मि.गै. दिन) इसके अतिरिक्त 4 गैलन प्रतिदिन ट्यूबेल एवं हेण्ड पम्प द्वारा जल प्राप्त किया जाता है। अतः नगर में प्रतिदिन कुल 27 मिलियन गैलन जल की आपूर्ति विभिन्न स्त्रोतों से की जाती है जबकि नगर मे जल की आवश्यकता 36 मिलियन गैलन प्रतिदिन है अर्थात 9 मिलियन गैलन जल की प्रतिदिन आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती इसके परिणाम स्वरूप नगर मे जल का आभाव महसूस किया जाता है कभी – कभी तो इसके चलते सार्वजनिक नलों पर पानी के कारण झगड़े तक होते देखे गये हैं। अर्थात नगर की कुल आवश्यकता का मात्र 75 प्रतिशत जल की ही पूर्ति की जाती है तथा 25 प्रतिशत जल की कमी अनुभव की जाती है।

पाठक, गणेश दत्त, वही 2/94



भोपाल नगर राजधानी में मुख्य जल स्त्रोत नगर के पश्चिम में स्थित बड़ा तालाब है जहां से नगर को प्रतिदिन 26 मिलियन जल प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त 21 मिलियन गैलन प्रतिदिन दक्षिण कोलार बांध से 1.5 मिलियन गैलन/दिन पूर्व में हताई खेड़ा एवं 5 मिलियन गैलन ट्यूबबेल आदि द्वारा प्रदान किया जाता है। नगर को कुल 56 मिलियन गैलन जल की प्रतिदिन आवश्यकता होती है। जबिक नगर में कुल आवश्यकता का 95.53 प्रतिशत 53.5 मिलियन गैलन प्रतिदिन जल ही प्रदान किया जाता है। अर्थात 4.47 प्रतिशत जल की कमी नगर में अनुभव की जाती है।

संस्कारधानी नगर जबलपुर प्रदेश का एक मात्र ऐसा नगर है जो जल पूर्ति की दृष्टि से स्वयं पूर्ण है, किन्तु यह नगर का बहुत बड़ा दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि यह सब होते हुये नगर में 25 प्रतिशत जल का आभाव रहता है। यह भरे कुआं में मेंढक प्यासा को चरितार्थ करने वाला तथ्य कहा जाये तो कोई अतिश्योंकित न होगी। वस्तुतः नगर में इस जल आभाव का एक प्रमुख कारण स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल जल स्त्रोतों का स्थापित होना भी प्रतीत होता है। इससे न केवल जल की कमी का अनुभव होता है। वरन् नगर वासियों को कई बार प्रदूषित जल भी प्राप्त होता है। जो कि नगर वासियों के स्वास्थ्य के प्रतिकूल है। यदि यही स्थिति रही और जल की आवश्यकता इसी गित से बढ़ी तो एक अनुमान के अनुसार सन् 2005 में नगर को 48 गैलन प्रतिदिन जल की आवश्यकता होगी<sup>10</sup> अर्थात 2005 तक 21 गैलन प्रतिदिन जल आपूर्ति की व्यवस्था करना होगा । इस समस्या के समाधान के लिये बरगी बांध राइट विंग के नाले के द्वारा लगभग 12 मिलियन गैलन प्रतिदिन जल आपूर्ति की योजना बनाई जा रही है जिसके शुद्धिकरण संयंत्र नगर के दक्षिण में स्थित ललपुर में स्थापित करने का प्रावधान है। यह योजना भी ऋटि विहीन नहीं है एक तो जल शुद्धि करण संयंत्र नगर के दक्षिण में स्थापित किया जा रहा है जो कि स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है।16 द्वितीय इस योजना के कियान्यवयन के पश्चात भी रनगर को मात्र 39 मिलियन गैलन प्रतिदिन जल की आपूर्ति की जा सकेगी अर्थात 9 मिलियन गैलन (25 प्रतिशत) प्रतिदिन जल का आभाव बना रहेगा तो इस योजना के कियान्यवयन का क्या औचित्य है। प्रशासन को जगह जल स्त्रोत स्थापित करने की अपेक्षा किसी एक बड़े स्त्रोत की तलाश करना चाहिये जो न तो स्थापत्य वेद के विपरीत हो और न ही जल की आपूर्ति असक्षम सिद्ध हो। इसके लिये परियट नदी में कलेक्टर वेल स्थापित कर जल आपूर्ति की जानी चाहिये यदि इससे नगर को

<sup>9.</sup> जबलपुर विकास योजना प्रारूप 2005 पृ. 60

<sup>10.</sup> उपरोकत, 56

म समाम है। यह योजना भी ऋदि विहीन नहीं है एक तो जल शुद्धि करण सर्वज्ञ मनद्र क

वंदन में स्थापित किया जो रहा है जो कि स्थापत्य देंट के सिद्धानों से प्रतिमृत है एक

जल की मांग पूरी नहीं होती है तो भेड़ाघाट में जल शोधन संयंत्र स्थापित किया जाना उचित प्रतीत होता है। प्रथम तो यह स्थापत्य वेद के अनुकूल है द्वितीय नर्मदा नदी से पर्याप्त जल की पूर्ति की जा सकती है। प्रारम्भ में यह योजना आवश्यक ही कुछ व्यय साध्य प्रतीत हो किन्त् 25 – 30 वर्षों के भविष्य को ध्यान में रखकर उचित है।

भोपाल नगर, राजधानी में बड़ा तालाब हथाई खेड़ा स्थापत्य वेद के अनुरूप है जबकि कोलार बांध इसके विपरीत इस नगर में 2.5 मिलियन गैलन जल का आभाव रहता है। बड़े तालाब की जल प्रदाय क्षमता 28 मिलियन गैलन प्रतिदिन है जबकि उससे केवल 26 मिलियन गैलन ही आपूर्ति की जा रही है अतः इस जल स्त्रोत का प्रशासन को पूरा लाभ उठाना चाहिये। किन्तु भविष्य में जल की मांग इसी गति से बढ़ती रही तो सम्भावना है कि सन् यह 100 मिलियन गैलन प्रतिदिन 17 अर्थात वर्तमान आपूर्ति से लगभग दुगनी हो जायेगी इस लिये आवश्यक है कि समय रहते नवीन जल स्त्रोतों की खोज आवश्यक हो गई है। इस समस्या के समाधान के लिये प्रशासन नर्मदा नदी से जल आपूर्ति की योजना पर विचार कर रहा है। भोपाल नगर से नर्मदा नदी लगभग 40 कि.मी. दूर होने के कारण यह योजना अत्याधिक व्ययशील प्रतीत हो रही है वहीं दूसरी ओर नर्मदा नदी नगर के दक्षिण में स्थित होने के कारण स्थापत्य वेद के अनुकूल नहीं है। अतएव इस आधार पर नगर के आस पास ही जल स्त्रोतों को विकसित करना अनिवार्य प्रतीत होता है। इस समस्या के समाधान हेतु भोपाल नगर के उत्तर में हलाली नदी पर जल आपूर्ति हेतु जल स्त्रोत विकसित किया जाना चाहिये एक ओर तो यह नर्मदा नदी की अपेक्षा कम व्यय साध्य होगा द्वितीय स्थापत्य वेद के अनुकूल होगा इसके अलावा बड़े तालाब को प्रदूषण से मुक्त कराना चाहिये जिससे न केवल स्वच्छ जल की आपूर्ति सम्भव होगी वरन् इसकी जल पूर्ति क्षमता में भी वृद्धि होगी तथा छोटे तालाब भी जल आपूर्ति संयंत्र स्थापित करना चाहिये। इसके अलावा जल की और अधिक आवश्यकता हो तो नगर के ईशान में स्थित झिरिया खेड़ा तालाब से जल आपूर्ति की योजना बनानी चाहिये और झिरिया खेड़ा जैसे तालाबों को और अधिक विस्तृत कर उनकी जल आपूर्ति क्षमता में वृद्धि करना चाहिये।

8.5 जल मल निकासी व्यवस्था :

नगर के स्वस्थ्य वातावरण के लिये जल मल निकास एवं व्यवसायिक तथा औद्योगिक क्षेत्र के अवशिष्ट पदार्थों का उचित निकास अतिआवश्यक है। जबलपुर नगर का जल – मल

कर कामक व्यक्ति रामा कराय क्रम कर सक्ति की क्रम प्रकार का ता वार के तीन

निकास प्रमुख रूप से ओमती नाला तथा मोती नाला के माध्यम से होता है। ओमती नाला नगर के ईशान में स्थित परियट नदी में मिल जाता है जो कि हिरन नदी के माध्यम से नर्मदा नदी में मिल जाता है। इसी प्रकार मोती नाला नगर की पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होता हुआ खंदारी में मिल जाता है जो कि नर्मदा नदी की सहायक नदी गौर के माध्यम से नर्मदा में मिल जाता है। इसके अलावा वर्षा ऋतु में नगर के अनेक भागों जैसे ओमती एवं मोती नाला के निकटवर्ती भाग, राइट टाउन, मदन महल, गोहलपुर, बल्देव बाग, भानतलैया, गढ़ा पुरवा, इत्यादि में पानी निकासी की अत्यन्त गम्भीर समस्या उत्पन्न हो जाती है तथा लोगों के घरों में पानी भर जाता है जिससे अनेक घर क्षतिग्रस्त हो जाते है।

भोपाल नगर, राजधानी का जल – मल निकास अनेक छोटी – छोटी नालियों के माध्यम से प्रमुख रूप से तीन नालों / निदयों द्वारा नियन्त्रित होता है। प्रथम नगर के ईशान भाग का जलमल निकास हलाली नदी में, दक्षिण एवं नैऋत्य का कित्यासोत में तथा पश्चिम का जल मल निकास कोलार नरदी में होता है। हलाली एवं कितया सोत आगे जाकर यह जल मल बेतवा नदी में प्रवाहित कर देती है।

संस्कारधानी नगर की जल मल निकासी व्यवस्था न केवल स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है, वरन् सर्वथा अनुचित भी है। नगर का सम्पूर्ण जल मल किसी न किसी माध्यम से नर्मदा नदी में प्रवाहित होता है जबिक नर्मदा नदी न केवल जबलपुर नगर के जल स्त्रोत रूप में विकसित की जा सकती है, वरन नर्मदा के अनेक तटवर्ती नगरों की जल आपूर्ति का एक प्रमुख स्त्रोत है। मोती नाला एवं ओमती नाला खुले नाला है अतः इसका नगरवासियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वहीं दूसरी ओर नगर में जल आपूर्ति के प्रमुख स्त्रोत परियट एवं खंदारी में जाकर उपरोक्त दोनों नाले सम्पूर्ण नगर का अपशिष्ट ले जाकर समाहित कर देते हैं अतएव यह नगरीय स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यन्त चिन्ता का विषय है।

भोपाल नगर, राजधानी के न्यू भोपाल (तात्या टोपे नगर, शिवाजी नगर, अरेरा कालोनी आदि) क्षेत्र तथा पुराने भोपाल के कुछ भाग में जल मल निकासी व्यवस्था की गई है जो कि स्थानीय आधार पर तो आंशिक रूप से ठीक है किन्तु यह भी अन्त में किसी न किसी प्रकार जल स्त्रोत में जाकर एकत्रित होता है अतः यह भविष्य की दृष्टि से न केवल अनुचित है वरन् नगरीय स्वास्थ्य के लिये हानिकारक भी है। नगर के ईशान भाग का अपशिष्ट पदार्थ हलाली

क करने सर्वता अनुधित भी है। नगर का सन्तुर्थ प्रस पत किसी न किसी वाल्यम में

नंग नदी में प्रमाहित होता है जबकि नर्मदा नदी न केवल लवलापुर त्रकर के बोल प्रमांच कप

नदी में प्रवाहित हेता है जो कि भावी जल पूर्ति का उत्तम स्त्रोत है, दक्षिण एवं नैऋत्य भाग का जल मल कलिया सोत नदी में प्रवाहित होता है जो कि आगे जाकर बेतवा नदी से मिल जाती है। केरवां बांध एवं कलिया सोत सिंचाई की एवं औद्योगिक जल आपूर्ति की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण जल स्त्रोत है अतएव इनमें जलमल का प्रवाह नगरीय दृष्टि से अहितकर है। इसके अलावा छोटा तालाब एवं बड़े तालाब के चारों ओर गन्दगी का सामराज्य है इससे न केवल नगरीय वातावरण प्रदूषित हो रहा है वरन् जल को प्रदूषित कर नगर में अनेक बीमारियों को आमंत्रित कर रहे है। जबलपुर नगर, संस्कारधानी में उचित जलमल निकासी प्रबन्ध न होने से सदैव ही अनेक प्रकार की बीमारियों के फैलने की आशंका बनी रहती है।

### 8.6. परिवहन तन्त्र :

जबलपुर नगर, संस्कारधानी एवं भोपाल नगर राजधानी की परिवहन व्यवस्था आंशिक रूप से स्थापत्य वेद के अनुरूप है। किन्तु नगर के अन्दर स्थापत्य वेद का पालन नहीं किया गया है। स्थापत्यवेद के अनुसार नगर के मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम होना चाहिये। 11 जबलपुर नगर में राष्ट्रीय राजमार्ग क्र0 7 नगर के उत्तर से प्रवेश दक्षिण से होता हुआ नागपुर चला जाता है। यह मार्ग नगर के बाहर तक तो सीधा आता है किंन्तु नगर मे प्रवेश कर टेड़ा मेड़ा एवं अतिक्रमण ग्रस्त हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप इस मार्ग सदैव ही प्राणघातक दुर्घटनायें होती रहती है। इसी दृष्टि से इस मार्ग में आंशिक रूप से परिवर्तन किया गया है अब यह मार्ग नगर के मध्य से गुजरने की अपेक्षा नगर के बाहर से बाईपास रोड के रूप में इसका निर्माण किया गया है। किन्तु यह भी ऋटि विहीन नहीं है। प्रथम तो यह नगर के वर्तमान विस्तार के आधार पर बनाया गया है। यदि नगर का 15 – 20 वर्षों तक इसी गति से विस्तार होता रहा तो 20 - 25 वर्षों में यह मार्ग पुनः नगर के मध्य से गुजरने लगेगा जिससे फिर वहीं दुर्घटनाओं का सिलसिला प्रारम्भ हो जायेगा। द्वितीय यह नगर को अर्घ वृत्ताकार रूप में सीमांकित करता हुआ जाता है जो कि स्थापत्य वेद कि सिद्धान्तों के विपरीत है। राष्ट्रीय राजमार्ग क्र0 12 स्थापत्य वेद के अनुरूप है। जबकि राजमार्ग क0 37 नगर के आग्नेय से प्रवेश कर वायत्य में दमोह को जाता है जो कि स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं है। इसके अलावा राजमार्ग कमांक 22 डिंडोरी से नरसिंहपुर को अर्थात पूर्व से पश्चिम को जाता है जो कि आंशिक रूप से स्थापत्य वेद के प्रतिकूल है। इसके अलावा नगर की अन्य सड़के टेड़ी मेड़ी तथा यातायात दबाव की दृष्टि से बहुत अधिक सकरी है जिसके कारण पर्याप्त दुर्घटनायें होती रहती है। (सारणी क0 8.2. देखिये)

<sup>11.</sup> मयमतम् 10/18

े हर जागरपाये ह के वानुसार नगर के गुस्स नामं सारार से दक्षिण एव पूर्व से कांत्रमा बीचा

भोपाल नगर, राजधानी में वेरिसया रोड उत्तर से दक्षिण एवं रायसेन रोड पूर्व से पिश्चम को जाती है जो कि स्थापत्यवेद के अनुकूल है। इसके अलावा अनेक मार्ग स्थापत्य विपरीत भी है जैसे विदिशा मार्ग जिनका नगरीय यातायात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नये भोपाल, बी.एच.ई.एल. आदि क्षेत्र में अधिकांश मार्ग यातायात दबाव एवं स्थापत्य वेद के अनुरूप है जबिक पुराना भोपाल मे यातायात मार्ग यातायात दबाव की दृष्टि से पर्याप्त संकीर्ण है।

संस्कारधानी एवं राजधानी नगर में यातायात के पुनर्नियोजन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। संस्कारधानी नगर के फुहारा, ओमती, आधारताल, स्टेशन रोड, गोरखपुर, रांझी, सनरहाई, नुनहाई, अन्धेरदेव, करमचंद चौक, बस स्टैण्ड, ज्योति टॉकीज, बेलबाग, बल्देवबाग, गोहलपुर आदि क्षेत्रों मे तथा पुराने भोपाल में मार्ग अत्यन्त संकीर्ण है जिसके कारण सदैव द्र्घटनाओं की आशंका बनी रहती है अतएव इन क्षेत्रों में मार्ग चौड़ीकरण की आवश्यकता है। इसके अलावा सम्पूर्ण नगर में कुछेक मार्गों को छोड़कर एकांगी मार्ग (वनचे ट्राफिक) का आभाव है तथा पर्याप्त यातायात संकेतक नहीं है। अतः सम्पूर्ण नगर के प्रमुख मार्गों में (एक मार्गी यातायात) प्रणाली लागू किया जाना चाहिये और एक ओर के मार्ग की कम से कम 20 से 25 मीटर चौड़ाई होनी चाहिये जैसा कि रामपुर रोड है । इसके अलावा इसे 2-4 मीटर चौड़े रोड विभाजकों का निर्माण करना चाहिये जिनके मध्य वृक्ष लगाना चाहिये इससे जहां एक ओर पर्यावरण प्रदूषण कम होगा वहीं नगर की सुन्दरता में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त मार्ग में व्याप्त अतिकमण को हटाना चाहिये और पार्किंग की मार्ग से किनारे अलग व्यवस्था करनी चाहिये क्यों कि फुहारा क्षेत्र में मार्ग के मध्य में ही वाहन पार्किंग की व्यवस्था कर दी गई है जो कि गलत है। मार्गों में हांथ ठेला आदि में सामग्री विकय पर रोक लगा कर उन्हें बिकी हेतु उपयुक्त स्थल का उपलब्ध करना चाहिये इसके अलावा नगर मे व्यापक रूप से यातायात नियम बनाकर कड़ाई से पालन कराना चाहिये। इसके अतिरिक्त कुछेक क्षेत्रों जैसे जबलपुर में सब्जी मण्डी या भोपाल नगर के मंगलवारा में स्थित सब्जी मण्डी या कृषि उपज मण्डी में चौपहिया वाहनों पर रोक लगाना चाहिये। नगर के प्रमुख मार्गों मे पैदल चलने वालों, दुपहिया वाहनों, चौपहिया वाहनों के लिये पृथक – पृथक मार्ग का निर्धारण करना चाहिये एवं सभी चौराहों एवं तिराहों मे यातायात संकेत एवं महत्वपूर्ण चौराहों एवं तिराहों में यातायात नियंत्रक कर्मचारियों की व्यवस्था करना चाहिये। नगर में टैम्पू चालन पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगाकर नगर मे मिनी बस सेवा का संचालन करना चाहिये।

तालिका क. 8.4 संस्कारधानी नगर में स्थित विभिन्न तत्वों से उत्पन्न स्थापत्य वेदानुसार प्रमाव :

| क0 तत्व/कारक                     | अनुकूल         | प्रतिकूल             | प्रभाव        |  |
|----------------------------------|----------------|----------------------|---------------|--|
| 1. आकृति (Shap                   | oe) -          | अनियमित              | अशुभ          |  |
| 2. भौतिक स्थिति                  | THE THE        | प. ढाल, पू. भाग      | विकास में     |  |
| आंद्योगिक क्षेत्र                |                | कटा, पूर्व मे सीता   | बाधक          |  |
| धापारिक क्षेत्र                  |                | पहाड़, द. में नर्मदा |               |  |
| णस स्त्रोत                       |                | नदी                  |               |  |
| 3. जल स्त्रोत                    | ईशान एवं पूर्व | दक्षिण               | मिश्रित       |  |
| 4. औद्योगिक                      | असिकास अक्ष    | उत्तर दिशा में       | औद्योगिक      |  |
|                                  |                | स्थित                | विकास में     |  |
|                                  |                |                      | बाधक          |  |
| 5. व्यापारिक क्षेत्र             | उत्तर मध्य में | _                    | विकास में     |  |
| प्रशासनिक होत                    | 47.4           |                      | सहायक         |  |
| 6. जलमल निकासी                   | _              | उत्तर एवं पूर्व में  | स्वास्थ्य के  |  |
|                                  |                |                      | लिये हानिप्रद |  |
| 7. याताघात तन्त्र                | -              | अधिकांश सड़कें       | अशुभ          |  |
| طاراالطرار وحايا                 |                | टेड़ी मेड़ी मोडदार   |               |  |
| 8. प्रशासनिक क्षे <del>त्र</del> | मध्य में       | -                    | विकास में     |  |
|                                  |                |                      | सहायक         |  |
|                                  |                |                      |               |  |

तालिका क. 8.4 राजधानी नगर में स्थित विभिन्न तत्वों से उत्पन्न स्थापत्यवेदानुसार प्रभाव :

| <b>Φ</b> 0 | तत्व / कारक       | अनुकूल          | प्रतिकूल      | प्रभाव          |
|------------|-------------------|-----------------|---------------|-----------------|
| 1.         | आकृति (Shape)     | -               | तारा प्रतिरूप | अशुभ            |
| 2.         | भौतिक स्थिति      | वास्तु अनुकूल   | _             | विकास में सहायक |
| 3.         | औद्योगिक क्षेत्र  | -               | पूर्व में     | प्रतिकूल        |
| 4.         | व्यापारिक क्षेत्र | उत्तर मध्य में  | दक्षिण में    | मिश्रित         |
| 5.         | जल स्त्रोत        | पश्चिम में      | -             | शुभ             |
| 6.         | जल मल निकासी      | नै ऋत्य         | -             | शुभ             |
| 7.         | यातायात तन्त्र    | अधिकांश सड़कें  | _             | शुभ             |
|            |                   | सीधी पूर्व से   |               |                 |
|            |                   | पश्चिम तथा      |               |                 |
|            |                   | उत्तर से दक्षिण |               |                 |
| 8.         | प्रशासनिक क्षेत्र | मध्य में        | -130          | विकास मे सहायक  |
|            |                   |                 |               |                 |



संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों का तुलनात्मक अध्ययन



# अध्याय 9 संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों का तुलत्नात्मक अध्ययन

म्मिका

किसी भी प्रकार की मानवीय बस्ती अथवा नगर का विकास किसी एक मात्र तत्व अथवा कारक का परिणाम नहीं होता है वरन् उस विकास के पीछे समस्त आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं भौगोलिक तथा प्राकृतिक कारकों का सम्मिलित रूप से योगदान रहता है। जैसे किसी स्थान पर लौह अयस्क के पर्याप्त भण्डार है, किन्तु शक्ति के साधन अथवा श्रम शक्ति या अर्थ के आभाव मे वहां का विकास सम्भव नहीं है। अतः किसी भी नगर के उत्तम विकास में जहां एक ओर आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सामाजिक कारक अपनी अहम् भूमिका का निर्वाहन करते हैं तो वहीं दूसरी ओर भौगोलिक, प्राकृतिक तत्वों के आभाव में उपरोक्त कारक किसी भी आदर्श नगर के विकास में विकलांग सिद्ध होंगे और प्राकृतिक सहयोग (Natural Sport) के दृष्टिकोण से अथवा प्राकृतिक नियमों के आधार पर ही स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है और इसी आधार पर एक आदर्श नगर की स्थापना की जा सकती है । जहां पर न केवल आर्थिक दृष्टि कोण से बस्ती को नगर का दर्जा प्राप्त होता है वरन् सामाजिक दृष्टिकोण से भी वह बस्ती एक आदर्श नगर कहलायेगी। क्योंकि कोई भी बस्ती केवल कार्यो अथवा इमारतों या जनसंख्या के आधार पर आदर्श नगर का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकती है। वस्तुतः वहां निवासित समाज के आधार विचार भी नगर को आदर्श नगर बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करते हैं और किसी भी समाज के आचार विचार पर आस पास के प्राकृतिक परिवेश का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। जैसे किसी कारखाने अथवा भीड़ – भाड़ प्रदूषण वाले इलाके में रहने वाला तमोगुण (क्रोधी) प्रधान होगा इसके विपरीत धार्मिक एवं शांत क्षेत्र में रहने वाला व्यक्ति शान्तिप्रिय एवं शतोगुण प्रधान होगा। अतः वर्गेल महोदय ने ठीक ही कहा है – 'नगर से तात्पर्य जन समूह से है। निवास स्थान एवं आयोजन आवश्यक है, परन्तु एक मेव है। यह सम्भव है कि सामाजिक आयोजन एवं भौतिक आयोजन के आधार पर संगठित एक सुन्दर नगर का निर्माण हो जाये फिर नगर एक भोपाल (Empty Shell) बना रहेगा। नगर का विकास एवं अस्तित्व जन समुहों की प्रकृति एवं सामाजिक मूल्यों पर निर्भर है।

जबलपुर नगर, संस्कारधानी एवं भोपाल नगर, राजधानी अपनी विकास यात्रा में उन्नित एवं अवनित के अनेक सोपानों को पार कर आज वर्तमान स्थित मे पहुंचे हैं। जहां एक ओर संस्कारधानी नगर जबलपुर का अपना एक गौरवमयी अतीत साथ में है तथा अनेक महापुरूषों जैसे महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, आचार्य रजनीश, महर्षि महेश योगी आदि के नगर से जुड़े होने के कारण नगर को प्रसिद्धि प्राप्त हुई है वहीं दूसरी ओर भोपाल नगर प्रदेश की राजधानी के साथ — साथ प्रारम्भ से ही राजनैतिक केन्द्र बिन्दु रहा है तथा वर्तमान में एक औद्योगिक नगर के रूप में भी विकासशील है। विभिन्न कालखण्डों में इन दोनों नगरों की विकास दर भी भिन्न — भिन्न रही है तथा वर्तमान में यह विकास दर अथवा अविकसित स्थिति प्रमुख रूप से भिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होती है —

- 9.1 भूमि उपयोग
- 9.2 आर्थिक रिथति
- 9.3 गन्दी बस्तियों की स्थिति
- 9.4 प्रशासनिक क्षेत्र

### 9.1 भूमि उपयोग :

संस्कारधानी एवं राजधानी नगरों की वर्तमान अवस्था किसी कालखण्ड विशेष अथ्वा किसी एक कारक या तत्व विशेष की देन नहीं है वरन् इन दोनों नगरों का विकास विभिन्न कालखण्डों में अविराम विकास का परिणाम है तथा इन कालखण्डों में नगरीय भूमि उपयोग की दर भी भिन्न — भिन्न रही है तथा इस भूमि उपयोग पर समस्त भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आदि कारकों का सम्मिलित रूप से प्रभाव पड़ा है। अतः वर्तमान में संस्कारधानी नगर जबलपुर की 1991 में प्रस्तावित 7200 हेक्टेयर भूमि में से मात्र 4520 हेक्टेयर भूमि का ही विकास हो सका है अर्थात अभी तक प्रस्तावित भूमि उपयोग का मात्र — प्रतिशत ही विकास सम्भव हुआ है जबिक प्रतिशत विकास शेष है इसके

<sup>।.</sup> खरे, पी.एन. नगरीय समाजशास्त्र, पृ. 102

क्षांत्री क्षांत्रिक

विपरीत राजधानी नगर भोपाल का 1991 में प्रस्तावित हेक्टेयर भूमि में से हैक्टेयर भूमि का विकास हो चुका है अर्थात प्रस्ताविक कुल भूमि उपयोग का प्रतिशत विकास हो चुका है और शेष मात्र प्रतिशत भूमि का विकास मात्र रह गया है अर्थात लगभग 26 प्रतिशत भूमि उपयोग विकास का अन्तर है।

तालिका क0 9.1 संस्कारधानी एवं राजधानी नगर भूमि उपयोग वितरण

| क0 मूमि उपयोग        | संस्कारधा          | नी         | राजधानी            | e A Su    | अन्तर      |
|----------------------|--------------------|------------|--------------------|-----------|------------|
| मजोर हुआ है वहीं। भा | मूमि उपयोग         | प्रतिशत    | मूमि उपयोग         | प्रतिशत   | जारिका     |
| र से सुद्द हुआ है।   | क्षेत्रफल (हे.में) |            | क्षेत्रफल (हे.में) |           |            |
|                      | Net To My          |            |                    |           |            |
| 1. आवासीय            | 2328               | 51.5       | 3660               | 46.6      | 4.9        |
| 2. वाणिज्यिक         | 124                | 2.8        | 243                | 3.1       | 0.3        |
| 3. उद्योग            | 368                | 8.1        | 806                | 10.3      | 2.2        |
| 4. सार्वजनिक /       | 714                | 15.8       | 912                | 11.6      | 4.2        |
| अर्द्ध सार्वजनिक     | हे होते हैं प्रथम  | d and the  | THE RESERVE        | Carl Sur  | र संते हैं |
| सुविधायें            | कार की नवर व       | निर्मित उस |                    | darii A   | TOT HOW    |
| 5. सामाजिक           | ( a के आया की अ    | fit-aufa   | 266                | 3.4       | 3.4        |
| उपयोगिता             | (Basic W           | ork) wa    | gas \$ 1 ft dis    | प्रकार के | े कार्ब है |
| 6. आमोद प्रमोद       | 139                | 3.1        | 1062               | 13.5      | 9.9        |
| 7. यातायात           | 847                | 18.8       | 902                | 11.5      | 7.3        |
| योग                  | 4520               | धा ।       | 7851               |           |            |
|                      |                    |            |                    |           |            |

स्त्रातः : 'मगर''एंवं'ग्रामिवेषश'कार्यालय, जबलपुर''एंवं भाषाल'।

संस्कारधानी नगर एवं राजधानी नगर के भूमि उपयोग वितरण के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संस्कारधानी नगर में आवासीय तथा यातायात व्यवस्था राजधानी नगर की अपेशा सुदृढ़

है जबिक अन्य क्षेत्रों में राजधानी नगर से जवलपुर नगर पीछे रह गया है। यह पिछड़ापन विशेष रूप से औद्योगिक एवं आमोद प्रमोद के क्षेत्र में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। राजधानी नगर में औद्योगिक विकास हेतु जहां 10.3 प्रतिशत भूमि का प्रस्तावित किया गया है वहीं संस्कारधानी नगर में केवल 8.1 प्रतिशत भूमि का प्रस्ताव ही सम्भव हो पाया है इसी प्रकार जहां राजधानी नगर में मनोरंजन हेतु 13.3 प्रतिशत भूमि का प्रस्ताव रखा गया है वहीं जबलपुर नगर में केवल 3.1 प्रतिशत भूमि मात्र का प्रस्तावित किया गया है इसके अलावा जबलपुर नगर में सार्वजिनक उपयोगिताओं को सम्मिलित कर सार्वजिनक एवं अर्ध सार्वजिनक क्षेत्र में लगभग 15.8 प्रतिशत भूमि का प्रस्तावित किया गया है जबिक भोपाल नगर में लगभग 15 प्रतिशत भूमि का ही विकास हो पाया है। अतः इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहां जबलपुर नगर में सामाजिक, सांस्कृतिक विकास को गित मिली है, किन्तु आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा अथवा कमजोर हुआ है वहीं भोपाल नगर में नगरीय सुविधाओं में कमी तो आई है किन्तु आर्थिक दिष्ट से सुदृढ़ हुआ है।

#### 9.2 आर्थिक संरचना :

नगरों में अनेक प्रकार के आर्थिक कार्य सम्पादित किये जाते हैं। इनमें से अधिकांश कार्य दितीयक एवं तृतीयक स्तर की आर्थिक क्रियाओं से सम्बन्धित होते हैं और यही कार्य किसी बस्ती को नगर कहलाने का गौरव दिलाने एवं नगरीय विकास में सहायक होते हैं। ये कार्य प्रमुख रूप से दो प्रकार के होते हैं प्रथम वे कार्य जो नगरीय विकास के लिये आधार होते हैं जिनके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की नगर में निर्मित वस्तुयें अथवा उपलब्ध सेवायें जिनका नगर के बाहर निर्यात कर नगर को आय की प्राप्ति अर्थात आर्थिक आधार की प्राप्ति होती है इन्हें नगरों का आधारभूत कार्य (Basic Work) कहा जाता है। द्वितीय प्रकार के वे कार्य हैं जिन्हें केवल नगरीय सेवा हेतु सम्पादित किया जाता है। इन्हें अनाधारभूत कार्य (Non Basic Work) कहा जाता है। आधार भूत एवं अनाधार भूत संकल्पना को सर्व प्रथम अमेरिका में नियोजकों ने उपयोग किया था।<sup>2</sup>

संस्कारधानी नगर प्रमुखतः आर्थिक आधार घरेलू उद्योग जैसे बीड़ी निर्माण, अगरबत्ती निर्माण आदि तथा व्यापार वाणिज्य है। नगर में कुल 240649 व्यक्ति विभिन्न कार्यों में संलग्न

Carter, Harald, The Study of Urban Geography, 1976, P.P. 57



हैं जो कि कुल जनसंख्या 26.74 प्रतिशत है। इसमें से 87.48 प्रतिशत पुरूष तथा 12.52

जबलपुर नगर संस्कारधानी में सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या 26.08 प्रतिशत घरेलू (लघु कुटीर) उद्योगों में कार्यरत है। इसके अलावा व्यापार वाणिज्य मे कार्यशील जनसंख्या का 19. 08 प्रतिशत भाग कार्यरत है। कार्यशील जनसंख्या का सबसे कम भाग (0.35 प्रतिशत) खनन एवं खनिज उद्योग में लगा हुआ है। लघु एवं कुटीर उद्योग सम्पूर्ण नगर में फैले हुये हैं किन्तु अधिकांश लघु एवं कुटीर उद्योग नगर के उत्तर मध्य में, चेरीताल, गोहलपुर, उक्करग्राम, आधारताल, गोकलपुर, अम्बेडकर वार्ड, रांझी, लालमाटी, घमापुर, सिद्ध बाबा, किरियापाथर, पश्चिम में गढ़ा त्रिपुरी आदि में केन्द्रित है जहां पर लघु कुटीर उद्योगों में कार्यरत जन संख्या का लगभग 13.31 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इसके अलावा उत्तरी मिलोनीगंज, शीतलामाई, वेलबाग, हनुमानताल, गढ़ा फाटक, गढ़ा, कमला नेहरू, भरतीपुर, द्वारका नगर, गोरखपुर, रामपुर, त्रिपुरी, खंदारी नाला इत्यादि में इसका लगभग 12. 24 प्रतिशत भाग निवास करता है।

इस नगर में व्यापार वाणिज्य प्रमुख कार्य है जिसमें कुल कार्यशील जनसंख्या का लगभग 9.16 प्रतिशत भाग कार्यरत हैं। नगर मे प्रमुख रूप से व्यापार वाणिज्य का केन्द्रीयकरण, चेरीताल, शास्त्री वार्ड, सराफा, निवाड़गंज, लार्डगंज, कोतवाली, रानी दुर्गावती वार्ड, मदन महल, गुप्तेश्वर, भरतीपुर, मढ़ाताल, नेपियर टाउन, गोरखपुर में हुआ है जहां पर व्यापार वाणिज्य में कार्यरत जनसंख्या की लगभग 11 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत हैं। इसके अलावा इस नगर में कुल कार्यशील जनसंख्या का निर्माण कार्य में 5.91प्रतिशत मत्स्य उद्योग, वन उद्योग, बागवानी में 2.04 प्रतिशत, खेतीहर मजदूर 61 प्रतिशत तथा 1.38 प्रतिशत कास्तकार कार्यरत हैं।

भोपाल नगर राजधानी में कुल 305608 कार्यशील जनसंख्या निवास करती है जो कि कुल जनसंख्या का मात्र 28.75 प्रतिशत है। कुल कार्यशील जनसंख्या में 86.03 प्रतिशत पुरूष तथा 13.97 प्रतिशत महिलायें हैं। सर्वाधिक जनसंख्या (61953) व्यापार वाणिज्य में कार्यशील है जो कि कार्यशीलजनसंख्या का 20.27 प्रतिशत है। इसके अलावा इस नगर में कार्यशील जनसंख्या का अन्य घरेलू उद्योग में 18.4 प्रतिशत निर्माण कार्य में 11.00 यातायात संचार में 8.87 प्रतिशत तथा अन्य कार्यों में 35.31 प्रतिशत भाग कार्यरत हैं।

A spannent from white or the females of the firm

भोपाल नगर की व्यापार वाणिज्य में कार्यशील जनसंख्या सम्पूर्ण नगर में अच्छादित है किन्तु प्रमुख कार्यशील इसमें कार्यरत जनसंख्या का 32.31 प्रतिशत से भी अधिक भाग पुराने नगर तथा नगर के उत्तरी — पश्चिमी भाग अर्थात नेहरू पार्क वार्ड, वेन्ट्री हिल्स, गुफा मन्दिर, पी.जी.वी.टी. कॉलेज टीला,जमालपुरा, शास्त्री नगर, कोटरा सुलतानाबाद वार्ड आदि में केन्द्रित हैं। इसके अतिरिक्त, गांधी नगर, मालीपुरा इब्राहिमगंज, जवाहर चौक, जैन मन्दिर, भारवाड़ी रोड, मंगलवारा, बस स्टेण्ड, तात्या टोपे नगर, लोहा बाजार, लोहा मण्डी, बुधवारा इत्यादि में व्यापार वाणिज्य में कार्यरत जनसंख्या का लगभग 41.76 प्रतिशत भाग केन्द्रित हैं जिसमें से 93.48 प्रतिशत पुरूष एवं 6.52 प्रतिशत महिलायें सम्मिलित हैं। व्यापार वाणिज्य में कार्यरत सर्वधिक 2818 व्यक्ति ऐशबाग वार्ड में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त यहां की जनसंख्या अन्य घरेलू उद्योगों में भी कार्यरत हैं जिसमें 93.84 प्रतिशत पुरूष उद्योगों में कार्यरत जनसंख्या का 49.17 से अधिक भाग आचार्य नरेन्द्र देव वार्ड, वागिकान्त बाजार, ऐशबाग, नरेलाशंकरी, सोना गिरी, बरखेड़ा, पिपलानी, गोविन्दपुरा, अन्ता नगर, शक्ति नगर आदि में केन्द्रित हैं जिसमें 94. 43प्रतिशत पुरूष एवं 5.75 प्रतिशत स्त्रियां सम्मिलत हैं। इसके अलावा पुराने नगर, टीला जमालपुरा, शाहजहांनाबाद, शाहपुरा, चांदबाग, कपड़ा मिल इत्यादि क्षेत्रों में इसका लगभग 12. 5 प्रतिशत भाग स्थित है। सर्वाधिक गृह उद्योग सोना गिरी वार्ड में स्थित है।

नगर में निर्माण कार्य में लगभग 33614 व्यक्ति कार्यरत है जिनका लगभग 52.3 प्रतिशत भाग मालवीय नगर, शास्त्रीय नगर, कोटरा सुलतानाबाद, पंचशील नगर, चार इमली, मैदा मिल, ऐश बाग, नरेला शंकरी, सोना गिरी, किलया सोत आदि में केन्द्रित हैं। इसके अलावा नगर की सम्पूर्ण कार्यशील जनसंख्या की 8.87 प्रतिशत यातायात एवं संचार 1.05 घरेलू उद्योग, 1.72 प्रतिशत पशुपालन, मत्स्य उद्योग वानिकी आदि, 1.42 प्रतिशत खेतीहर मजदूरी, 1.54 प्रतिशत कास्तकार 0.36 प्रतिशत खनन एवं खिनज उद्योग तथा 35.31 प्रतिशत अन्य कार्यों में कार्यरत है।

संस्कारधानी एवं राजधानी नगर की आर्थिक संरचना के अध्ययन से स्पष्ट होता है जहां एक ओर भोपाल नगर व्यापार वाणिज्यक केन्द्र के रूप में अधिक विकसित है। यहां पर व्यापार वाणिज्य में 94.28 पृत्तिशत पुरूष एवं 5.71 प्रतिशत महिला कार्यरत हैं। जबिक जबलपुर नगर अन्य घरेलू उद्योगों के केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है जहां कुल कार्यशील जनसंख्या का अन्य घरेलू उद्योगों में 91.76 प्रतिशत पुरूष एवं 8.23 प्रतिशत महिलायें कार्यरत

प्रमुख कार्यशील एसमें कार्यरत पान्सांक्या का ३०३१ प्रतिशास से भी अधिक आम प्रमुख

है। इसी प्रकार जहां भोपाल नगर में कुल जनसंख्या का 28.75 प्रतिशत भाग कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत है जबिक जबलपुर नगर में मात्र 26.75 प्रतिशत जनसंख्या ही कार्यशील है। जबलपुर नगर समूह 27 प्रतिशत, जबलपुर (क) 26.58 प्रतिशत एवं जबलपुर नगर निगम 26.51 प्रतिशत जनसंख्या कार्यशील है। अर्थात जबलपुर नगर में भोपाल नगर से लगभग 2 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या कम है अतएव जबलपुर नगर में व्यापार वाणिज्य को प्रोत्साहित करना अति आवश्यक है इसी प्रकार भोपाल नगर में गृह उद्योगों को बढ़ाना चाहिये इससे न केवल वृहद उद्योगों की पर्यावरणीय एवं सामाजिक समस्याओं को कम किया जा सकता है वरन् गृह उद्योगों के माध्यम से कम पूंजी पर अधिकाधिक व्यक्तियों को रोजगार एवं आय के सुलभ साधन उपलब्ध कराये जा सकते हैं।

#### 9.3 गन्दी बस्तियां :

आवास मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन,वस्त्र, एवं आवास) में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है, क्यों कि इसके आभाव में मनुष्य का स्वयं को शीत, गर्मी, एवं वर्षा से बचना असम्भव है। इसीलिये कहा भी गया है –

वर्तमान-युगे लोके, भोजनं वसनं गृहम् । आवश्यकं नितान्तं, यैहींनं जन्म निरर्थकम् ।।1

किन्तु वर्तमान में अत्यधिक जनसंख्या के कारण सभी व्यक्तियों को निवास के लिये उचित आवास उपलब्ध नहीं है इस समस्या की तस्वीर नगरों में और अधिक विकृत दिखाई देती है। जैसे इस सबके परिणाम स्वरूप नगरों में गन्दी बस्तियों की बीमारी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जो कि नगरीय सभ्यता ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव सभ्यता पर एक कलंक है।

गन्दी बस्ती से आशय उस प्रकार के बस्ती से अथवा नगर या ग्राम के भाग से है जिसमें निवास करने वाले व्यक्तियों को लगभग सभी सामान्य सुविधायें सहजता से प्राप्त नहीं हो पाती हैं। जैसा 1962 के पटना मास्टर प्लान में कहा गया है— "In simple words, a slum can be described as an area where thore is an

2. शास्त्री, उभेदा, वाहर विआनम्, 1/14

over - growding of hauses on land and of persons in houses and where houses are huddled together in an unplanned manner without the provision of oppropriate street loy-out, drninage, sewerage, community facilities and other basic necessities of life resulting in insanitary and unhealthfull living conditions."

गन्दी बस्तियों का उद्भव किसी एक तत्व की देन नहीं है वरन् इसके पीछे अनेक कारक होते हैं जो कि एक दूसरे से अर्न्तसम्बन्धित होते हैं। जैसे बाहर से अथवा ग्रामीण क्षेत्र से रोजगार की तलाश में आये हुये प्रवासी आर्थिक दृष्टि से कमजोर होते हैं जो कि ऊंचे किराये पर नगर में भवन लेने में असमर्थ होते हैं इसी कारण नगर में उन्हें जहां स्थान मिलता है वहीं पर टीन, मिट्टी अथवा पत्थर इत्यादि से झोपड़ी नुमा कच्चा भवन तैयार कर रहने लगते हैं। इस प्रकार की बस्तियां सामन्यतः नगर से बाहर अथवा मार्गों के किनारे कारखाने आदि के समीप स्थित होती है जिस पर प्रशासन ध्यान नहीं देता और ना ही वहां पर कोई राजनैतिक रूप से ध्यान देता है इसलिये यहां पर शिक्षा, जल, नालियों, मार्गों इत्यादि के पर्याप्त आभाव के कारण निम्न स्तर का सामाजिक परिवेश विकसित होता है जिनमें से अनेक व्यक्ति अपराधि क

गितिविधियों में संलग्न होते हैं। "यह एक दुखद सच्चाई है कि कुल नगरीय अपराधों के 65 प्रतिशत अपराधों के अपराधी इन्ही बस्तियों के निवासी होते हैं "। अतः इन बस्तियों के आर्थिक विकास जहां में अनेक बाधायें होती हैं वहीं यहां के निवासियों के चरित्र एवं नैतिकता का भी अत्यल्प विकास हो पाता हैं अतः इस प्रकार की बस्यां आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आधार पर सामान्यतः पिछड़ी हुई होती हैं।

संस्कारधानी नगर जबलपुर 60 वार्डों में विभक्त है जिसमें 328 बस्तियों को नगर निगम द्वारा गन्दी बस्ती के रूप में घोषित किया गया है किन्तु सच तो यह है कि गन्दी बस्तियों की संख्या इससे कहीं अधिक है। नगर निगम द्वारा घोषित इन 328 बस्तियों में 6,44,117 व्यक्ति निवास करते हैं यही स्थिति भारत वर्ष के अनेक महानगरों में दृष्टिगोचर होती है।

<sup>3.</sup> Ataullah, Mohd., Urban land: its use and misuse, amr prakashan Delhi, 1985, P.P. 203

<sup>4.</sup> नायडू, रूकमणी, म.प्र. के प्रमुख तीन नगरों ;भोपाल, इन्दौर, जबलपुरद्ध पर नगरीयकरण का एक अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, 1988, पृ. क्र. 235



गन्दी बस्तियों की समस्या देश के प्रमुख महानगरों के समान जबलपुर नगर में भी है, जो कि चेचक के समान नगर में बड़ी ही तीव्र गित से फैल रही है। यहां गन्दी बस्तियों में रहने वालों की स्थिति बड़ी ही दयनीय है। कच्चे मिट्टी, टीन तथा खपड़े इत्यादि से बनी हुई झोपड़ पिट्टयॉ खिड़की एवं दरवाजों के अभाव में स्वच्छ वायु तथा सूर्य प्रकारश तक प्राप्त नहीं हो पाता है। यहां पर न तो उचित प्रकाश की व्यवस्था है और न ही यातायात की। यह बस्तियॉ प्रमुख रूप से तंग गिलयों, रेल मार्गो एवं सड़कों के किनारे, पहाड़ियों पर एवं पहाड़ियों के आस पास ढाल पर तथा नगर के निचले हिस्से पर बनी हुई हैं, जहां पर वर्षा काल में ये बस्तियॉ रहने योग्न नहीं होती । इन बस्तियों के अधिकांश मकान बदबूदार, एवं शीलन युक्त होते हैं। इन बस्तियों में गन्दगी का सामराज्य रहता है। नालियों का पानी सड़कों पर फैल जाता है तथा नालियों की सफाई न होने के कारण उनमें भरा रहता है, जिससे यहां पर अनेक प्रकार के संकामक रोकों का फैलने का सदैव भय बना रहता है। नगर के 60 वाडों कमें स्थित नगर निगम द्वारा घोषित 328 बस्तियाँ

पड़चान मिली है वहीं दूसरी और गन्दी बस्तिहों का बंधन करने में करने हैं समान हुआ है।

भोपाल नगर में कुल 398 गन्दी बिस्तयाँ स्थित हैं जिनमें लगभग 95603 झुगियां हैं वस्तुतः भोपाल नगर एक प्रमुख औद्योगिक, वाणिज्यिक, राजनैतिक केन्द्र होने के कारण जन आकर्षण का केन्द्र रहा है अर्थात यहाँ पर जनसंख्या दबाव में लगातार तेजी से वृद्धि हुई है, किन्तु यहाँ जिस गित से जनसंख्या वृद्धि हुई उस गित से आवासीय सुविधायें उपलब्ध न हो पाने के कारण गन्दी बिस्तयों के प्रसार को भरपूर प्रोत्साहन मिला है। यहाँ पर प्रमुख रूप से वैरिसया रोड, रायसेन रोड, विधान सभा भवन के पास, सेवा सदन, रोशनपुरा, कोटरा सुल्तानाबाद, इब्राहिमपुरा शाहजहांनाबाद, रेल मार्गो तथा सड़क मार्गो के किनारों पर झुग्गी बिस्तयों का जमाव देखा जाता है। अतएव नगर में स्थित गन्दी बिस्तयों तालिका क्र. 9.3 के अनुसार है।

नगर मानव के लिये निर्मित हुये हैं न मानव नगर के लिये। भोपाल नगर मध्य प्रदेश की राजधानी है यदि इसे गन्दी बस्ती की राजधानी कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भोपाल नगर को जहां एक ओर औद्योगिक, वाणिज्यिक, राजनैतिक विकास से एक नई पहचान मिली है वहीं दूसरी ओर गन्दी बस्तियों का प्रसार नगर में कुष्ठ के समान हुआ है। यहां पर कुल जनसंख्या का टक्ट बड़ा निर्मास इन गन्दी बस्तियों में निवास करती है। जबलपुर नगर औद्योगिक राजनैतिक दृष्टि से एक विकाशील नगर है। जबलपुर नगर समूह की जनसंख्या का लगभग 72 प्रतिशत भाग गन्दी बस्तियों में निवास करता है। जिनमें केवल नगर निगम क्षेत्र में स्थित गन्दी बस्तियां ही सम्मिलित हैं। अतएव यदि समय पर्यन्त गन्दी बस्तियों के नियन्त्रण हेतु समुचित उपाय नहीं किये गये तो निश्चत रूप से ये गन्दी बस्तियां सम्पूर्ण नगर को अपने आगोस में समेट लेंगी।

### 9.4. प्रशासनिक व्यवस्था :

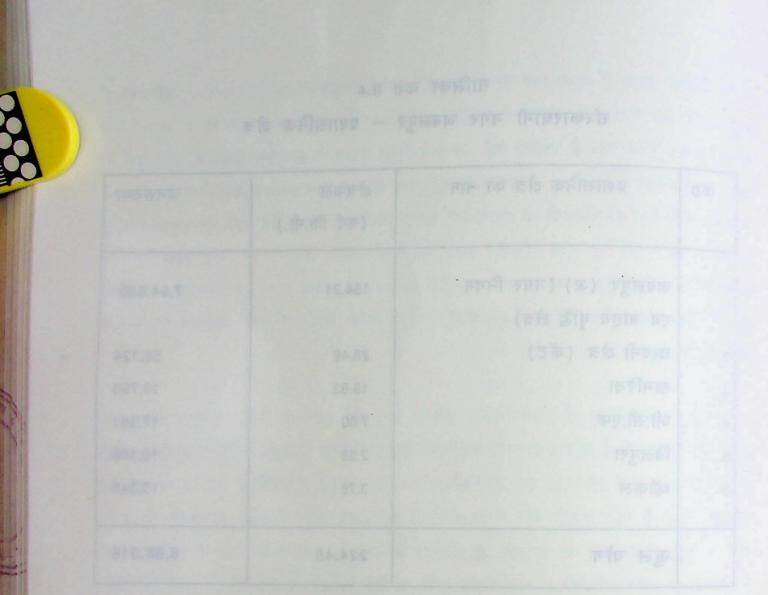
संस्कारधानी नगर जबलपुर प्रमुख रूप से **१** प्रशासनिक क्षेत्रों में विमाजित है जो कि नगर निगम सीमा के अतिरिक्त **१** अन्य हैं। इसके अलावा खमरिया, जी.सी.एफ., व्हीकल फैक्ट्री खेत्र छावनी क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं किन्तु इन क्षेत्रों की पृथक रूप से जनगणना के कारण इनका पृथक प्रशासकीय क्षेत्र माना गया है। जगर के प्रमुख प्रशासकीय निम्नांकित हैं।

तालिका क0 9.4 संस्कारधानी नगर जबलपुर – प्रशासनिक क्षेत्र

|    | कुल योग                   | 224.45        | 8,88,916 |
|----|---------------------------|---------------|----------|
| 6. | व्हीकल                    | 3.76          | 13,346   |
| 5. | बिलपुरा                   | 2.56          | 10,168   |
| 4. | जी.सी.एफ.                 | 7.00          | 17,961   |
| 3. | खमरिया                    | 19.93         | 19,798   |
| 2. | छावनी क्षेत्र (केंट)      | 28.49         | 56,124   |
|    | एवं बाह्य वृद्धि क्षेत्र) |               |          |
| 1. | जबलपुर (अ) (नगर निगम      | 154.21        | 7,64,586 |
|    |                           | (वर्ग कि.मी.) |          |
| 枣0 | प्रशासनिक क्षेत्र का नाम  | क्षेत्रफल     | जनसंख्या |

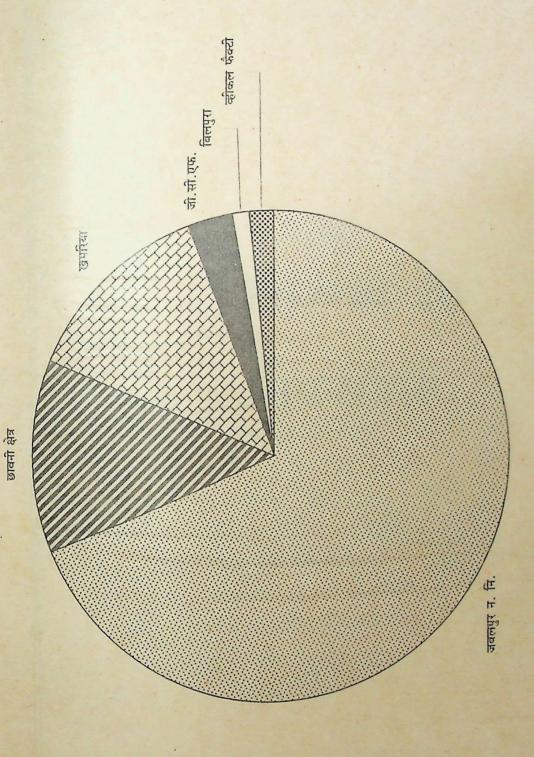
स्त्रोत : जनगणना पुस्तिका, 1991 भाग II-ए जनगणना संचालनालय, मध्य प्रदेश शासन भोपाल ।

सम्पूर्ण जबलपुर नगर लगभग 224.45 वर्ग कि.मी. में स्थित है तथा यहां पर 8,88,916 जनसंख्या निवास करती है। जबलपुर नगर विभिन्न प्रशासकीय क्षेत्रों में विभाजित होने के कारण यहां योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्यवयन में प्रशासनिक कितनाई उत्पन्न होती है क्यों कि अधिकांश योजनाओं का निर्माण मात्र नगर निगम क्षेत्रों में निवासित 8,88,916 को ध्यान में रखकर किया जाता है जिससे नगर के अन्य भाग या तो उपेक्षा के शिकार होते हैं अथवा योजनाओं द्वारा प्रदत्त सुविधायें 'ऊंठ के मुंह में जीरा' सिद्ध होती है। इसके विपरीत सम्पूर्ण भोपाल नगर लगभग 284.90 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में 10,62,771 की जनसंख्या को लेकर स्थित है। जो कि भोपाल नगर निगम सीमा के अन्तर्गत आता है। अतएव यह नगर के समुचित विकास की दृष्टि से सम्पूर्ण नगर को ध्यान में रखकर योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्यवयन किया जाता है। अतः संस्कारधानी नगर जबलपुर में प्रशासनिक एकीकरण की नितान्त आवश्यकता महसूस की जा रही है।



क्रमांक - 13

### जवलपुर नगर - प्रशासनिक क्षेत्र

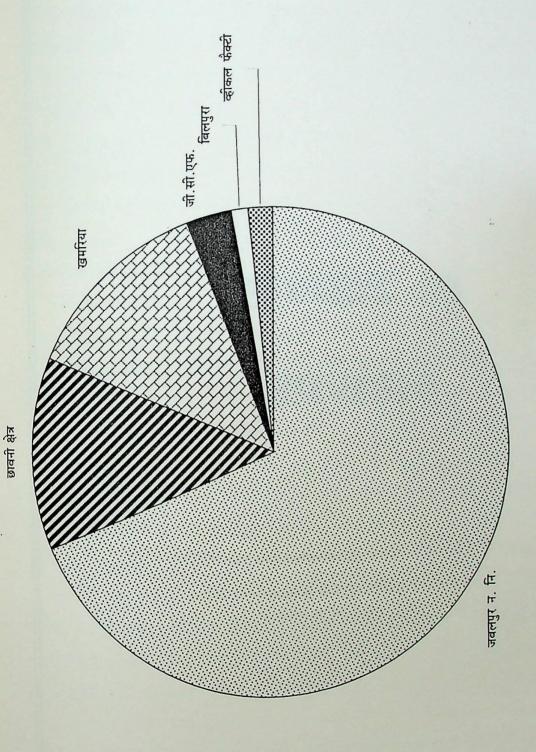


CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection



क्रमांक - 13

### जबलपुर नगर - प्रशासनिक क्षेत्र



CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi Jahalpur,MP Collection.



उपसंहार



# अध्याय 10

## उपसंहार



### अध्याय 10 उपसंहार

मानवीय बस्तियां मानव की महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक अनुपम एवं बहुपयोगी तथा प्राचीनतम् कृति है, जिनमें से नगरीय बस्तियां चरम मानवीय विकास की घोतक हैं। वर्तमान में समस्त विश्व सघन नगरीकरण के दौर से गुजर रहा है, किन्तु चरम मानवीय विकास का प्रतीक समझी जाने वाली यही नगरीय बस्तियां दिन – प्रतिदिन नगरवासियों के दुख का कारण बनती जा रही है, जिसके परिणाम स्वरूप अनेक स्तरों पर आज इनके समग्र एवं संतलित विकास हेत् अनुसंधान की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। इसी परिप्रेक्ष्य में आज नगरीय बस्तियां अनेक विषयों जैसे – समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र, भूगोल राजनीतिशास्त्र आदि के अध्ययन – अनुसंधान का केन्द्र बनी हुई हैं, किन्तु यह भी शास्वत सत्य है कि प्रत्येक विषय की अपनी निश्चित विषय वस्तु तथा अध्ययन की सीमायें होती हैं, जिसके अन्तर्गत ही वे नगर का अध्ययन करने में समर्थ होते हैं। इसके परिणाम स्वरूप नगर के दूसरे तत्वों की उपेक्षा हो जाती है। जैसे अर्थशास्त्र के द्वारा नगर का अध्ययन केवल आर्थिक गतिविधियों के आधार पर ही किया जाता है जबकि अन्य दूसरे भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि तत्व अनछुये ही रह जाते हैं, जिसे नगर का समग्र अध्ययन नहीं कहा जा सकता है। अर्थात यह अध्ययन केवल एकांगी अध्ययन ही कहलायेगा, इससे नगरीय विकास में पर्याप्त सहयोग प्राप्त नहीं हो पाता है अतः इस प्रकार के अध्ययन से नगर का केवल एकांगी एवं संतुलन विहीन अध्ययन ही सम्भव हो पाता है न कि समग्र । अतः वर्तमान में समग्र नगरीय विकास के लिये एक ऐसे विषय की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है जो कि सम्पूर्ण नगर का समग्र रूप से विस्तृत किन्तु संतुलित अध्ययन कर सके। इस दृष्टि से अब यह आवश्यक हो गया है कि नवीन वैज्ञानिक तकनीकि एवं प्राचीन ज्ञान के उचित सामंजस्य के माध्यम से समग्र किन्तु संतुलित नगर नियोजन द्वारा वर्तमान नगरीय समस्याओं का समाधान किया जाये। इस परिप्रेक्ष्य में नगरीय भूगोल एवं स्थापत्य वेद के आधार पर अर्वाचीन नगरों के अनुसंधानात्मक अध्ययन उचित प्रतीत होता है।

ईटों, पत्थरों से बने भव्य देवालय तथा विशाल भवन हमें प्राचीन काल से ही सुख शान्ति की छाया प्रदान करते आ रहे हैं। हमारे भारतवर्ष में परम्परागत ढंग से बनाये गये भवनों में आज भी जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग सुख शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करशहा है, जबकि



पतुरान विकीन अध्ययन ही सम्बद्ध हो पाता है न कि समय । अस वर्धणन में समय नवर्षिय

इसके विपरीत विश्व के अनेक आधुनिक नगरों की आलीशान इमारतों में सर्वसुविधायें उपलब्ध होने के बावजूद भी जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा दुखी एवं तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये मजबूर है। यह तनावपूर्ण नगरीय जीवन हमें यह सोचने के लिये बिवस कर देता है कि एक छोटे से परम्परागत ढंग से बने मकान अथवा ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाला व्यक्ति सुखी है, जबिक एक सर्व सम्पन्न नगरीय व्यक्ति क्यों दुखी है? भवन तो दोनों ही ईट पत्थरों से निर्मित है फिर यह अन्तर क्यों? वस्तुतः प्राचीन काल में न केवल व्यक्तिगत भवन अथवा ग्राम वरन सभी वास्तु रचनायें स्थापत्य वेद (वास्तुशस्त्र) के अनुरूप निर्मित होते थे। अतएव इसी उलझन को सुलझाने के लिये आज भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व स्थापत्य वेद के समग्र चिंतन के लिये व्याकुल हो गया है।

अनुसंधान का द्वितीय विषय नगरीय भूगोल है। नगरीय भूगोल, भूगोल की एक नूतन शाखा है। इसका अध्ययन प्रारम्भ में मानव भूगोल के अन्तर्गत किया जाता था, किन्तु काल की गित के साथ ही नगरों के अर्थ, स्वरूप इत्यादि में पर्याप्त परिवर्तन हुये जिसके परिणाम स्वरूप नगरीय भूगोल, भूगोल की एक शाखा तथा एक विशिष्ट विषय के रूप में अस्तित्व मे आया। नगरी भूगोल के प्रादुर्भाव का एक प्रमुख कारण यह भी है कि अन्य विषय नगर के किसी एक तत्व का ही समग्र चिंतन अध्ययन करने में समर्थ हैं। अतएव अनुसंधान हेतु चयनित नगरों का नगरीय भूगोल के सिद्धान्तों के आधार पर अध्ययन किया गया है।

वर्तमान नगरीयकरण से मानवीय विकास को एक नूतन आयाम की प्राप्ति हुई है, अतः आज समग्र विश्व के राष्ट्रों में अन्धाधुंध नगरीकरण की स्पर्धा हो रही है। इस अन्धानुकरण, दिशाहीन नगरीकरण के परिणाम स्वरूप नगरों में अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे — नगरीय भूमि पर लगातार बढ़ता हुआ जनसंख्या भार, गन्दी बस्तियों का प्रसार, स्वास्थ्य में पर्यावरण प्रदूषण नगरों का अनियन्त्रित विवेकहीन विकास, ग्रामीण उपजाऊ भूमि का सतत् अपहरण, मानव की बढ़ती हुई संवेदन शून्यता, मानव तथा प्रकृति के माध्यम सत्तात्मक संघर्ष इत्यादि ने नगरीय विकास के समक्ष एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। ये सभी समस्यायें किसी न किसी रूप में एक दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित हैं। यही कारण है कि नगरों को इन समस्याओं से मुक्त कराने हेतु प्रत्येक स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। अतएव इन सभी समस्याओं का समाधान उचित नगर नियोजन द्वारा ही सम्भव है।



आज के इस भौतिकवादी जीवन में मानव जीवकों पार्जन का एक यन्त्र मात्र बनकर रह गया है, अतएव नगरों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक, आध्यात्मिक, पुर्नियोजन की प्रबल आवश्यकता महसूस की जा रही है। अतएव इन सभी तत्वों के परिप्रेक्ष्य में नगरों के पुर्नायोजन का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और वर्तमान नगरीय समस्याओं से मुक्ति का भी यही मात्र एक उचित मार्ग है। नगर मानव के लिये निर्मित हुये हैं न कि मानव नगर के लिये अतएव आधुनिक तकनीिक ज्ञान एवं प्राचीन ज्ञान के उचित सामंजस्य के आधार पर नगरीकरण की नीतियों का निर्धारण आवश्यक हो गया है, अतः इन नीतियों में जहां एक ओर आधुनिक तकनीिक ज्ञान की आवश्यकता है वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक नियमों एवं सहयोग का आश्रय लेना भी उचित एवं अनिवार्य हो गया है। नगरीकरण की इस सार्वभौमिक अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में मध्य प्रदेश के प्रमुख नगरों संस्कारधानी नगर जबलपुर एवं राजधानी नगर भोपाल के नगरीकरण से उत्पन्न समस्याओं एवं उपलब्धियों पर प्रतीकात्मक रूप से अनुसंधान कार्य किया गया है।

अध्ययन अनुसंधान का प्रथम नगर संस्कारधानी नगर जबलपुर रहा है संस्कारधानी नगर 'यथा नाम तथा गुण' को चिरतार्थ करता हुआ विकसित हुआ है। प्राचीन काल में यह नगर जहां एक ओर धर्म, संस्कारों की तपोभूमि रहा है, जिसके पर्याप्त प्रमाण प्राचीन मन्दिरों, देवालयों के भग्नावेशों जैसे चौसठ योगनी, बाजनामठ तिलेश्वर, तेवर का काली मन्दिर आदि के रूप में प्राप्त होते हैं वहीं दूसरी ओर वर्तमान में यह नगर एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। जबलपुर नगर मध्यप्रदेश का एकमात्र नगर है जहां तीन विश्व विद्यालय स्थित हैं इसके अलावा एक प्रमुख औद्योगिक, व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहां पर नगरीकरण का प्रभाव दिन — प्रतिदिन बढ़ता हुआ प्रतीत हो रहा है। इस बढ़ते हुये नगरीकरण से जहां एक ओर नगर को विकास के विभिन्न नवीन आयामों की प्राप्ति हुई है वहीं दूसरी ओर नगर मे अनेक प्रकार की समस्यायें दिन प्रतिदिन अपना विकराल रूप धारण करती जा रही है।

जबलपुर नगर की जनसंख्या में जितनी तीव्रगति से वृद्धि हुई है, उतनी गति से नगरीय सुविधाओं में वृद्धि सम्भव नहीं हो पायी है। 1991 की जनगणना के अनुसार यहां पर लगभग 2201 आवासीय इकाइयों का आभाव है, तथा कुल जनसंख्या का 27 प्रतिशत भाग (6,12,716)

नगर निगम द्वारा घोषित गन्दी बस्तियों में निवास करता है। यह नगर निगम परिक्षेत्र मे निवासित कुल जनसंख्या का 84 प्रतिशत है। एक अनुमान के अनुसार सन् 2001 में लगभग 60,000 अतिरिक्त आवासीय इकाईयों की आवश्यकता होगी। अतः इस दृष्टि नगर में आवासीय इकाईयों का समुचित प्रबन्ध करना अत्यावश्यक हो गया है। नगरीय भूमि पर अत्याधिक जनसंख्या दबाव, औद्योगिक, व्यापारिक विकास के परिणाम स्वरूप नगर का अनियमित रूप से विकास हुआ है, जिसके परिणाम स्वरूप आस - पास की ग्रामीण उपजाऊ भूमि का बड़ी तीव्रगति से लगातार अपहरण हो रहा है। इसके अलावा अनियमित एवं अधिक विस्तार के कारण नगर को प्रशासकीय दृष्टि से १ भागों मं विभाजित किया गया है, जो कि नगर निगम क्षेत्र के अतिरिक्त 😕 अन्य भाग हैं जिन्हें नगर निगम क्षेत्र में सम्मिलित नहीं किया गया है। जबलपुर नगर कुल 45 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में लगभग 8,88,916 की जनसंख्या लिये हुये विस्तृत है। नगर के इन विभिन्न उपविभागों एवं अनियमित विस्तार के कारण नगर की आकृति (Shape) अनियमित हो गया है, जिसे वास्तु दोष उत्पन्न हो गया है जिसका नगरीय विकास में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इन सभी समस्याओं के परिणाम स्वरूप प्रशासनिक एवं नगरीय सुविधाओं की आपूर्ति की समस्या उत्पन्न हो गई हैं, क्योंकी नगर की योजनाओं का निर्धारण मात्र नगर निगम परिक्षेत्र को (छावनी क्षेत्र को छोड़कर) ध्यान में रखकर किया जाता है, जबिक नगर का विस्तार इससे कहीं अधिक है।

नगर में यातायात की समस्या अत्यन्त दयनीय है। यहां पर सड़कें यातायात की दृष्टि से अनुपयुक्त हैं। यहां व्यापारिक, वाणिज्यक, औद्योगिक, सार्वजिनक संस्थानों के आस पास अथवा स्थानों में वाहन पार्किंग की समुचित व्यवस्था का आभाव है। इन सभी का सर्वाधिक दुष्प्रभाव विशेषतया नगर के मध्यवर्ती भाग में देखने मिलता है जहां पर अत्याधिक मीड़माड़ युक्त एवं प्रदूषण युक्त वातावरण निर्मित होता है। यहां की सड़कें सकरी, जर्जर, भीड़माड़ एवं कार्यालयों, कारखानों के खुलते एवं बन्द होते समय अनेक सड़कों पर अत्याधिक यातायात दबाव होता है, इसके अतिरिक्त अग्नेक बार सड़कों पर पालतु पशु विचरण करते हुये देखे जाते हैं इन सभी के परिणाम स्वरूप सदैव दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है। नगर वाहन सेवा के वाहन अत्याधिक सवारी एवं भार लिये हुये अनियन्त्रित गति से सड़कों पर दौड़ते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। नगर के कुछ भागों में संचालित टेम्पों नगर के पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के किये अत्यन्त हानिप्रद हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में (50,000 मौते वाहन

प्रदूषण से होती है। नगर की नैऋत्य दिशा में नवीन प्रस्तावित विमानतल के निर्माण की योजना है, जो वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के प्रतिकूल है, यही कारण है कि इसके निर्माण में अनेक प्रकार की प्रशासनिक, वित्तीय इत्यादि समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और इसका विकास कार्य कच्छप गित से संचालित है। प्रस्ताव के इतने समय व्यतीत हो जाने के उपरान्त भी अभी तक इसकी योजना फाइलों से बाहर क्रियात्मक रूप से दृष्टिगोचर नहीं हो पा रही है। इसी प्रकार रेल मार्ग नगर के मध्य से गुजरने के कारण रेल यातायात अवरोध तो उत्पन्न होता ही है साथ ही सदैव दुर्घटना की सदैव आशंका बनी रहती हैं।

जबलपुर नगर में साफ - सफाई की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। यहां पर अनेक क्षेत्रों में जैसे – गुरन्दी, बेलबाग, नया मोहल्ला, मदार टेकरी, लालमाटी, रांझी, गोरखपुर, ग्वारीघाट, पोलीपाथर, गढ़ाफाटक, गोहलपुर, भरतीपुर इत्यादि में अत्यन्त प्रदूषित वातावरण देखने मिलता है। यहां पर प्रदूषित तथा वर्षा का जल प्रमुख रूप से ओमती एवं मोती नाला के द्वारा परियट नदी के माध्यम से हिरन नदी में होते हुये नर्मदा नदी में विसर्जित होता है। चूंकि नर्मदा एवं परियट नदी जल आपूर्ति का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्त्रोत है इसलिये यह नगर के स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यन्त हानिप्रद है। इसके अतिरिक्त ओमती एवं मोती नाला खुले हुये हैं जिनसे होता हुआ नगर का प्रदूषित जल प्रवाहित होता है जिसके कारण इन नालों के समीपवर्ती भागों में सदैव संकामक बीमारियां फैलने की आशंका बनी रहती है तथा वर्षा ऋतु में कभी – कभी इन भागों में जल भर जाने से जीवन अस्त – व्यस्त हो जाता है। इसी प्रकार नगर के ठोस अपशिष्ट के विसर्जन का समुचित प्रबन्ध न होने के कारण सदैव स्वास्थ्य को खतरा बना रहता है । नगर एवंग्राम नियोजन द्वारा 2005 को दृष्टिगत बनाई गई जल मल निकासी कार्ययोजना भी न केवल वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से ऋटिपूर्ण प्रतीत हो रही है, वरन् भावी नगरीय विकास की दृष्टि से भी स्वास्थ्य के लिये अनुपयुक्त तथा अल्पकालीन समय के लिये ही उपयोगी सिद्ध होने की सम्भावना है। क्योंकि यदि हम मात्र 50 वर्षीय नगरीय विकास की दृष्टि से जलमल निकासी कार्य योजना पर विचार करें तो विगत 50 वर्षों (1941 से 1991) में लगभग .... वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल तथा 85.80 प्रतिशत (2156239) जनसंख्या में वृद्धि हुई है। इसी आधार पर सन् 2050 में जबलपुर नगर लगभग..... वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत हो चुका होगा तथा इसमें 4712300 की जनसंख्या निवास कर रही होगी। अतः इस दृष्टि से 50 वर्षों के नगरीय विकास

<sup>1.</sup> दैनिक, नवभारत, जबलपुर, 12 अक्टूबर 1997

के उपरान्त प्रस्तावित जलमल निकासी व्यवस्था असक्षम सिद्ध हो चुकी होगी तथा वर्तमान में प्रस्तावित जलमल निकासी संयंत्र नगर के मध्य पहुंच चुके होंगे जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है। अतः वास्तुशास्त्र के अनुरूप तथा सुरक्षित जल मल निकासी योजना के कियान्वयन की आवश्यकता है।

संस्कारधानी नगर जबलपुर की वर्तमान जल आपूर्ति व्यवस्था 'भरे तालाब में घों घा प्यासा' कहावत को चिरतार्थ कर रही है। यह संस्कारधानी नगर का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि मध्यप्रदेश का एक मात्र जल आपूर्ति की दृष्टि से आत्मिनर्भर नगर को जल आपूर्ति के लिये रोना पड़ रहा है। नगर में जल प्राप्त करने हेतु अनेकों बार आपस में रंजिश एवं झगड़े होते देखे गये हैं। इतना ही नहीं अनेकों बार नगर वासियों को स्वच्छ जल के स्थान पर प्रदूषित (गन्दा) जल की आपूर्ति की जाती है, जिसके उपयोग हेतु नगरवासी मजबूर होते हैं। अतः नगर में न केवल वर्तमान आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये जल आपूर्ति की जानी चाहिये वरन् भावी नगरीय विकास की दृष्टि से नवीन जल स्त्रोतों का सृजन भी करना चाहिये।

पर्यावरण प्रदूषण की चपेट में न केवल संस्कारधानी नगर जबलपुर ही है वरन् विश्व के लगभग सभी नगर पर्यावरण प्रदूषण के आगोस में समा चुके हैं अथवा समाहित होने जा रहे हैं पर्यावरण प्रदूषण का एक प्रमुख कारण अशातीत विवेक हीन औद्योगिक विकास है तो वहीं दूसरी ओर वृक्षों की मात्रा में अत्याधिक कमी एवं परिवहन के साधनों का अंधाधुंध, अनावश्यक एवं गैर जिम्मेदाराना ढंग से प्रयोग भी है। अतः जबलपुर नगर में जहां एक ओर हरित पिट्टका अविकसित है वहीं दूसरी ओर नगर के लगभग मध्य मे स्थित राइट टाऊन, मरतीपुर इत्यादि क्षेत्रों में स्थापित उद्योग भी पर्यावरण प्रदूषण में सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इसके अलावा यहां की यातायात व्यवस्था, जल मल निकासी की अपर्याप्त तथा दोषपूर्ण व्यवस्था, नगरवासियों का पर्यावरण के प्रति उदासीनता भी नगरीय पर्यावरण प्रदूषण के लिये समान रूप से जिम्मेदार हैं। अतः नगर में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने हेतु उचित कार्ययोजना के कियान्वयन की आवश्यकता है। इसके अलावा नगर के अनेक भागों में विशेषतया झुग्गी बस्तियों में समुचित नगरीय सुविधाओं जैसे साफ — सफाई, सड़क, शिक्षा, मनोरंजन इत्यादि की उचित व्यवस्था का अभाव देखा जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप जहां एक ओर सम्बन्धित क्षेत्र का विकास अवरूद्ध होता है तथा नगर वासियों में असंतोष व्याप्त होता है वहीं दूसरी ओर वहां के निवासियों एवं बच्चों को विकास का उचित वातावरण प्राप्त न होने के दूसरी ओर वहां के निवासियों एवं बच्चों को विकास का उचित वातावरण प्राप्त न होने के

विकास यहां की यातामांत प्यावस्था, पाल मत विकासी की शक्यांना तथा दावसूच व्यावस्था,

the ma gree transfer spirit is the ten when the transfer training to the

कारण बुरी आदतों एवं समाज विरोधी गतिविधियों में सम्मिलित होने की आशंका बनी रहती है। अतएव नगर के सभी भागों में समान रूप से समुचित नगरीय सुविधाओं की आपूर्ति की आवश्यकता है।

#### सुझाव :

### 10.1.1 नगर का वास्तु अनुकूल विकास :

जबलपुर नगर संस्कारधानी की सीमाओं का पुनर्निधारण वास्तुशास्त्र के अनुरूप किया जाना चाहिये। नगरीय विकास की दृष्टि से नगर को वास्तुशास्त्र के अनुरूप प्रमुख सात अथवा आवश्यकतानुसार सर्व सुविधायुक्त उपनगरों में विभाजित कर 1/2 से 1/4 किलोमीटर चौडी हरित पटि्टका के रूप में सीमाओं का निर्धारण किया जाना चाहिये इसके अतिरिक्त वास्त्शास्त्र के अनुरूप उपयुक्त स्थानों पर भी उद्यान, खेल के मैदान, खुले स्थान, हरित क्षेत्र विकसित किया जाना चाहिये तथा नगर में सम्पादित कार्यों का वास्त्शास्त्रानुसार उचित भागों में स्थापित किया जाना चाहिये। नगर में रिथत समस्त शासकीय, अर्धशासकीय, सार्वजनिक एवं निजी भवनों का यथायोग्य वास्तुशास्त्रीय सुधार किया जाना चाहिये तथा भविष्य में निर्मित होने वाले भवनों का वास्तुशास्त्रानुसार निर्माण करना चाहिये। नगर की प्रशासकीय सीमाओं का वास्तुशास्त्रानुसार पुर्ननिर्धारण करना चाहिये। नगर के सभी क्षेत्रों अथवा उपनगरों जैसे केन्ट, खमरिया, जी.सी.एफ., जवलपुर नगर निगम, जवलपुर वाहय वृद्धि भाग इत्यादि को एक ही प्रशासनिक इकाई के द्वारा संचालित करना चाहिये। हाल ही में नगरों में स्थित छावनी क्षेत्रों का नगर निगम क्षेत्रों में सम्मिलित करने हेतु प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है। भावी जबलपुर नगर का विकास नर्मदा के दक्षिणी भाग में स्थित नारायणपुर (चूल्हा गुलाई पहाड़ी) 📝 तक होना चाहिये तथा उत्तरी सीमा का निर्धारण परियट नदी को प्राकृतिक सीमा मानकर करना चाहिये। यहां दक्षिण में स्थित पहाड़ी एवं उत्तर में स्थित परियट नदी प्राकृतिक सीमाओं के रूप में कार्य करेंगी वहीं यह वास्तु अनुकूल स्थिति भी होगी। इसके अतिरिक्त नर्मदा नदी का दक्षिणी भाग कठोर मुरम युक्त है जो कि नगरीय विकास हेतु उचित है जबकि नगर का उत्तरी भाग उपजाऊ होने के कारण कृषि के लिये सर्वोत्तम है इससे नगर के उत्तरी भाग में ग्रामीण भूमि के अधिग्रहण की समस्या हल हो जायेगी। नगर के उत्तरी तथा ईशान भाग में जनसंख्या आवास पर रोक लगाना चाहिये क्योंकि उत्तर में औद्योगिक क्षेत्र स्थित है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है तथा नैऋत्य में रक्षा निर्माणी संस्थान होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से अहितकर हैं। इसी प्रकार की दुर्घटना दिसम्बर 1984 में भोपाल स्थित अमोनियम

विकास यहां को बातायांत व्यवस्था, जल मत विकास को श्रायांचे एक वास्तु व्यवस्था

कार कर वह मार र मानवाम केलात है जा तह है। जिसके परिवार र राम उसे एक वास

कारण बुरी आदतों एवं समाज विरोधी गतिविधियों में सम्मिलित होने की आशंका बनी रहती है। अतएव नगर के सभी भागों में समान रूप से समुचित नगरीय सुविधाओं की आपूर्ति की आवश्यकता है।

#### सुझाव :

#### 10.1.1 नगर का वास्तु अनुकूल विकास :

जबलपुर नगर संस्कारधानी की सीमाओं का पुनर्निधारण वास्तुशास्त्र के अनुरूप किया जाना चाहिये। नगरीय विकास की दृष्टि से नगर को वास्तुशास्त्र के अनुरूप प्रमुख सात अथवा आवश्यकतानुसार सर्व सुविधायुक्त उपनगरों में विभाजित कर 1/2 से 1/4 किलोमीटर चौड़ी हरित पटि्टका के रूप में सीमाओं का निर्धारण किया जाना चाहिये इसके अतिरिक्त वास्त्रास्त्र के अनुरूप उपयुक्त स्थानों पर भी उद्यान, खेल के मैदान, खुले स्थान, हरित क्षेत्र विकसित किया जाना चाहिये तथा नगर में सम्पादित कार्यों का वास्तुशास्त्रानुसार उचित भागों में स्थापित किया जाना चाहिये। नगर में स्थित समस्त शासकीय, अर्धशासकीय, सार्वजनिक एवं निजी भवनों का यथायोग्य वास्तुशास्त्रीय सुधार किया जाना चाहिये तथा भविष्य में निर्मित होने वाले भवनों का वास्तुशास्त्रानुसार निर्माण करना चाहिये। नगर की प्रशासकीय सीमाओं का वास्तुशास्त्रानुसार पुर्ननिर्धारण करना चाहिये। नगर के सभी क्षेत्रों अथवा उपनगरों जैसे केन्ट, खमरिया, जी.सी.एफ., जवलपुर नगर निगम, जवलपुर वाहय वृद्धि भाग इत्यादि को एक ही प्रशासनिक इकाई के द्वारा संचालित करना चाहिये। हाल ही में नगरों में स्थित छावनी क्षेत्रों का नगर निगम क्षेत्रों में सम्मिलित करने हेतु प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है। भावी जबलपुर नगर का विकास नर्मदा के दक्षिणी भाग में स्थित नारायणपुर (चूल्हा गुलाई पहाड़ी) 🕏 तक होना चाहिये तथा उत्तरी सीमा का निर्धारण परियट नदी को प्राकृतिक सीमा मानकर करना चाहिये। यहां दक्षिण में स्थित पहाड़ी एवं उत्तर में स्थित परियट नदी प्राकृतिक सीमाओं के रूप में कार्य करेंगी वहीं यह वास्तु अनुकूल स्थिति भी होगी। इसके अतिरिक्त नर्मदा नदी का दक्षिणी भाग कठोर मुरम युक्त है जो कि नगरीय विकास हेतु उचित है जबकि नगर का उत्तरी भाग उपजाऊ होने के कारण कृषि के लिये सर्वोत्तम है इससे नगर के उत्तरी भाग में ग्रामीण भूमि के अधिग्रहण की समस्या हल हो जायेगी। नगर के उत्तरी तथा ईशान भाग में जनसंख्या आवास पर रोक लगाना चाहिये क्योंकि उत्तर में औद्योगिक क्षेत्र स्थित है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है तथा नैऋत्य में रक्षा निर्माणी संस्थान होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से अहितकर हैं। इसी प्रकार की दुर्घटना दिसम्बर 1984 में भोपाल स्थित अमोनियम

notice to state the season of the state of t

taken with the first for the suffer restored to pain these man faller aris and

teneds well pag the suffer spell is stad by force stuff in wells but I fellow 1979

कार्बाइडंद्रमें गैस रिसाव के कारण हजारों व्यक्ति काल के गाल में समा गये तथा अभी भी अनेक व्यक्ति अस्वस्थ्य जीवन व्यतीत करने मजबूर हैं इसी प्रकार की दुर्घटना 1990 में सी.ओ. डी. फैक्ट्री जबलपुर में आग लगने के कारण सम्पूर्ण जबलपुर नगर का अस्तित्व खतरे में पड़ गया था। अतः इन क्षेत्र में आवासीय इकाईयों के निर्माण पर रोक लगाना चाहिये।

## 10.1.2. गन्दी बस्तियों के उद्धार हेतु समुचित उपाय :

जबलपुर नगर में सुरसा के मुंह के समान बढ़ती हुई गन्दी बस्तियों की समस्या पर अंकुश लगाना अनिवार्य हो गया है। नगर मे व्याप्त गन्दी बस्तियों के प्रसार का प्रमुख कारण नगर के निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्र से जनता का रोजगार की तलाश में नगर की ओर पलायन है। इस पलायन को रोकने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में उचित समय पर समुचित रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना चाहिये। इसके अलावा वर्तमान झोपड पट्टी वासियों को पट्टा एवं ऋण वितरित करने की अपेक्षा उन्हें उनकी आर्थिक स्थिति के अनुरूप उचित आवास की व्यवस्था कराना चाहिये। गन्दी बस्तियों में शिक्षा एवं उचित मनोरंजन के माध्यम से उन्हें शिक्षित किया जाये तथा उनकी बुरी आदतों जैसे शराब, जुंआ, अपराधिक प्रवृत्तियों आदि से मुक्त कराकर उचित रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिये, तथा भविष्य में गन्दी बस्तियों का निर्माण न हो इसक लिये पुख्ता प्रबन्ध किया जाना चाहिये। यदि किसी निर्माण कार्य के लिये कोई निर्माणकर्ता बाहर से श्रमिकों को बुलवाता है तो उसे कुल निर्माण क्षेत्र का अथवा कुल लागत का 15 प्रतिशत श्रमिकों के लिये आरिक्षत करना चाहिये तथा उनके रहने की समुचित व्यवस्था करना चाहिये। गन्दी बस्तियों की रोकथाम के लिये इस प्रकार का शासकीय कियम भी है। म.प्र. शासन द्वारा दिये गये आदेश क. एफ - 3/39/85/32 का कठोरता पूर्वक पालन कराना चाहिये। यह आदेश 21/11/90 को दिया गया था जिसमें 1 एकड़ या उससे अधिक भूमि पर कालोनी अथवा आवास समूह विकसित करने पर कुल भूमि का कम से कम 15 प्रतिशत अविकसित भूमि इनफरमल सेक्टर के लिये सुरक्षित रखी जाने की बात कही गई है। इस नियम को कठोरतापूर्वक कियान्वयन किया जाना चाहिये। इसके अलावा नगर में स्थित सभी भवनों का यथायोग्य वास्तुशास्त्रीय सुधार किया जाना चाहिये। नगर निगम द्वारा भविष्य में निर्मित होने वाले भवनों के वास्तुशास्त्रीय के आधार पर ही निर्माण की अनुमति प्रदान की जानी चाहिये।

# 10.1.3. यातायात पुर्नायोजन :

जबलपुर नगर की वर्तमान यातायात व्यवस्था को देखते हुये उसके पुर्नायोजन की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। नगर के विभिन्न भागों में यातायात दबाव को देखते हुये परिस्थित अनुकूल सड़कों की चौड़ाई का पुर्ननिर्धारण कर त्वरित गति से कियान्वयन किया जाना चाहिये। इसके अलावा सड़कों में पुनः डामलीकरण के माध्यम से टूटी - फूटी सड़कों का उचित माध्यम से सुधार किया जाना चाहिये। नगर के कुछ मार्गों में ही मार्ग विभाजक का निर्माण किया गया है अतएव मार्ग विभाजकों का निर्माण सभी प्रमुख सड़कों पर किया जाना चाहिये जिसकी चौड़ाई समय परिस्थि अनुरूप घां. 3 से 5 मीटर के मध्य होना चाहिये तथा इन मार्ग विभाजकों के मध्य तथा सड़क के किनारे पर्याप्त मात्र में उचित वृक्षों का वृक्षारोपण किया जाना चाहिये। इससे एक ओर तो नगर की सुन्दरता में वृद्धि होगी ताी दूसरी ओर पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति में सहायता भी प्राप्त होगी। नगर के प्रमुख भागों मे पार्किंग की उचित व्यवस्था करना चाहिये तथा प्रमुख बाजारों जैसे फुहारा बाजार, सदर की सब्जी मण्डी, आदि में वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये एवं माल वाहकों के लिये प्रथक मार्ग अथवा निश्चित समय सीमा का आवश्यकतानुसार निर्धारण कर देना चाहिये। नगर के चौराहों मे आवश्यकतानुसार पर्याप्त मात्रा मे स्वचालित यातायात संकेतक तथा नियमों के कियान्वयन के लिये यातायात कर्मी उपस्थित होना चाहियें नगर मे यह भी देखा गया है कि अनेक चौराहों में स्वचालित यातायात संकेतक तो लगे हैं किन्तु वे बन्द पड़े हुये हैं अतः इनके उचित रखरखाव की व्यवस्था भी होना चाहियें सड़कों में एक मार्गी (One way Trafic) यातायात की व्यवस्था होना चाहिये। मार्गो का अतिकमण से सुरक्षा के लिये नियमों का कठोरता पूर्वक से सुरक्षा के लिये नियमों का कठोरता पूर्वक कियान्वयन होना चाहिये, तथा सड़कों पर फुटकर सामग्री विकेताओं हेतु आवश्यकतानुसार उचित स्थान की व्यवस्था करना चाहिये। नगर वाहन सेवा मे प्रयुक्त वाहनों में अतिसवारी अथवा अधिभार (Over Loding) की रोकथाम तथा वाहनों की गति में नियन्त्रण हेतु उचित नियमों का निर्धारण कर कठोरता पूर्वक अनुपालन करवाना चाहिये। इसके अलावा नगर के जिन भागों में टेम्पों संचालित हैं उनके स्थान पर मिनी बस अथवा बस का उपयोग करना चाहिये, क्यों कि टेम्पों में डीजल का प्रयोग होता है, जो कि पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त अहितकर है। सांइटिस्ट्रें के अनुसार डीजल में विश्व का सबसे सशक्त कें सर उत्पन्न करने वाला रसायन 'नाइट्रोबेन्जाथ्रोन' (थ्री नाइट्रोबेन्जाथ्रोन) पाया जाता है।<sup>2</sup> इसके अतिरिक्त पर्यावरण की दृष्टि से हानिकारक वाहनों जैसे अधिक धुआं, अधिक शोर करने वाले वाहनों पर रोक लगाना चाहिये।

रेल यातायात को सुरक्षा एवं तीव्रगामी बनाने की दृष्टि से नगरीय परिक्षेत्र में रेल मार्गों के किनारे लोहे की जाली लगाना चाहिये। इसके अतिरिक्त रेल मार्गों के किनारे विकसित डेरी फार्मों पर रोक लगाकर उन्हें उचित स्थान पर नगर से बाहर स्थानान्तरित करना चाहिये। हवाई यातायात को सुलभ बनाने हेतु नगर में विमान सेवा के दिनों में वृद्धि की जानी चाहिये जिसके राजनैतिक स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रस्तावित विमानतल के निर्माण स्थल पर वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से पूर्नविचार किया जाना चाहिये तथा इस दृष्टि नवीन विमानतल का निर्माण नगर की वायव्य दिशा में उचित होगा।

# 10.1.4 जल आपूर्ति की समुचित व्यवस्था :

जबलपुर नगर में जल आपूर्ति के पर्याप्त स्त्रोत तो है किन्तु उनका समुचित मात्रा में विदोहन नहीं हो रहा है । अतः नगर के उत्तर में स्थित परियट नदी से नगर में अधिकाधिक मात्रा में जल आपूर्ति का प्रयास किया जाना चाहिये । यदि परियट नदी से मांग के अनुरूप जल की आपूर्ति संभव न हो तो उसमें कलेक्टर वेल स्थापित कर जल आपूर्ति किया जाना चाहिये । यदि इसमें भी जल आपूर्ति संभव न हो तो खंदारी जलाश्य से जल की आपूर्ति किया जाना चाहिये । यदि उपरोक्त दोनों जल स्त्रोत नगर में जल आपूर्ति हेतु पर्याप्त न हो तो नर्मदा नदी भेड़ाधाट में जल संयत्र स्थापित कर जल आपूर्ति की जानी चाहिये ।

# 10:1:5 जल मल निकासी का समुचित व्यवस्था -

नगर में जल मल निकासी का उचित प्रबन्ध करना चाहिये क्योंकि वर्तमान में नगर का जलमल ओमती एवं मोती नालों के माध्यम से परियट नदी द्वारा हिरन नदी होते हुये नर्मदा नदी में विसर्जित होता है जो कि न केवल वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से अनुचित है वरन स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यन्त हानिप्रद है क्योंकि परियट एवं नर्मदा नदी वर्तमान में महत्वपूर्ण जल स्त्रोत है तथा हिरन नदी भविष्य में नगर के लिये भावी तथा वस्तुशास्त्रीय दृष्टि से उपयुक्त जल स्त्रोत बन सकती है अतः वर्तमान जल मल निकासी व्यवस्था में परिवर्तन कर भावी नगर के

<sup>2.</sup> दैनिक नवभारत, जबलपुर, 12 अक्टूबर 1997

विकास की दृष्टि से दीर्घकालीन व्यवस्था नगर के बाहर वायव्य एवं पश्चिम के मध्य किया जा सकता है। यहाँ पर जल शोध ससंयत्र स्थापित कर इस प्रदूषित जल को पुर्नचकी करण के माध्यम से शुद्ध कर आस पास के क्षेत्र में कृषि कार्य, उद्यान अथवा नगर के वृक्षारोपरण हेतु वितरित कर देना चाहिये तथा इसी क्षेत्र के आस पास नगर द्वारा निष्कासित ठोस अपशिष्ट पदार्थ को कम्पोष्ट में परिवर्तित कर निकटवर्ती वृक्षारोपण हेतु उपयोग किया जाना चाहिये।

## 10.1.6. पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम हेतु समुचित उपाय :

नगर के दिन प्रतिदिन बढ़ते हुये पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम अत्यन्त आवश्यक हो गयी है। इसके लिये आवश्यक है कि नगर के मध्यवर्ती भाग जैसे — राइट टाऊन, नेपियर टाऊन, गोहलपुर, भरतीपुर आदि में स्थापित औद्योगिक प्रतिष्ठानों के नगर के बाह्य भाग में वास्तुशास्त्र के अनुरूप स्थानांन्तरित किया जाना चाहियें नगर के मध्य स्थापित उद्योग न केवल वास्तुशास्त्र की दृष्टि से अनुचित है वरन् सुरक्षा एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यन्त हानिप्रद हैं। दिसम्बर 1984 में भोपाल नगर स्थित अमोनियम कार्बाइड कारखाने में गैस रिसाव से हजारों व्यक्ति काल के गाल में समा गये थे। इसके अलावा कारखानों द्वारा प्रदूषित पदार्थ के उत्सर्जन की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिये। इसके अलावा नगर में पर्याप्त मात्रा में वृक्षारोपण किया जाये तथा पर्यावरण की दृष्टि से हानिप्रद वाहनों पर प्रतिबन्ध लगाया जाये। इसके अतिरिक्त नगर के समुचित आर्थिक विकास की दृष्टि से नगर के उत्तर में स्थित औद्योगिक क्षेत्र में नवीन उद्योगों की स्थापना नहीं की जाना चाहिये। इसके स्थान पर नगर के पिश्चम अथवा नेऋत्य अथवा पिश्चम में नगर का नवीन औद्योगिक केन्द्र विकसित किया जाना चाहिये।

# 10.1.7. ब्रह्म स्थल के रूप में भावातीत ध्यान केन्द्र का विकास :

संस्कारधानी नगर को नाम के अनुरूप तथा सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है कि नगर को अधिकाधिक मात्रा में प्राकृतिक सहयोग प्राप्त हो। इसके लिये आवश्यक है कि नगर के सभी उपनगरों मे ब्रह्म स्थलों निर्मित कर उसे अतिकमण से मुक्त रखा जाये तथा उन्हें खुले क्षेत्र (Open spese) के रूप में सुरक्षित रखा जाये एवं उन्हें निर्माण रहित भावातीत ध्यान केन्द्र के रूप विकसित किया जाना चाहिये। इस ब्रह्म स्थल में नगर अथवा उपनगर की कुल जनसंख्या का 1 प्रतिशत भाग भावातीत ध्यान एवं कम से कम इस 1 प्रतिशत का वर्गमूल

भाग भावतीत ध्यान एवं सिद्धी कार्यक्रम का लगभग 20 से 30 मिनिट प्रातः एवं सांयकाल अभ्यास करें। इससे एक ओर तो नगर की सतोगुणी प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी होगी वहीं दूसरी ओर नगर को अनेक समस्याओं से मुक्ति प्राप्ति में भी सहायता प्राप्त होगी। वैज्ञानिक प्रयोगों से प्रमाणित हुआ है कि भावातीत ध्यान एवं सिद्धी कार्यक्रम के सामूहिक अभ्यास से अमेरिका, इंग्लैण्ड, हालैण्ड, मारीशस इत्यादि देशों में अनेक समस्यायें जैसे बड़ते हुये अपराध आदि में अंकुश लगा है तथा सामाजिक स्तर ऊँचा उठा है। इसके अलावा सार्वजिनक भवनों, कार्यालयों, आदि में भी सम्भव हो तो भावातीत ध्यान एवं सिद्धी कार्यक्रम का अभ्यास कराना चाहिये तथा नगर में भावातीत ध्यान एवं सिद्धी कार्यक्रम हेतु जनजागरण अभियान चलाया जाना चाहिये।

### 10.2. राजधानी नगर भोपाल :

अध्ययन अनुसंधान का द्वितीय विषय मध्यप्रदेश की वर्तमान राजधानी नगर भोपाल रहा है। यह नगर प्रारम्भिक काल से ही राजनीति का केन्द्र होने के कारण सत्त् विकासशील रहा है। भोपाल नगर में राजनैतिक गतिविधियों, शैक्षणिक, औद्योगिक, व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकिसत होने के कारण तीव्रगति से बढ़ते हुये नगरीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से नगर पर दिखाई देता है। इस बढ़ते हुये नगरीकरण के प्रभाव से भोपाल नगर को जहां एक ओर नई पहचान मिली है, वहीं दूसरी ओर इस नगर के समक्ष अनेक प्रकार की समस्यायें जैसे — आवास की समस्या, पर्यावरण प्रदूषण, यातायात समस्यायें, गन्दी बिस्तयों का प्रसार इत्यादि अत्यन्त तीव्रगति से बढ़ी है, जिससे नगरवासियों का जीवन दिन प्रतिदिन किवन होता जा रहा है। इसके लिये आवश्यक है कि इस नगर के नियोजन में नगरीय भूगोल तथा वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के उचित संतुलित ज्ञान का उपयोग करना चाहिये।

यहां नगरीय जनसंख्या में जितनी तीव्रगति से वृद्धि हुई है, उतनी तीव्रगति से आवास की व्यवस्था सम्भव नहीं हो पाई है, जिसके परिणाम स्वरूप 36% गन्दी बस्तियों का निर्माण हो गया है। जिसमें लगभग 59603 झुग्गियाँ निर्मित हैं। एक अनुमान के अनुसार सन् 2000 में लगभग 1,20,000 अतिरिक्त आवासीय इकाईयों की आवश्यकता होगी।

<sup>3.</sup> Maharish Technology of the Unified field, 1994.

गोपाल गगर शिक्षा, ओद्योगिक, व्यापार एवं वाणिज्य का प्रगुख प्रादेशिक केन्द्र होने के कारण इसका विस्तार अत्यन्त तीव्रगति से हुआ है जिससे इसके आकार (Size) में अप्रत्याशित वृद्धि होने के कारण यह नगर अनियमित आकृति (Sape) में विकसित हुआ है। इससे न केवल प्रशासनिक दृष्टि से कितनाई उत्पन्न होती वरन एक वास्तुदोष भी है। नगर के पूर्व में गोविन्दपुरा बी.एच.ई.एल. जैसे औद्योगिक क्षेत्र स्थित है जो कि नगर के लिये वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से अनुचित हैं इसके अतिरिक्त यहां पर प्रदूषणकारी के उद्योगों के विकास का प्रस्ताव भोपाल विकास योजना 2005 के अन्तर्गत रखा गया है जो कि न केवल वास्तु दृष्टि से अनुचित प्रतीत होता है वरन सुरक्षा एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से यहां नवीन उद्योगों की स्थापना पर पुनिवचार करना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्त विशेषतया पुराने भोपाल नगर में जल मल निकासी की समुचित व्यवस्था का आभाव है। नगर का उत्सर्जित अधिकांश पदार्थ बड़े एवं छोटे तालाब के आस पास एकत्रित दिखाई देता है, जो न केवल वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से दोषपूर्ण है वरन स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यन्त हानिप्रद है, क्योंकि बड़े एवं छोटे तालाब से नगर में जल आपूर्ति की जाती है। इसके

अतिरिक्त प्रदूषणकारी उद्योगों जैसे कपड़ा मिल, पुट्ठा मिल, इत्यादि से निकला हुआ अपशिष्ट जल व पुराने नगर का निस्तारित जल एक नाले के माध्यम से हलाली नदी में मिलता है। नगर के आग्नेय एवं दक्षिणी भाग का उत्सर्जित जल कित्यासोत नदी में मिलता है। हलाली एवं कित्यासोत नदी के माध्यम से प्रदूषित जल बेतवा नदी में प्रवाहित होता है। इसके अतिरिक्त नैऋत्य भाग का जल कोलार नदी में समाहित होता है। पुराने भोपाल में नालियाँ पर्याप्त गहरी एवं चौड़ी न होने के कारण जल मल की उचित निकासी नहीं हो पाता है।

भोपाल नगर एक राजधानी नगर होने के बावजूद भी यातायात व्यवस्था दुरस्त नहीं है। यहां 1980 — 81 में कुल यांत्रिक वाहनों की संख्या 29518 थी जो कि 1992 — 93 में बढ़कर यहां 1980 माई। अर्थात मात्र 12 वर्षों में 91,266 वाहनों की वृद्धि हुई है जबिक सड़कों की 2,20,784 हो गई। अर्थात मात्र 12 वर्षों में 91,266 वाहनों की वृद्धि हुई है जबिक सड़कों की वौड़ाई में कोई विशेष प्रगति नहीं हो पाई है इससे एक ओर जहां दुर्घटनाओं में भारी वृद्धि चौड़ाई में कोई विशेष प्रगति नहीं हो पाई है इससे एक ओर जहां दुर्घटनाओं में भारी वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर यातायात गित में भी अवरोध उत्पन्न होते हैं। यहां मोटर स्टैण्ड जैसे हुई है वहीं दूसरी ओर यातायात गित में भी अवरोध उत्पन्न होते हैं। यहां मोटर स्टैण्ड जैसे प्रमुख भीड़ भाड़ युक्त मार्गों में मार्ग विभाजनकों का आभाव है तथा सड़क के किनारे नगर प्रमुख भीड़ भाड़ युक्त मार्गों में मार्ग विभाजनकों का आभाव है तथा सड़क के किनारे नगर पाहन सेवा के वाहन खड़े रहते हैं एवं अनेक नगर वाहन अधिभार (Over Loading) वाहन सेवा के वाहन खड़े रहते हैं एवं अनेक नगर वाहन अधिभार (Over Loading) विशे सड़क पर अनियन्त्रित गित से दौड़ते हैं। इन सभी के परिणाम स्वरूप नगर में सदैव विशे हुये सड़क पर अनियन्त्रित गित से दौड़ते हैं। इन सभी के परिणाम स्वरूप नगर में सदैव विशेष हुये सड़क पर अनियन्त्रित गित से दौड़ते हैं। इन सभी के परिणाम स्वरूप नगर में सदैव

1081 व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा 72 घायल हुये थे 1988 में दुर्घटनाओं की संख्या 1912 हो गई जिसमें 1416 व्यक्तियों की मृत्यु हुई 97 व्यक्ति घायल हुये। अर्थात मात्र सात वर्षों में 847 दुर्घटनाओं 335 व्यक्तियों की मृत्यु में बढ़ोत्तरी हुई इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश दुर्घटनायें भीषण होती हैं जिनमें मृतकों की अपेक्षा घायलों की संख्या कम होती है। नगर के अनेक भागों विशेषतया पुराने भोपाल में संचालित टेम्पों पर्यावरण प्रदूषण का एक महत्वपूर्ण कारक है। रेल मार्गों के किनारे गन्दी बस्तियाँ विससित हो गई हैं जिससे न केवल तीव्रगामी यातायात मे बाधा उत्पन्न होती है बल्कि सदैव दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है।

भोपाल नगर झीलों की नगरी होते हुये भी इस जल की समस्या से जूझना पड़ रहा है। अभी लगभग 7 मिलियन गैलन प्रतिदिन जल के आभाव में भोपाल वासियों को गुजारा करना पड़ रहा है, जबकि एक अनुमान के अनुसार सन् 2005 मे जल की कुल आवश्यकता 100 मिलियन गैलन प्रतिदिन हो जायेगी। जबिक वर्तमान जल आपूर्ति क्षमता मात्र 51.5 मिलियन गैलन प्रतिदिन है अर्थात 48.5 मिलियन गैलन प्रतिदिन जल की पूर्ति हेतु नवीन जल स्त्रोत की खोज करना होगा। अर्थात इस दृष्टि से नवीन जल स्त्रोत के विवेकपूर्ण एवं समुचित उपयोग की आवश्यकता महसूस की जा रही है। सुरम्य पहाड़ियों एवं सुन्दर झीलों के मध्य बसे इस अनुपम नगर को प्रदूषण का ग्रहण लग गया है। बस स्टैण्ड जैसे सार्वजनिक स्थल पर सांस लेना कठिन लगता है। नगर में स्थित प्रदूषणकारी उद्योग न केवल वायु प्रदूषण में अभूतपूर्व योगदान दे रहे हैं, वरन् अपशिष्ट पदार्था द्वारा निदयों को प्रदूषित करने में भी पीछे नहीं हैं, जो कि भावी नगर के लिये महत्वपूर्ण जल स्त्रोत बन सकती है। इसके अलावा नगर में ठोस अपशिष्ट के विसर्जन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध न होने के कारण संकामक बीमारियों के प्रसार का सदैव खतरा बना रहता है। अतः इस पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से नगर को मुक्त कराने हेतु समुचित प्रबन्ध करना अति आवश्यक है।

#### सुझाव

नगर का वास्तु अनुकूल विकास :

भोपाल नगर का वास्तुशास्त्रीय एवं नगरीय भूगोल आधार पर नएगर का विकास करना चाहिये। नगर की प्रस्तावित एवं पूर्व निर्धारित सीमाओं के पुनर्निधारण हेतु विचार करना

भोपाल विकास योजना प्रारूप, भोपाल पृ. क. 49

आवश्यक है, क्यों कि नगर मे अत्याधिक जनसंख्या दवाव के परिणाम स्वरूप नगर अनियमित आकृति (Shape) में विकसित हो रहा है जो कि वास्तुशास्त्र की दृष्टि से उचित नहीं है। नगर के पूर्व में प्रस्तावित प्रदूषणकारी एवं हल्के उद्योग की स्थापना पर वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से पुनर्विचार करना आवश्यक है। नगर की नैऋत्य दिशा में प्रस्तावित उपरोक्त उद्योगों को विकसित किया जा सकता है। नगर के पूर्व में स्थित बी.एच.ई.एल. एवं गोविन्दपुरा क्षेत्र में नवीन उद्योगों के विकास पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये इसके स्थान पर नगर के दक्षिण अथवा नैऋत्य में भावी नगरीय विकास को ध्यान में रखते हुये नगर के बाहर नवीन औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त नगर को प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से वास्तुशास्त्रीय आधार पर 7 अथवा कालानुरूप नगर को सर्व सुविधा युक्त मे विभजित करना चाहिये तथा प्रत्येक उपनगर में वास्तुशास्त्रानुसार उचित भागों में उचित कार्यों का स्थापन अथवा कार्यों हेतु निर्धारित करना चाहिये।

# 2. यातायात व्यवस्था का समुचित प्रबन्ध :

भोपाल नगर मध्यप्रदेश की राजधानी होने के साथ - साथ एक प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यह नगर देश के प्रमुख भागों में सड़क, रेल एवं वायु मार्गी द्वारा सम्बद्ध है । भोपाल नगर में अधिकांश सड़कें वर्तमान मे 20 से 35 मीटर की चौड़ाई की है जबकि 1981 से 1991 की तुलना में 191 प्रतिशत यांत्रिकी वाहन तथा 26.7 प्रतिशत दुपहिया वाहनों की वृद्धि हुई है। अतएव इसी अनुपात में सड़कों की चौड़ाई में भी वृद्धि करना अनिवार्य है अतएव नगर की प्रमुख सड़कों की चौड़ाई 45 से 60 मीटर तक अथवा आवश्यकतानुसार होना अनिवार्य प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त नगर की अनेक भीड़ भाड़ युक्त सड़कों (जैसे बस स्टैण्ड, संगम टॉकिज, भारत टॉकिज) इत्यादि में मार्ग विभाजकों का आभाव है, अतएव यहां मार्ग विभाजकों का निर्माण अति आवश्यक प्रतीत होता है। यह मार्ग विभाजक 3 से 5 मीटर चौड़े होना चाहिये तथा इनके मध्य एवं सड़क के किनारे उपयुक्त वृक्षों का वृक्षारोपण होना चाहिये जिससे एक ओर नगरीय पर्यावरण प्रदूषण में अंकुश लगाने में सहायता प्राप्त होगी वहीं नगर की सुन्दरता तथा राहगीरों को ठंडी छांव भी प्राप्त होगी। नगर के अन्य भागों में संचालित टेम्पों पर पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से प्रतिबन्ध लगाना चाहिये तथा उनके स्थान पर मिनी बस अथवा बस संचालित किया जाना चाहिये। नगर में संचालित नगर वाहन सेवा मे प्रयुक्त वाहनों की अनियन्त्रित गति एवं अतिभार पर रोक लगाने के लिये सख्त नियम बनाना एवं उनका कियान्वयन किया जाना चाहिये। इसके अलावा नगर के अनेक प्रमुख चौराहों पर यातायात नियन्त्रण हेतु यातायात कर्मी एवं यन्त्र नहीं लगे हैं अतएव नगर के प्रमुख चौराहों पर इनकी व्यवस्था अनिवार्य रूप से की जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त वाहनों को सड़क के किनारे खड़े होने पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये तथा इसका सख्ती से पालन कराना चाहिये। नगर के प्रमुख बाजारों, अन्य महत्वपूर्ण भागों मे वाहन पार्किंग की सम्चित व्यवस्था उपलब्ध नहीं है, अतएव नगर के प्रमुख स्थानों मे वाहन पार्किंग की सम्चित व्यवस्था कराना चाहिये। नगर के अनेक भागों में सड़क पर अथवा सड़क के किनारे हांथ ठेले पर सब्जी आदि वस्तुओं की बिकी हेतु दुकान लगाई गई देखी गई हैं जिन पर रोक लगाना चाहिये एवं इनके लिये स्थाई रूप से दुकान लगाने के लिये उचित स्थान का निर्धारण करना चाहिये।

### गन्दी बस्तियों में प्रसार के रोकथाम हेतु समुचित उपाय :

गन्दी बस्तियों के प्रसार का प्रमुख कारण नगर वासियों को आवास की उचित व्यवस्था न हो पाना है अतएव नगर में गन्दी बस्तियों के प्रसार हेतु उचित कदम उठाना अनिवार्य है। अतएव वर्तमान में स्थित गन्दी बस्तियों के उन्मूलन हेतु उनमें निवासित परिवारों को पट्टा एवं ऋण देने के बजाये उनकी आर्थिक स्थिति के अनुरूप उचित आवास की व्यवस्था की जानी चाहिये। गन्दी बस्तियों के निर्माण के प्रमुख कारकों में ग्रामीणों क्षेत्रों से मौसमी प्रवास भी एक प्रमुख कारक है अतएव इस मौसमी प्रवास की रोकथाम हेतु ग्रामीणों के लिये ग्रामीण क्षेत्रों मे ही रोजगार के समुचित अवसर उपलब्ध कराना चाहिये। इसके अतिरिक्त यदि किसी निर्माण कार्य हेतु कोई निर्माणकर्ता बाहर से श्रमिकों को बुलवाता है जो उसके निर्माण क्षेत्र में कुल क्षेत्रफल का 15 प्रतिशत भाग में श्रमिकों के लिये समुचित आवास की व्यवस्था करना चाहिये इससे गन्दी बस्तियों के प्रसार पर शीघता पूर्वक अंकुश लगाया जा सकता हैं इसके अतिरिक्त भावी नगर में निर्मित समस्त भवनों में वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का अनुपालन किया जाना चाहिये तथा वर्तमान में निर्मित भवनों में यथायोग्य वास्तु कार्त्रीय सुधार किया जाना चाहिये। म.प्र. शासन के आदेश क. एफ-3/39/85/32 के कठोरता पूर्वक पालन हेतु उपयुक्त कदम उठाना चाहिये। जिसमें इनफरमल सेक्टर हेतु 15%भूमि सुरक्षित रखने की बात कही गई है।

#### 4. जल की समुचित व्यवस्था :

भोपाल जल आपूर्ति की कमी का प्रमुख कारण जल स्त्रोतों की कमी नहीं है, वरन् उपलब्ध जल स्त्रोतों का विवेक पूर्ण ढंग से विदोहन न होना है । जैसे वर्तमान में बड़ा तालाब, कोलार, हथाईखेड़ा तथा ट्यूबवेल द्वारा कुल जलस्त्रोत क्षमता 685 मिलियन गैलन प्रतिदिन है,



जबिक मात्र 53.5 मिलियन गैलन प्रतिदिन जल की आपूर्ति की जाती है अर्थात 15 मिलियन गैलन जल प्रतिदिन और नगर को प्रदान किया जाता है जिससे 7 मिलियन गैलन जल प्रतिदिन की कमी को आसानी से पूर्ण किया जा सकता है। किन्तु भावी नगर की विकास की दृष्टि से जल की यह मात्रा भी पर्याप्त नहीं है अतएव नवीन जल स्त्रोतों की उपलब्धता अति आवश्यक है। इस दृष्टि से नगर तथा प्रादेशिक नियोजन विभाग द्वारा नगर से 40 कि.मी. दूर नर्मदा नदी से जल लाने का प्रस्ताव है। किन्तु नर्मदा नदी से नगर तक जल पहुंचाना अधिक व्यय साध्य होगा इस दृष्टि से हलाली नदी से नगर को जल प्रदाय कराना उचित एवं मितव्ययता पूर्ण प्रतीत होता है यदि इससे भी नगर में जल आभाव उत्पन्न होता है के क्ला कराना उचित एवं मितव्ययता

### 6. जल - मल निकासी का समुचित प्रबन्ध :

वर्तमान में नये भोपाल मे जलमल निकासी की व्यवस्था के उचित प्रबन्ध किये गये हैं जबिक पुराने भोपाल में कार्य प्रगति पर है, किन्तु यह कार्य काफी मन्द गति से जल रहा है पुराने नगर के अनेक भागों में जल मल निकासी की परम्परागत व्यवस्था देखने मिलती है यहां पर नाली काफी सकरी एवं कम गहरी है जो कि निस्तारित जल को शीघ्रता से प्रवाहित करने में असमर्थ होती है अतएव पुराने नगर में जलमल निकासी की समुचित व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है बड़े एवं छोटे तालाब के निकट कचरे का हुर लगा हुआ है जबकि यह नगर के लिये जल आपूर्ति का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्त्रोत है। यह न केवल वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से अनुचित है वरन् स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यन्त हानिप्रद है? द्वैटलैण्ड प्रियोजना उपयुक्त है। इसके अलावा नगर के उत्तर में प्रवाहित हलाली नदी एक महत्वपूर्ण भावी जल स्त्रोत हैं जिसमें नगर के उत्तरी तथा उत्तर पूर्वी भाग का निस्तारित तथा कपड़ा मिल एवं पुट्ठा मिल का प्रदूषित जल समाहित होता है अतएव इसे हलाली नदी में मिलने से रोकना चाहियें इसी प्रकार केरवां एवं कलिया सोत नदियों में भी नगर का जल मल विसर्जित होता है जो कि उचित नहीं है अतएव नगर के नैऋत्य में पाइप लाइन अथवा किसी उचित माध्यम से नगर द्वारा निष्तारित जल विसर्जित करना चाहिये तथा जिसका पुर्न शुद्धीकरण कर नगर के वाह्य भाग में विस्तारित कृषि क्षेत्र अथवा नगर में उद्यानों इत्यादि की सिंचाई के लिये वितरित कर देना चाहिये। इसी प्रकार नगर के ठोस आशिष्टके विसर्जन की नगर में समुचित व्यवस्था उपलब्ध ा नहीं है अतः नगर में विभिन्न स्थानों एवं सार्वजनिक स्थलों इत्यादि में कचरादान स्थापित करना चाहिये तथा इसकी कम्पोष्ट खाद बनाने हेतु व्यवस्था करना चाहिये तथा इसे आस पास के कृषि क्षेत्र, उद्यान, वृक्षारोपण इत्यादि हेतु वितरित कर देना चाहिये।

महाराज ने के के के महत्व में बाइव लाइन अधावा किसी खाँचत माराम से ने कर के कि

# 6. पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम हेतु उपाय:

नगरवासियों के चहुंमुखी विकास एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिये नगर में पर्याप्त मात्रा में वृक्षारोपण, उद्यान, पिकनिक स्थल, है। नगर के पूर्वी माग में प्रस्तावित प्रदूषणकारी एवं उद्योगों की स्थापना पर पुर्न विचार करना आवश्यक तथा औद्योगिक संस्थानों द्वारा उत्सर्जित पदार्थ का सुरक्षित विसर्जन पर्यावरण प्रदूषण की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है। इसके अलावा नगर में पर्यावरण की दृष्टि से हानिकारक (जैसे अधिक धुंआ एवं शोर करने वाले) वाहनों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये।

#### 7. ब्रह्म स्थल के रूप में भावातीत ध्यान केन्द्र का विकास :

नगर वासियों के भौतिक विकास के साथ — साथ आध्यात्मिक विकास भी अत्यन्त आवश्यक है, क्यों कि मानव को जितना शारीरिक सुख आवश्यक है उतनी ही उसे मानसिक सुख शान्ति की आवश्यकता है इसके लिये आवश्यक है कि वह प्रकृति के नियमों का परिपालन करे तथा उसके नियमानुसार चले। अतएव नगरवासियों के चहुं मुखी विकास की दृष्टि से नगर में सामूहिमक रूप से भावातीत ध्यान तथा सिद्ध कार्यकम का अम्यास करना आवश्यक है। इसके लिये प्रत्येक उप नगर में निर्धारित ब्रह्म स्थल को प्रदूषण, अतिकमण इत्यादि से मुक्त रखना चाहिये तथा उसे खुले (Open Space) भावातीत ध्यान केन्द्र के रूप में विकसित करना चाहिये जिसमें सम्पूर्ण नगर अथवा सम्बन्धित उपनगर की सम्पूर्ण जनसंख्या का कम से कम 1 प्रतिशत भावातीत ध्यान तथा इस एक प्रतिशत जनसंख्या का वर्गमूल भाग प्रतिदिन प्रातः एवं सांयकाल भावातीत ध्यान एवं सिद्धि कार्यक्रम का अभ्यास करें। जिससे नगर में सतोगुणी प्रवृत्ति मे वृद्धि होगी।

अध्ययन अनुसंधान के उपरोक्त दोनों नगरों में जनजागरण की अत्यन्त आवश्यकता प्रतीत हो रही है। यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपनी सुरक्षा की दृष्टि से ही नियामों का पालन करें तो अनेक प्रकार की दुर्घटनाओं से मुक्ति सम्भव है और यह तभी सम्भव है जब व्यक्ति 'हम सुधरेंगें युग सुधरेगा' की तर्ज पर कार्य करें। इसके लिये व्यक्ति का प्रत्येक कार्य के प्रति सजगता एवं एकाग्रचितता का होना अति आवश्यक है और यह सब कुछ तभी सम्भव है जब व्यक्ति भावातीत ध्यान करें अतएव भावतीत ध्यान हेतु नगर में कार्यान्वित नियमों कानूनों हेतु नगरवासियों मे जन जागृति आवश्यक है। इसके अलावा विभिन्न प्रकार की बुरी आदतों जैसे — शराब, जुआं, अपराधिक प्रकृत्तियों में संलग्न व्यक्तियों को शिक्षा एवं उचित मनोरंजन के माध्यम से जन जागृति उत्पन्न करना चाहिये। इससे न केवल व्यक्ति विशेष का विकास होगा वरन् सम्पूर्ण नगर का सर्वोमुखी विकास सम्भव है।

# परिशिवट

# सारणी क0 5.10 राजधानी नगर जनसंख्या वितरण

| जनसङ्ग्री विसारन |                      |              |       |           |
|------------------|----------------------|--------------|-------|-----------|
| कमांक            | वार्ड का नाम क्      | रूल जनसंख्या | पुरूष | स्त्रियाँ |
| 32.              |                      |              |       |           |
| 1.               | गांधी नगर वार्ड      | 24529        | 14192 | 10337     |
| 2.               | सी.टी.ओ.             | 12824        | 6816  | 6024      |
| 3.               | नेहरू वार्ड          | 14685        | 7485  | 7200      |
| 4.               | विटनरी हिल           | 20166        | 10418 | 9748      |
| 5.               | गुफा मन्दिर          | 28465        | 15010 | 13455     |
| 6.               | नूर महल              | 11254        | 5911  | 5343      |
| 7.               | मालीपुरा             | 16210        | 8338  | 7872      |
| 8.               | बाग मुन्सी हुसैन     | 14507        | 7424  | 7083      |
| 9.               | शर्मा कालोनी         | 14392        | 7605  | 6787      |
| 10.              | पी.जी.,बी.टी.कालोनी  | 31348        | 16417 | 14931     |
| 11.              | टीला जमालपुर         | 26756        | 14001 | 12755     |
| 12.              | शाह जहांनाबाद        | 20260        | 10510 | 9750      |
| 13.              | वर्गीकृत बाजार       | 27676        | 14313 | 13263     |
| 14.              | इब्राहिम गंज         | 10810        | 5716  | 5154      |
| 15.              | जवाहर चौक            | 9526         | 4928  | 4598      |
| 16.              | जैन मन्दिर           | 9144         | 4796  | 4348      |
| 17.              | लखेरापुरा            | 11004        | 5677  | 5227      |
| 18.              | मारवाड़ी रोड         | 9194         | 4870  | 4324      |
| 19.              | मंगलवारा             | 12275        | 6319  | 5956      |
| 20.              | बस स्टैण्ड           | 20709        | 10943 | 9766      |
| 21.              | मौलाना आजाद लाइब्रेर | 11706        | 6070  | 5636      |
| 22.              | इस्लाम पुरा          | 12285        | 6347  | 5938      |
| 23.              | भोईपुरा              | 12224        | 6323  | 5901      |
| 24.              | मोती मस्जिद          | 9221         | 4770  | 4451      |
| 25.              | कमला पार्क           | 11625        | 5880  | 5745      |
|                  |                      |              |       |           |

Digitized By Siddhama eGangotri Gyaan Kosha

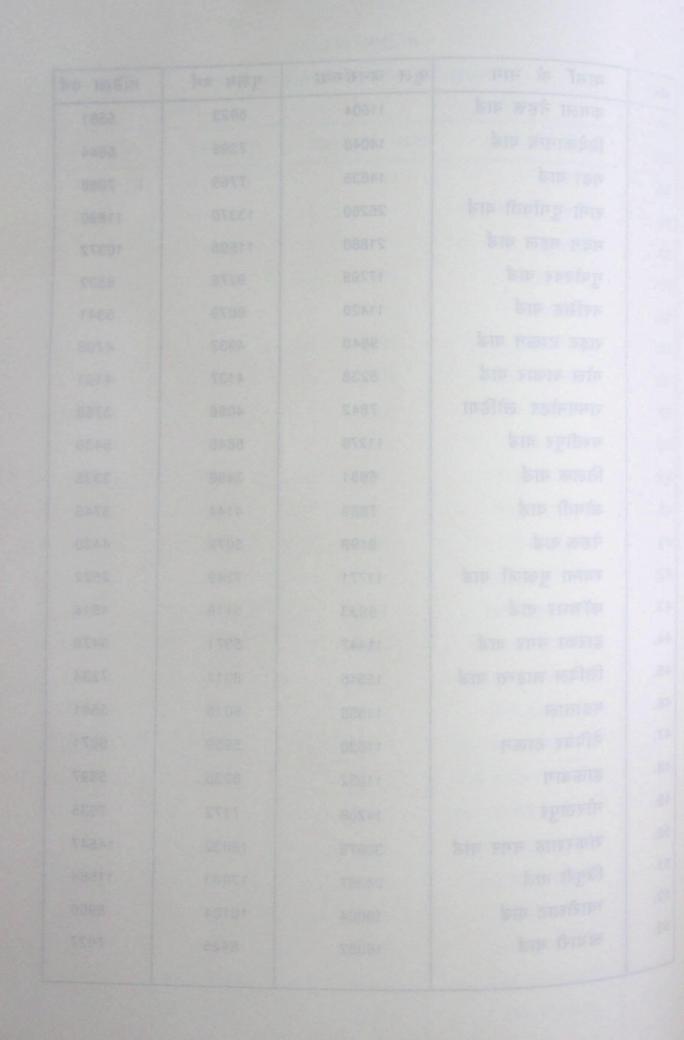
| Digitized By Siddh <del>anta</del> eGangotri Gyaan Kosha |                          |       |       |       |  |
|--|--------------------------|-------|-------|-------|--|
| 26.  | रवीन्द्र नाथ टैगोर वार्ड | 25625 | 13361 | 12264 |  |
| 27.  | रंग महल वार्ड            | 16152 | 8448  | 7704  |  |
| 28.  | विधान रागा               | 19565 | 10495 | 9070  |  |
| 29.  | मालवीय नगर               | 26577 | 14757 | 11820 |  |
| 30.  | प्रकाश पुस्कर नगर        | 15085 | 7823  | 7262  |  |
| 31.  | साऊथ टी.टी. नगर          | 13249 | 6868  | 6381  |  |
| 32.  | शास्त्री नगर             | 33465 | 17932 | 15533 |  |
| 33.  | कोटरा सुल्तानाबाद        | 35550 | 19074 | 16476 |  |
| 34.  | पंचशील नगर               | 18985 | 10235 | 8750  |  |
| 35.  | शहपुरा                   | 33200 | 17465 | 15735 |  |
| 36.  | अरेरा कालोनी             | 12949 | 6742  | 6207  |  |
| 37.  | चार इमली                 | 19694 | 10301 | 9393  |  |
| 38.  | मैदा मिल                 | 23407 | 12343 | 11064 |  |
| 39.  | आचार्य नरेन्द्र देव      | 24247 | 12748 | 11499 |  |
| 40.  | ऐश बाग                   | 45952 | 24202 | 21750 |  |
| 41.  | जहांगीराबाद              | 11837 | 6196  | 5641  |  |
| 42.  | मंडी लक्ष्मीगंज          | 13589 | 7141  | 6448  |  |
| 43.  | बरखेड़ी                  | 16990 | 7141  | 8046  |  |
| 44.  | चांद बाद                 | 16834 | 8861  | 7973  |  |
| 45.  | जिंसी                    | 13763 | 7225  | 6538  |  |
| 46.  | कपड़ा मिल                | 16858 | 9177  | 7681  |  |
| 47.  | नरेला संकरी              | 32297 | 17128 | 15169 |  |
| 48.  | सोना गिरी                | 27756 | 14863 | 12893 |  |
| 49.  | बरखेड़ा पठानी वार्ड      | 18576 | 9900  | 8676  |  |
| 50.  | बरखेड़ा लेबर कालोनी      | 15454 | 8210  | 7244  |  |
| 51.  | पिपलानी                  | 11602 | 6146  | 5456  |  |
| 52.  | पिपलानी लेबर कालोनी      | 16204 | 8526  | 7678  |  |
| 53.  | गोविदपुरा                | 18025 | 9552  | 8473  |  |
| 54.  | अन्ना नगर                | 27479 | 14226 | 12853 |  |
| 55.  | शक्ति नगर                | 13598 | 7195  | 6403  |  |
| 56.  | कलिया सोत                | 25436 | 13645 | 11791 |  |
|  | PICT II                  |       |       |       |  |

स्त्रोत : जनगणना पुस्तिका 1991

तालिका क्र0 5.7 संस्कारधानी नगर में जनसंख्या वितरण

| 页0  | वार्डी के नाम        | कुल जनसंख्या | पुरूष वर्ग | महिला वर्ग |
|-----|----------------------|--------------|------------|------------|
| 1.  | चेरीताल              | 31318        | 16743      | 14575      |
| 2.  | उत्तरी मिलौनीगंज     | 14207        | 7585       | 6622       |
| 3.  | गोहलपुर              | 16709        | 8805       | 7904       |
| 4.  | ठक्कर ग्राम          | 17462        | 9235       | 8227       |
| 5.  | आधारताल              | 21954        | 11562      | 10392      |
| 6.  | शास्त्री वार्ड       | 29250        | 15473      | 13777      |
| 7.  | गोकलपुर वार्ड        | 16603        | 8922       | 7681       |
| 8.  | अम्बेडकर वार्ड       | 16671        | 8796       | 7875       |
| 9.  | रांझी वार्ड          | 21235        | 11214      | 10021      |
| 10. | लालमाटी वार्ड        | 11431        | 6156       | 5275       |
| 11. | सिद्धबाबा वार्ड      | 11215        | 5865       | 5350       |
| 12. | घमापुर वार्ड         | 8891         | 4681       | 4210       |
| 13. | करियापाथर वार्ड      | 11762        | 6159       | 5603       |
| 14. | शीतलामाई वार्ड       | 9202         | 4724       | 4478       |
| 15. | पूर्वी बेलबाग वार्ड  | 13956        | 7317       | 6639       |
| 16. | पश्चिमी बेलबाग वार्ड | 9016         | 4693       | 4323       |
| 17. | भानतलैया वार्ड       | 9590         | 5031       | 4559       |
| 18. | उ. मिलौनीगंज वार्ड   | 12397        | 6602       | 5795       |
| 19. | द. मोती नाला वार्ड   | 11159        | 5806       | 5353       |
| 20. | द. मिलौनीगंज वार्ड   | 11615        | 6137       | 5478       |
| 21. | हनुमानताल वार्ड      | 8941         | 4593       | 4348       |
| 22. | कोतवाली वार्ड        | 7995         | 4124       | 3871       |
| 23. | सराफा वार्ड          | 10301        | 5338       | 4963       |
| 24. | उपरेनगंज वार्ड       | 10233        | 5431       | 4802       |
| 25. | निवाडगंज वार्ड       | 9662         | 5071       | 4591       |
| 26. | लार्डगंज वार्ड       | 10547        | 5506       | 5041       |
| 27. | गढ़ा फाटक वार्ड      | 12828        | 6791       | 6037       |

| 页0  | वार्डी के नाम        | कुल जनसंख्या | पुरूष वर्ग | गिहला वर्ग |
|-----|----------------------|--------------|------------|------------|
| 28. | कमला नेहरू वार्ड     | 11604        | 6023       | 5581       |
| 29. | विवेकानन्द वार्ड     | 14040        | 7396       | 6644       |
| 30. | गढ़ा वार्ड           | 14835        | 7769       | 7066       |
| 31. | रानी दुर्गावती वार्ड | 25260        | 13370      | 11890      |
| 32. | मदन महल वार्ड        | 21880        | 11508      | 10372      |
| 33. | गुप्तेश्वर वार्ड     | 17799        | 9276       | 8532       |
| 34. | नरसिंह वार्ड         | 11420        | 6079       | 5341       |
| 35. | राइट टाऊन वार्ड      | 9640         | 4932       | 4708       |
| 36. | गोल बाजार वार्ड      | 8238         | 4137       | 4101       |
| 37. | राममनोहर लोहिया      | 7842         | 4086       | 3756       |
| 38. | भरतीपुर वार्ड        | 11276        | 5840       | 5436       |
| 39. | तिलक वार्ड           | 6831         | 3496       | 3335       |
| 40. | ओमती वार्ड           | 7889         | 4144       | 3745       |
| 41. | नेहरू वार्ड          | 9499         | 5079       | 4420       |
| 42. | श्यामा मुखर्जी वार्ड | 11771        | 7249       | 2522       |
| 43. | कॉ चघर वार्ड         | 9633         | 5119       | 4514       |
| 44. | द्वारका नगर वार्ड    | 11447        | 5971       | 5476       |
| 45. | सिविल लाइन्स वार्ड   | 15545        | 8311       | 7234       |
| 46  | मढ़ाताल              | 11556        | 6015       | 5541       |
| 47. | नेपियर टाऊन          | 11630        | 5959       | 5671       |
| 48. | हाऊबाग               | 11932        | 6235       | 5697       |
| 49. | गोरखपुर              | 14208        | 7172       | 7036       |
| 50. | शंकरशाह नगर वार्ड    | 30579        | 16032      | 14547      |
| 51. | त्रिपुरी वार्ड       | 24367        | 12803      | 11564      |
| 52. | ग्वारीघाट वार्ड      | 19004        | 10104      | 8900       |
| 53. | खंदारी वार्ड         | 16052        | 8425       | 7627       |
| 9   | that a               | 2057         | 1309       | 218        |



II जबलप्र केन्ट

| मम जबलपुर कन्ट |               |                     |            |            |  |
|----------------|---------------|---------------------|------------|------------|--|
| 页0             | वार्डी के नाम | कुल जनसंख्या        | पुरूष वर्ग | महिला वर्ग |  |
| 1.19           | वार्ड 1       | 13036               | 7494       | 5542       |  |
| 2.             | वार्ड 2       | 8536                | 5675       | 2861       |  |
| 3.             | वार्ड 3       | 5052                | 2650       | 2402       |  |
| 4.             | वार्ड 4       | 4532                | 2424       | 2108       |  |
| 5.             | ़ वार्ड 5     | 4470                | 2355       | 2115       |  |
| 6.             | वार्ड 6       | .12880              | 8508       | 4372       |  |
| 7.             | वार्ड 7       | . 7618              | 4352       | 3266       |  |
|                | 377           | व्हीक्रम प्रीवर्श । |            | 3200       |  |

# III खमरिया

| 页0 | वार्डी के नाम | कुल जनसंख्या | पुरूष वर्ग | महिला वर्ग |
|----|---------------|--------------|------------|------------|
| 1. | पूर्वी भाग    | 2972         | 1500       | 1472       |
| 2. | मध्य भाग      | 521          | 384        | 137        |
| 3. | पुलिस लाइन    | 361          | 203        | 158        |
| 4. | पश्चिमी भाग   | 15944        | 8434       | 7510       |

## IV जी. सी. एफ.

| <b>1</b> • • • • • • • • • • • • • • • • • • • |                |              |            |            |
|--|----------------|--------------|------------|------------|
| 页0   | वार्डों के नाम | कुल जनसंख्या | पुरूष वर्ग | महिला वर्ग |
| 1.   | सेक्टर 1       | 2679         | 1398       | 1281       |
| 2.   | सेक्टर 2       | 4247         | 2155       | 2092       |
| 3.   | सेक्टर 3       | 3161         | 1645       | 1516       |
| 4.   | सेक्टर 4       | 2657         | 1414       | 1243       |
| 5.   | सेक्टर 5       | 2057         | 1109       | 948        |
| 6.   | सेक्टर 6       | 1159         | 646        | 513        |
| 7.   | सेक्टर 7       | 2001         | 1063       | 938        |

## V बिलपुरा

| 页0 | वार्डी के नाम | कुल जनसंख्या | पुरूष वर्ग | महिला वर्ग |
|----|---------------|--------------|------------|------------|
| 1. | बिलपुरा       | 2488         | 1324       | 1164       |
| 2. | इन्दरा नगर    | 2598         | 1381       | 1217       |
| 3. | गंगा मैया     | 2306         | 1202       | 1104       |
| 4. | नई बरित       | 2776         | 1499       | 1277       |
|    |               |              |            |            |

## VI व्हीकल फैक्ट्री, जबलपुर

| 页0 | वार्डी के नाम | कुल जनसंख्या | पुरूष वर्ग | महिला वर्ग |
|----|---------------|--------------|------------|------------|
| 1. | सेक्टर 1      | 6859         | 3541       | 3318       |
| 2. | सेक्टर 2      | 6487         | 3338       | 3149       |
|    |               |              |            |            |

आंकडे स्त्रोत : जनगणना पुस्तिका 1991

तालिका क0 9.2 नगर निगम द्वारा घोषित जबलपुर नगर निगम क्षेत्र में गन्दी वरितयों की सूची

| क.  |                                 | वार्ड क. | जनसंख्या |
|-----|---------------------------------|----------|----------|
| 1.  | 0                               | 1        | 500      |
| 2.  | खिन्ना बस्ती                    | 1        | 325      |
| 3.  | चेतराम मढ़िया के पीछे           | 1        | 500      |
| 4.  | अग्रवाल कालोनी हनी पान भण्डार   | 1        | 1300     |
|     | के पीछे                         |          |          |
| 5.  | कुम्हार मुहल्ला                 | 1        | 600      |
| 6.  | गढ़ा मार्ग, ओमती नाले के किनारे | 1        | 175      |
| 7.  | पटैल मुहल्ला                    | 2        | 1500     |
| 8.  | गेट नं. ४ के सामने              | 2        | 300      |
| 9.  | पीर बक्स लाइन ज्योति टॉकिज      | 3        | 500      |
|     | के पीछे                         |          |          |
| 10. | डॉ0 बटालिया के सामने            | 3        | 500      |
| 11. | डिसाईपल्स चर्च                  | 3        | 1200     |
| 12. | नेशनल गैरिज के पूर्व में        | 4        | 800      |
| 13. | हरिजन थाना के पीछे              | 4        | 800      |
| 14. | नया मोहल्ला                     | 4        | अप्राप्त |
| 15. | चिड्या मोहल्ला                  | 4        | 700      |
| 16. | बड़ी ओमती                       | 4        | 600      |
| 17. | रसीदगंज                         | 4        | 1600     |
| 18. | नौदरापुल पीछे वाला हिस्सा       | 4        | 600      |
| 19. | छुई खदान मढ़िया                 | 5        | 1000     |
| 20. | रामहरण काबगीचा                  | 5        | 1600     |
| 21. | कांचघर हाऊसिंग बोर्ड के पीछे    | 5        | 1000     |
| 22. | वर्न कम्पनी के पीछे             | 5        | 1000     |
| 23. | नमक कोठी                        | 6        | 100      |
| 24. | श्री ललित श्रीवास्तव            | 6        | 1500     |
| 25. | पुलिस लाइन क्षेत्र              | 6        | 1000     |
| 20. | पुलिस लाइन पान                  |          |          |

| 26. | डॉ0 पाण्डे के पीछे                  | 6  | 650  |
|-----|-------------------------------------|----|------|
| 27. | ललित कालोनी के दक्षिण में           | 6  | 850  |
| 28. | घोड़ा अस्पताल                       | 6  | 750  |
| 29. | ओमती नाला के दक्षिण में             | 6  | 900  |
| 30. | पागल खाना मस्जिद के पीछे            | 6  | 750  |
| 31. | पशु अस्पताल का मध्य भाग एवं         | 6  | 900  |
|     | ईसाई कम्पाउण्ड                      |    |      |
| 32. | उड़िया मोहल्ला                      | 7  | 1600 |
| 33. | हमीद कोठी नारायण चौधरी              | 7  | 1750 |
| 34. | कबब तलैया दर्शन चौक                 | 7  | 850  |
| 35. | बड़ी ओमती उड़िया मोहल्ला            | 8  | 900  |
| 36. | हरिजन बस्ती छोटी खेरमाई             | 8  | 400  |
| 37. | इतवारी बाजार                        | 7  | 250  |
| 38. | उपरोक्त                             | 8  | 1200 |
| 39. | मछरहाई                              | 8  | 1000 |
| 40. | बड़ी ओमती                           | 8  | 500  |
| 41. | खटीक मोहल्ला                        | 8  | 500  |
| 42. | बसोर मोहल्ला                        | 9  | 800  |
| 43. | चमरोटी कछियाना                      | 9  | 600  |
| 44. | जहांगीरा बाद सूर्या होटल            | 9  | 750  |
| 45. | उजारपुरवा बस्ती जानकी नगर,          | 10 | 1800 |
|     | सावित्री टॉकिज के पीछे वाला क्षेत्र |    |      |
| 46. | शीतलप्री भूमि पर आगा चौक            | 10 | 1000 |
|     | से रानी ताल चौक से किनारे तक        | 19 |      |
| 47. | स्वीपर कालोनी सर्वोदय नगर           | 10 | 1500 |
|     | का हिस्सा                           |    |      |
| 48. | वक्फ की भूमि पर रानीताल             | 10 | 400  |
|     | तालाब के उत्तर एवं पश्चिम           |    |      |
|     | तक का क्षेत्र                       |    |      |
|     | 117 4/1 41 A                        |    |      |

| 49. | चमरोटी मैदा मिल के पीछे      | 10   | 350   |
|-----|------------------------------|------|-------|
|     | रानीताल ईदगाह के पास         | 4    |       |
| 50. | खटीक मोहल्ला                 | 10   | 500   |
| 51. | पासी मोहल्ला (रानीताल तालाब) | 10   | 700   |
| 52. | संजय नगर यादव कालोनी         | 10   | 900   |
|     |                              |      |       |
|     |                              |      |       |
|     | मुस्लिम बस्ती                |      |       |
| 53. | सर्वोदय नगर (रानीताल शमशान   | 11   | 2100  |
|     | भूमि के पास)                 |      |       |
| 54. | बड़ी उखरी (एम.आर. 4 रोड पर   | ) 11 | 2500  |
| 55. | बदौरहा गांव                  | 11   | 70    |
| 56. | राजीव नगर (चेरीताल)          | 12   | 4250  |
| 57. | दुगाई मोहल्ला                | 12   | 6000  |
| 58. | आई.टी.आई. के पीछे की बस्ती   | 12   | 12758 |
| 59. | भहपुरा बस्ती क्षेत्र         | 13   | 800   |
| 60. | चमरोटी क्षेत्र (संजय         | 13   | 1200  |
|     | मार्केट के पीछे)             |      |       |
| 61. | रवि नगर (किष्ठयाना नाला)     | 14   | 950   |
| 62. | सब्जी मण्डी                  | 14   | 1200  |
| 63. | राग नगर                      | 14   | 1100  |
| 64. | गलगला टोरिया                 | 15   | 1800  |
| 65. | छुटदु मियां की तलैया         | 15   | 1750  |
| 66. | खटीक मोहल्ला (नरघैया)        | 15   | 1400  |
| 67. | बसोर मोहल्ला                 | 16   | 600   |
| 68. | ढीमर मोहल्ला                 | 16   | 200   |
| 69. | मुस्लिम बस्ती                | 16   | 200   |
| 70. | हरिजन बस्ती                  | 16   | 200   |
| 71. | कुम्हार मोहल्ला              | 16   | 200   |

| 72. | हरिजन बस्ती                     | 16 | 200        |
|-----|---------------------------------|----|------------|
| 73. | छुई मोहल्ला                     | 16 | 100        |
| 74. | आदिवासी बस्ती                   | 16 | अप्राप्त   |
| 75. | बढ़ई मोहल्ला                    | 16 | 200        |
| 76. | मुस्लिम बस्ती                   | 16 | 350        |
| 77. | मुस्लिम बस्ती                   | 16 | 200        |
| 78. | भड़भुजा मोहल्ला                 | 16 | 180        |
| 79. | मुस्लिम बस्ती                   | 16 | 300        |
| 80. | भानतलैया स्कूल के पीछे          | 17 | 1900       |
| 81. | छुई मोहल्ला                     | 17 | 1200       |
| 82. | सिन्धी मोहल्ला                  | 17 | 1500       |
| 83. | खटीक मोहल्ला                    | 17 | 2000       |
|     |                                 |    |            |
|     |                                 |    |            |
| 84. | खलासी लाइन (ओमती                | 17 | 2000       |
|     | नाले के किनारे)                 |    |            |
| 85. | पसियाना (शहडोल सिंह             | 17 | 100        |
|     | उस्ताद अखाड़ा)                  |    |            |
| 86. | मेहतर मोहल्ला (बेलबाग स्कूल     | 17 | 2000       |
|     | के पीछे)                        |    |            |
| 87. | बिहारी महाराज का बाड़ा          | 17 | 1500       |
| 88. | बेलबाग टोरिया के दक्षिण         | 17 | 1600       |
| 89. | कंजर मोहल्ला (बेलबाग)           | 17 | 1500       |
| 90. | प्रेम सागर (मिर्जापुर रोड मार्ग | 17 | 1500       |
| 91. | लड़िया बाड़ी                    | 18 | 200,<br>60 |
| 92. | सती चौक                         | 18 | 200        |
| 93. | खटीक मोहल्ला                    | 18 | 50         |
| 94. | सिंधी केम्प                     | 18 | 100        |
| 95. | रवैया मोहल्ला                   | 18 | 100        |



| 96.  | अनवर मोहल्ला                   | 18    | 200          |
|------|--------------------------------|-------|--------------|
| 97.  | सोनकर बस्ती                    | 18    | 300          |
| 98.  | कोरी मोहल्ला                   | 18    | 100          |
| 99.  | पुराना थाना कुजड़हाई           | 18    | 70           |
| 100. | मुस्लिम बस्ती                  | 18    | 200          |
| 101. | बकरा कबेला                     | 18    | 200          |
| 102. | हरिजन बस्ती                    | 18    | 150          |
| 103. | हरिजन बस्ती (फूटाताल मैदान)    | 19    | 2100         |
| 104. | हरिजन बस्ती (हनुमानताल थाने    | 19    | 2300         |
|      | के बाजू से )                   |       |              |
| 105. | ढीमर मोहल्ला                   | 19    | 1900         |
| 106. | साठिया कुंआ के पास का हिस्सा   | 20    | 2000         |
| 107. | खटीक मोहल्ला                   | 20    | 2000         |
| 108. | घोड़ा नक्कास के सामने का हिस्स | ना 21 | 2200         |
| 109. | भड़पुरा बस्ती बापू कालोनी      | 21    | 2000         |
| 110. | कोतवाली के बाजू से बहोर वाला   | 22    | 2000         |
|      | हिस्सा                         |       |              |
| 111. | शिव मन्दिर वाला हिस्सा         | 22    | 1200         |
|      |                                |       |              |
|      |                                |       | 4500         |
| 112. | नट बाबा क्षेत्र                | 22    | 1500         |
| 113. | तुलसीराम का बगीचा              | 23    | 9500         |
| 114. | चौधरी मोहल्ला                  | 23    | 3700         |
| 115. | खसुओं की मस्जिद वाला हिस्सा    | 22    | 1400         |
| 116. | चण्डालभाटा हरिजन बस्ती         | 23    | 2250<br>8000 |
| 117. | माढोताल नई बस्ती               | 23    | 6750         |
| 118. | माढोताल तालाब के किनारे        | 23    | 0730         |
|      | की बस्ती                       |       | 6560         |
| 119. | कोष्टा मोहल्ला                 | 24    | 0000         |
|      |                                |       |              |

| 120. | शान्ति नगर              | 24 | 10250    |
|------|-------------------------|----|----------|
| 121. | रागता कालोनी            | 24 | 6250     |
| 122. | चौधरी मोहल्ला           | 24 | 1500     |
| 123. | धोबी मोहल्ला            | 24 | 1730     |
| 124. | अलिफ बेग की मस्जिद      | 25 | 2300     |
| 125. | कुरयाना मोहल्ला         | 25 | 6250     |
| 126. | मन्सूराबाद              | 25 | अप्राप्त |
| 127. | बड़ी मदार टेकरी         | 26 | 2100     |
| 128. | चॉदनी चौक               | 26 | 1900     |
| 129. | लाल स्कूल               | 26 | 2000     |
| 130. | घोड़ा नक्काश            | 26 | 1900     |
| 131. | खाई मोहल्ला             | 26 | 2300     |
| 132. | कुम्हार मोहल्ला         | 27 | 11200    |
| 133. | भोला नगर                | 27 | 11600    |
| 134. | बसोर मोहल्ला            | 28 | 1500     |
| 135. | बसोर मोहल्ला            | 28 | 1400     |
| 136. | बसोर मोहल्ला            | 28 | 1200     |
| 137. | चौधरी मोहल्ला           | 28 | 1000     |
| 138. | कुम्हार मोहल्ला         | 28 | 1500     |
| 139. | बगेरी मोहल्ला           | 28 | 1400     |
| 140. | चौधरी मोहल्ला           | 28 | 1700     |
| 141. | चौधरी मोहल्ला           | 28 | 1200     |
| 142. | चौधरी मोहल्ला           | 28 | 1400     |
| 143. | चौधरी मोहल्ला           | 28 | 1400     |
| 144. | चौधरी मोहल्ला           | 28 | 1200     |
| 145. | गंगाराम का बाड़ा        | 28 | 800      |
| 146. | तुलसी मोहल्ला           | 29 | 3500     |
| 147. | दुर्गा नगर कालोनी बस्ती | 29 | 2200     |
| 148. | अच्छे मियां का बाड़ा    | 29 | 2200     |

| 149. | कोरी गोहल्ला                      | 29 | 2500  |
|------|-----------------------------------|----|-------|
| 150. | कुंच बिष्या मोहल्ला               | 30 | 2500  |
| 151. | हनुमान टोरिया                     | 30 | 2500  |
| 152. | कुण्डम मार्ग के उत्तर में सर्वोदय | 30 | 1300  |
| 153. | नई बस्ती (पासी कब्रिस्तान के      | 30 | 1500  |
|      | उत्तर की ओर का क्षेत्र)           |    | .000  |
| 154. | पुरानी बस्ती (कांचघर चमरौटी)      | 30 | 2700  |
| 155. | बारक मोहल्ला                      | 31 | 2000  |
| 156. | झा मोहल्ला                        | 31 | 2000  |
| 157. | सिंधी मोहल्ला                     | 31 | 2000  |
| 158. | कछियाना बस्ती                     | 31 | 2050  |
| 159. | चौधरी मोहल्ला चॉदमारी             | 31 | 2100  |
| 160. | हरिजन बस्ती                       | 31 | 2000  |
| 161. | सिंगल क्वार्टर बड़ी संतोषी        | 32 | 2400  |
|      | मन्दिर के पीछे वाला क्षेत्र       |    |       |
| 162. | सिंगल क्वार्टर हरिजन बस्ती        | 32 | 2000  |
| 163. | चॉदमारी तलैया पंचशील              | 32 | 1900  |
| 164. | हरिजन बस्ती                       | 32 | 1300  |
| 165. | चांदमारी तलैया आजाद नगर           | 32 | 2000  |
| 166. | कुम्हार मोहल्ला                   | 32 | 2000  |
| 167. | बिहारी मोहल्ला                    | 33 | 2300  |
| 168. | रामलीला मैदारन                    | 33 | 2500  |
| 169. | चौधरी एवं साहू मोहल्ला            | 33 | 2500  |
| 170. | बसोर मोहल्ला                      | 33 | 2700  |
| 171. | चौधरी मोहल्ला                     | 33 | 2400  |
|      | बल्दी कोरी की दफाई                | 4  |       |
| 172. | कुम्हार मोहल्ला                   | 33 | 2300  |
| 173. | खेरमाई मन्दिर के पास              | 33 | 2200  |
| 174. | संजय नगर                          | 34 | 11000 |
|      |                                   |    |       |

| 175. | राजीव नगर                  | 34   | 11800 |
|------|----------------------------|------|-------|
| 176. | कटरा                       | 34   | 10000 |
| 177. | पसियाना                    | 35   | 10100 |
| 178. | मदार छल्ला                 | 35   | 10300 |
| 179. | पंचकुईया 💮 💮               | 36   | 10750 |
| 180. | बाबा टोला                  | 36   | 11700 |
| 181. | बेहना तले                  | 37 : | 1600  |
| 182. | नालबंद मोहल्ला             | 37   | 1800  |
| 183. | बरिया तले                  | 37   | 2100  |
| 184. | श्याम सिंह का घड़ा         | 37   | 1900  |
| 185. | मंसूराबाद                  | 37   | 2300  |
| 186. | कसाई मण्डी                 | 37   | 2200  |
| 187. | नया पुल                    | 37   | 1900  |
| 188. | गोहलपुर थाना चौराहे से     | 38   | 1500  |
|      | पश्चिम की ओर               |      |       |
| 189. | चमरोटी                     | 38   | 500   |
| 190. | अंसार नगर                  | 38   | 800   |
| 191. | आजाद नगर                   | 38   | 700   |
| 192. | नसीमाबाद                   | 38   | 400   |
| 193. | बहोराबाग कब्रिस्तान के     | 38   | 400   |
|      | आस पास का क्षेत्र          |      |       |
| 194. | नई चाल                     | 38   | 240   |
| 195. | मदीना मस्जिद क्षेत्र       | 38   | 400   |
| 196. | बेनीसिंग की तलैया मोमनपुरा | 38   | 205   |
| 197. | कोरी मोहल्ला               | 39   | 365   |
| 198. | अमखेरा बस्ती               | 39   | 620   |
| 199. | अमखेरा बस्ती               | 39   | 560   |
| 200. | गाजी नगर एवं चौधरी मोहल्ला | 39   | 370   |
| 201. | बेतला ग्रगाम (छात्रावास)   | 39   | 600   |
|      |                            |      |       |

| 202. | जय प्रकाश नगर              | 40      | 10000 |
|------|----------------------------|---------|-------|
| 203. | आधारताल                    | 40      | 10500 |
| 204. | सुभाष नगर                  | 40      | 10500 |
| 205. | कंचनपुर                    | 40      | 10500 |
| 206. | उदय नगर बस्ती क.1          | 41      | 1800  |
| 207. | उदय नगर बस्ती क. 2         | 41      | 1000  |
| 208. | भड़पुरा बस्ती              | 41      | 400   |
| 209. | न्यू गोकलपुर               | 41      | 800   |
| 210. | आजाद नगर                   | 41      | 800   |
| 211. | पुराना गोकलपुर             | 41      | 5500  |
| 212. | गणेश गंज खलासी मोहल्ला     | 42      | 1800  |
| 213. | अमर नगर                    | 42      | 1200  |
| 214. | बजरंग नगर                  | 42      | 1000  |
| 215. | शारदा नगर                  | 42      | 800   |
| 216. | रामनगर बस्ती               | 42      | 600   |
| 217. | शान्ति नगर                 | 42      | 600   |
| 218. | उदय नगर क. 3               | 42      | 400   |
| 219. | रांझी थाने के पीछे गांधी   | 42      | 2000  |
|      | व्यायाम शाला               |         |       |
| 220. | पुरानी हरिजन बस्ती         | 42      | 2800  |
| 221. | कटनी दफाई                  | 42      | 1600  |
| 222. | सर्रापीपर                  | 43      | 3000  |
| 223. | शमशानघाट के आस पास का क्षे | ोत्र 43 | 2000  |
|      | एवं नई बस्ती               |         |       |
| 224. | चन्द्रमोहन नगर             | 43      | 1800  |
| 225. | गंगा मैया                  | 43      | 2500  |
| 226. | बजरंग नगर                  | 43      | 3800  |
| 227. | इन्द्रानगर बापूनगर         | 44      | 2800  |
| 228. | कछियाना                    | 44      | 2800  |
|      |                            |         |       |

| 229. | गणेशगंज आमानाला                | 44    | 1800     |
|------|--------------------------------|-------|----------|
| 230. | डॉं० अम्बेडकर पुरी             | 45    | 350      |
|      | (जज कॉलोनी के पास)             |       | 330      |
| 231. | विश्वविद्वालय पहाड़ी 10 नं.    | 45    | 500      |
|      | कालोनी                         |       | 500      |
| 232. | विश्वविद्यालय पहाड़ी           | 45    | 1000     |
|      | (प्रेस के पीछे)                |       | , 500    |
| 233. | बाबू लाल का बगीचा              | 46    | 1500     |
| 234. | बरड मोहल्ला                    | 46    | 400      |
| 235. | लोधी मोहल्ला                   | 46    | 300      |
| 236. | बेहना मोहल्ला                  | 46    | 1200     |
| 237. | पीपल मोहल्ला                   | 46    | 500      |
| 238. | कुम्हार मोहल्ला                | 46    | 800      |
| 239. | कोरी मोहल्ला                   | 46    | अप्राप्त |
| 240. | सुलभ शौंचालय                   | 46    | 1000     |
| 241. | पटेल मोहल्ला (रेल्वे लाइन के   | 47    | 500      |
|      | किनारे )                       |       |          |
| 242. | मदन महल रेल्वे स्टेशन बढ़ई     | 47    | 2000     |
|      | मोहल्ला                        |       |          |
| 243. | महानद्दा (मछली मार्केट के साम  | ने 47 | 250      |
| 244. | हरिजन बस्ती (नरसिंह मन्दिर के  | 47    | 1400     |
|      | के पीछे)                       |       |          |
| 245. | आमनपुर पुराना                  | 47    | 500      |
| 246. | कलारी क्षेत्र आमनपुर (महेशपुर) | 47    | 1000     |
| 247. | कुलियाना बस्ती                 | 47    | 1000     |
| 248. | काली मठ                        | 48    | 1400     |
| 249. | सुदामा नगर                     | 48    | 1400     |
| 250. | शिवनगर बस्ती                   | 48    | अप्राप्त |
| 251. | श्रीराम नगर                    | 48    | 1700     |

| 252. | शुक्ला नगर               | 48 | 1800         |
|------|--------------------------|----|--------------|
| 253. | माली महोल्ला             | 48 | 1750         |
| 254. | रानीपुर                  | 48 | 1700         |
| 255. | अकबर का बाड़ा            | 48 | 1650         |
| 256. | कोरी मोहल्ला             | 49 | 1050         |
| 257. | कोरी मोहल्ला इमरती तालाब | 49 | 1200         |
| 258. | चौधरी मोहल्ला            | 49 | 1300         |
| 259. | कुम्हराना बस्ती          | 49 | 1200         |
| 260. | कुम्हराना बस्ती          | 49 | 1250         |
| 261. | माछी मोहल्ला             | 49 | 1300         |
| 262. | कोल मोहल्ला              | 49 | 1200         |
| 263. | मुड़कैया मोहल्ला         | 49 | 1030         |
| 264. | बकछेरा                   | 49 | 1090         |
| 265. | आदिवासी बस्ती            | 49 | 1050         |
| 266. | कोरी मोहल्ला             | 49 | 1000         |
| 267. | केवट मोहल्ला             | 49 | 1030         |
| 268. | चमार मोहल्ला             | 49 | 1100         |
| 269. | कोष्टा मोहल्ला (हरदोल    | 49 | 1035         |
|      | मन्दिर के पीछे)          |    |              |
| 270. | चमरोटी                   | 50 | 3300         |
| 271. | कुम्हार मोहल्ला          | 50 | 3298         |
| 272. | झारिया मोहल्ला           | 50 | 3300         |
| 273. | केवट मोहल्ला             | 50 | 3400         |
| 274. | लिंदया मोहल्ला (देवताल)  | 51 | 2800         |
| 275. | कोष्टा मोहल्ला           | 51 | 2700         |
| 276. | टीकरी टोला               | 51 | 2900         |
| 277. | मुजावर मोहल्ला           | 51 | 3200<br>3000 |
| 278. | जिंदहाई                  | 51 | 3000         |
|      |                          |    |              |

| 279. | लोधी मोहल्ला, कोष्टा मोहल्ला        | 52 | 1000  |
|------|-------------------------------------|----|-------|
|      | खेरमाई मन्दिर (गंगासागर रोड         |    | 1000  |
|      | के किनारे)                          |    |       |
| 280. | अन्ना बस्ती (शारदा चौक से मन्दिर    | 52 | 1000  |
|      | जाने वाले मार्ग के दोनों ओर)        |    | 1000  |
| 281. | इंदरा बस्ती (भरत कालोनी के पीछे)    | 52 | 1300  |
| 282. | बदनपुर (दरगाह रोड के किनारे)        | 52 | 1500  |
| 283. | बरसाना मोहल्ला (गुलाटी पैट्रोल पम्प | 52 | 1000  |
|      | के पीछे)                            |    |       |
| 284. | गंगासागर तालाब के किनारे            | 52 | 950   |
| 285. | देवताल के आस पास का क्षेत्र         | 52 | 1600  |
| 286. | ककरैया तलैया                        | 53 | 2000  |
| 287. | पान बरेला                           | 53 | 800   |
| 288. | लक्ष्मी कालोनी                      | 53 | 1000  |
| 289. | ककरैया तलैया (हाथीताल               | 54 | 2000  |
|      | रेल्वे लाइन के किनारे)              |    |       |
| 290. | जोगी मोहल्ला राइट टाऊन              | 54 | 400   |
| 291. | बसोर मोहल्ला                        | 54 | 150   |
| 292. | मेहतर मोहल्ला                       | 54 | 1500  |
| 293. | सेठी नगर                            | 55 | 1500  |
| 294. | इंदिरा नगर                          | 55 | 1500  |
| 295  | इंदिरा नगर                          | 55 | 4000  |
| 296. | कैलाशपुरी                           | 55 | 1600  |
| 297. | बदनपुर                              | 56 | 4000  |
| 298. | ईसाई मोहल्ला                        | 56 | 4000  |
| 299. | बाल सागर क्षेत्र (सगड़ा)            | 57 | 2200  |
| 300. | रामनगर बस्ती                        | 57 | 2100  |
| 301. | तिलवारा                             | 57 | 2300  |
| 302. | चौहानी से सिछरहा                    | 57 | 23765 |
|      |                                     |    |       |

| 303. | कुम्हराना बस्ती (थाना के पीछे) | 57   | 2300        |
|------|--------------------------------|------|-------------|
| 304. | बाजना मठ (भैरो नगर, शारदा नगर) | 57   | 2390        |
| 305. | बसोर मोहल्ला                   | 57   | 1200        |
| 306. | रामपुर चमार मोहल्ला            | 57   | 400         |
| 307. | रामपुर पटैल मोहल्ला            | 57   | 1200        |
| 308. | चौधरी मोहल्ला                  | 57   | 500         |
| 309. | जोगनी नगर                      | 57   | 1200        |
| 310. | रविदास नगर                     | 57   | 1000        |
| 311. | दुर्गा नगर                     | 57   | 1700        |
| 312. | रीवा कालोनी                    | 57   | 1200        |
| 313. | बागड़ा दफाई                    | 59   | 1000        |
| 314. | लाल कुंआ                       | 59   | 2700        |
| 315. | रविदास नगर                     | 59   | 800         |
| 316. | पटैल मोहल्ला                   | 59   | 800         |
| 317. | जिलहरी गांव                    | 59   | 1200        |
| 318. | बादशाह हलवाई मन्दिर के सामने   | 59   | 400         |
| 319. | पुराना ग्वारीघाट               | 59   | 2700        |
| 320. |                                | 59   | अप्राप्त    |
| 321. | भोंगाद्वार (भीटा रोड)          | 60   | 1000        |
| 322. | हेयर                           | 60   | 2000        |
| 323. | बिलहरी (मंडला रोड)             | 60   | 2500        |
| 324. | गौरयाघाट (मंडला रोड)           | 60   | 2000        |
| 325. | धोबी घाट                       | 60 . | 1000        |
| 326. | कजरवारा                        | 60   | 2000        |
| 327. | भीटा (पुरानी इकाई)             | 60   | 3000        |
| 328. | उमरिया एवं कटियाघाट रोड        | 60   | 4700        |
|      | (पुरानी इकाई)                  |      |             |
|      | सोरारको नगर पाल गोराका         |      | 13          |
|      | ने- होर्ड ऑफिस के पीर्च        | 60   | 6,44,117.00 |

कुल योग

## भोपाल स्थित गंदी बस्तियों की सूची

| क मां क | गंदी बस्तियों के नाम              | बस्तियों की संख्या |
|---------|-----------------------------------|--------------------|
| 1.      | विधान सभा के सामने                | 533                |
| 2.      | ओमनगर-2                           | 14                 |
| 3.      | ओमनगर-1                           | 399                |
| 4.      | ओमनगर—                            | 291                |
| 5.      | सतपुडा भवन के पीछे                | 184                |
| 6.      | पत्रकार भवन के पास                | 41                 |
| 7.      | उ.द.टी0टी0 नगर                    | 154                |
| 8.      | संजय नगर                          | 207                |
| 9.      | ईश्वर नगर                         | 47                 |
| 10.     | बाबरिया कला                       | 47                 |
| 11.     | सिंगपुर                           | 39                 |
| 12.     | गोतम नगर हबींवगंज                 | 419                |
| 13.     | संतोषीमाता मंदिर-                 |                    |
| 14.     | बालभवन बस स्टाफ नं2               | 51                 |
| 15.     | गार्वमेन्ट क्वाटर कोटरा           | - 21               |
| 16.     | शास्त्रीनगर के सामने              | 100                |
| 17.     | नया प्रेम नगर                     | 265                |
| 18.     | वन प्रबंध संस्थान                 | 242                |
| 19.     | आराधना नगर कोटरा सुलताना बाद      | 52                 |
| 20.     | अरेरा कालोनी ई-2 ई-4 नालंदा स्कूल | 267                |
| 21.     | पर्यावरण परिषर                    | 158                |
| 22.     | फतहगढ पश्चिम सिटी मेडिकल कालेज    | 223                |
| 23.     | आयरन डिपो गोंविदपुरा              | 49                 |
| 24.     | मोरारजी नगर पाल बोगदा राज्य सरकार |                    |
| 27.     | बोर्ड ऑफिस के पीछे                | . 11               |
| 28.     | शमा फोरजिंग फैक्ट्री के पीछे      | 181                |
| 28.     | शिमा फाराजा ग्राप्त               |                    |

| क गां क | गंदी बरितयों के नाम                  | बरितयों की | संस्था |
|---------|--------------------------------------|------------|--------|
| 29.     | संजयनगर कालोनी                       | 79         |        |
| 30.     | जहां ने श्वर कालो नी                 | 1338       |        |
| 31.     | रोशनपुरा                             | 1498       |        |
| 32.     | विधान सभा के पीछे                    | 56         |        |
| 33.     | जज कॉलोनी                            | 275        |        |
| 34.     | जेल पहाड़ी अब्बास                    | 327        |        |
| 35.     | कम्यूनिटी हॉल                        | 44         |        |
| 36.     | प्रेम पुरा                           | 94         |        |
| 37.     | ओम नगर — 3 गेस्ट हाऊस के पीछे        | 143        |        |
| 38.     | धरमपुर                               | 99         |        |
| 39.     | अहमद नगर                             | 5          |        |
| 40.     | जत्खेड़ी                             | . 2        |        |
| 41.     | मिसरोद                               | 6          |        |
| 42.     | सेवा सदन                             | 1042       |        |
| 43.     | शास्त्री नगर सज्जाद पैट्रोल पम्प के  | 74         |        |
| 44.     | दुर्गा नगर हबीबगंज                   | 348        |        |
| 45.     | मैदा मिल                             | 123        |        |
| 46.     | बस स्टॉप नं. 6 अकुर स्कुल के पीछे    | 97         |        |
| 47.     | दुर्गा पैट्रोल पम्प                  | 127        |        |
| 48.     | पंचायत डायरेक्ट्रेट                  | 487        |        |
| 49.     | 74 बंगला                             | 413        |        |
| 50.     | अम्बेडकर नगर                         | 490        |        |
| 51.     | कोत्रा सुल्तानाबाद                   | 490        |        |
| 52.     | राजीव गांधी नगर 6 1/2 बस स्टॉप       | 35         |        |
| 53.     | हबीबगं ज                             | 81         | 18     |
| 54.     | कोलार कॉलोनी                         | 99         |        |
| 55.     | श्याम नगर हबीबगंज                    | 254        |        |
| 56.     | शॉपिंग काम्पलेक्स ४०० क्वा. चार इमली | 105        | 4      |

| क मां क | गंदी बरितयों के नाम          | बरितयों की संख्या |
|---------|------------------------------|-------------------|
| 57.     | मीरा बाई मंदिर               | 109               |
| 58.     | सांई बाबा नगर                | 395               |
| 59.     | कृष्णा नगर शाहोपुरा          | 232               |
| 60.     | इन्दिरा नगर ई-7 अरेरा कॉलोनी | 375               |
| 61.     | गौतम नगर शाहपुरा             | 133               |
| 62.     | खानुगांव                     | 112               |
| 63.     | ईदगाह हिल्स नावेरी मंदिर     | 358               |
| 64.     | लालघटी                       | 212               |
| 65.     | नयापुरा                      | 11                |
| 66.     | हलालपुरा                     | 3                 |
| 67.     | हनुमान मंदिर                 | 4                 |
| 68.     | रेजिमेंट रोड                 | 9                 |
| 69.     | काबितपुरा                    | 179               |
| 70.     | महावीर मंदिर मरघटाई          | 26                |
| 71.     | शर्मा कालोनी                 | 2                 |
| 72.     | निशातपुरा ई. पीबीजीटी कॉलेज  | 1                 |
| 73.     | इंदिरा नगर पुतली घर          | 320               |
| 74.     | टीला जमालपुरा                | 68                |
| 75.     | संजय नगर, राम नगर कॉलोनी     | 498               |
| 76.     | रॉयल मार्केट                 | 20                |
| 77.     | निशातपुरा                    | 91                |
| 78.     | सीमरा कलां                   | 122               |
| 79.     | कांग्रेस नगर                 | 590               |
| 80.     | जे.पी. नगर                   | 632               |
| 81.     | कुम्हारपुरा शाहपुरानाबाद     | 348               |
| 82.     | काज़ी कैम्प                  | 351               |
| 83.     | मॉडल ग्राउण्ड                | 251               |
| 84.     | क्तसाली                      | 24                |
| 85.     | करोंद कलां                   | 82                |

who have not the many

| क मां क | गंदी बरितयों के नाम     | बरितयों की संख्या |
|---------|-------------------------|-------------------|
| 86.     | भानपुर                  | 16                |
| 87.     | साली फूड़ी              | 21                |
| 88.     | सेन्द्रल लायब्रेरी      | 127               |
| 89.     | कांची चोला              | 72                |
| 90.     | गरीब नगर, छोला          | 28                |
| 91.     | शक्ति नगर               | 125               |
| 92.     | राजाजी का कुंआ          | : 11              |
| 93.     | बफना कॉलोनी             | 33                |
| 94.     | नबीबाग                  | 26                |
| 95.     | सतनामी नगर              | 209               |
| 96.     | गोविन्दपुरा             | 153               |
| 97.     | विजय नगर                | 594               |
| 98.     | पुतली घर                | 352               |
| 99.     | कोकटा                   | 63                |
| 100.    | कालुन कोटा              | 19                |
| 101.    | बरखेड़ी पठानी           | 57                |
| 102.    | हथाई खेड़ा              | 65                |
| 103.    | खजुरी कलां              | 71                |
| 104.    | खज्री खुर्द             | 31                |
| 105.    | हरिजन कॉलोनी            | 72                |
| 106.    | गल्ला मण्डी             | 5-                |
| 107.    | लोहारपुर                | 22                |
| 108.    | बाग सेवानी              | 18                |
| 109.    | बाग मुगालिया            | 54                |
| 110.    | धागर शाह की मज़िद       | 18                |
| 111.    | अर्जुन नगर              | 262               |
| 112.    | इन्द्रप्री              | 249               |
| 113.    | आचार्य नरेन्द्र देव नगर | 610               |

| क मां क | गंदी बस्तियों के नाम              | बरितयों की संख्या |  |  |  |  |
|---------|-----------------------------------|-------------------|--|--|--|--|
| 114.    | गांधी नगर                         | 102               |  |  |  |  |
| 115.    | कुम्हारपुरा – बैरागढ़             | 113               |  |  |  |  |
| 116.    | सब्जी मण्डी पुल बोगदा             | 68                |  |  |  |  |
| 117.    | सुदामा नगर पुल बोगदा              | 728               |  |  |  |  |
| 118.    | लौखंड़ी                           | 42                |  |  |  |  |
| 119.    | खुर्द कलां                        | 4                 |  |  |  |  |
| 120.    | नेवरी                             | 2                 |  |  |  |  |
| 121.    | वन ट्री हिल्स, बैरागढ़            | 185               |  |  |  |  |
| 122.    | हरिजन कॉलोनी बैरागढ़              | 246               |  |  |  |  |
| 123.    | बेहता                             | 54                |  |  |  |  |
| 124.    | घोबीघाट, बैरागढ़                  | 430               |  |  |  |  |
| 125.    | नेरिया शंकरी                      | 44                |  |  |  |  |
| 126.    | गल्ला मण्डी                       | 242               |  |  |  |  |
| 127.    | रसल खेड़ी                         | 1                 |  |  |  |  |
| 128.    | सेवानी गोंड                       | 244               |  |  |  |  |
| 129.    | बरखेड़ी कलां                      | 10                |  |  |  |  |
| 130.    | गोविन्दपुरा, आई. टी. आई.          | 69                |  |  |  |  |
| 131.    | कमल घाट, धोबीघाट                  | 221               |  |  |  |  |
| 132.    | अहत रूस्तम खां                    | 285               |  |  |  |  |
| 133.    | अहत रूस्तम खां, कृष्णा नगर        | 134               |  |  |  |  |
| 134.    | अहत खां रूस्तम                    | 302               |  |  |  |  |
| 135.    | प्रगति पैट्रोल पम्प               | 34                |  |  |  |  |
| 136.    | पम्पापुर                          | 381               |  |  |  |  |
| 137.    | पंचशील नगर,                       | 129               |  |  |  |  |
| 138.    | शाहीद नगर                         | 330               |  |  |  |  |
| 139.    | एस.बी.आई 400 क्वा. चार इमली एरिया | 37                |  |  |  |  |
| 140.    | बाग मुन्शी हुसैन खान              | 540               |  |  |  |  |
| 141.    | साज़िद नगर                        | 303               |  |  |  |  |
| 142.    | ग्रीन पार्क कॉलोनी                | 13                |  |  |  |  |

| क गां क | मंदी बरित्तयों के नाम         | बरितयों की संख्या |
|---------|-------------------------------|-------------------|
| 143.    | मॉडल ग्राउण्ड                 | 34                |
| 144.    | सिंगार चोली                   | 25                |
| 145.    | केंची चोला बाउण्ड्री          | 2                 |
| 146.    | चांद बाद                      | 45                |
| 147.    | सुभाष नगर रोड                 | 251               |
| 148.    | समरूध मोहल्ला                 | 26                |
| 149.    | गमीड़िया मज़िद                | 105               |
| 178     | कृष्णा टाकिज के सामने         |                   |
| 150.    | इब्राहिम गंज,                 | 35                |
| 151.    | बाग फरहत अफज़ा                | 364               |
| 152.    | जवाहर कॉलोनी, ऐश बाग          | 158               |
| 153.    | पुल बोगदा                     | 62                |
| 154.    | बाग उमराव दुल्हा              | 70                |
| 155.    | इब्राहिम गंज                  | 524               |
| 156.    | राम नगर                       | 307               |
| 157.    | पिपलानी राम मंदिर             | 3                 |
| 158.    | सुदामा नगर                    | 165               |
| 159.    | रत्नागिरी                     | 34                |
| 160.    | पिपलानी                       | 12                |
| 161.    | कमला नगर , कोटरा सुल्तानाबाद  | 180               |
| 162.    | कलासें वनिया                  | 344               |
| 163.    | रोड चार इमली बीच, बग संवेनिया | 219               |
| 164.    | अम्बेडकर नगर                  | 242               |
| 165.    | सुदामा नगर                    | 46                |
| 166.    | अरेरा हिल्स                   | 212               |
| 167.    | दुर्गा नगर सेन्द्रल स्कूल     | 63                |
| 168.    | शीतला नगर                     | 80                |
| 169.    | संजय नगर                      | 789               |
| 170.    | आर.आर. एस. हबीबगंज            | 813               |

| क मां क | गंदी बस्तियों के नाम   | बस्तियों की संख्या |
|---------|--|--------------------|
| 171.    | इन्द्रा कालोनी, जहांगीराबाद  | 164                |
| 172.    | चेतक नगर   | 32                 |
| 173.    | रविन्द्र नगर   | 334                |
| 174.    | भारतीय निकेतन  | 225                |
| 175.    | रतन नगर  | 210                |
| 176.    | मोती नगर   | 279                |
| 177.    | वंन विहार  | 10                 |
| 178.    | पानी की टंकी के पास, रचना नगर  | 87                 |
| 179.    | संजय गांधी नगर, 1100 क्वाटर  | 490                |
| 180.    | अंकुर स्कूल के पास   | 164                |
| 181.    | सिद्वेश्वरी मंदिर के पास   | 132                |
| 182.    | सम्राट अशोक नगर  | 109                |
| 183.    | दुग्ध नगर  | 94                 |
| 184.    | कुरूक्षेत्र नगर, मैदा मिल  | 509                |
| 185.    | राजीव गांधी नगर  | 94                 |
| 186.    | संजय काम्पलेक्स  | 25                 |
| 187.    | बावड़िया कलां  | 87                 |
| 188.    | शक्ति नगर  | 55                 |
| 189.    | इन्द्रा नगर  | 1288               |
| 190.    | बाबड़िया कलां  | 53                 |
| 191.    | बाग मुगलिया, हाउसिंग बोर्ड   | 107                |
| 192.    | होशंगाबाद रोड, हाइवे   | 62                 |
| 193.    | न्यू सरस्वती नगर   | 152                |
| 194.    | भरत नगर  | 70                 |
| 195.    | सात नं. स्टाप 121, 122,  | 80                 |
| 224     | कलाईन शिवाजी नगर   | 48                 |
| 196.    | लक्ष्मण नगर  | 24                 |
| 197.    | शक्ति नगर, रेल्वे कॉलोनी   | 294                |
|         | ACCOUNTY OF THE PARTY OF THE PA | 233                |

| क मां क | गंदी बरितयों के नाम         | बरितयों की संख्या |
|---------|-----------------------------|-------------------|
| 198.    | सांई बाबा, नगर 12 नं. स्टाप | 979               |
| 199.    | अर्जुन नगर                  | 544               |
| 200.    | गौतम नगर                    | 317               |
| 201.    | बंगाली कालोनी               | 487               |
| 202.    | दुर्गा नगर                  | 383               |
| 203.    | प्रियदर्शिनी नगर            | 409               |
| 204.    | ईश्वर नगर                   | 202               |
| 205.    | फुले नगर                    | 68                |
| 206.    | जय भीम नगर                  | 301               |
| 207.    | मद्रासी कालोनी              | 211               |
| 208.    | सेवा सदन                    | 325               |
| 209.    | अरेरा हिल्स, अब्बास नगर     | 1442              |
| 210.    | भीम नगर                     | 3003              |
| 211.    | वल्लभ नगर                   | 1450              |
| 212.    | ओम नगर कॉलोनी               | 326               |
| 213.    | छत्तीसगढ कालोनी             | 320               |
| 215.    | गायत्री नगर, कटरा           | 241               |
| 216.    | लहारपुर                     | 72                |
| 217.    | संजय नगर, मोहन मोहल्ला      | 54                |
| 218.    | संतापी नगर                  | 258               |
| 219.    | सुजाता नगर कोलार तिराहा     | 328               |
| 220.    | दया नगर                     | 85                |
| 221.    | कुसुम पार्क                 | 52                |
| 222.    | स्कालर होम, माली नगर        | 58                |
| 223.    | सम्पदा, संचालनालय के पास    | 54                |
| 224.    | 54 क्वाटर के पास            | 48                |
| 225.    | पर्यावरण भवन के पास         | 29                |
| 226.    | ई.3 295, अरेरा कालोनी       | 324               |
| 220.    | यादगार                      | 273               |

| क गां क | गंदी बरितयों के नाम            | बरितयों की रांख्या |
|---------|--------------------------------|--------------------|
| 228.    | फूटा मकबरा                     | 168                |
| 229.    | यादगार                         | 168                |
| 230.    | ई. ६ नुपुर कुंज                | 45                 |
| 231.    | बाबा नगर                       | 310                |
| 232.    | केम्पीयन स्कूल के पास          | 57                 |
| 233.    | अबध नगर                        | 155                |
| 234.    | शहपुरा गांव की झुग्गी बस्ति    | 292                |
| 235.    | कमला पार्क, धोबी घाट           | 189                |
| 236.    | बांण गंगा रोटरी क्लब           | 1554               |
| 237.    | आराधना नगर                     | 280                |
| 238.    | किशन नगर                       | 799                |
| 239.    | आनन्द विहार, स्कूल के सामने    | 410                |
| 240.    | शिव नगर                        | 92                 |
| 241.    | नेहरू नगर                      | 1375               |
| 242.    | रोशनपुरा                       | 380                |
| 243.    | बापू नगर                       | 64                 |
| 244.    | शान्ति नगर                     | 1038               |
| 245.    | सत्य सांई बाबा नगर             | 1756               |
| 246.    | मीना मंदिर स्थित नगर           | 141                |
| 247.    | आलम नगर ग्रेड                  | 490                |
| 248.    | संजय गांधी नगर                 | 812                |
| 249.    | श्याम नगर                      | 83                 |
| 250.    | 10 नं. मार्केट                 | 180                |
| 251.    | राहुल नगर रोशनपुरा             | 115                |
| 252.    | स्वदेश प्रेस के पास एम.पी. नगर | 238                |
| 253.    | सुरूप नगर                      | 534                |
| 254.    | ऋषि नगर चार इमली               | 124                |
| 255.    | संजय नगर कोटरा                 | 588                |

| क गां क | गंदी बरितयों के नाम             | बरितयों की संख्या |
|---------|---------------------------------|-------------------|
| 256.    | सुबोध नगर भदभदा रोड,            | 528               |
| 257.    | नया बसेरा, भदभदा                | 72                |
| 258.    | केसर नगर कालोनी                 | 30                |
| 259.    | धरमपुरी, श्यामला हिल्स          | 327               |
| 260.    | मदरसा के पीछे, मदमदा रोड        | 60                |
| 261.    | अंजली काम्पलेक्स                | 186               |
| 262.    | कृष्णा नगर, पॉलिटेक्निक के पास  | 100               |
| 263.    | भदभदा पुल के पास                | 700               |
| 264.    | विश्वकर्मा नगर, हबीबगंज के पास  | 182               |
| 266.    | राहुल नगर,                      | 1553              |
| 267.    | टाइम्स ऑफ इण्डिया के पास        | 168               |
| 268.    | . संजय नगर बांण गंगा            | 306               |
| 269.    | प्रताप नगर                      | 1499              |
| 270.    | हसनात नगर                       | 613               |
| 270.    | कुक्कट भवन के सामने             | 20                |
| 271.    | 228 क्वा. माता मंदिर            | 24                |
| 272.    | चक्का चौराहा                    | 100               |
| 273.    | कोलार डेम के पास बतमी           | 215               |
| 274.    | चूना भट्टी आमदी के पास          | 35                |
| 275.    | प्रोफेसर कॉलोनी                 | 24                |
| 276.    | रीजनल कालेज की दीवाल से लगकर    | 69                |
| 277.    | मानव संग्राहलय                  | 48                |
| 278.    | भारत पैट्रोलियम के पीछे         | 35                |
| 279.    | आदर्श नगर, अहगदपुर              | 29                |
| 280.    | निवेश नगर                       | 184               |
| 281.    | पानी के टंकी के पीछे, जवाहर लोक | 21                |
| 282.    | गांधी भवन के पीछे               | 9                 |
| 283.    | आजाद नगर                        | 160               |
| 284.    | अर्जुन नगर, नरेला संकरी         | 432               |

| क मां क | गंदी बस्तियों के नाम              | बिरतयों की संख्या |
|---------|-----------------------------------|-------------------|
| 285.    | आचार्य, नारेन्द्र देव नगर         | 1114              |
| 286.    | सुदामा नगर                        | 873               |
| 287.    | अर्जुन नगर, अप्सरा टॉकिज के पास   | 257               |
| 288.    | शान्ति नगर                        | 119               |
| 289.    | झील नगर                           | 177               |
| 290.    | सेमरा                             | 7                 |
| 291.    | विजय नगरचांद गढ़                  | 290               |
| 292.    | अन्य चांद गढ़                     | 320               |
| 293.    | अनन्तपुरा                         | 73                |
| 294.    | शिव नगर                           | 460               |
| 295.    | कांतुआ कलां                       | 165               |
| 296.    | हिनौतिया,                         | 17                |
| 297.    | दुर्गेश नगर                       | 29                |
| 298.    | अहाता मनका शाह                    | 85                |
| 299.    | सिटी नगर                          | 181               |
| 300.    | दुर्गा धाम                        | 127               |
| 301.    | मुकरम नगर                         | 32                |
| 302.    | नेहरू नगर नरेला संकरी             | 388               |
| 303.    | पातरानाल, ऐश बाग                  | 120               |
| 304.    | सई दिया स्कूल के पास              | 15                |
| 305.    | सिंचाई विभाग                      | 111               |
| 306.    | आजाद नगर                          | 178               |
| 307.    | स्टेट गैरिज, जहांगीराबाद          | 4                 |
| 308.    | कोकता                             | 89                |
| 309     | नाले के पास                       | 12                |
| 338     | . सुलभ काम्पलेक्स से लगा हुआ टोला | 1885              |
| 310.    | लतीफ नगर                          | 55                |
| 311.    | बूचड़ खाने के पीछे                | 15                |
| 312.    | आदर्श नगर, छोला                   | 69                |

| क मां क | गंदी बस्तियों के नाम        | बस्तियों की संख्या |
|---------|-----------------------------|--------------------|
| 313.    | न्यू ब्लाक बरित             | 141                |
| 314.    | शक्ति नगर                   | 76                 |
| 315.    | न्यू आरिफ नगर               | 335                |
| 316.    | रूसत्ती पानी टंकी के पास    | 19                 |
| 317.    | फूटा मकबरा                  | 273                |
| 318.    | ब्राह्मन कालोनी             | 81                 |
| 319.    | इब्राहिमगंज                 | 187                |
| 320.    | इसरानी बेनर्जी मार्केट      | 14                 |
| 321.    | करूणा बाग                   | 48                 |
| 322.    | फातिमा नगर                  | 59                 |
| 323.    | इन्द्रा नगर                 | 216                |
| 324.    | कांग्रेस नगर                | 151                |
| 325.    | राहुल नगर                   | 51                 |
| 326.    | मानझी नगर                   | 164                |
| 327.    | धोबीघाट, बैरागढ़            | 135                |
| 328.    | माऊ खंडी झुग्गी बस्ति       | 31                 |
| 329.    | इन्द्रा नगर क्वा. 12 के पास | 111                |
| 330.    | राजीव नगर, सिहोर नाका       | 69                 |
| 331.    | कुम्हारपुरा, बैरागढ़        | 202                |
| 332.    | खलुगांव                     | 540                |
| 333.    | दौलतपुरा                    | 385                |
| 334.    | बपे ही गंज                  | 555                |
| 335.    | साजिद नगर                   | 184                |
| 336.    | करौद                        | 479                |
| 337.    | अटल नेहरू नगर               | 44                 |
| 338.    | बपनपुर                      | 1886               |
| 339.    | संजय नगर                    | 941                |
| 340.    | ईदगाह हिल्स                 | 634                |
| 341.    | मदर इण्डिया कालोनी          | 74                 |

| क मां क | गंदी बरितयों के नाम           | बरितयों की संख्या |
|---------|-------------------------------|-------------------|
| 342.    | एकता नगर                      | 29                |
| 343.    | वक्कर गांव कालोनी             | 41                |
| 344.    | पुराना आर.टी.ओ. के पीछे       | 131               |
| 345.    | नई बरित सेक्टर-1              | 255               |
| 346.    | नई बस्ति सेक्टर – 2           | 286               |
| 347.    | नई बस्ति सेक्टर — 3           | 99                |
| 348.    | गांधी नगर कुष्ट आश्रम         | 45                |
| 349.    | डेरी के पास,                  | 81                |
| 350.    | दुर्गा मंदिर नयापुरा के पास   | 29                |
| 351.    | नयापुरा                       | 12                |
| 352.    | नई बस्ति गोंड़ीपुरा           | 36                |
| 353.    | स्कूल के पीछे, गोंड़ीपुरा     | 213               |
| 354.    | गोड़ीपुरा पुराना व न्यू बस्ति | 17                |
| E G     | पैट्रोल पम्प के पास           |                   |
| 355.    | कृषि वानिकी परिषद             | 184               |
| 356.    | पुरानी बस्ति सेक्टर – 1       | 53                |
| 357.    | पुरानी बरित सेक्टर – 2        | 25                |
| 358.    | हरिजन बस्ति सेक्टर – 3        | 52                |
| 359.    | कांजी हाउस के पीछे,           | 100               |
| BEL     | गांधी नगर                     |                   |
| 360.    | टैगोर वार्ड                   | 339               |
| 361.    | प्रताप वार्ड                  | 224               |
| 362.    | अर्जुन वार्ड,                 | 72                |
| 363.    | सेक्टर चार, गांधी नगर         | 822               |
| 364.    | बरेला गांव                    | 180               |
| 365.    | दुर्गा नगर                    | 270               |
| 366.    | भैसाखेड़ी                     | 10                |
| 367.    | सिहोर नाके के पीछे            | 146               |
| 368.    | बोरबंद बैरागढ़                | 319               |

तालिका क. 5.3

|                | (% 井)        |                  |        |                      |               |       |                  |                |       |                      |       |            |                 |                     |                    |      |          |       |
|----------------|--------------|------------------|--------|----------------------|---------------|-------|------------------|----------------|-------|----------------------|-------|------------|-----------------|---------------------|--------------------|------|----------|-------|
|                | आदता (%      |                  | 83.0   | 73.3                 | 59.4          | 46.4  | 37.7             | 33.6           | 61.29 | 84.6                 | 86.7  | 83.7       | 67.7            | 60.5                | 57.9               |      | 62.8     |       |
|                | वायुदाव      | मिली बार में     | 972.70 | 958.4                | 957.1         | 954.8 | 952.8            | 948.1          | 944.4 | 944.3                | 916.1 | 947.7      | 952.5           | 955.7               | 958.4              |      | 949.1    |       |
| जलवायु 1998    | वर्षा        | (से.मी.मे)       | 57     | 00                   | 0.0007        | 4.09  | 0.75             | 0.04           | 13.85 | 25.39                | 22.26 | 21.46      | 1.96            | 0.44                | 000                |      | 7.52     |       |
| नगर मोपाल - जल | औसत तापमान   | (डिग्री से. में) | 17.2   | 17.1                 | 19.9          | 23.7  | 30.3             | 34.4           | 31.5  | 27.5                 | 25.8  | 27.8       | 26.7            | 22.0                | 18.7               |      | 25.3     |       |
| राजघानी न      | तापान्तर     | (डिग्रीसे.में)   | 10.0   | 12.8                 | 15.1          | 16.00 | 16.00            | 15.4           | 9.6   | 6.5                  | 4.3   | 6.2        | 11.2            | 13.3                | 17.7               |      | 12.1     |       |
| T (1871) H     | (डिग्री से ) | न्यूनतम          | 01111  | 10.7                 | 12.4          | 15.7  | 22.3             | 26.7           | 26.7  | 24.3                 | 23.7  | 22.9       | 21.1            | 15.4                | 6.6                |      | 19.3     |       |
| I GARBE        | तापमान       | अधिकतम           | 22.5   | 23.5                 | 27.5          | 31.7  | 38.3             | 42.1           | 36.3  | 30.8                 | 28.0  | 30.8       | 32.3            | 28.7                | 27.6               |      | 31.4     |       |
| 1 Mile         | माह          | ਲ<br>•           | C0. M  | म्<br>म्<br>क्रिaris | म्बर्भ<br>Mah | प्    | ्रक्रि<br>श्रिक् | المر<br>de Vis | IF o  | dyalaya<br>भूजी जाउँ | अगस्त | र्रिसतम्बर | अक्टूबर<br>noan | प्रमुख्य<br>ndi, Ja | opalpul<br>Bulland | r,MP | Collecti | ं औसत |

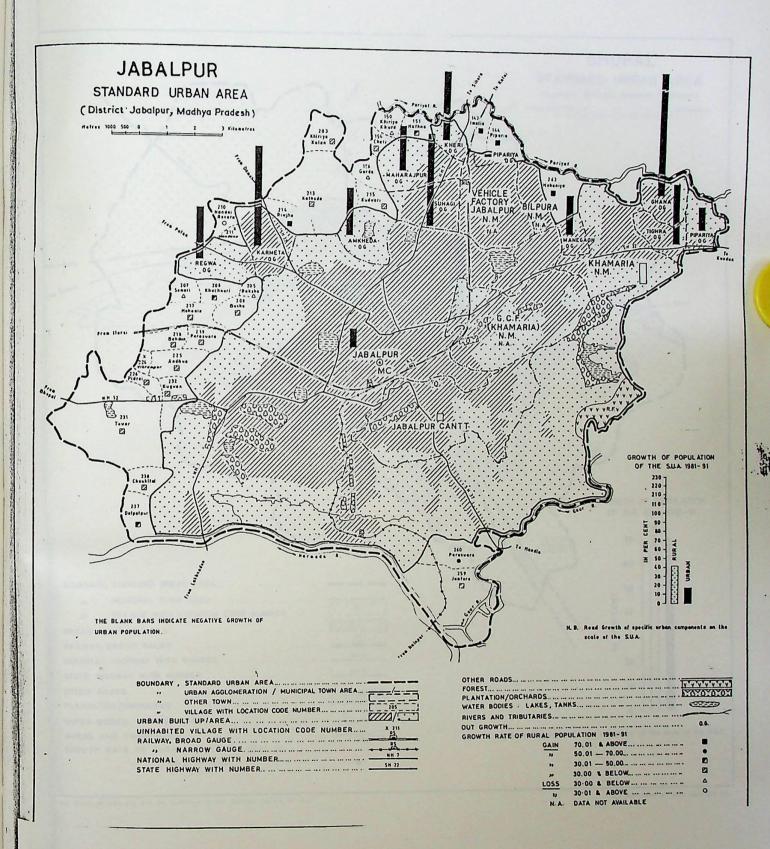
सर्वाधिक वर्षा 28.4 से.मी., 30/8/1973, सर्वाधिक तापमान 45.6 डिग्री से.ग्रे. 10/6/1919, 22/5/47, 10/6/1979, न्यूनतम तापमान 0.6 डिग्री से.ग्रे. 18/1/1935

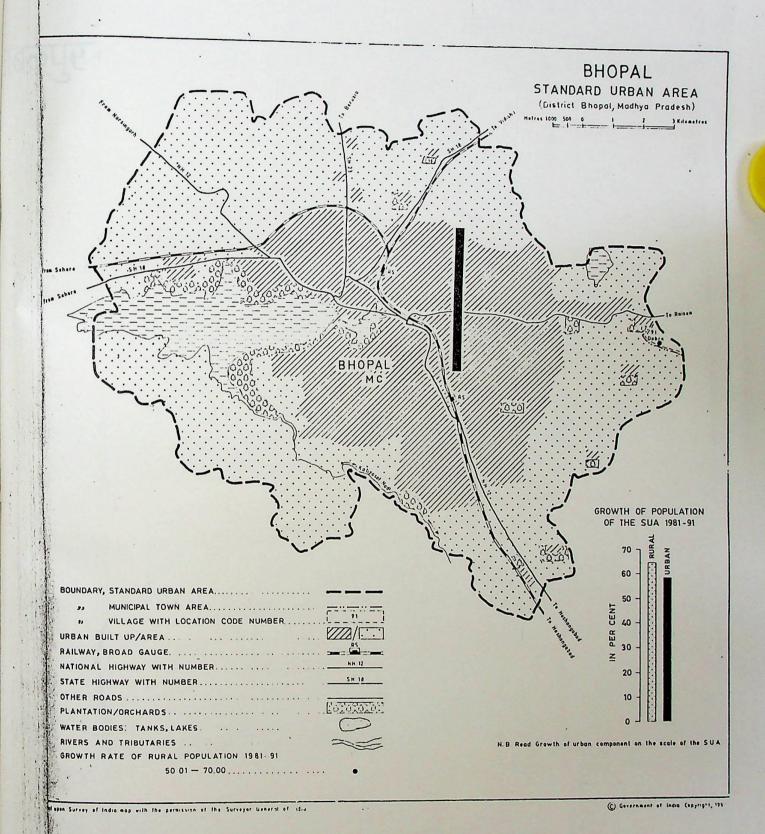
xx.xIV तालिका क. 5.2

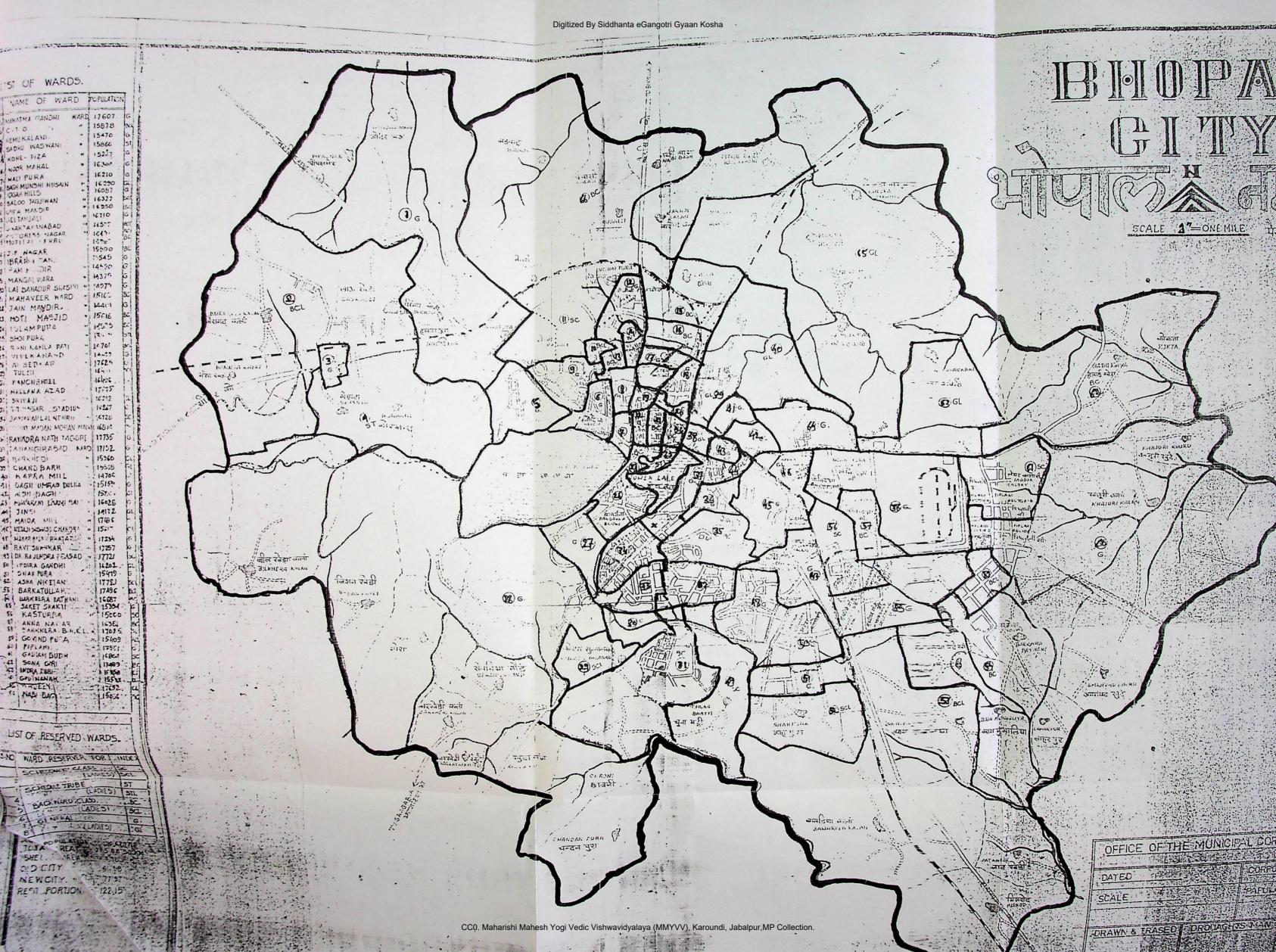
संस्कारधानी नगर जबलपुर – जलवायु 1998

| माह     | तापमान | (डिग्री से ) | तापान्तर       | औसत तापमान | वहा है। इडि | <u>।</u>     | आदता (% में) |
|---------|--------|--------------|----------------|------------|-------------|--------------|--------------|
|         | अधिकतम | न्यूनतम      | (डिग्रीसे.में) |            | (से.मी.मे.) | मिली बार में |              |
| जनवरी   | 225    | 110          | 10 E           | 17.0       |             | 07 040       | C            |
|         |        |              |                | 7:         |             | 817718       | D.:00        |
| किरवरा  | 27.2   | 13.8         | 13.4           | 20.5       | 1.01        | 971.97       | 75.5         |
| मार्च   | 30.2   | 16.5         | 13.7           | 23.3       | 1.61        | 06.696       | 58.3         |
| अप्रेल  | 37.7   | 23.4         | 14.3           | 30.5       | 4.09        | 966.00       | 50.2         |
| मुड्    | 41.7   | 27.0         | 14.7           | 34.3       | 0.48        | 961.70       | 39.9         |
| ल्य     | 38.2   | 27.4         | 10.8           | 32.8       | 13.64       | 958.56       | 62.4         |
| जुलाई   | 31.1   | 24.8         | 6.3            | 27.9       | 23.12       | 958.60       | 86.9         |
| अगस्त   | 30.8   | 24.8         | 6.00           | 27.8       | 19.67       | 960.71       | 86.9         |
| सितम्बर | 31.4   | 23.9         | 7.5            | 27.6       | 21.27       | 962.11       | 86.0         |
| अक्टूबर | 32.5   | 22.5         | 10.00          | 27.5       | 3.00        | 966.42       | 78.7         |
| नवम्बर  | 27.2   | 15.8         | 11.4           | 21.5       | 7.76        | 970.16       | 81.8         |
| दिसम्बर | 26.2   | 7.60         | 16.5           | 17.9       | 00          | 973.5        | 0.77         |
|         |        | -            |                |            |             |              |              |
| वार्षिक | 31.3   | 20.1         | 11.2           | 25.7       | 8.13        | 966.0        | 72.2         |
| औसत     |        |              |                |            |             |              |              |
|         |        |              |                |            |             |              |              |

अधिकतम वर्षा 34.20 से.मी.30/7/1915, अधिकतम तापमान 46.7 डिग्री से.ग्रे. 25/5/1954,न्यूनतम तापमान 0.6 डिग्री से.ग्रे. 25/12/1902







## Digitized By Siddhanta Kallgari Gyaan Kosha संदर्भ ग्रन्थ सूची

- 1. आहिताग्नि ;सम्पा.द्ध 1991
- 2. अग्रवाल, के.सी.
- 3. आप्टे, वामन शिवराम
- 4. कुन्द्रा, ओम प्रकाश (सम्पादक)
- 5. कादरी, एम.एम.,
- 6. खरे, पी.एन.,
- 7. गैरोला, वाचस्पति (सम्पादक)
- 8. गोयनन्दका जयदयाल
- 9. श्री मद्दच्युतानन्द
- 10. झा. रविकांत
- 11. झाझरिया, नन्दकिशोर
- 12. द्विवेदी, श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद
- 13. पुरोहित पं0 माधव प्रसाद
- 14. नायडू, रूकमणि

ऋग्वेद, नागप्रकाशन, ११ए/यूए, जवाहर नगर, नई दिल्ली भारतीय वास्तु कला, भारतीय वास्तु कला अनुसंधान केन्द्र भोपाल, 1996 संस्कृत-हिन्दी शब्द कोष नागप्रकाशन दिल्ली। म.प्र. विकास वार्षिकी, 1992–93, राधिका प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल हिन्दु मुस्लिम स्थापत्य कला शैली, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा 1963 नगरीय समाज शास्त्र, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा 1968 कौटिल्य अर्थ शास्त्र, नई दिल्ली 1992 महाभारत, गोविंद भवन, गोरखपूर 19915 वास्तु रतनावली, चौखम्बा अमर भारतीय प्रकाशन, वाराणसी, 1981 वास्त् कला का इतिहास 1972 भारतीय भवन निर्माण योजना, मिथुन प्रकाशन, तिलक नगर कानपुर 1996 वास्त् रत्नाकर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी. 1997 सूर्य सिद्धान्त, संस्कृत प्रतिठान, दिल्ली 1997 म.प्र. के प्रमुख तीन नगरों ;भोपाल, इन्दौर, जबलपुरद्ध पर नगरीयकरण का एक अध्ययन, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय, जबलपुर 1988 (अप्रकाशित शोध

प्रबन्ध)

- 15. बाहरी, हरदेव
- 16. बाजपेयी, कृष्ण दत्त
- 17. मिश्र, सुरेश चन्द्र
- 18. मिश्र अनूप (सम्पादक)
- 19. मुनि कान्ति सागर
- 20. दिनकर, रामाधार सिंह
- 21. बेन्दे, उमाशंकर
- 22. ब्लास, डीला
- 23. चौबे, महेश चन्द्र
- 24. राय, ए.के.
- 25. राम सुखदास
- 26. तारखेड़कर, अनिल रामकृष्ण
- 27. पाठक, गणेश दत्त, (टीकाकार)
- 28. हुसैन, हाफिज़ माज़िद खान
- 29. शर्मा, रामनाथ,

प्राचीन भारतीय संस्कृति कोष, विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली 1985 भारतीय वास्त् कला का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ 1990 वृहत संहिता, रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997 श्री मण्डनसूत्रधारविरचितो वास्त्राज वल्लभः मास्टर खिलाड़ी लाल, कचौड़ी गली, वाराणसी 1996 खण्डहरों का वैभव, भारतीय ज्ञानपीठ काशी संस्कृति के चार अध्याय, उदयाचल, आर्य कुमार रोड, पटना 1962 कपरी नर्मदा बेसिन के बाजार केन्द्र, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय, जबलपुर (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) 1992 मानव भूगोल के सिद्धान्त, शिवलाल अग्रवाल एण्ड क0, आगरा, 1962 जबलपुर अतीत दर्शन, जिला योजना मण्डल जबलपुर एवं भारतीय संस्कृति द्वारा प्रकाशित, जबलपुर 1994 जबलपुर दर्पण, जबलपुर 1994 श्रीमद् भागवत् गीता प्रेस, गोरखपुर, 1996 वास्तुशास्त्र, कास्मो पब्लिसिंग हाऊस छुलिया (महाराष्ट्र) 1996 विश्वकर्मा प्रकाशः श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली, वाराणसी 1995 भोपाल का इतिहास, राजा भोज से आज तक का, भोपाल 1997 सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, राजहंस प्रकाशन मंदिर, मेरठ 1975

| 30. | शर्मा, रामस्वरूप (सम्पादक)   | 2191d da                                    |
|-----|------------------------------|---|
|     |                              | अथर्व वेद, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी<br>1992 |
| 31. | शास्त्री, रामकृष्ण (सम्पादक) | शुक्ल, यजुर्वेद संहिता, चौखम्बा विद्या      |
|     | प्रमण्यना, संचालनासर्व गोधाल | भवन, वाराणसी, 1992                          |
| 32. | शास्त्री, आचार्य चतुरसेन     | वैदिक संस्कृति पर दृग स्पर्स, सन्मार्ग      |
|     | जनगणना राषातनातव संवात       | प्रकाशन, दिल्ली 1983                        |
| 33. | शास्त्री, आचार्य चत्रसेन     | भारतीय संस्कृति का गौरव, सन्मार्ग           |
|     |                              | प्रकाशन, दिल्ली 1985                        |
| 34. | शास्त्री, आचार्य चत्रसेन     | भारतीय संस्कृतिः पौराणिक प्रभाव,            |
|     |                              | सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली 1986                |
| 35. | शास्त्री, आचार्य उमेश        | वास्तुविज्ञानम्, व्यास वालावक्ष शोध         |
|     |                              | संस्थान, दीनानाथ मार्ग, जयपुर 1996          |
| 36. | शुक्ल डी.एन.                 | भारतीय वास्तुशास्त्र, मेहरचन्द लक्ष्मन      |
|     |                              | दास पब्लिकेशंस दिल्ली1968                   |
| 37. | शुक्ल द्विजेन्द्र नाथ        | समरांग्ड. सूत्रधार, भवन निवेष, मेहरचन्द     |
|     |                              | लक्ष्मन दास पब्लिकेशंस, नई दिल्ली1965       |
|     |                              | एवं 194                                     |
| 38. | श्रीवास्तव, पी.एन. (सम्पादक) | जबलपुर जिला गजेटिया, जिला गजेटियर           |
|     |                              | विभाग म.प्र., भोपाल 1969                    |
| 39. | श्रीवास्तव, शिव कुमार        | भारत वर्ष का सांस्कृतिक गौरव, 1949          |
|     | एवं अवस्थी, रामदुलारे        |   |
| 40. | झा. तरणीश (सम्पादक)          | मत्स्यपुराण डॉ० प्रभान मिश्र, शास्त्री 12,  |
|     |                              | सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद, शक -               |
|     |                              | 1910 — 1988                                 |
| 41. |                              | अग्नि महा पुराण, नागप्रकाशन, दिल्ली         |
| 42. |                              | स्कन्द महा पुराण, नागप्रकाशन, दिल्ली        |
| 43. |                              | बाल्मीकि रामायण,                            |
| 44. |                              | रामचरित मानस, गीता प्रेस, गोरखपुर           |
| 45. | खेमक, राधेश्याम (सम्पादक)    | कल्याण 1999, गीता प्रेस, गोरखपुर            |
|     |                              |   |



46. सिंह, वीरेन्द्र

 जनगणना, संचालनालय भोपाल (प्रकाशक)

48. जनगणना संचालनालय भोपाल

49. Acharya, P.K.

50. Ataullah, Mohd.

51. Beaujeu Garnier J. and chabat G.

52. Carter, Harald,

53. Clapham, Frances M.

54. Chopra, P.N. and Prabha

55. Danger, Brouno

56. Gallion, Arthur, B. and Eisner, simon,

57. Maharishi Mahesh Yogy vedic University (Edt.)

भोपाल नगर के नगरीकरण पर एक अध्ययन बरकतउल्ला, विश्व विद्यालय, भोपाल (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) 1972 जिला जनगणना पुस्तिका, 1981

जनगणना पुस्तिका भाग —IIए 1991
Manshar, Loprice
publication delhi, 1995
urban land use and misuse
Amar Prakashan Delh, 1985
Urban Geography, Langmans
London 1969
The study of Urban

The Great World Encyclo pedia, crisewood and dempsey Ltd. 22-22 Great Tithfield street London,

1981

Geography

Encyclopedia of India, Agam
Prakashan Delhi, 1998
Mayamatem, Delhi, 1992
The Urban pattern, city
planning and Design, van
nastrand company, 450, west
33rd street, New Yark 1969
Maharishi Technology of
The Unified field, Age of
Enlightenment publications
Delhi 1984

58. Maharishi Mahesh Yogi

59. Sharma, R.C.,

60. Shrivastava, P.N. and Guru S.D.

61. Shrivastava, Lokesh

Inauguraling Age of
Enlightenment
Publications, Delhi, 1995
Settelment Geography of the
Indian desert, Kumar
Brodhers Hauzkhar,
New Delhi, 1972
Gazetter of India (Bhopal & Sihor), Distt. Gazetter
Deptt. of M.P., Bhopal 1989
Jabalpur City: Urban Grouth
and Development, Rani
Durgavati, University,
Jabalpur (Unpublisd Thesis)
1989





